प्रकाशक :
हरिदास एण्ड कम्पनी, लिमि०,
मथुरा ।

पाँचवाँ संस्करण
जून १९४७
मूल्य ४॥)

मुद्रक
प्रभुदयाल मीतल
अग्रवाल प्रेस, मथुरा

त्सा-चन्द्रोदय प्रभृति अनेक ग्रन्थों के लेखक—

आयुर्वेद पञ्चानन बाबू हरिदास वैद्य.

[जन्म सं० १९२८ वि०]

निवेदन

★

शृङ्गार-शतक का यह पाँचवा संस्करण पाठकों के सामने है। पिछले महासमर ने, दुनियाँ के हर काम का सिलसिला खराब कर दिया। कहने को तो महासमर समाप्त हो गया, पर संसार की वर्तमान परिस्थिति युद्ध कालीन स्थिति से भी खराब है और मनुष्य बहुत कुछ करने की इच्छा रखते हुए भी कुछ नहीं कर पाता।

हम शृङ्गारशतक को इस बार बहुत सुन्दर बनाना चाहते थे। वर्तमान संस्करण में हम कुछ नये चित्र भी लगाना चाहते थे और कई और सुधार करना चाहते थे। पर चीजों की दुर्लभता ने ऐसा नहीं करने दिया। फिर भी इस संस्करण में अच्छा से अच्छा सामान लगाया गया है। आशा है, पाठक इसे पसन्द करेंगे।

—प्रकाशक।

चित्र-सूची

★

पृष्ठ

भर्तृहरि-कृत

शृङ्गार-शतक

शम्भुस्वयंभुहरयो हरिणेक्षणानां ।
येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः ॥
वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय ।
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥१॥

जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को मृगनयनी कामिनियों के घर का काम धन्धा करने के लिये, दास बना रक्खा है, जिनके विचित्र चरित्रों का वर्णन वाणी से किया नहीं जा सकता, उन पुष्पायुध भगवान कामदेव को हमारा नमस्कार है ॥१॥

भगवान कामदेव की विचित्र महिमा का पार नहीं। आपके अजीब-अजीब कामों का बखान ज़बान से कौन कर सकता है ? यद्यपि आपका शस्त्र फूलों का धनुर्बाण है, तथापि आपने अपने

इसी हथियार से त्रिलोकी को अपने आधीन कर रक्खा है। औरों की कथा चलाई, स्वयं जगत के रहने वाले ब्रह्मा, पालनेवाले विष्णु और संहार करने वाले शिवजी तक को आपने बाकी नहीं छोड़ा। इन तीनो देवताओं को भी आपने; घर का काम-धंधा करनेके लिये कुरङ्गनयनी सुन्दरी कामिनियो का गुलाम बना दिया है। यद्यपि भगवान कामदेव भगवान विष्णु के पुत्र है, पर आप अपने पिता से भी बढ़ गये। "गुरु गुड़ रहे और चेला चीनी हो गये" वाली कहावत आपने चरितार्थ की। आपने स्वयं अपने पिता पर ही हाथ साफ किये। उन्हे ही अनेक कुएँ झॅकवाये। अपने पिता से लक्ष्मी और रुक्मिणी प्रभृति की गुलामी करवा कर ही आपको सन्तोष नहीं हुआ। आपने उन्हे परनारी व्रजबालाओं तक की मुहब्बत मे पागल-सा कर दिया। यहाँ तक कि उनमे मालिन और मनिहारिन तक के स्वांग भरवाये। एक बार बेचारों को जलन्धर-पत्नी वृन्दा के यहां भेष बदल कर जाने तक पर मजबूर किया और शेष में उनका फजीता करवाया।

पूर्ण योगी, श्मशान-वासी शिवजी तक को आपने नहीं छोड़ा बेचारों को शैलसुता का क्रीत-दास बना दिया, यहाँ तक तो खैर थी आपने एक बार उनकी सारी सुध-बुध हर ली और मोहिनी के पीछे इस बुरी तरह से दौड़ाया कि हमसे तो लिखा तक नहीं जाता। एक और मौके पर शिवजी समाधि मे लीन थे। वही वन मे मर्त्यलोक-वासिनी चन्द मृगलोचनी परम सुन्दरी युवतियाँ, अपनी रूपच्छटा से वन को प्रकाशमान करती हुई, क्रीड़ा कर रही

थी। उनके अपूर्व रूप-लावण्यको देख कर शिवजी का शान्त मन अशान्त होगया, उनके भोगने के लिये मचल पड़ा। शिवजी सारा शम-दम भूल काम के वश हो उनके पीछे दौड़े। आप अपनी शक्ति से उन्हें आकाश में ले गये और उनसे भोग-विलास करने लगे। पीछे गिरिजा महारानी को जब आपकी करतूत मालूम हुई, तो उन्होंने क्रोध में भर कर त्रिशूल को तो नीचे पटका और भोले भण्डारी को डाँट-डपटकर कैलाश में लाई और ऊँच-नीच समझा कर फिर समाधि में लगाया।

कई बार आपने चार मुंह वाले, सृष्टि के रचयिता, ब्रह्मा को भी अपने जाल में फंसा लिया। सुनते हैं, विधाता ने एकबार तो अपनी निज पुत्री तक के पीछे दौड़ कर अपनी घोर बदनामी कराई। इसके सिवा, एक बार ब्रह्माजी शान्तनु नामक ऋषि के पास किसी काममें गये। उन ऋषि की स्त्री अमोघा अनुपम सुन्दरी थी, पर थी पतिव्रता। उस समय ऋषि घर पर न थे। अमोघा ने आपके बैठने के लिए एक आसन बिछा दिया और पूछा, "भगवन, आप किस लिये पधारे हैं?" विधाता ने कहा, "कुछ जरूरी काम है, पर उन्हीं से कहूंगा।" ये बातें करते-करते ही आपका मन अमोघा पर मचल गया। आपको कामदेव ने ऐसा व्याकुल किया कि आपका........वहीं आसन पर निकल गया। आप शर्मिन्दा होकर चुपचाप चले आये। जरा देर बाद ही शान्तनु ऋषि भी आ गये। उन्होंने आसन को देखकर सारा हाल पूछा। अमोघा ने सारा वृत्तान्त ज्यों का त्यों निवेदन कर दिया।

सुनते ही ऋषि बोले—"धन्य कामदेव! तुम्हारी शक्ति-सामर्थ्य की सीमा नहीं, जो तुमने जगत के रचयिता ब्रह्माजी को भी मोहित कर दिया।"

सुरपति और गौतम-नारी अहिल्या की बात को कौन नहीं जानता? अहिल्या परम सुन्दरी थी। देवराज का मन उस पर चल गया। आपने उससे मिलने के बहुत कुछ दाँव-पेच लगाये, पर वह हाथ न आयी। तब आपने एक दिन तीन चार बजे रात को वहाँ जाने का विचार स्थिर किया; क्योंकि उस समय ऋषि गङ्गास्नान को चले जाते थे। आपने चन्द्रमा को साथ लिया; अतः चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर द्वार पर कुकड़ूँ कूँ, कुकड़ूँ कूँ करना आरम्भ किया। ऋषि समझे कि, अब रात का अवसान हो चला। वे उठकर नहाने चले गये। देवराज इनका रूप धर घर में घुस गये और बातें बनाकर मनमानी की। इतने में ऋषि भी स्नान करके आ गये। उन्होंने इन्हें और अहिल्या दोनों को शाप दिया। अहिल्या पत्थरकी हो गई और इन्द्रके शरीरमें भग-ही-भग हो गये।

पुराणों में ऐसी ऐसी अनेक कथायें भरी पड़ी हैं। हमने नमूने के तौर पर, तीन-चार यहाँ लिख दी हैं। किसी ने ठीक ही कहा है:—

कामेन विजितो ब्रह्मा, कामेन विजितो हरिः।
कामेन विजितः शम्भुः शक्रः कामेन निर्जितः॥

अर्थात् कामदेव ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सुरेश—इन चारों को जीत लिया। जब भगवान कामदेव ने ऐसों-ऐसों को

ही अपने वश मे करके, मनमाने नाच नचाये, तब और किसकी कही जाय ? सारांश यह, भगवान् कामदेव सबसे अधिक बलवान है, इसी से कवि महोदय, जब देवताओं को छोड़ भगवान कामदेव को ही नमस्कार करते है।

पाश्चात्य विद्वानों मे से एक गोथे नामक महापुरुष कहते है:-"Cupid is even a rogue and whoever trusts him is deceived" कामदेव सदा छल करता है, जो इसका विश्वास करता है, वह धोखा खाता है। कोई कुछ कहे, हम तो यही कहेगे कि, खूबसूरती मे बड़ी क्षमता है। खूबसूरती पुरुष को अपनी ओर उसी तरह खींचती है जिस तरह चुम्बक पत्थर लोहे को खींचता है। पोप महोदय ने कहा भी है--"Beauty draws us with a single hair" सुन्दरता एक बाल के द्वारा भी हमको अपनी ओर खींच सकती है। चैनिंग महोदय भी कहते है -'Beauty is an all-pervading presence" सौन्दर्य की सर्वत्र सत्ता है। मतलब यह है, कि पुरुष सौन्दर्य का दास है। जिसमें भी, बक़ौल लावेल महाशय के 'Earth's noblest thing, a woman perfected." साध्वी स्त्री संसार का सर्वोत्तम पदार्थ है; अतः ऐसे सर्वोत्तम से प्रेम करना और प्रेमवश उसकी गुलामी करना, कोई बुरी बात भी नहीं है। हाँ, प्रेम क्षेत्र के बाहर की गुलामी बेशक बुरी है, क्योंकि जे० जी० हालैण्ड महोदय कहते है:— Duty, especially out of the domain of love, is the veriest slavery in the world.'

प्रेम-क्षेत्र के बाहर जो कर्त्तव्य किये जाते हैं, वे घृणित से भी घृणित गुलामी से भी बुरे हैं। तात्पर्य यह है कि अपनी सती-साध्वी स्त्री या माशूका की गुलामी मे दोष नहीं, बशर्त्ते कि वह सच्ची पतिव्रता हो। सती स्त्री अपने पति का आज्ञा पालन करके, उसे हर तरह से सन्तुष्ट करके, उस पर अपना प्रभाव, रौब जमा लेती है। लेबर महोदय कहते हैं, "A chaste wife acquires an influence over her husband by obeying him." साध्वी स्त्री अपने पति का आज्ञा-पालन कर, उस पर अपना प्रभाव जमा लेती है। जब एक दूसरे की हर तरह से खातिर करता है, उसको प्यार की नजर से देखता हुआ, उसके लिए अपना तन-मन न्यौछावर करता है, तो दूसरा ऐसा कौन होगा, जो बदला चुकाने मे घाटा रक्खेगा? बस, हमारे विष्णु-भगवान जो लक्ष्मी के घर का काम धन्धा करते हैं और शिवजी गिरिजा-रानी की सेवकाई करते है,उनमे दोष ही क्या है? क्यो कि लक्ष्मी और पार्वती दोनो ही रूप यौवन और लावण्य की खान, प्रथम श्रेणी की पतिपरायणा और तन-मन से पतिसेवा करने वाली है। अब रही उनकी बात, जो पराई खूबसूरत रमणियो का दासत्व स्वीकार करते है। उनके दासत्व में सच्चा प्रेम और पवित्रता नहीं, केवल सौन्दर्य का प्रभाव है। सौन्दर्य अपने दर्शको को मदिरा की तरह मतवाला कर देता है और वे उसी नशे के वश हो, अपने होश-हवाश खो, अपनी माशूकाओ की गुलामी करने लगते हैं। कामदेव स्त्रियो का चाकर है, जिसे वह अपना शिकार चुनती है,

जिसे अपने आधीन करने की आज्ञा देती हैं, वह उसको अपने पुष्पायुध से क़ाबू में करके, अपनी स्वामिनियों के हवाले करदेता है। कामदेव ही नहीं, स्वयं परमात्मा स्त्रियो के इच्छानुसार चलता है। अँगरेज़ी मे एक कहावत है—"What woman wills, God wills" जो स्त्री चाहती है, वही परमात्मा चाहता है। स्त्री और परमात्मा की एक ही इच्छा है।

दोहा

विधि हरि हरहु करत हैं, मृगनैनी की सेव।
वचन अगोचर चरित गति, नमो कुसुमसर देव ॥ १ ॥

सार—कामदेव ने त्रिलोकी को स्त्रियों का गुलाम बना रक्खा है।

1. I bow to that Lord Kamdeva (Cupid) who has flowers for his weapon whose wonderful actions are beyond the power of speech and by whom Shambhu, the Self-born (Brahma) and Hari have been rendered constant servants of the deer-eyed women to discharge their house-hold duties

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया।
पराङ्मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः।
वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया।
समस्तभावैः खलु बन्धनं स्त्रियः ॥२॥

मन्द-मन्द मुस्कराना, लजाना, भयभीत होना, मुँह फेर लेना, तिरछी नजर से देखना, मीठी—मीठी बातें करना, ईर्षा करना, कलह करना और अनेक तरह के हाव-भाव दिखाना,—ये सब स्त्रियों में पुरुषों के बन्धन में फँसाने के लिये ही होते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥ २ ॥

स्त्रियों में हाव-भाव या नाज-नखरे स्वभाव से ही पैदा हो जाते हैं। ये हाव-भाव या नाज-नखरे पुरुषों के मोहित करने या बन्धन में बाँधने के लिये उनके अस्त्रास्त्र हैं। पुरुष उनकी रूपच्छटा की अपेक्षा उनके हाव-भावों पर जल्दी मुग्ध होता है। उनके हाव-भाव उसके दिल पर नक्श हो जाते हैं। उन्हें वह दिन-रात याद किया करता है। पुरुषों के वशीभूत करने के लिये, स्त्रियाँ उसको देख कर, होठों में हँसती या मुस्कराती हैं; कभी परके सिरकी लाज करती है और कभी बेहयाई, कभी किसी से डरने का-सा नाट्य करती है, कभी उसकी ओर नजर भर देखती है और कभी देख-कर मुँह फेर लेती है; कभी तिरछी नजर से देखती है और कभी उसको अच्छी तरह से देख या घूरकर झट से घूँघट कर लेती हैं, कभी किसी बहाने से घूंघटको हटाकर अपना चन्द्रानन उसे फिर दिखा देती है और फिर शीघ्र ही घूंघट कर लेती हैं, कभी चलती-चलती राह में-ठहर कर अपने पैरका जेवर बिछुआ प्रभृति ठीक करने लगती है। कभी कहती है—"तुम उस स्त्री के यहाँ क्यों गये ? मैं तुमसे न बोलूंगी।" पुरुष बोलना चाहता है तो कहती

है—'वहीं जाओ, मुझसे क्या काम है ? वह बड़ी सुन्दरी है, मैं उसके मुकाबले मे किस कामकी हूँ ?" इत्यादि । पुरुष यदि चूमना चाहता है, तो एक अजीब आन-बान और अदाके साथ उसके मुंहके पास से अपना मुंह हटा लेती है। अगर वह स्तनो पर हाथ डालता है, तो एक अजीब अदा से उसके हाथको झटक देती हैं, जिससे बुरा भी न मालूम हो और पुरुष उल्टा मर मिटे। अगर पुरुष किसी दूसरी के यहाँ चला जाता है या उससे और कोई अपराध हो जाता है, तो झट आँखो मे आँसू भर लाती हैं। उन आँसुओ मे कामियो को जो मजा आता है, उसे लिख कर बता नहीं सकते। बाते करती है, निहायत मीठी-मीठी और ऐसी रसघुली कि, पुरुष उनकी बातो पर ही कुर्बान हो जाता है। कहाँ तक लिखे, स्त्रियों मे जवानी के समय अनन्त हाव-भाव आप ही पैदा हो जाते है। ये उन्हे कोई सिखाने नहीं जाता। जेवर स्त्रियो के रूप को हजार गुणा बढ़ा देते है, तो नखरे लाख गुणा बढ़ा देते है।

एक बार इतिहास-प्रसिद्ध लोक-विमोहिनी* नूरजहाँ, बचपन मे, अपनी माँ के साथ, बादशाही महलो मे गई। उस समय

---

* "Beauty's tears are lovelier than her smiles"—Campbell सुन्दरी के आँसू उनकी मुसक्यान की अपेक्षा प्यारे लगते हैं।

* नूरजहाँ—संसार को प्रकाशित करने वाली ज्योति। मुगल-सम्राट जहाँगीर की मशहूर बेगम का नाम है।

नूरजहाँ को मेहरुन्निसा कहते थे। जहाँगीर* भी लड़का ही था। उसे उन दिनों सलीम कहते थे। सलीम को कबूतर उड़ाने का शौक था। शाहजादे के हाथ में दो कबूतर थे। वह उन्हें किसी को पकड़ा, और कबूतर दरबे से निकालना चाहता था। पास ही मेहर खड़ी थी। शाहजादे ने कहा, "मेहर! जरा हमारे कबूतरों को तो अपने हाथों में पकड़े रहो।" मेहर ने कहा, "बहुत अच्छा, लाइये।" शाहजादे ने मेहर को कबूतर थमा दिये और आप आगे दरबे की ओर चला गया। इतने में एक कबूतर किसी तरह मेहरुन्निसा के हाथ से उड़ गया। शाहजादे ने आकर पूछा, "हमारा एक कबूतर कहाँ है?" मेहर ने कहा, 'वह तो उड़ गया।' शाहजादे ने पूछा, "कैसे उड़ गया?" मेहर ने उस समय भोली-भाली, पर एक अजीब अदा के साथ हाथ का दूसरा कबूतर भी छोड़ते हुए कहा, "शाहजादे, ऐसे उड़ गया!" शाहजादे का दिल आज के पहले मेहरुन्निसा पर नहीं था, पर इस वक्त की एक अदा ने शाहजादे को मेहरुन्निसा का गुलाम बना दिया। आज पीछे वह मेहर को जन्म-भर न भूला। उसने मेहरुन्निसा को अपनी बीबी बनाने के लिये बड़ी कोशिशें कीं, पर उसे कामयाबी न हुई; क्यों कि बादशाह एक मामूली सरदार की लड़की से हिन्दुस्तान के शाहजादे की शादी करना उचित न समझते थे। उन्होंने झगड़ा मिटाने को मेहर की शादी शेर अफ़गन के साथ करा दी। सलीम का वश न चला; पर वह मेहर को भूला नहीं। जब वह तख्तेशाही

*जहांगीर = विश्वविजयी, भारत का एक सम्राट।

पर बैठा, उसने मेहर को बंगाल से मँगवा कर, उसके कोमल क़दमो मे अपनी ताजशाही रख दी और सदा को उसका गुलाम होना क़बूल किया। देखा पाठक! स्त्री के एक नखरे ने क्या काम किया?

हम स्त्रियो के हाव-भाव और नाजो-अदाओ पर मर मिटने वालो के चन्द नमूने नीचे देते हैं। एक साहब फरमाते हैः—

मैं तो उसी झिझक पै फिदा हूँ, कि कान को।
शब क्या हटा लिया, मेरे लाकर दहन के पास॥ जौक॥

मुझे उनका वह हाव कितना अच्छा मालूम हुआ कि उन्होने अपने कान को मेरे मुंह के पास लाकर हटा लिया। इस अदा पर मै फ़िदा हो गया।

और भीः—

ऐ जौक, मैं तो बैठ गया, दिल को थाम कर।
इस नाज से खड़े थे वह, रक्खे कमर पै हाथ॥ ज़ौक॥

जिस अन्दाज से वह कमर पर हाथ रक्खे खड़े थे, ज़ौक़! मै तो उन्हे देख कर दिल थाम कर बैठ गया; नही तो दिल चला ही था।

महाकवि नजीर ने नाजनियो की चुलबुलाहट का सीधी-सादी भाषा में कैसा चटकीला चित्र खीचा है। जरा उसकी भी चाशनी देखिये—

ये राह चलने की चुलबुलाहट,
कि दिल कहीं है, नज़र कहीं है।

कहाँ का ऊँचा, कहाँ का नीचा,

ख़याल किसको, कदम को जाका।

लड़ाएँ आँखें वो बेहिजाबी,

कि फिर पलक से पलक न मारें।

नज़र जो नीचे करे तो गोया,

खुला सरापा चमन हया का।

ये चञ्चलाहट ये चुलबुलाहट,

ख़बर न सरकी, न तनकी सुध-बुध।

जो चीरा बिखरा बला से बिखरा,

न बन्द बाँधा, कभू कबा का।

मैंने एक छोटी उम्र की नाजनी देखी, वह अपनी राह-राह चली जाती थी, पर उसके चलने में गजब की चुलबुलाहट थी। उसका दिल कहीं था और उसकी आँखें कहीं थीं। उसे ऊँचे-नीचे स्थानों तक का ख़याल न था। यह भी ख़याल नहीं था कि पैर कहाँ पड़ते हैं।

वह बेहया जब आँखे लड़ाती थी, तो इस तरह लड़ाती थी कि पलक-से-पलक न लगाती थी और अगर नजर को नीची करती थी, तो ऐसा मालूम होता था, मानो हया और शर्म का चमन ही खुल गया है।

उसमें ऐसी चञ्चलाहट और चुलबुलाहट थी, कि न उसे अपने सर की खबर थी और न शरीर की सुध-बुध थी। सिर

से ओढ़नी उतर गई है तो उतर गई, परवा नहीं। कुरती का बन्द खुला पड़ा है, तो खुला ही पड़ा है।'

दोहा

रस मे त्योंही रोप मे, दरशत सहज अनूप।
बोलनि चलनि चितौनि मे, वनिता बन्धन रूप॥ २॥

सार—स्त्री हर हालत में मर्द को प्यारी लगती है। उसका बोलना चालना और देखना प्रभृति प्रत्येक काम पुरुष को बन्धन में बाँधता है।

2 Gentle smile, emotions, bashfulness, timidity the turning of face, the side-long casting of glances, speech, jealousy, quarrel and gesture (—these) are the various qualities by which the women become the chains for men

---

[१] ये तो चञ्चलता और चुलबुलाहट उठती जवानी की सभी स्त्रियो मे होती है, पर ऐसी चुलबुलाहट, जिसका मजेदार चित्र मियाँ नजीर ने खीचा है, कुल-बधुओ मे नहीं देखी जाती और वह भी राह मे। हाँ, ऐसी चुलबुलाहट कुल-बधुओ में भी देखी जाती है, पर शादी हो जाने के दो-चार बरस बाद और अपने घर मे—अपने पति के सामने, जब कि उनकी लज्जा-शर्म और संकोच-भय प्रभृति दूर हो जाते हैं। हमारी समझ मे, यह चित्र किसी कमसिन वाराङ्गना का है।

भ्रूचातुर्यात्कुञ्चिताक्षाः कटाक्षाः ।
स्निग्धा वाचो लज्जितान्तैश्च हासाः ॥
लीलामन्दं च स्थितं प्रस्थितं च ।
स्त्रीणामेतद् भूषणं चायुधं च ॥ ३ ॥

चतुराई से भौंहें फेरना, आधी आँख से कटाक्ष करना, मधु जैसी मीठी-मीठी बातें करना, लज्जा के साथ मुस्कराना, लीला से मन्द-मन्द चलना और फिर ठहर जाना प्रभृति भाव स्त्रियों के आभरण और शस्त्र हैं ॥ ३ ॥

स्त्रियाँ कभी अपनी कमान-सी भौंहों को टेढ़ी करती है, कभी आँखे चलाती हैं, कभी लज्जा का भाव दिखाती हुई मन्द-मन्द मुस्कराती है, कभी शरीर तोड़ती हैं, कभी अँगड़ाई लेती है, कभी उँगलियाँ चटखाती है, कभी उझक-उझक कर देखती है, और कभी मुंह फेर कर दूसरी ओर देखने लगती हैं, जिससे पुरुष समझे कि यह मेरी ओर नहीं देखती; कभी घूँघट मार लेती है और कभी उसे खोल देती है, ये सब स्त्रियाँ क्यों करती है ? केवल अपना सौन्दर्य्य बढाने और पुरुषों को अपने ऊपर फिदा करके, उनसे मनमाने नाच नचवाने के लिए । पुरुषों को अपने अधीन करने के लिए, अबलाओं के पास तलवार, बन्दूक या बाण नहीं होते । उनको ईश्वर ने ये ही अमोघ अस्त्र दिये है । बन्दूक, तलवार और मैशीनगन जो काम नहीं कर सकती, वह

काम ये अस्त्र करते हैं। किसी से भी पराजित न होने वाले और बड़े-बड़े शूरवीर योद्धाओं को बात-की-बात में धराशायी करने वाले बहादुर, स्त्रियों के अस्त्रों की मार से, अपने होश-हवास खोकर इनके दास बन जाते हैं।

छप्पय

करन चातुरी भौंह, नयनहू नचन चितैवो।
प्रगटत चितकी चाव, चाव सो मृदु मुसकैवो।
दुरत मुरत सकुचात, गात अरसात जम्हावत।
उझकत इत उत देख, चलत ठिठकत छबिछावत।
ए आभूषण तियन के, अंगमाहिं शोभा करन।
अरु ये ही शस्त्र-समान हैं, पुरुष-मन-मृग बस करन ॥३॥

सार—स्त्रियों के हाव-भाव पुरुषों के मारने के लिए अस्त्र और उनका सौन्दर्य्य बढ़ाने के लिए आभूषण है।

3 The skilfulness in turning the brows, the casting of oblique glances, sweet talk, smiling with shyness, walking slowly by gestures and stopping at intervals (these) are the ornaments as well as the weapons for women.

यह है, स्त्रियाँ स्वभाव से बड़ी ही सुन्दरी होती हैं। इनकी असाधारण सुन्दरता और अनूप रूप पर किसका मन लहालोट नहीं हो जाता? इनकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर ही लोग इनके क्रीत-दास हो जाते और दुःख-सुख की परवा न कर, दिन-रात इनके लिए परिश्रम करते हैं।

छप्पय

करत चन्द्र इव विशद बदन, अद्भुत छवि छाजत।
कमलन बिहँसित नैन, रैन दिन प्रफुल्लित राजत।
करत कनक द्युतिहीन, अंग-आभा अति उमगत।
अलका जीते भौंर, कुचा कर-कुम्भ लिये हत।
मृदुता मरोर मारे सुमन, मुख-मुक्ता नृगमद करन।
ऐसी अनूप तिय नारि, ओह भूप नहिं गिनत मन॥२॥

सार—नाना प्रकार के हाव-भाव स्त्रियों के नाना प्रकार के अस्त्र हैं उनसे ही वे पुरुषों को अपने वश में करतीं और अपना गुलाम बनाती हैं।

2. The natural ornaments of a woman are her face which puts to shame even the moon, her eyes which laugh at the lotuses, the colour of her body which dims even the lustre of gold, her hair which surpasses in beauty the swarm of bees, her breast that outstrips the beauty of

(३) कान, (४) जीभ, और (५) त्वचा। आँख का काम देखना, सूंघना, कान का सुनना, जीभ का चखना और त्वचा का स्पर्श करना है। आँख रूप देखना चाहती है, नाक सुगन्धित पदार्थ सूँघना, कान रसीली बातें सुनना, जीभ सुस्वादु पदार्थ चखना और त्वचा कोमल वस्तु छूना चाहती है। कामी पुरुषों की पाँचों इन्द्रियोंकी सन्तुष्टी के लिये, भगवान ने एक सुन्दरी नारी ही पैदा करदी है। मतलब यह कि रसिकों की पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की संतुष्टिके सामान एक कामिनी में ही मौजूद है। मृगनयनियों के सुन्दर मुख आँखों के देखने के लिये है। उनके मुंह की सुगन्धित भाप नाकके सूंघने के लिये है। उनके मिश्री से भी मीठे और मधुर वचन कानों के सुनने के लिये हैं। उनके निचले होंठ का अमृत-समान स्वादिष्ट रस जीभ के चखने के लिये है और चमड़े को छूकर सुखी होने के लिये उनका मखमल से भी कोमल शरीर या उनके पैरों के तलवे हैं, तथा ध्यान करनेके लिये उनकी नयी जवानी और उनकी नाज़ो-अदा है। सारांश यह कि सारे सुख एक सुन्दरी ही मे मौजूद है।

अगर कोई यह कहे कि नहीं जी, यह सब रमणियों की लीला, उनके बढ़ावे हैं, तो हम यही कहेंगे कि आप उनसे पूछिये, जिन्होंने इन सबका आनन्द अनुभव किया या उनका मजा उठाया है। जिसने उनका चन्द्रमा के समान प्रेम रस से पूर्ण मुख देखा है, वही कह सकता है कि उनका मुख देखने से रूप देखने की इच्छुक नेत्र इन्द्रिय की तृप्ति होती है या नहीं। जिसने ज्ञात [illegible] मद, कस्तूरी को भी मात करने वाली उनके मुख की सुगन्धका

मजा लिया है, वही कह सकता है कि उस सुगन्ध से बढ़कर और भी कोई सुगन्ध नासिका की तृप्ति करने वाली है या नहीं। जिसने उनके मखमल की भी गरमी को मात करने वाले शरीर या पैरो के तलवों पर हाथ फेरे है, वही कह सकता है कि यह बात कहाँ तक सच है। जिसने उनकी मधुर और रसीली एवं कानो मे अमृत ढालने वाली बातें सुनी है, वही कह सकता है कि उनकी मीठी-मीठी बातों में क्या मजा है। जिसने उनके रूप-यौवन और हाव-भाव तथा विलासों का ध्यान किया है, वही कह सकता है कि उनके ध्यान मे कैसा आनन्द है। जिसने ब्रह्म का ध्यान किया है, वही कह सकता है कि ब्रह्म के ध्यान में वह आनन्द है, जिस की समता त्रिलोकी के किसी आनन्द मे नहीं है। जिसने ब्रह्म का ध्यान ही नहीं किया वह ब्रह्मानन्द के वर्णनातीत आनन्द की बात को क्या जाने ? जिसने अनुपम सुन्दरी मृगनयनी के होठों से होठ लगाकर अमृत पिया है वही कह सकता है कि सुन्दरी के निचले होठ मे अमृत है या नहीं। महाकवि नज़ीर कहते हैं और ठीक ही कहते हैं:—

> सागिर के लब से पूछिये, इस लब की लज़्ज़तें।
>
> किस वास्ते, कि खूब समझता है लब की लब ॥

उसके ओठो का स्वाद प्याले के ओठो से पूछिये; क्योंकि ओठों की बात ओठ ही समझता है।

छप्पय

कहा देखिये योग्य ? प्रिया को अति प्रसन्न मुख।
कहा सूंघिये सोंधि ? श्वास सौगन्धि हरत दुख।
कहा दीजिये कान ? प्राणप्यारी की बातन।
कहा लीजिये स्वाद ? अधर के अमृत अघातन।
परसिये कहा ? ताको सुवपु, ध्यान कहा ? जोबन सुछवि।
सब भाँते सफल सुख को सदन, जान सुयश गावत सुकवि ॥७॥

सार—(एक सुन्दरी कामिनी में पुरुष की सारी इन्द्रियों की तृप्ति का ममाला है।)

7. For lovers what is the best sight worth seeing ? The lovely and beautiful face of a lotus-eyed woman What is the best thing worth smelling ? The vapour of her mouth. What is the best thing for hearing ? Her sweet voice. What object has the best taste ? The enjoyment of her leaf-like lips. What is best-among the objects of touch ? Her body And what is the best thing for meditation ? Her youth and the pleasure arising from it.

एताः स्खलद्वलयसंहतिमेखलोत्थ-
झंकारनूपुरवारद्दतराजहंस्यः ॥
कुर्वन्ति कस्य न मनो विवशं तरुण्यो
वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः ॥८॥

चञ्चल कङ्कन, ढीली करधनी और पायजेबों के घुंघरुओं की मधुर झङ्कार से राजहंसों को शरमाने वाली नवयुवती सुन्दरियाँ, भयभीत हिरनी के समान कटाक्ष करके किसके मन को विवश नहीं कर देतीं ? ॥ ८ ॥

करधनी और पायजेब प्रभृति अलङ्कारों के मधुर-मधुर शब्दोंसे राजहंसनियों का निरादर करने वाली नवयुवतियाँ, जब भड़की हुई भोली हिरनी की तरह अपनी तीखी नजर का तीर चलातीहैं, तब बड़े-बड़े बहादुर उनके वशीभूत होकर उनकी गुलामी करने लगते हैं। मनुष्य तो कौन चीज है, देवता तक ऐसी कामिनियों के कटाक्ष-बाणों से पराजित होजाते हैं। अब इनकी निगाह के तेज तीर से जो परास्त न हो, अपनी रक्षा करले, उसे हम क्या कहें, सो हमारी समझमें नहीं आता। भोले-भाले पाठक ! इनकी कटाक्षों की मार को मामूली मार न समझें। महाकवि दाग कहते हैं और ठीक ही कहते हैं.—

> तीर तेरा मिज़गाँ से बढ़कर नहीं।
>
> कुछ खटकते हैं, इसी नश्तर से हम ॥

तेरी भौंहों में जो काट है, वह तेरे तीर में नहीं। इसीलिये मुझे तीर से तेरे भौंह रूप नश्तर का हर समय खटका लगा रहता है। मतलब यह कि तीर की मार का इलाज है, पर कामिनी के कटाक्ष बाण का इलाज नहीं।

दोहा

नूपुर किंकिन किंकिणी, बोलत अमृत बैन ।
काको मन नहिं बस करत, मृगनैनिन के नैन ? ॥ ८ ॥

सार—नाजनियों के निगाहे तीर से न घायल होने वाला करोड़ों में कोई एक होता हो, तो होता हो !

8. Which mind is there that does not go out of control by the casting of the eyes like that of a frightened hind of the young woman, the sounds of whose restless bracelets and the waist-chain and the tinklings of whose anklets defeat the sweet sound of swans even.

कुंकुमपंककलंकितदेहा गौरपयोधरकम्पितहारा ।
नूपुरहंसरणत्पदपद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामा ॥९॥

जिसकी देह पर केसर लगी है, जिसके गोरे-गोरे स्तनों पर हार झूल रहा है और नूपुर रूपी हंस जिसके चरण कमलों में मधुर-मधुर शब्द कर रहे हैं, ऐसी सुन्दरी इस पृथ्वी पर किसके मन को वश में नहीं कर लेती ? ॥९॥

खुलासा—जिसकी देह पर केसर लगी है, जिसके सघन पीन पयोधरों पर मोतियों का हार धीरे-धीरे हिल रहा है, जिसके कमल-जैसे चरणों से बाजे की मधुर-मधुर झंकार निकल रही है, वह सुन्दरी इस जगत मे किसी को भी अपने अधीन किये बिना

नहीं छोड़ती, जो उसकी नजरों तले आता है, वही उसका गुलाम हो जाता है। परन्तु पुरुष जो ऐसी मनमोहिनी नारी के वश में नहीं होता, उसके रूप-लावण्य और नाजो-अदा पर नहीं मर मिटता, वह सच्चा शूरवीर और मोक्ष का अधिकारी है।

दोहा

हार हलें कुचकनक लग, केशर रञ्जित देह।
नूपुरध्वनि पदकमल की, कैहि न करें बस येह ? ॥६॥

भाव—जिनके गोरे-गोरे बदन पर केसर लगी है, जिनकी नारंगियों-सी सुगोल छातियों पर मोतियों के हार हिल रहे हैं और जिनके चरणकमलों की पायजेबों से छमा-छम की मीठी मनोहारिणी आवाजें आती हैं, वे मृग-नयनी किसे अपने वश में नहीं कर लेतीं ?

9. Whose minds are not overpowered on this earth by such beautiful women whose body is decorated by saffron and sandal and on whose white breasts garlands are hung and in whose lotus-like feet anklets sound like swans ?

नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधा
ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम् ॥
याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातैः
शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ताः ॥१०॥

स्त्रियों का "अबला" कहने वाले श्रेष्ठ कवियों की बुद्धि निश्चय ही उल्टी है। भला, जो अपने नेत्रों के चञ्चल कटाक्षों से महाबली इन्द्रादिक देवताओं को भी मार लेती हैं, वे "अबला" किस तरह हो सकती हैं ? ॥१०॥

जो कोमलाङ्गी कामिनियाँ, बिना अस्त्र-शस्त्रों के अपनी दृष्टि मात्र से, जगत-विजयी योद्धाओं की तो बात ही क्या है, त्रिलोकी का पलक मारते संहार कर डालने की शक्ति रखने वाले शङ्कर और महाबली इन्द्रादिक देवताओं को भी अपने वश में करके, मनमाने नाच नचाने की शक्ति रखती है और उन्हें अपने इशारों पर नचाती है, उन्हे "अबला" कहने वाले कवि निश्चय ही पागल हैं, उनकी मति मारी गई है। सबलाओं को अबला कहने वाले यदि मूर्ख नहीं, तो क्या अक़्लमन्द हैं ?

दोहा

कामिनि को अबला कहत, ते नर मूढ़ अचेत।
इंद्रादिक जीते दृगन, सो अबला किहि हेत ? ॥१०॥

सार—स्त्रियाँ अपनी नजर से भूतल के जबर्दस्त-से-जबर्दस्त योद्धा को पराजित कर सकती हैं, इसलिये उन्हें अबला कहना भूल है।

10 Those great poets, who have called women powerless, have surely thought just in the opposite way. How can they be said to be so

whose casting of the moving eye-lids subdues even Indra and others

नूनमाज्ञाकरस्तस्याः सुभ्रुवो मकरध्वजः ।
यतस्तन्नेत्रसंचारसूचितेषु प्रवर्तते ॥१३॥

कामदेव निश्चय ही सुन्दर भौंहवाली स्त्रियों का आज्ञा पालन करने वाला चाकर है, क्योंकि जिन पर उनके कटाक्ष पड़ते हैं उन्हीं को वह जा दबाता है ॥११॥

खुलासा—निस्सन्देह, कामदेव सुन्दर भौंहवाली स्त्रियों की आज्ञा के वशवर्त्ती होकर चलने वाला सेवक है। वह उनके इशारों पर चलता है। जिनकी ओर वे सैन कर देती हैं, वह उन्हीं को जा मारता है। अव्वल तो स्त्रियाँ स्वयं ही बलवती होती हैं। अपने ही कटाक्षों से बड़े-बड़े शूरवीरों के छक्के छुड़ा सकती हैं, फिर कामदेव उनके हुक्म में है, यह और भी गजब की बात है। ऐसी स्त्रियों से कौन अपनी रक्षा कर सकता है? केवल वही उनसे बच कर रह सकता है, जो उनके दृष्टिपथ में न आवे। शायद इसीलिये मोक्ष-कामी पुरुष मनुष्यों की बस्तियाँ छोड़ कर, निर्जन वनों में जाकर, आत्मोद्धार की चेष्टा करते हैं, क्योंकि वन में न कामिनी होगी और न वे अपने सेवक कामदेव को पञ्चशर चला कर अपना शिकार मारने का हुक्म देंगी।

दोहा

कामिनि हुक्मी काम यह, नैन सैन प्रगटात ।
तीन लोक जीत्यो मदन, ताहि करत निज हात ॥ ११ ॥

सार—कामदेव स्त्रियों का सेवक है ।

11 Surely Kamdev (Cupid) is the obedient servant of women, because he, at once overpowers that man who is made their mark

केशाः संयमिनः श्रुतेरपि परं पारंगते लोचने ।
चान्तर्वक्त्रमपि स्वभावशुचिभिः कीर्णं द्विजानां गणैः ॥
मुक्तानां सतताधिवासरुचिरं वक्षोजकुम्भद्वयं-
चेत्थं तन्वि वपुः प्रशांतमपि ते क्षोभं करोत्येव नः ॥ १२॥

ऐ कृशाङ्गि ! हे नाजनी ! तेरे बाल साफ-सुथरे और सवारे हुए है, तेरी आँखें बड़ी-बड़ी और कानों तक है, तेरा मुख स्वभाव से ही स्वच्छ और सफेद दन्त पंक्ति से शोभायमान है तेरे कुचो पर मोतियो के हार झूम रहे हैं, पर तेरा ऐसा शीतल और शान्तिमय शरीर भी मेरे मन मे तो विकार ही उत्पन्न करता है, यह अचम्भे की बात है। ॥ १२ ॥

नोट—इस श्लोक मे जो 'संयमिन, श्रुतेरपि, द्विजाना और मुक्ताना' शब्द आये है, उनके दो-दो अर्थ है। उनके इस्तेमाल से कवि महोदय ने अपूर्व चमत्कार दिखाया है। इसी से इस श्लोक के दो अर्थ हो गये है।

एक अर्थ नीचे लिखा ही है, और दूसरा नीचे लिखते हैं, पर पहले उन शब्दों के दो-दो अर्थ बता देना उचित समझते हैं। संयमित = सँवारे हुए और जितेन्द्रिय। श्रुतेरपि = कानों तक पहुँचे हुए और वेदशास्त्र पारङ्गत. काननचारी और वनचारी। द्विजाना = दाँत, ब्राह्मण। मुक्ताना = मोती और मुक्त पुरुष।

दूसरा अर्थ।

हे कृशाङ्गि! ऐ तरुणी! तेरे बाल जितेन्द्रिय हैं, तेरे नेत्र वेदशास्त्र-पारङ्गत और काननचारी हैं, तेरा मुख पवित्र है और उसमें ब्राह्मणों का निवास है, तेरी छातियों पर मुक्त पुरुषों का निवास है इसलिये तेरा शरीर सतोगुण का धाम है, अतः उसे शीतल और शान्तिमय होना चाहिये; पर, है उलटी बात! तेरे सतोगुणी शरीर से मुझे शान्ति मिलनी चाहिये; पर उससे मेरे मन में उलटी अशान्ति या क्षोभ अथवा अनुराग उत्पन्न होता है, यह आश्चर्य्य की बात है!

छप्पय

संयम राखत केश, नयनहु काननचारी।
मुख माँहि पवित्र रहत, द्विजगन सुखकारी।
उरु पर मुक्ताहार, रहत निशि दिन छवि छायो।
आनन चन्द-उजास, रूप उज्ज्वल दरसायो।
तेरो तन तरुणी! मृदुल अति, चलत चाल धीरज सहित।
सब भांति सतोगुण को सदन, तऊ करत अनुराग चित ॥१०॥

नोट—इस कविता से भी दूसरा अर्थ साफ समझ मे आता है। तेरे बाल संयमी हैं, नेत्र कानन्चारी हैं, मुख मे पवित्र सुखकारी ब्राह्मणों का निवास है, छातियों पर मुक्त पुरुषों का हार है, मुख चन्द्रमा के समान है, शरीर नाज़ुक है, तू धीमी-धीमी चाल चलती है। इन सब लक्षणों से तेरा शरीर सतोगुण का घर है। सतोगुणी शरीर से विकार या क्षोभ उत्पन्न हो नहीं सकता; फिर भी तेरा शरीर अनुराग पैदा करता है, यह अचम्भे की ही बात है।

सार—स्त्री का शरीर, सब तरह से सतोगुणी, शीतल और शान्तिमय होने पर भी, पुरुष के मन मे क्षोभ ही करता है!

12. O women of slender constitution, (you) whose hair is well controlled, whose eyes are outstretched up to ears whose mouth is filled with naturally clean teeth and on whose breasts pearls are always shining, though your this frame is full of calmness yet it disturbs us *

* The reference in this shloka have double meanings. Sanyami—means controlled as well as bound, Shurti—means Vedas as well as ears, Dwija - means Brahmins as also teeth, Mukta—means liberated souls as well as pearls In the body of a beautiful girl we find the hairs well bound up—this is control, eyes stretched up to ears—and the other meaning is it goes beyond the knowledge of Vedas, mouth full of beautiful teeth, the other meaning is that venerable Brahmins are connected with it, breast adorned by pearls, the other meaning is even the liberated souls are connected with it Hence taking one side of the meaning, we find that woman.

मुग्धे धानुष्कता केयम पूर्वा त्वयि दृश्यते ।
यथा हरसि चेतांसि गुणैरेव न सायकैः ॥१३॥

हे मुग्धे सुन्दरी ! धनुर्विद्या में ऐसी असाधारण कुशलता तुझ में कहाँ से आई कि बाण छोड़े बिना केवल गुण* से ही तू पुरुष के हृदय को बेध देती है ॥१३॥

हे कमसिन भोली-भाली नाजनी ! तैने ऐसी ग़जब की तीरन्दाजी किससे सीखी, जो बिना तीर चलाये ही, केवल कमान की डोरी छूकर ही तू मर्द के दिल को छेद देती है ?

उस्ताद जौक़ ने कहा है—

तुफंगा तीर तो ज़ाहिर, न था कुछ पास कातिल के ।
इलाही फिर जो दिल पर, ताक के मारा तो क्या मारा ?॥

बड़ा आश्चर्य है, उसके पास न तीर था, न पिस्तौल । पर हे परमेश्वर, उसने मेरे दिल पर क्या चीज ताककर मारी, जो मैं लोट-पोट हो गया ?

मौलाना हाली कहते है,—

था कुछ न कुछ, कि फाँस सी इक दिल मे चुभ गई ।
माना कि उसके हाथ में, तीरो सना न था ॥

---

whose body is thus full of signs of calmness is also very attractive and disturbing to us.

* गुण= (१) चतुराई, (२) रस्सी, जिससे धनुष के दोनो कोटि बाँधे जाते हैं ।

महाकवि ग़ालिब कहते है —

इस सादगी पै कौन न मर जाये ऐ ख़ुदा!
लड़ते हैं और हाथ मे तलवार भी नहीं ॥

दोहा

अति अद्भुत कमनैत तिय, कर मे बाण न लेत।
देखो यह विपरीत गति, गुण ते बाधे देत ॥१३॥

(सार—स्त्रियों के पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं रहता, वे केवल अपनी चतुराई से ही पुरुषों को वश में कर लेती है, यह अचम्भे की बात है।)

13. O beautiful girl, how nice is your skilfulness in the use of the bow, because you do not pierce the heart of men by arrows but by only bending the bow (in other words by your charms only).

मति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारारवीन्दुषु ।
बिना मे मृगशावाच्या तमोभूतमिदं जगत् ॥१४॥

यद्यपि दीपक, अग्नि, तारे, सूर्य और चन्द्रमा सभी प्रकाशमान पदार्थ मौजूद हैं, पर मुझे एक मृगनयनी सुन्दरी बिना सारा जगत् अन्धकारपूर्ण दीखता है ॥१४॥

खुलासा - यद्यपि दीपक, चिराग, आग, सितारे, सूरज और चॉद जैसे सदा थे, वैसे ही अब भी है; ये जिस तरह पहले

अन्धकार नाश करके उजियाला करते थे. उसी तरह अब भी कर रहे हैं; परन्तु मुझे तो एक मृगनयनी प्यारी बिना सर्वत्र अँधेरा-ही अँधेरा नजर आता है। तात्पर्य यह है कि घर में सब कुछ होने पर भी, एक स्त्री बिना घर शून्य निर्जन वन-सा मालूम होता है।

पण्डितेन्द्र महाराज जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास" में कहते हैं :—

हरिणीप्रेक्षणा यत्र गृहिणी न विलोक्यते।
सेवितं सर्व सम्पद्भिरपि तद्भवनं वनम् ॥

जिस घर में मृगनयनी गृहणी नहीं दीखती, वह घर सर्व सम्पत्ति सम्पन्न होने पर भी वन है।

सच है, घर में चाहे पुत्र हों, पुत्र वधुएँ हों, नौकर-चाकर और दास दासी हों, हाथी-घोड़े और रथ-पालकी प्रभृति सभी ऐश्वर्य के सामान हों, पर एक हिरनी के-से नेत्रों वाली प्यारी न हो तो वह घर सर्व सम्पदायें होने पर भी, निर्जन वन की तरह शून्य है। संसार में घर-गृहथी का सच्चा आनन्द सुन्दरी प्राण-प्यारी से ही है। महाकवि नजीर कहते हैं :—

मै भी है मीना भी है सागिर भी है साकी नहीं।
दिल में आता है, लगा दें आग मैखाने को हम ॥

इस समय सारे कामोद्दीपन करने वाले ऐश-आराम के सामान—सुरा-सुराही आदि मौजूद हैं; पर है क्या नहीं ?

केवल वही, जिसके लिये इन सब वस्तुओं की आवश्यकता हुई। इससे अब हौली ऐसी बुरी जान पड़ती है कि जी चाहता है कि उसमें आग लगा दूँ; अर्थात् सब कुछ मौजूद है पर एक नाजनी नहीं है; इससे मुझे सब बुरे लगते है। स्त्री बिना सारे आनन्द फीके है।

जिन्होंने स्त्री का सुख नहीं भोगा है, जिन्हें स्त्री रत्न की कीमत नही मालूम, जो नारी रहस्य को नहीं जानते, जो स्त्री को पैर की जूती-मात्र समझते है, वे हमारी इन बातो को पढ़ कर हँसेंगे, हमे स्त्री दास या स्त्रैण कहेगे। जो जिसकी कीमत जानता है, वही उसकी कदर करता है; मोती बहुमूल्य होता है, पर भीलनी उसे पाकर फेंक देती है और जौहरी उसे हृदय से लगा लेता है। जो जिसके रहस्य को जानता है, वही उसके सम्बन्ध मे कुछ कह सकता है। मौलाना हाली ठीक कहते है —

हक़ीकत महरमे असरार से पूछ।
मज़ा अंगूर का मैख्वार से पूछ॥
दिले महजूर से सुन लज्जते वस्ल।
निशाते आफ़ियत बीमार से पूछ॥

जो सब तरह की बातें जानता है, तत्त्वज्ञ या रहस्यज्ञ है, उसी से तत्त्व की बात पूछनी चाहिये। अंगूर मे क्या मजा है, यह अंगूरी शराब पीने वाले से पूछना चाहिये। वही उस विषय मे कह सकता है।

जिस दिल ने माशूका से मिलने के लिए अनेक तरह की तकलीफें

उठाई है, उसी से वस्ल का मजा या मिलने के आनन्द की बात पूछनी चाहिये। जिस रोगी ने अनेक तरह के कष्ट उठाकर आरोग्य लाभ किया है, वही तन्दुरुस्ती की क़ीमत जानता है।

हमें भी स्त्रियो के सम्बन्ध में थोड़ा-बहुत अनुभव है, हमने उनके संयोग और वियोग दोनो ही देखे है, उनकी सेवा-शुश्रूषाओं से सुखी और उनकी मंत्रणाओं से लाभान्वित हुए है, अतः हम भी जोर के साथ कहते हैं कि निश्चय ही स्त्री-बिना संसार के सभी सुखैश्वर्य्य अलोने, फीके और बेमज़े हैं। स्त्री ईश्वर के संसार रूपी बगीचे का सर्वोत्तम फूल है। उसी से ईश्वर की सृष्टि की शोभा है। अगर स्त्री न होती, तो यह जगत अन्धकारपूर्ण, निर्जन और भयानक होता। जिस करोड़पति के घर में सती स्त्री नहीं है, उसका घर साक्षात् श्मशान है और जिस दरिद्री के घर मे पतिव्रता, लज्जावती और मधुरभाषिणी स्त्री है, उसका घर नन्दन-कानन है। देखिये, संसार के प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानो और महापुरुषो ने नारी-जाति के सम्बन्ध मे क्या कहा है।

स्त्री-महिमा

हे स्त्री! स्वर्ग मे क्या है, जो तुझ में नही? अद्भुत ज्योति, सत्य, अनन्त सुख और अनादि प्रेम, सभी तुझ मे है।—आट्वे

स्त्री इस संसार का रमणीक प्रदेश है। इस प्रदेश मे विश्वास-तरु लहलहा रहे हैं, आनन्द के फूल खिल रहे हैं, हर्ष-विहग

कलरव कर रहे हैं तथा निवृत्ति और विश्वास की नदियाँ बह रही हैं। यहाँ शोरोगुल का नाम भी नहीं है। —लार्ड बैरन

स्त्री पुरुष का आधा श्रेष्ठ भाग है*। पुरुष जब तक शादी नहीं करता, अधूरा रहता है। स्त्री एक तरह का तीर्थ है। विधाता हमें उसकी यात्रा को भेजता है। स्त्री पुण्यात्मा के लिए स्वर्ग है और दुष्ट के लिए स्वर्ग-सोपान का पहला पद। स्त्री एक ख़ज़ाना है। जिस पुरुष के पास यह ख़ज़ाना नहीं, वह अपने क़र्ज़ को अदा कर नहीं सकता, यानी अपने पितरों का ऋण चुका नहीं सकता। —शेले

---

* हमारे भगवान् मनु ने भी यही बात कही है। उन्होंने कहा है कि विधाता ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो भाग कर, आधे अंग से पुरुष और आधे से स्त्री को पैदा किया।

पुरुष का नाम मनु और स्त्री का नाम शतरूपा हुआ। अँगरेज़ों और मुसल्मानों के यहाँ भी लिखा है कि पहले आदम पैदा हुआ और फिर हव्वा (Adam and Eve)। मनु से मनुष्य शब्द और आदम से आदमी शब्द बना। संसार का पहला पुरुष मनु या आदम था और पहली स्त्री शतरूपा या हव्वा थी। इन्हीं से जगत् की उत्पत्ति हुई। जब तक आदम को हव्वा न मिली, तब तक उसे बाग़े अदन या नन्दन-कानन उजाड़ से भी बुरा मालूम होता था।

व्यास-संहिता में लिखा है—जब तक विवाह नहीं होता, तब तक पुरुष अर्द्ध देह रहता है। विवाह होने के बाद पुरुष पूर्ण देह होता है।

हे स्त्री ! तू रात का तारा और प्रातःकाल का हीरा है। तू ओस का कतरा है, जिससे काँटे का मुंह भी मोतियों से भर जाता है। वह रात अँधेरी और वह दिन फीका मालुम होता है, जबकि तेरी आँखो की रोशनी दिल को ठण्डा नही करती। हृदय का घाव बिना तेरे मधुर होंठो के अच्छा हो नहीं सकता। विपत्ति मे तू सहायक होती है।

हे अबला ! तेरे शरीर और आत्मा मे एक जादू है। जिधर हम जाते है उधर तेरी ज्योति हमें राह दिखाती है। चाहे गरम-से-गरम देश हो और चाहे शीतल-से-शीतल देश हो, अगर तू वहाँ मौजूद है, तो वहाँ भी आनन्द ही है। —टामस मोर

सलाह या मशवरा करने के लिए स्त्री पुरुष से अच्छी है। जब कभी किसी मामूली-सी बात से मेरा दिल घबरा उठता है, तब स्त्री की मदद मिलने मे मुझे ऐसा मालूम होता है, मानो यह बात ऐसी नही है जिससे मुझे दु:खी होना पड़े। (स्त्री सलाह देने में इतनी होशियार क्यो ?) पुरुष को हर चीज से काम पड़ता है, उसे बहुत से झंझटो का सामना करना पडता है, इसलिए वह छोटी-छोटी बातों से घबरा उठता है. लेकिन स्त्री इतने झंझटो से सम्बन्ध नहीं रखती, वह तटस्थ पुरुप की तरह हरेक बात को बाहर से देखती रहती और उनके यथार्थ मूल्य को जानती है; इसी से वह उलझन को सहज मे सुलझा सकती है। शास्त्रो के पढने मे वह मर्दों से कम हो तो हो, पर उसकी नैसर्गिक प्रज्ञा— स्वाभाविक वुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म होती है। —जेम्स नार्थ-कोट।

पतिव्रता स्त्री ईश्वर की सृष्टि की उत्तम-से-उत्तम औषधियों मे सर्वश्रेष्ठ है। वह पति के लिये देवता और सारे गुणो की मूर्त्ति है। वह पति का बहुमूल्य हीरा और जवाहिरात का खजाना है। उसकी आवाज़ मे मधुरता और उसके मुस्कराने मे आनन्द है। उसकी भुजा उसकी शरण और उसकी तन्दुरुस्ती की दवा है। उसकी मिहनत उसकी दौलत और उसकी किफ़ायतशारी उसकी लायक मुन्तजिम है। उसके होठ उसके मंत्री और उसकी प्रार्थना उसकी सर्वोत्तम सहायिका है। --जरमी टेलर

तुमने कई बार देखा होगा कि जिस सवाल को तुम घण्टो मे भी हल नहीं कर सकते, उसे औरते क्षण भर मे हल कर देती है और उनका जवाब निहायत दुरुस्त और सही होता है

निस्सन्देह सारे संसार का आनन्द भार्या शब्द मे है। दिन भर के काम-धन्धो और झगडो से निपट कर जब मर्द रात को घर मे आता है, तब उस थके हुए को आग जलती हुई मिलती है, खाना तैयार रहता है और प्रेममयी पत्नी हँसती हुई उसका स्वागत या इस्तक़बाल करती है। घर मे आनन्द की ज्योति फैल जाती है। --नौवेलिस

हे स्त्री! दिल की बेहोशी को रोकना तेरा ही काम है। जब आश्वासन की ज़रा सी उम्मीद नहीं रहती, तब दुःख को बँटाना तेरा ही काम है। संसार की शोभा और जिन्दगी का मजा तुझमे ही है। संसार की भलाई ही तेरा काम है और उसी परोपकार मे तुझे प्रसन्नता है। --ग्रहम

स्त्री की दृष्टि में ईश्वरीय प्रकाश है। वह एक मीठी नदी है। उसी में पति अपनी प्यास बुझा सकता और अपने शोक-दुःखों से छुटकारा पा सकता है। पति के दुःख में स्त्री ही एकमात्र शरण और आनन्द का स्थान है। —जरमि टेलर

पुरुष के जीवन का सोता स्त्री की छाती है। वही उसे बात करना सिखाती और वही उसके आँसू पोंछती है। बुरे समय में जब सब उसे छोड़ कर अलग हट जाते हैं, तब वही उसकी खबर लेती और गरम निःश्वासों को शीतल करती है।

—लार्ड बैरन

पति के लिए स्त्री के सच्चे प्रेम से जियादा कुछ भी प्यारा नहीं है। पृथ्वी पर स्त्री के सच्चे और दृढ़ प्रेम से बढ़कर सुखदाई चीज नहीं। ईश्वर को भी मधुरभाषिणी और पवित्र स्त्री से अधिक कोई चीज प्यारी नहीं। —राबर्ट ब्राउन।

प्रिये! आओ। मेरे पास बैठ जाओ, क्योंकि प्रातःकालीन प्रकाश से ईश्वरीय ज्योति निकल रही है। प्रार्थना करने का समय है, पर तुम बिना मुझसे प्रार्थना नहीं होती। आओ, दोनों मिल कर प्रार्थना करें। तुम ईश्वर से मेरा हाल कहना और मैं तुम्हारा कहूँगा। —एलिन कनिंघम

ईश्वर न करे, उसके पति की हार हो अथवा वह बीमार हो जावे। पराजित पति को वह धीरज देगी और रोगार्त्त की सेवा-शुश्रूषा करेगी। अगर पति नाराज हो जायगा तो वह नाराज

न होगी, उल्टे उसका हँसता हुआ चेहरा उसके शोक को हरेगा। वह जिन्दगी-भर उसकी खिदमत करेगी। अगर वह पहले मर जायगा, तो वह उसके कुटुम्ब की खबर लेगी, उसके मानको स्थिर और इज्जत को कायम रखेगी, उसके चेहरे से बुद्धि बरसती है और उसकी ज़ीभ से मिहरबानी टपकती है। —बिशप हारन

हे स्त्री! तू धन्य है। तेरा करुणामय हाथ विपद् के भयानक वन में भी आनन्द के बाग लगाता है। जो नीच तुझे केवल क्षण-भर दिल खुश करने का खिलौना समझता है, उसका दिल मैला है, वह तेरे गुणो को नही जानता। —ब्रैसफर्ड

(संसार-वाटिका मे स्त्री सबसे अच्छा फूल है। उसका लालित्य, उसकी सुगन्ध और मनोहरता विचित्र है।) —थैकरे

(समुद्र के भीतर का खजाना इतना महँगा नही, जितना कि वह आनन्द जो स्त्री से पुरुष को मिलता है।) —मिल्टन

सुशीला स्त्री पति का परम स्नेही मित्र है। उसकी सचाई ईश्वरीय नियम की तरह अटल है। उसकी पवित्रता दैवी प्रकाश की भाँति निर्दोष है। पति मौजूद रहे या नामौजूद रहे, उसे अपनी स्त्री पर पूरा भरोसा रहता है कि उसकी प्यारी चीजो को, खास कर उसकी सबसे प्यारी चीज अपने तई,वह रक्षित रखेगी, जाने न देगी। वह अपने ऐसे विश्वासी मंत्री के भरोसे बेफिक्र और निर्भय होकर काम पर जाता है। वह अपने शृङ्गार मे फिजूलखर्ची नहीं करती, सभी कामों मे किफायत से काम लेती

है। पति को जिस चीज की जरूरत होती है, उसे ही लाकर हाजिर कर देती है। सदा उसका भला चाहती है। उसका रत्ती-भर नुक़सान होने नहीं देती। कभी भी उसे शोकार्त्त या रञ्जीदा होने नही देती। अगर पति को शोक होता है तो हर लेती है और अपना विश्वास बढ़ाती रहती है। —विपत्त हारन।

संसार मे कोई भी चीज सुन्दरी, पवित्रात्मा, विनोदशीला, और नारी से अधिक मनोहर नहीं। —हण्ट

स्त्री की आँखो मे ईश्वर ने दीपक जला रखे हैं, ताकि भूले-भटके पुरुषो को उन चिरागो की रोशनी मे स्वर्ग की राह दीख जावे। —विलिस

मामूली नौजवानो को स्त्रियो मे कोई गुण न दीखता हो तो न दीखता हो, पर मेरी नजर मे तो वह देवी से कम नहीं।

—वाशिङ्गटन आयंविंग

जब तक पुरुष पर आफत नहीं आती, तब तक उसे अपनी स्त्री के गुणो का पता नहीं लगता। विपद् आने पर उसे मालूम हो जाता है कि उसकी स्त्री सच्ची देवी है। —वेलवर

कण्टक पूर्ण शाखा को फूल सुन्दर बना देते है और गरीब-से-गरीब घर को लज्जावती युवती स्वर्ग बना देती है।

— गोल्डस्मिथ

प्रियदर्शनता, विनोदशीलता, प्रज्ञा और प्रभा मे पुरुष स्त्री की बराबरी नहीं कर सकता। वह विपद् में पड़े हुए पति की उदासी

को दूर करती थके हुए की थकान दूर करती और अपने मुस्कराते मुँह से सारे घर में आनन्द के फूल बरसाती है। —गिज़बोर्न

जब तक आदमी की शादी नहीं हुई, स्वर्ग उसके लिए काँटों का घर था। देवताओं का गाना, पक्षियों का चहचहाना, फूलों का हँसना और सवेरे की सुहावनी हवा के झोंके उसे बेमजे मालूम होते थे। वह उदास फिरा करता था। ज्योंही हवा आई, उसका सारा दुःख दूर हो गया और नन्दन कानन आनन्द-भवन हो गया। —कैम्बैल

अगर संसार में स्त्री न हो, तो संसार इस तरह सूना और भयानक दीखने लगे जिस तरह वह मेला, जिसमें न तो खरीद-फरोख्त—क्रय-विक्रय और लेन-देन होता है और न कोई दिल-बहलाने का सामान होता है। स्त्री की मुस्कराहट के बिना सृष्टि उसी तरह निष्फल और व्यर्थ हो जावे, जिस तरह जीव बिना देह, फल-फूल बिना वृक्ष, क़िलेदार बिना क़िला, नींव बिना महल और पतवार बिना नाव। अगर स्त्री नहीं तो प्रेम नहीं और प्रेम नहीं तो आनन्द नहीं। संसार में जो सुख है वह स्त्रियों के ही प्रताप से है। अगर संसार में कोई प्रकाश की रेखा है तो वह इन्हीं से है।

कुत्ता नमकहलाल होता है, स्त्री उससे भी ज्यादा नमक-हलाल होती है। वह नाव की पतवार से जियादा पक्की और महल के सितून या खंभे से भी अधिक मजबूत है। डूबती नाव के यात्रियों को किनारा जैसा प्यारा होता है, पुरुष के लिए स्त्री वैसी ही प्यारी है। वह सन्तान से भी ज़ियादा प्यारी और रात के बाद होने वाले

प्रभात से भी अधिक प्रकाशमान है। रेगिस्तान या रेतीले जंगलो मे सफर करने वाले प्यासो को पानी जैसा प्यारा और मीठा लगता है, पुरुष के लिए स्त्री उससे भी अधिक मीठी और आनन्ददायिनी है। —यंग

स्त्रियाँ संसार मे देवताओं की तरह घूमती है। स्वार्थपरता या खुदगर्जी का तो उनमे नाम भी नहीं। प्रत्युपकार का उन्हे ध्यान भी नही। स्त्री पर चाहे जितना भार डालो, हैरान करो, अत्याचार करो, वह न बोलेगी। ऊँट तो जियादा बोझ होने से चीखता और बलबलाता है, पर स्त्री चूँ नहीं करती। हे ईश्वर! तूने स्त्री को पुरुष का योग्य साथी बनाया। सच पूछो तो ईश्वर की सृष्टि मे स्त्री ही सर्वश्रेष्ठ है। उसके चेहरे से गौरव टपकता एवं सम्मान और स्नेह उसके शासन मे चलते है। तूने अपनी अद्भुत शक्ति से उसे पुरुषो के दिल कोमल करने को बनाया, ताकि पुरुषों के दिल उसे देखकर तेरे भक्तिभाव मे पूर्ण हो जावे। —मिस बैनट

विपद् की चोटो से जब हम बेबस हो जाते हैं और हमारे बन्धु-बान्धव हमे त्याग देते है, तब स्त्री ही हमारे दुःख का कारण खोजती है। उसकी मुस्कराहट से हृदय शीतल हो जाता है। उसकी मीठी आवाज हृदय के ताप को मिटा देती और सूखे हृदय को फिर से हरा-भरा और तरोताजा कर देती है। —गैली नाइट

स्त्री की मर्य्यादा उसके अपरिचित रहने मे, उसकी प्रभा उसके पति के सम्मान मे और उसका सुख उसके कुटुम्ब के मङ्गल या कल्याण मे है। —रूसो

देखा गया है कि प्रकृति ने नारियो को स्वयं चिन्ता और क्लेश भोगने को पैदा नहीं किया। उसने उन्हे हमारी चिन्ताओं के कम करने को बनाया है।

—गोल्डस्मिथ

स्त्रियॉं, जिन्होने अपना विश्वास खो दिया है, उन फरिश्तो के समान हैं जिन्होंने अपने पंख गँवा दिये है।

— डाक्टर वाल्टर स्मिथ

जाय नामक एक पाश्चात्य विद्वान कहते है:—"But for women, our life would be without help at the outset, without pleasure in its course and without consolation at the end' अगर स्त्रियॉं न हो, तो पुरुष की बाल्यावस्था असहाय और यौवन आनन्द-विहीन हो जाय तथा बुढ़ापे मे कोई आश्वासन देने वाला न हो। मतलब यह है कि पुरुष को हर अवस्था मे स्त्री की जरूरत है। ठीक है, जिसके एक सती साध्वी नारी हो और चाहे कुछ भी न हो, वह परम सुखी है।

गोथे महोदय कहते है—"A hearth of one's own and a good wife are worth gold and pearls' निज का घर और साध्वी स्त्री सोने और मोतियो के बराबर है।

बेकन महोदय भी कहते है:—"Wives are young mens mistresses companion for middle age, and old men s nurses" स्त्रियॉं युवावस्था मे पत्नियो का, मध्यावस्था में सहचारिणियों का और बुढ़ापे मे धायो का काम देती है।

स्पेन वालों में एक कहावत है, "To him who has a good wife no evil can come which he cannot bear." जिस पुरुष के भली स्त्री है, उस पर ऐसी कोई विपत्ति नहीं आ सकती, जिसे वह सह न सके।

बहुत से अनजान कहेंगे कि यूरोपियन लोग तो स्त्रियों के गुलाम होते ही हैं। उनकी गाई स्त्री-महिमा हमारे किस मसरफ की ? ऐसों के सन्तोष के लिए हम अपने हिन्दू-शास्त्रों में ही चन्द श्लोक उद्धृत करते हैं। वे आँखें खोल कर देखें, हमारे यहाँ ही नारी जाति की कैसी महिमा गाई गई है:—

महाभारत के आदि पर्व में लिखा है।

अर्द्धं भार्या मनुष्यस्य, भार्या श्रेष्ठतमः सखा।
भार्या मूलं त्रिवर्गस्य, भार्या मूलं तरिष्यतः॥
सखायः प्रविविक्तेषु, भवन्त्येताः प्रियम्वदाः।
पितरो धर्मकार्येषु भवन्त्यार्तस्य मातरः॥
भार्यावन्तः क्रियावन्तः, सभार्या गृहमेधिनः।
भार्यावन्तः प्रमोदन्ते, भार्यावन्तः श्रियान्विता॥
कान्तारेष्वपि विश्रामो, जनस्याध्वनिकस्य वै।
य सदारः स विश्वास्यस्तस्माद्दारा. परागतिः॥
संसरन्तमपि प्रेतं विषमेष्वेकपातिनं।
भार्यैवान्वेति भर्त्तार सतत या पतिव्रता॥
प्रथमं संस्थिता भार्या पतिं प्रेत्य प्रतीक्षते।
पूर्वं मृतं च भर्तारं पश्चात्साध्व्यनुगच्छति॥

दह्यमाना मनोदुःखैर्व्याधिभिश्चातुरा नराः ।
आह्लादन्ते स्वेषु दारेषु घर्मार्तो सलिलेष्विव ॥

स्त्री पुरुष की अर्द्धाङ्गी है । स्त्री पुरुष का सर्वोत्तम मित्र है । स्त्री धर्म, अर्थ और काम की जड़ है । स्त्री भवसागर से पार होने वाले मुमुक्षुओ की मूल है ।

यह मधुरभाषिणी आफत की जगह मित्र, धर्म के कामो मे पिता और दुःख आ पड़ने पर माँ बन जाती है ।

जिसके स्त्री है वही क्रियावान है, जिसके स्त्री है वही गृहस्थ है, जिसके स्त्री है वही सुख पाता है और जिसके स्त्री है वही लक्ष्मीवान् है ।

वनभमि में स्त्री विश्राम या आराम की जगह है; जिसके स्त्री है वही विश्वास योग्य है, इसलिये स्त्री परम गति है ।

चाहे पति आवागमन या जन्ममरण के चक्र में फँसा हो, चाहे मर गया हो और चाहे किसी दुर्गम स्थान मे पडा हो, स्त्री ही है जो उसके पीछे-पीछे चलती है ।

(पतिपरायणा स्त्री अगर पहले मर जाती है, तो (स्वर्ग मे जाकर) पति की राह देखती है । अगर पति पहले मर जाता है, तो सती उसके पीछे-पीछे जाती है ।)

मानसिक क्लेशो से जलते हुए और रोग पीड़ित पुरुष अपनी स्त्रियो से उतने ही सुखी होते है, जितना कि सूरज की किरणो से तपा हुआ पुरुष पानी पीने से आनन्दित होता है ।

स्त्री पुरुष का आधा अङ्ग है; इसके बिना पुरुष अधूरा है।
इस विषय में "मनु-संहिता" में लिखा है--

द्विधा कृत्वात्मनो देहम् अर्द्धेन पुरुषोऽभवत्।
अर्द्धेन नारी तस्यां स विराजमसृजत् प्रभुः॥

ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो हिस्से करके, आधे से पुरुष और आधे से स्त्री पैदा की।

"व्यास-संहिता" में भी लिखा है:—

पतिनोऽर्थं द्विधा, पूर्वम्, एक देहः स्वयम्भुवा।
पतयोऽर्द्धेन चार्द्धेन, पत्न्योऽभुवन्निति श्रुतिः।
यावन्न विन्दते जाया तावदर्द्धो भवेत्पुमान्॥

ब्रह्मा ने एक देह के दो टुकड़े करके, आधे भाग से पति और दूसरे आधे से पत्नियाँ पैदा की। इसका प्रमाण वेद में है। जब तक विवाह नहीं होता, तब तक पुरुष 'अर्द्ध देह' रहता है—शादी होने के बाद पुरुष 'पूर्णदेह' होता है।

"मनुस्मृति" में ही लिखा है:—

न निष्क्रय विसर्गाभ्याम् भर्तुर्भार्या विमुच्यते।
एव धर्मं विजानीयः प्राक् प्रजापतिनिर्मितम्॥

पति-पत्नी का सम्बन्ध दान, बिक्री या त्याग द्वारा भी नहीं टूट सकता। यह नियम पूर्वकाल से विधाता ने चलाया है।

यदि रामा यदि चरमा यदि तनयो विनयगुणोपेतः।
तनयेतनयोत्पत्ति, सुरवरनगरे किमधिकम्?॥

'अगर स्त्री है, अगर लक्ष्मी है, अगर शीलवान पुत्र है और पुत्र के पुत्र हो गया है, तो फिर स्वर्ग मे इससे अधिक क्या है ?'

नीतिकारो ने छ: सुख प्रधान कहे हैं। उनमे से स्त्री का सुख भी एक है। किसी विद्वान ने कहा है:—

अर्थागमो नित्यमरोगिता च।
प्रिया च भार्य्या प्रियवादिनी च॥
वश्यश्च पुत्रो ऽर्थकरी च विद्या।
षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन॥

हे राजन! धन की आमद, सदा आरोग्य रहना, प्यारी और प्रियवादनी स्त्री, वश मे रहने वाला पुत्र और फल देने वाली विद्या-ये छ: संसार के सुख है।

स्त्री का काम पुरुष के बिना और पुरुष का काम स्त्री के बिना चल नहीं सकता। स्त्री और पुरुष एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक दूसरे के बिना अधूरा है। दोनों का उद्देश्य एक ही है, इस लिये लक्ष्य तक पहुँचनेके लिए दोनों का मिलकर काम करना जरूरी है। ये दोनो एक दूसरे के विरोधी और प्रतिकूल नहीं, किन्तु अनुकूल और अनुगामी है। एक दूसरे के सुख-दुःख में हिस्सा बँटाने और संसार के कार-व्यवहार चलाने के लिये पैदा हुए है। स्त्री-पुरुष के विवाह-बन्धन से बधने मेही गृहस्थी कहलाती है। गृहस्थी एक गाड़ी है। स्त्री और पुरुष उस गाड़ी के दो पहिये है। जिस तरह गाड़ी एक पहिये से नही चलती, उसी तरह स्त्री या पुरुष किसी एक से गृहस्थी उत्तम रूप मे नही चलती; इसलिये विवाह

किया जाता है। हिन्दू विवाह का आधार उच्च, धार्मिक और गूढ़ वैज्ञानिक सत्य है। हिन्दू-विवाह किसी अभिप्राय या काम-वासना पूरी करने के लिये नहीं किया जाता। विवाह-सम्बन्ध धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए किया जाता है। गार्हस्थ्य जीवन बिना इस लोक और परलोक दोनों में ही सुख नहीं है। शास्त्र में लिखा है—

> स सन्धार्य्यः प्रयत्नेन, स्वर्गमक्षयमिच्छता ।
> सुखञ्चेहेच्छतानित्यं योऽधार्य्यो दुर्बलेन्द्रियैः ॥

जो मृत्यु के बाद सदा स्वर्ग में रहना चाहता है और जो इस जीवन में सुख भोगना चाहता है, उसे बड़ी होशियारी के साथ गार्हस्थ्य जीवन निर्वाह करना चाहिये। जिसकी इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं, जो अजितेन्द्रिय है, वह गृहस्थाश्रम के धर्मकार्य कर नहीं सकता।

नोट—इसका यह आशय है कि हिन्दू-स्त्री हिन्दू के लिये सुख भोगने की चीज नहीं, उसके घर में देवी है।

मनु ने कहा है :—

> देवदत्तां पतिर्भार्य्यां विन्दतेनेच्छयात्मनः ।
> तां साध्वीं बिभृयान्नित्यं देवानाम् प्रियमाचरन् ॥
> प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः सन्तानार्थञ्चमानवाः ।
> तस्मात् साधारणो धर्मः श्रुतौपत्न्या सहोदितः ॥

परमात्मा से पत्नी मिलती है। पुरुष अपने इच्छानुसार उसकी

प्राप्ति नहीं कर सकता। इसलिए पति को अपनी साध्वी स्त्री का सदा भरण-पोषण करना चाहिये। उसके इस काम से देवता प्रसन्न होते हैं।

स्त्रियाँ सन्तान प्रसव करने के लिए और पुरुष उनको उत्पादन करने के लिए बनाये गये हैं; इसलिए भार्या के साथ रहना पुरुष का मुख्य धर्मकार्य है। पवित्र वेदों की ऐसी ही आज्ञा है।

हिन्दू के लिए विवाह धर्म का एक अंश या मुख्य भाग है। यह विशुद्ध वैध धर्म-कार्य है। यह स्वार्थसिद्धि, वखरादारी या शराकत (co-partnership) का काम नहीं है, इसीलिये गृहस्थाश्रम शेष सभी आश्रमों में ऊँचा समझा जाता है। गृहस्थ ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ या संन्यासी इन तीनों से ही श्रेष्ठ समझा जाता है। गृहस्थ अग्नि में हवन करता, उससे मेह बरसता है; मेह से अनाज पैदा होता है और अनाज से प्राणियों की उत्पत्ति और पालन होता है, इस वास्ते गृहस्थ ही एक तरह से समस्त प्राणियों का पैदा करने वाला है। जिस तरह जगत के प्राणी श्वास-कार्य से जीते हैं, उसी तरह ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी गृहस्थ की सहायता से जीवन धारण करते हैं; इसी से गृहस्थाश्रम सब आश्रमों से ऊँचा समझा जाता है। जिन्हें इस लोक और परलोक में सुख भोगना हो, उन्हें गार्हस्थ्य जीवन निर्वाह करना चाहिये। मगर यज्ञादि धर्मकार्य पुरुष स्त्री के बिना सम्पन्न कर नहीं सकता। अगर वह अकेला इन कर्मों को करता है, तो उसको इतना फल नहीं मिलता। यही वजह है कि सीताजी के वन में रहने के समय

जब रामचन्द्रजी अश्वमेध यज्ञ करने लगे, तब महर्षियों ने उन्हें सीता जी की सोने की प्रतिमा बगल में रखकर यज्ञ करने का आदेश किया। जिस समय अयोध्यापति महाराजा अजकी प्यारी रानी इन्दुमती जहरीली माला के कारण स्वर्ग को सिधार गई, महाराज के शोक का पारावार न रहा; यद्यपि उस समय एक इन्दुमती के सिवा, महाराज के पास सब-कुछ था। ससागरा पृथ्वी का राज्य था, अतुल धन-सम्पत्ति थी, अप्सराओं का भी मानमर्दन करने वाली हजारों वारांगनाये थीं, लाखों दास-दासी थे; तथापि महाराज को जरा भी सुख-सन्तोष न होता था। उन्हें यह जगत अन्धकारपूर्ण प्रतीत होता था। वे अपनी प्यारी रानी को याद कर-करके जार-जार रोते और कलपते थे।

असल बात यह है, कि जो सुख पुरुष को अपनी स्त्री द्वारा मिलता है, वह और किसी से भी मिल नहीं सकता। इस जगत् में उसका स्त्री के समान सच्चा और चतुर सलाहकार कोई नहीं। जिस समय वह किसी झंझट में फँस कर घबरा जाता है, उलझन को सुलझा नहीं सकता, उस समय उसकी सच्ची संगिनी— उसकी प्यारी पत्नी अपनी कुशाग्रबुद्धि से फौरन मुश्किल को हल कर देती है। अनेक बार दिल्लीश्वर शाहन्शाह अकबर प्रसिद्ध हाजिर जवाब राजा बीरबल से अत्यन्त कठिन और टेढ़े सवाल कर बैठते थे। वह उनके सवालों का जवाब फौरन ही दे देते थे, लेकिन कभी-कभी गाड़ी रुक भी जाती थी। ऐसे मौके पर बीरबल घबराकर औंधे मुँह पड़े रहते और शोक के मारे

पागल-से हो जाते थे। उस वक्त उनकी पत्नी या पुत्री ही, उनकी मुश्किल को हल करके, उनके शोक-सन्ताप को दूर करती थीं। शारीरिक बल मे स्त्रियाँ चाहे पुरुषों की बराबरी न कर सकती हों, पर बुद्धि मे वे पुरुषों से कम नहीं। किसी किसी बात मे तो उनकी सूझ पुरुषों की अपेक्षा गहरी होती है। पुरुष कहते है, कि स्त्री की बुद्धि प्रलयंकारी होती है, पर यह सभी हालतोंमे ठीक नहीं। यदि कहा जाय कि सभी स्त्रियाँ चतुरा नहीं होतीं, तो मानना पड़ेगा कि, मर्द भी सभी चालाक और होशियार नहीं होते। हमारी राय मे, अगर अपनी घरवाली निरी मूर्खा न हो, तो उससे सलाह अवश्य लेनी चाहिये। किसी अङ्गरेज विद्वान ने कहा है–

"Woman's counsel is not worth much, yet he that despises it is no wiser than he should be."

स्त्री की सम्मति अधिक मूल्यवान नहीं होती, तो भी जो उसकी सलाह को घृणा की दृष्टि से देखता है, बुद्धिमानी नहीं करता।

गोस्वामी जी ने बहुत ही ठीक कहा है "धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी; आपद-काल परखिये चारी।" अर्थात् धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री की परीक्षा विपद् मे करनी चाहिये, क्योंकि उसी समय उनका खरा-खोटापन मालूम होता है। जबतक पुरुष पर आफत नहीं आती, उसे अपनी स्त्री के गुणों का पता नहीं लगता। जिस समय पुरुष पर चारों ओर से विपद् की घनघोर घटाये छा जाती है, माता-पिता, भाई-बन्धु, मित्र और पुराने सेवक तक उससे आँख फेर लेते है, कोई उसकी बात नहीं पूछता; तब उस घोर दुःख से

एक मात्र स्त्री ही उसकी शरणदाता और आनन्द का स्थान होती है, वहीं उसे शान्ति मिलती है। वही उसे ढाढ़स बंधाती और उसके शोक को हरती है। वही उसके दुःख के कारण को खोजती और वही उसकी औषधि सोचती है। वही अपनी मुस्कराहट से उसके हृदय की जलन को शान्त करती, अपने मधुर स्वर में दिल की मुरझाई हुई कली को खिलाती और शुष्क हृदय को फिर से तरोताजा करती है। विपद में सभी नातेदार किनारा कर जाते हैं, पर वह अपने प्यारे को नहीं त्यागती। सच तो यह है, संसार में, घोर विपद के समय, एक मात्र जगदीश और अपनी साध्वी स्त्री ही पुरुष की खबर लेते हैं। हम इस बात की परीक्षा कर चुके हैं। हमने अपने जीवन में जितनी विपदायें देखी हैं, बहुत कम लोगों ने उतनी देखी होंगी। सच तो यह है, हमारा जीवन ही विपद्मय है। ईश्वर ने हमें दुःख पाने के लिये ही पैदा किया है।

इतना सब लिखने का सारांश या सार मर्म यही है कि नारी पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी, सहधर्मिणी और उसकी अन्तरात्मा की छाया या प्रतिमा है। वही कालीदास की तरह पुरुष को उत्थान का मार्ग दिखाने वाली और तुलसीदास की तरह मोक्ष-पथ प्रदर्शिका है। वही पुरुष के शोक-सन्तप्त हृदय को अपने सुधा-वारि से सींच कर तरोताजा रखने वाली और अपने शोकहरा नाम को सार्थक करने वाली है। पुरुष के घोर विपत्तिकाल में वही एकमात्र सच्चे मित्र का सा बर्ताव करने वाली उसके दुःख-शोक में हिस्सा बटाने वाली, उसके दुःख को अपना दुःख समझनेवाली, उसके सुख

के लिये अपना सारा सुख-आनन्द त्याग देने वाली और उसके दुःखनाश की औषधि खोजने वाली है। घोर मुसीबत में जब पुरुष के सारे नातेदार-माता-पिता, भाई-बहन और दिली दोस्तों का दम भरने वाले मित्र किनारा कर जाते हैं, पास नहीं आते, बात करने में भी आनाकानी करते हैं; तब वही है जो उसका साथ नहीं छोड़ती, उसकी विपत्ति को अपनी ही विपत्ति समझती और तन-मन-धन से उसकी सहायता करती है। वही है जो धर्म-कार्य में उसके साथ पिता का-सा व्यवहार करती, खिलाने-पिलाने में माता-का-सा बर्ताव करती, सलाह-मत देने और धीरज बँधाने में मित्र-का-सा काम करती और रति-समय वेश्यावत व्यवहार करती है। वही है जो उसके रोग-पीड़ित और निर्धन होने पर भी, उसका अनादर नहीं करती। उसके घर को झाड़-बुहार कर साफ रखती, हरेक चीज को यथास्थान सजा कर रखती, सुन्दर सुस्वादु भोजन बनाकर रखती, घर में चिराग जलाती और उसके घर में घुसते ही मुस्कराते हुए चेहरे से उसका स्वागत करती है। उसे दुःखी देखकर आप आनन्द के फूलों की वर्षा करती और तुतलाते हुए नन्हें से बच्चे को उसके आगे कर देती है। वह इन मनोहर दृश्यों को देखकर अपने शोक को भूल जाता और प्रसन्न होकर खाना खाता है। स्त्री-बिना पुरुष की यह खातिर कौन कर सकता है? इसी से कहते हैं कि नारी गृह की लक्ष्मी, और घर का कल्याण है। यह घर की श्रीवृद्धि, ऐश्वर्य और सुख सभी का आधार है। वही पुरुष की सर्वस्व और उसकी अन्तरात्मा है।

उसकी जीवन-ज्योति इसी से प्रज्वलित होती और प्रकाश पाती है। उस शक्तिरूपिणी से ही उसे शक्ति मिलती है। बिना गृहिणी के घर निर्जन कानन या भयंकर श्मशान है। उसके बिना संसार सूना और जीवन वृथा है। वह पुरुष के लिए ईश्वरदत्त अनमोल हीरा है। उस कोहेनूर से भी बेशक़ीमत हीरे के बिना उसका घर-घर नहीं है। इस दशा मे उसे वन मे जाकर भगवद्भजन करना ही उचित है। स्त्री-रत्न के सच्चे क़दरदाँ पण्डित जगन्नाथ महाराज अपने "भामिनी-विलास' मे यही बात कहते है.—

> इदं लताभि स्तवकानताभिर्मनोहरं हत वनांतरालम्।
> सदैव सेव्यं स्तनभारवत्यो न चेद्युवत्यो हृदय हरेयुः॥

यदि स्तन-भारवती युवती चित्त को न हरे, तो भार से झुकी हुई लतिकाओ से सुशोभित कानन—गुफा का मध्यभाग सेवन करना उचित है; यानी जङ्गल मे जाकर किसी गुफा में रहना मुनासिब है।

इसीको स्पष्ट शब्दो मे यों कह सकते है कि यदि भारी स्तनों के बोझ से झुकी जाने वाली नाजनी कोमलाङ्गी पुरुप के चित्त को अपने नाज-नखरो या हाव-भाव प्रभृति से प्रसन्न न करे, तो पत्र-पल्लवो के भारीबोझ से झुकी हुई लताओ से शोभायमान गुहा या वन के मध्य भाग मे रहकर प्रभु की आराधना करनी चाहिये।जब कभी पीनपयोधरा सुन्दरी की याद आयेगी तभी पत्रपल्लवों के भार से नम्र हुई लताओ को देख, मन मे सन्तोष हो जायगा।

॥ दोहा ॥

अनल दीप रवि शशि नखत, यदपि करत उज्यार।
मृगनैनी बिन मोहि यह, लागत जगत अँध्यार ॥१४॥

(सार—गृहस्थाश्रम में एक स्त्री बिना इन्द्र-तुल्य सम्पत्ति भी तुच्छ है।)

14. Though there are lamp. light fire, stars, sun and moon, yet to me the whole world is enveloped in darkness without a woman with eyes like that of a deer

उद्वृत्तः स्तनभार एष तरले नेत्रे चले भ्रूलते
रागाधिष्ठितमोष्ठपल्लवमिदं कुर्वन्तु नाम व्यथाम्।
सौभाग्याक्षरपंक्तिरेव लिखिता पुष्पायुधेन स्वयं
मध्यस्थाऽपि करोति तापमधिकं रोमावली केन सा ॥१५॥

हे कामिनी! तेरे गोल गोल उठे हुए भारी कुच, चञ्चल नेत्र, चपल भ्रू-लता और रागपूर्ण नवीन पत्तों के सदृश सुर्ख होंठ अगर रसिकों के शरीर में वेदना करें तो कर सकते हैं, पर यह समझ में नहीं आता कि कामदेव के हाथों से लिखी 'सौभाग्य की पङ्क्ति-सी, रोमावलि मध्यस्थ होने पर भी, क्यों चित्त को सतप्त करती है ॥१५॥

खुलासा—सुन्दरी के गोल-गोल पुष्ट और उठे हुए कुचों, चञ्चल नेत्रों, चपल भौंहों और सुर्ख होठोंमें कामियोंको जो संताप

होता है, उसका होना तो स्वाभाविक ही है, उसकी हमें कुछ शिकायत नहीं। शिकायत है हमें उस रोमावली की–बालों की क़तार की, जो सुन्दरी के पेड़ू पर, नाभि से जरा ऊपर, मध्यस्थ की तरह, बीच में सुशोभित है और जो स्वयं पुष्पायुध कामदेव के कर-कमलों द्वारा, सौभाग्य के विशेष चिह्न की तरह, लिखी गई है। शिकायत क्यों है? शिकायत इसलिए है कि वह मध्यस्थ होकर भी चित्त को सन्ताप देती है। यह प्रसिद्ध बात है कि मध्यस्थ सन्ताप का कारण नहीं होता।

दोहा

अरुण अधर कुच कठिन दृग, भौंह चपल दुख देत।
सुथिर रूप रोमावली, ताप करत किहि हेत? ॥१५॥

सार—स्त्रियों का अङ्ग-प्रत्यङ्ग, यहाँ तक कि एक-एक बाल पुरुष के मन में संताप पैदा करता है। विशेष क्या, "स्त्री" नाम ही संतापकारक है!

15. If high breasts, restless eyes, moving brows and the two lips like new leaves give pain to a lustful man, they are justified in doing so because (Cupid) Kamdev has marked the words "Good fortune" in the forehead of a woman, but it is incomprehensible why that line of hair passing through the middle of the belly aggravates the pain which, as an arbitrator, should abate it.

गुरुणा स्तनभारेण मुखचंद्रेण भास्वता ।
शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा ॥१६॥

वह स्त्री गुरु स्तनों के भार से भास्कर के समान प्रकाशमान् मुखचन्द्र से और शनैश्चर के सदृश मन्दगामी दोनों चरणों से ग्रहमयी-सी मालूम होती है ॥१६॥*

खुलासा—वह स्त्री अपने पूर्णोन्नत बृहस्पति के समान दोनों कुचों से, सूर्य के समान प्रकाशमान मुखचन्द्र से और मन्दगामी शनैश्चर के समान धीरे-धीरे चलने वाले दोनों चरण कमलों से ग्रहपुञ्ज या रोशन मजमा-उल-नजूम-सी-जान पड़ती है।

बृहस्पति, चन्द्रमा, सूरज और शनैश्चर—इन तेजस्वी ग्रहों के चिह्न सभी से पाये जाते है। इसी से कवि महोदय कहते हैं कि वह नाज़नी ग्रहमयी-सी शोभित होती है। उसके स्तन-द्वय गुरु-भारी है, मुख सूरज और चाँद-सा है और चरण मन्दगामी शनैश्चर की तरह मन्दगामी है। स्पष्ट है कि उसके शरीर में सभी तेजस्वी ग्रहों का निवास है अथवा नवग्रह उसके सेवक है· अतएव स्त्री के होते नवग्रहों के पूजन की जरूरत नहीं; क्योंकि एकमात्र उसकी पूजा-आराधना से सभी फलों की प्राप्ति हो सकती है।

---

*गुरु, भास्वान् प्रभृति शब्दों के दो-दो अर्थ है। जैसे, गुरु=भारी और बृहस्पति। चन्द्रमा=चन्द्रवत् और चन्द्रमा। भास्वान्=प्रकाशमान और सूरज। शनैश्चर=मंदगामी और शनैश्चर। शनीचर मंदगामी प्रसिद्ध है।

मिस्टर हारग्रेव नामक एक पाश्चात्य विद्वान् भी स्त्रियों को आकाशके सितारोंकी तरह पृथ्वीके सितारे कहते हैं। आप लिखते हैं—"Women are poetry of the world in the same sense as the stars are the poetry of heaven Clear, light-giving, harmonious, they are the terrestrial planets that rule the destinies of mankind" जिस प्रकार नक्षत्र नभ के आभूषण हैं, उसी प्रकार स्त्रियाँ पृथ्वी की आभूषण हैं। वे स्वच्छ निर्मल, प्रकाशमान और शान्तिप्रद पार्थिव नक्षत्र हैं, जो मनुष्य-जाति के भाग्यका निपटारा करती हैं, अर्थात् पुरुषों के भाग्य का फैसला स्त्रियों के हाथों में है।

महाराजा प्रतापसिंहजू अपनी नीचे लिखी कविता में स्त्री के शरीर में नवग्रहों का निवास स्पष्ट रूप से दिखाते हैं। उसके बाल राहु के समान हैं, उसका मुंह चन्द्रमा के समान शोभित है, उसके दोनों नेत्र सूर्य हैं, अलकें केतु हैं, मन्द-मन्द हँसना शुक्र है, वाणी बुध है, दोनों स्तन बृहस्पति हैं, कान मङ्गल है और उसकी मन्दी-मन्दी चाल शनैश्चर है। ऐसी महामनोहर नवग्रहमयी युवती की सेवकाई स्वयं नवग्रह करते हैं, अतः उसके समान फलदायिनी और कौन है?

छप्पय

केश राहु सम जान, चन्द्र सौ सोहत आनन।
द्वादश में द्वै अर्क नैन, केतुहि अलकानन॥

मन्द हास हैं शुक्र, बुधै बानी कहि जानो ।
सुरगुरु जान उराज, कर्ण मङ्गलहि बखानो ॥
अति मंद चाल सोई शनिश्चर, महामनोहर युवति यह ।
तेहि सम फलदायक को देखियत, जाको सेवत नवग्रह ॥१३॥

सार—मृगनयनी सुंदरी नवयुवती प्रकाशमान ग्रह-पुञ्ज के समान चित्ताकर्षक और मनोहर होती है। उसकी हृदय हारिणी छवि का वर्णन करना कठिन है।

16 That woman bent under the load of heavy breasts, shining with moon-like face and walking with slow steps, looks like a planet (Guru means heavy as well as Jupiter-planet. Sanaishchar means slow steps as well as Saturn. The poet takes these words in their duplicate meanings and says that she looks like planets)

तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं विहारि
वक्त्रं च चारु तव चित्त किमाकुलत्वम् ॥
पुण्यं कुरुष्व यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा
पुण्यैर्विना न हि भवन्ति समीहितार्थाः ॥१७॥

हे चित्त ! उस स्त्री के पुष्ट स्तनों, मनोहर जाँघों और सुन्दर मुंह को देखकर, वृथा क्यों व्याकुल होते हो ? यदि तुम उसके कठोर स्तनों प्रभृति का आनन्द लेना चाहते हो, तो पुण्य करो, क्योंकि बिना पुण्य किये मनोरथ सिद्ध नहीं होते ॥१७॥

खुलासा—हे मन ! उसके मोटे-मोटे और उठे हुए दोनों कुचों, चित्ताकर्षक नितम्बों और स्वर्गीय अप्सराओं के समान चन्द्र-मुख को देख कर क्यों कुढता है ? पर-स्त्री पर मन चलाना उचित नहीं। अगर परमात्मा ने तुझे मनोमुग्धकर रूप, उठी हुई छातियों और पतली कमर वाली सुन्दरी दी है, तो जैसी दी है, उसी पर सन्तोष कर। कहा है—

देख पराई चूपड़ी क्यों ललचावे जीव ?।
रूखी-सूखी खाय के, ठण्डा पानी पीव ॥

रे मन ! पराई चुपड़ी हुई रोटियों पर क्यों ललचाता है। ईश्वर ने तुझे जैसी रूखी-सूखी दी है, उसे ही खाकर, शीतल जल क्यों नहीं पीता ? अर्थात् पराई सुन्दरियों पर क्यों मन चलाता है, परमात्मा ने तुझे जैसी सुरूपा-कुरूपा दी है, उसी पर सन्तोष क्यों नहीं करता ?

पर-स्त्रियों पर मन चलाने में कोई लाभ नहीं, चाहने से वे अपनी हो नहीं जातीं। जो पुण्य करता है, ईश्वर उसे सुन्दरी स्त्री देता है, मनुष्य अपनी इच्छा से नहीं पा सकता। कहा है—

देवदत्तां पतिभार्य्यां विदन्ते नेच्छयात्मन ।

जब यही बात है, तब अपने बल और चालाकी से पराई स्त्री को अपनी करना, अपनी जान खतरे में डालना है। कहा है—

उर्वशीसुरतचिन्तया ययौ सचयं किमु पुरुवा नृप. ।
रक्षणाय निज जीवितस्य तत् संभजेत्परवधूम् न कामत ॥

महाराज पुरुरवा उर्वशी से संभोग की इच्छा करके नष्ट हो गये; अतएव, अपनी जीवन-रक्षा के लिये पुरुष को पर-नारी पर दिल न चलाना चाहिये।

और भी कहा है—

लंकेश्वर जनकजा हरणेन बाली
तारापहारकतयाप्यथ कीचकाख्य. ॥
पाञ्चालिका ग्रहणतो निधनं जगाम
तच्चेत सापि परदाररति न कांक्षेत् ॥

लंकाधिपति रावण जानकीजी को हरकर ले जाने से मारा गया, सुग्रीव-पत्नी तारा के हरण से वाली और द्रौपदी की इच्छा करने से कीचक मारा गया। इसलिए बुद्धिमानो को पर-स्त्री पर भूलकर भी दिल न चलाना चाहिये।

हे मन! अगर तू सेवो के समान कठोर कुचो वाली स्त्रियों के साथ रमण करने की इच्छा रखता है, तो इस जन्म मे परोपकार कर; पुण्य के प्रताप से तुझे कमान-सी बॉकी भृकुटियां तथा स्थूल जॉघो और खञ्जन पक्षी के-से नेत्रो वाली, जवानी के नशे मे चूर और प्रेम से प्रफुल्लित सुमुखी नारी अवश्य मिलेगी। धैर्य रख, अधीर मत हो। देख, पण्डितराज जगन्नाथ अपने "भामिन विलास" मे कहते हैं और बिल्कुल ठीक कहते हैं—

लभ्यते पुण्यैर्गृहिण्यो मनोज्ञा तया सपुत्रा. परितः पवित्राः।
स्फीतंयशस्तैः समुदेति नित्यं तेनास्य नित्यः खलु नाकलोकः॥

पुण्य से सुन्दर स्त्री मिलती है, स्त्री से सच्चरित्र सुपुत्र होते है,

सुपुत्रों से विमल यश दिनो-दिन फैलता है और यश से यह लोक स्वर्ग के समान हो जाता है ।

कुण्डलिया

रे चित ! जो चाहे रमण, कुच कठोर नव नार ।
तो तू कर कछु सुकृत अब, मिले जु वह सुकुमार ॥
मिले जु वह सुकुमार, वक्र भौं जघन विहारी ।
सुंदर मुख मृदु हास, कंजसी अँखियाँ कारी ॥
यौवन मद भरपूर, प्रेम सों सदा प्रफुल्लित ।
मत अधीर धर धीर, मिले वह अवस, अरे चित ॥१७॥

सार—अगर उठती जवानी की कमलनयनी सुंदरी कामिनी पर मन चलता है, तो पुण्य संचय करो ।

17. O my mind, why are you troubled at the sight of a woman whose breasts are firm and protuberent, whose thighs are fit for enjoying and whose face is lovely If you have a desire for them, then practise virtue, because your wishes are not to be fulfilled without it

मात्सर्यमुत्सार्य विचार्य कार्य-
मार्याः समर्यादमिदं वदन्तु ॥
सेव्या नितम्बाः किमु भूधराणा-
मुत स्मरस्मेरविलासिनीनाम् ॥ १८ ॥

हे योग्यायोग्य विचार में निपुण श्रेष्ठ पुरुषो ! आप पक्षपात को छोड़, कर्त्तव्य-कर्म का विचार और शास्त्रों को देखकर यह बात कहिये कि इस लोक में जन्म लेकर मनुष्य को पर्वतों के नितम्ब सेवन करने चाहिये अथवा कामदेव की उमंग में मन्द मन्द मुस्कराती हुई विलासवती तरुणी स्त्रियों के नितम्ब ! ॥ १८ ॥

खुलासा—विद्वानों ! आप शास्त्रों को विचार कर, साथ ही ईर्षा द्वेष या पक्षपात को त्यागकर, इस बात का फैसला कीजिये, कि मनुष्य को इस दुनिया में आकर, स्त्रियों के नितम्ब* सेवन करने चाहिये या पर्वतों के नितम्ब ; अर्थात् उन्हे संसार में आकर पर्वत गुहा में वास करना चाहिये अथवा मोटी-मोटी जाँघों, कठोर कुचों और स्थूल नितम्बों वाली स्त्रियों के साथ भोग-विलास करना चाहिये।

स्त्री-भोग और हरि-भजन, ये दोनो ही काम उत्तम हैं। संसारियो के लिये पहला और संसार से उदासीनों के लिये दूसरा अच्छा है। जिन्हे नवयुवती स्त्रियों का भोग-विलास पसन्द हो, वे धनाज्र्जन करें और उन्हे भोगे, पर साथ ही पुण्य-सञ्चय भी करें; ताकि उन्हें इस सफर के बाद, अगले मुकाम पर भी, यानी आगे होने वाले जन्म मे भी, फिर मृगनयनी स्त्रियाँ और अन्यान्य सम्पदायें मिलें। पर इस भोग-विलास में बारम्बार मरने और जन्म लेने का घोर कष्ट है। अत. जो जन्म-मरण के कष्टों से

* नितम्ब के दो अर्थ है :—(१) पर्वत का बीच का भाग. (२) कमर का पिछला हिस्सा यानी चूतड़।

बचना चाहें, अनन्तकालस्थायी सुख भोगना चाहे, वे सुन्दरी से सुन्दरी स्त्री को पापो की खान,दु.खों की मूल और नरक की नसैनी समझ, निर्जन गहन वन मे जा, किसी पहाड़ की गुफा मे बस,सर्व मनोरथदाता पद्मपलाशलोचन हरि का एकाग्र चित्तसे ध्यान करे।

दोहा

नाव बचन सुन अनख तज, करहु काल लहि भेव।
कै तो सेवो गिरिवरन, कै कामिनि-कुच सेव ॥१८॥

सार—संसारियों के लिये नवयुवतियों को भोगना और विरक्तों के लिये पर्वत-गुहाओं में हरिभजन करना उचित है। जो इन दोनों में से एक भी काम नहीं करते, उनका जन्म लेना वृथा है।

18. O learned man, tell us without any jealousy and with fair consideration whether it is desirable to dwell on and enjoy the middle part of a mountain or to enjoy the hips or charming buttocks of an amorous woman smiling with the excess of passion.

संसारेऽस्मिन्नसारे परिणतितरले द्वे गती पण्डितानां
तत्वज्ञानामृताम्भः कृतललितधियां यातु कालः कदाचित्।

नो चेन्मुग्धाङ्गनानां स्तनजघनभराभोगसंभोगिनानां
स्थूलोपस्थस्थलीषु स्थगितकरतलस्पर्शलोलोद्यतानाम् ॥१६॥

इस असार संसार में, जिसकी अन्तिम अवस्था अतीव चञ्चल है, उन्हीं बुद्धिमानों का समय अच्छी तरह कटता है, जिनकी बुद्धि तत्त्वज्ञान रूपी अमृत-सरोवर में बारम्बार गोते लगाने से निर्मल हो गई है अथवा उन्हीं का समय अच्छी तरह अतिवाहित होता है, जो नवयौवनाओं के कठोर स्थूल कुचों एवं सघन जङ्घाओं को सकाम स्पर्श कर, कामदेव का सुख उपभोग करते हैं ॥ १८ ॥

खुलासा—इस मिथ्या और चञ्चल संसार में या तो उन्हीं के दिन अच्छी तरह व्यतीत होते हैं, जो ब्रह्म-विचार में लीन रहते हैं अथवा उन्हीं के दिन अच्छी तरह कटते हैं, जो सख्त और मोटे कुचों तथा गुदगुदी जङ्घाओं वाली नवयुवतियों को अपने शरीर से चिपटाये, काम की उमङ्ग से मस्त होकर, उनके भोग-विलास का आनन्द लूटते हैं।

जो मृगनयनी कामिनियों को भोगते हैं, उनके दिन बड़े सुख से कटते हैं। उन्हें मालूम नहीं होता कि कब दिन निकलता है और कब रात होती है; दिन पर दिन, पक्ष पर पक्ष, मास पर मास और वर्ष पर वर्ष आते हैं और चले जाते हैं, किन्तु जो कामिनियों के साथ रमण नहीं करते, उनके दिन बुरी तरह से कटते हैं। उन्हें एक-एक क्षण एक-एक वर्ष मालूम होता और जीवन भारवत् प्रतीत होता है।

महाकवि नज़ीर कहते है :—

कल शबे-वस्ल मे क्या जल्दी कटी थी घड़ियाँ,
आज क्या मर गये घड़ियाल बजाने वाले ?

कल भोग-विलास में रात कैसी जल्दी कट गई ! आज तो रात बीतती ही नहीं ! क्या आज घण्टा बजाने वाले मर गये ?

और भी किसी ने कहा है :—

अय्याम मुसीबत के तो काटे नहीं कटते।
दिन ऐश की घड़ियों में गुजर जाते हैं कैसे ?

दुःख के दिन तो काटे नहीं कटते, पर ऐश के दिन सहज में कट जाते हैं।

मतलब यह है कि कोमलाङ्गियों के साथ समय हवा की तरह बीतता है; पर जिनके माशूकाएँ नहीं हैं, उनके दिन पहाड़ हो जाते हैं। हाँ, उनके दिन भी परमानन्द में हवा की तेज़ी से बीतते हैं, जो ब्रह्मानन्द में लीन रहते हैं। लेकिन जो न तो ईश्वर का ध्यान करते हैं और न सुन्दरियों का सुख लूटते हैं, उनके दिन काटे से भी नहीं कटते।

वैराग्य पक्ष

इस नापायेदार चन्दरोज़ा दुनिया में जन्म लेकर, विद्वानों को दो राहों में से किसी एक पर चलना चाहिये :—(१) या तो ब्रह्म-विद्या का अमृत पीना चाहिये, अथवा (२) नवयुवती रमणियों के सुरत में मग्न रहना चाहिये।

रसिक कवि कहते हैं :—

त्याग लोक-सुख या रहे, मस्त परात्मा ध्यान।
रमणी-रति में रत रहे, अथवा रसिक सुजान॥

यद्यपि अपनी-अपनी रुचि के अनुसार दोनों राहें ही अच्छी है, पर पहली की होड़ दूसरी राह कर नहीं सकती। उसके सुख मे कमी-बेशी, क्षय और वृद्धि तथा अनस्थिरता नहीं। उसका सुख सच्चा और अनन्तकाल-स्थायी तथा अक्षय है। उसमें से सदा पीयूष-धारा गिरा करती है. पर दूसरी के सुख में कमी बेशी हुआ करती है। इसका सुख मिथ्या और क्षणस्थायी है। इसमें से जो अमृत बिन्दु टपकते है, वे वास्तव में अमृत-बिन्दु नहीं, किन्तु विष-बिन्दु हैं; लेकिन मोह से अमृत-से जान पड़ते हैं। अब बुद्धिमान स्वयं विचार ले और जिस राह को अपने हक में अच्छी समझें, उसे अख्तयार करें।

छप्पय

अनसार संसार नरक है यात शिरोमनि।
जान अमृत के बिन्दु, मगन है रहै बुद्धि बनि॥
नित्य-अनित्य विचार, सहित सब साधन साधे।
की अरु प्रौढ़ा नारि धारि उर में आराधे॥
चैतन्य मदन अंकुश परसि, निरखत सरकत करत रिस।
रस ससत कसत बिलसत हेमत इह विधि बितवत दिवस निशि॥१६॥

सार—यदि सुख से जीवन व्यतीत करना हो, तो दो

में से एक काम करो—या तो संसार से मोह त्याग, एकाग्र चित्त से, यशोदानन्दन कृष्ण के कमल-चरणों की निष्काम भक्ति करो अथवा सुन्दरी रमणियोंकी रति-केलि में मस्त रहो।

16. In this unsubstantial world, which has a very unsteady ending, there are only two courses for the wise. Either he spends his time by sharpening his intellect in nectar-like spiritual knowledge or he spends his time by laying his hands at and enjoying the body of a lovely and amorous woman having thick breasts

मुखेन चन्द्रकान्तेन महानीलैः शिरोरुहैः।
पाणिभ्यां पद्मरागाभ्यां रेजे रत्नमयीव सा ॥२०॥

चन्द्रकान्त से मुख, महानील जैसे केश और पद्मराग के समान दोनों हाथों से वह स्त्री रत्नमयी-सी मालूम होती है *॥२०॥

* यों भी कह सकते हैं कि वह नाज़नी अपने चन्द्रमाकी-सी कान्ति वाले मुख, घोर नीले रंग के बाल और कमल के समान लाल हाथों से अपूर्व सुन्दरी मालूम होती है। क्योंकि चन्द्रकांत, महानील और पद्मराग शब्दों के दो-दो अर्थ हैं। जैसे, चन्द्रकान्त = (१) चन्द्रमा की सी कान्ति वाला, (२) चन्द्रकान्त मणि। महानील = (१) घोर नीला, (२) नील-मणि या नीलम। पद्मराग = (१) कमल के समान सुर्ख़, (२) पद्मराग मणि, लाल या माणिक।

खुलासा—उस स्त्री का शरीर बहुमूल्य रत्नों से बना हुआ मालूम होता है, क्योंकि उसका चेहरा चन्द्रकान्त मणि के सदृश, उसके गहरे नीले बाल नीलमणि के समान और उसकी सुर्ख हथेलियाँ पद्मराग मणि के जैसी हैं।

उस स्त्री के अङ्ग-प्रत्यङ्ग रत्नों के समान शोभायमान हैं। उसके चन्द्रसम मुख को देखकर चन्द्रकान्त मणि का, उसके नीले बालों को देखकर नीलम का और लाल कमल-सी हथेलियों को देखकर लालों या पद्मराग मणि का धोखा होता है।

गज़ब की खूबसूरती है ! बला का हुस्न है ! अगर वह कामिनी कहीं जवाहिर-जड़े हुए ज़ेवर पहन ले, तब तो बक़ौल महाकवि दाग़, और भी ग़ज़ब हो जाय —

एक तो हुस्न बला का, उसपै बनावट आफ़त।
घर बिगाड़ेंगे हज़ारों के, सँवरने वाले ॥

एक तो परले सिरे की खूबसूरती है ही और फिर उस पर सजावट है। ये सजने-सँवरने वाले हजारों के घर बिगाड़ेंगे।

देखना ऐ ज़ौक़ ! होंगे आज फिर लाखों के खून।
फिर जमाया उसने, लाले लब पै लाखा पान का ॥ ज़ौक़।

आज उन्होंने अपने लाल की तरह लाल ओठों पर पान का लाखा रङ्ग जमाया है। आज इस लाखे से लाखों ही का खून हो जायगा।

वराहमिहर महाशय महाराजा भर्तृहरि से भी एक क़दम आगे बढ़ गये हैं। उनकी समझ में महाकवि दाग़ वग़ैरः की तरह

सजावट की ज़रूरत ही नहीं। उनका खयाल है कि जिसे खूबी खुदा ने दी, उसे जेवर की क्या ज़रूरत ? वे कहते हैं कि स्त्रियों से ही रत्नों की शोभा है, न कि रत्नों से स्त्रियों की: क्योंकि स्त्रियाँ तो विना रत्नों के धारण किये ही पुरुषों को अपने ऊपर लट्टू करके अपना गुलाम बना सकती हैं क्या रत्न भी, बिना स्त्रियों के सुन्दर शरीरों का आश्रय लिए, पुरुषों को अपने ऊपर मुग्ध करने की क्षमता रखते हैं ? उनका कहा हुआ श्लोक हम नीचे देते हैं:—

रत्नानि विभूषयन्ति योषा, भूषयन्ते वनिता न रत्नकान्त्या।
चेतो वनिता हरन्त्यरत्ना, नोरत्नानि विनाऽङ्गनाऽङ्गसंगात् ॥

विधाता की कारीगरी का खातमा इन मनोहर कामिनियों की रचना में ही हुआ है। सचमुच ही उसने फुर्सत से बैठकर इनकी गढ़ाई की है। अजब खूबसूरती इन्हें दी है ! ऐसा कौन है, जो इनको देखकर इन पर अपना तन-मन न वार दे ?

वैराग्य पक्ष

विधाता ने सुन्दरियों के गढ़ने में खूब कारीगरी दिखाई है। उन्हें सुन्दरता देने में ज़रा भी कसर नहीं रक्खी, तो भी तो लोग, उन्हें देखकर, उनके बनाने वाले को भूल जाते हैं। मन्दिरों में लोग भगवान के दर्शनों को जाते हैं पर उन्हें देखते ही भगवान को भूल उनके दर्शन करने लगते हैं। महाकवि दाग कहते हैं:

कभी मसजिद में जो वह शोख़ परीज़ाद आया।
फिर न अल्लाह के बन्दों को खुदा याद आया ॥

एक दिन शेख परीजाद मन्दिर मे आ गया, तो ईश्वर के भक्तो को फिर ईश्वर याद न आया। सब उसे देखकर ईश्वर को भूल गये। कारीगर की बनाई बढ़िया चीज को देखकर लोग एकाग्र मन से चीज को देखने लगते हैं! किसने बनाई है, इसका ध्यान भी नहीं आता।

हिन्दुस्तानी औरतो मे जो रूप, सौन्दर्य और लावण्य है, वह बर्फ के समान गोरी मेमो मे नहीं। पर जिनकी अक़्ल पर पर्दा पड़ा हुआ है, वे तो कञ्चन को त्याग कर काँच पर मन डुलाते हैं, इसी तरह जिनको ब्रह्म-ध्यान या जगदीश की उपासना का अवर्णनीय आनन्द नहीं मालूम, वे ही, सिर से पैर तक गन्दगी से भरी हुई, ससारी औरतो को देखते ही ईश्वर को भूल जाते है। यद्यपि ऐसी हरकत विश्वामित्र और पराशर आदि महामुनियों ने भी की है, पर वह उनकी गलती ही कहलावेगी। ईश्वर से प्रेम करने से अनन्त-कालस्थायी सुख मिलता है। जो लोग स्वर्ग चाहते हैं उन्हे स्वर्ग और स्वर्ग की अप्सरायें मिलती है, मुसलमानी मत के अनुसार हूरे गिलमे मिलते हैं। संसारी औरते क्या स्वर्ग की अप्सराओं या हूर और परियो की बराबरी कर सकती हैं? हरगिज़ नहीं। पर जिनकी बुद्धि मे भ्रम हो गया है, उन्हे स्त्रियो की मुहब्बत मे जो आनन्द आता है वह ईश्वर-प्रेम मे नहीं आता, जिसकी नाम मात्र की कृपा से अप्सरायें और हूरें मिल जाती है।

क्या शौके इबादत हो उनको, जो मिस के लबों के शैदा है।
हलुआगे बिहिश्ती एक तरफ होटल की मिठाई एक तरफ॥

जो मिस के होठों के प्रेमी हैं उनसे ईश्वर की उपासना नहीं होती—उसमें उनका दिल नहीं लगता—ईश्वर के ध्यान से स्वर्ग में जो हलवा मिलता है, उसमें वह मजा कहाँ, जो होटल में मिस के साथ बैठ कर खाने में आता है ?

कामियों को सुन्दरियाँ रूप की साक्षात् मूर्ति और शोभा की खान मालूम होती हैं; इसी से वे दिवा-रात उन्हीं के ध्यान में समाधि लगाये रहते हैं;पर उनके बनाने वाले के ध्यान में समाधि नहीं लगाते ! किन्तु वास्तव मे वे जैसी दीखती हैं, वैसी हैं नहीं। सब ऊपर को ही तड़क-भड़क और सफाई है। भीतर से देखो तो वे गन्दगी के पिटारे हैं, पर मोहान्ध कामी पुरुष इन गहरी बातों को नहीं समझते। समझते हैं केवल वे ज्ञानी, जिन्होंने उनकी असलियत का पता लगा लिया है। इसी से वे उनके दिखावटी और मिथ्या रूप पर मोहित नहीं होते और उनका खयाल स्वप्न में भी नहीं करते। वे अपना सारा समय जगदीश के ध्यान और आराधना में ही व्यतीत करते हैं,क्योंकि कामिनियों की आराधना-उपासना करने से जो सुख मिलता है, वह क्षणस्थायी और झूठा है, पर ईश्वर की उपासना-परिसिनश से जो सुख मिलता है, वह अनन्त कालस्थायी और सच्चा है।

दोहा

चन्द्रकान्त-सम मुख लसत, नीलम केशहि पास ।
पद्मराग-सम कर लसै, नारी रत्न प्रकाश ॥२०॥

सार—नारी रत्नों की खान है । उनमें नव रत्नों की शोभा मौजूद है ।

20. That woman with her face like Chandra-kanta jewel, her hair like that of Mahanil jewel and her two hands bearing the colour of Padma-raga jewel shines like a heap of jewels

---

संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति ॥
एताः प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां
किं नाम वामनयना न समाचरन्ति ॥२१॥

चतुर मृगनयनी स्त्रियाँ पुरुष के हृदय में एक बार दया से घुस कर, उसे मोहित करतीं, मदोन्मत्त करतीं, तरसातीं, चिढ़ातीं, धमकातीं, रमण करतीं और विरह से दुःख देती हैं । ऐसा कौन-सा काम है, जिसे ये मृगलोचनी नहीं करतीं ? ॥२१॥

जिस पुरुष पर इन सुन्दरियों की निगाह का तेज़ तीर चल जाता है, वह लोट-पोट हो जाता है और उसके होश-हवास खता हो जाते है । अगर वह तीर मारने वाली, उस पर दयाभाव नहीं दिखाती, तो बेचारे का परम-कल्याण ही हो जाता है—जीवन के लाले पड़ जाते है ।

महाकवि नज़ीर कहते हैं :—

> इधर उसकी निगह का नाज़ से आकर पलट जाना।
>
> इधर मुड़ना, तड़पना, ग़श में आना, दम उलट जाना॥

इस पद में कवि ने प्रेम-दृष्टि की चोट का जो करुणापूर्ण चित्र खींचा है, सो बिलकुल ठीक है। भुक्तभोगी जानते हैं, हमारे तशरीह करने की ज़रूरत नहीं।

स्त्रियाँ जैसी कोमलाङ्गी होती हैं, वैसी ही वज्रहृदया भी होती है। इन्हें अपने शिकार को तड़पते देखने में बड़ा मज़ा आता है। जब इनका शिकार इनके कटाक्ष-बाण की मार से सन्निपात रोगी की तरह मोहित या बेहोश हो जाता है, उसे किसी तरह का ज्ञान नहीं रहता, शराबी की तरह मतवाला होकर प्रलाप करता है, तब ये बड़ी प्रसन्न होती हैं। उस समय ये दया से काम न लेकर, उसे अपने हाव-भाव और नाजो-अदा दिखाकर और भी तरसातीं तथा अधमरा कर देती हैं। जब तक ये अपने आशिक से नहीं मिलतीं, तब तक वह बेचारा रात-दिन गम खाता, घबराता, सिसकता और आहें भरता है। मन में पछताता है कि हाय मैंने क्यों दिल देकर आफत मोल ली। पर मुहब्बत में तो यह दशा होती ही है। किसी कवि ने कहा है :—

> न था मालूम उलफ़त में कि ग़म खाना भी होता है।
>
> जिगर की बेकली और दिल का धड़कना भी होता है॥
>
> सिसकना, आह भी करना, अश्क लाना भी होता है।
>
> तड़पना, लोटना, बेताब हो जाना भी होता है॥

कफे अफसोस को मल–मल के, पछताना भी होता है।
दिये पर अपने फिर आप ही दुख पाना भी होता है॥

प्रेमी या आशिक हजारों तरह के दुख और आफतें उठाता है, पर अन्त मे यो कह कर सब्र करता है :—

हम तो आशिक है तेरे नाज उठाने वाले।
तुमसे कम देखे है महबूब, सताने वाले॥

शेष मे, जब ये सुन्दरियां सब तरह से अपने चाहने वाले का इम्तिहान ले लेती है, तब कहीं इनका पत्थर हृदय पसीजता है। उस वक्त यह उसे अपनी सेवा मे कुबूल करतीं और उसके दिल को ठण्डा करती हैं। इस समय इनका शिकार पूरे तौर से इनके काबू मे हो जाता है। जब ये उसे अपने आधीन पातीं और उसे हर तरह से मुती और फरमॉबर्दार देखती है, तब उसे जरा-जरा सी चूकों या गलतियां पर धमकाती और घुड़कती है। संशय का घर होने की वजह से, इनमे से बाज-बाज तो उसे, जरा देर से घर आने पर ही खूब डॉटती-डपटती है। कोई-कोई अपने शिकार को नितान्त अज्ञानावस्था मे देखकर निपट निरंकुश हो जाती है और उससे ठीक गुलाम की तरह काम लेनी है। इतना ही नहीं, उसे इनकी फरमायशें भी पूरी करनी पड़ती हैं। उनके पूरा करने मे उसे बड़ी-बड़ी जिल्लतें उठानी होती है। सामने रहने पर ये इस तरह नाच नचातीं और नाना प्रकार के कष्ट देती है। आँखो के ओझल रहने पर भी खैर नहीं। इनकी जादू-भरी ऑखों से उन्मत्त हुआ पुरुष, इनकी वियोगाग्नि मे बुरी

तरह तड़प-तड़प कर भस्म होता है। बहुत लिखने से क्या, इनकी रसीली, मदमाती और नशीली आँखों के मारे हुए को किसी अवस्था मे भी, सुख-शान्ति नहीं मिलती। कवि ने ठीक ही कहा है कि इन नाज़नियों के चञ्चल नेत्र जिसके हृदय में प्रवेश कर जाते है, उसकी खैर नहीं।

खूबसूरत औरतें जिन पर अपनी निगाह के तेज तीर चलाती या कटाक्ष-बाण मारती है, वे अपनी होशियारी और चतुराई को ताक पर रखकर पूरे पागल हो जाते है, कितने ही तो मजनू बनकर कपड़े फाड़ने लगते हैं। देखिये एक आशिक किसी हसीन के नयन बाण से घायल होकर क्या कहता है—

दिलचस्प है, आफत है, क़यामत है, ग़ज़ब है।
बात उनकी, अदा उनकी, क़द उनकी, चाल उनकी॥—अकबर

उनकी बातें दिलचस्प हैं, उनकी अदायें आफ़त हैं, उनका क़द कयामत बर्पा करने वाला और चाल गजब ढाहने वाली है। मतलब यह है कि हम उनकी मीठी-मीठी बातों, अदाओं और चाल वगैरह: पर मर मिटे।

कहते हैं जिसको जन्नत, वह इक झलक है तेरी।
सब वाइज़ों की बाक़ी रंगी बयानियाँ हैं॥—हाली

जिसे स्वर्ग कहते हैं, वह तो मेरी प्यारी की एक झलक में है, बाकी सब तो उपदेशकजी की रङ्गीन बातें हैं।

चुपचुपाते उसे दे आये दिल, एक बात पै हम।
माल महँगा नज़र आता, तो चुकाया जाता॥—हाली

हमने तो न किसी से कहा न सुना, उसकी एक बात पर चुप-चाप दिल दे आये। अगर माल महँगा नजर आता, तो मोल-तोल करते। दिल देकर खरीदने में हमें तो सौदा सस्ता ही जँचा।

ऐ ज़ौक़! आज सामने उस चश्म मस्तके।
बातिल सब अपने दावे दानिशवरी हुए॥—ज़ौक़

ऐ ज़ौक़! उस काम-मद से मतवाली आँख के सामने आज हमारी बुद्धिमता और योग्यता झूठी हो गई।

मस्जिद में उसने हमको आँखें दिखाके मारा।
काफ़िर की देखो शोख़ी, घर में ख़ुदाके मारा॥—ज़ौक़

उसने मन्दिर में ही हमें अपने कटाक्ष-बाण से मारा। उस काफ़िर की शोख़ी देखिये कि उसने हमे ईश्वर के घर में ही मारा।

मालूम जो होता हमें अंजामे मुहब्बत।
लेते न कभी भूलके हम नामे मुहब्बत॥—ज़ौक़

अगर हमें प्रेम का परिणाम मालूम होता, तो हम कभी भूल कर भी प्रेम का नाम न लेते।

बुरी है ऐ दाग़! राहे उल्फ़त,
ख़ुदा न ले जाय ऐसे रस्ते।
जो तुम अपनी ख़ैर चाहते हो,
तो भूलकर दिल्लगी न करना॥—दाग़

ऐ दाग़! प्रेम का पन्थ टेढ़ा है। परमेश्वर किसी को इस राह से न ले जाय। अगर तुम अपना भला चाहते हो, तो भूल कर भी इस राह में क़दम न धरना।

देख ऐ दिल ! न छेड़ किस्स-ये जुल्फ़ ।
कि ये हैं, पेचो ताब की बातें ॥—ज़ौक़

ऐ दिल ! उसकी ज़ुल्फ़ों के क़िस्से न छेड़, क्योंकि ये बातें बड़ी पेचीली हैं । इनमें पड़ना ठीक नहीं ।

किताबे मुहब्बत मे ऐ हज़रते दिल !
बताओ कि तुम लेते कितना सबक़ हो ॥
कि जब आनकर तुमको देखा, तो बह ही ।
लिये दस्ते अफसोस के दो वरक हो ॥—ज़ौक

ऐ हजरत दिल ! मुहब्बत की किताब मे तुम कितना सबक लेते हो ? हमने तो तुमको जब आकर देखा, तभी तुम्हारे हाथ मे शोक-दुःख के दो वरक देखे ।

मुझे वह पर्दानशीं सामने कब आने दे ।
जो ज़िक्र करने न दे अपने रूबरू मेरा ॥—ज़ौक

वह पर्दानशीन माशूका मुझे कब सामने आने देती है ? वह तो मेरा जिक्र भी अपने सामने नहीं होने देती ।

कुछ तर्जे सितम भी है, कुछ अन्दाजे वफ़ा भी ।
खुलता नहीं हाल उनकी तबीयत का ज़रा भी ॥—अकबर

उसमे कुछ जुल्म के भी ढग है और कुछ वफादारी के भी । उसके दिल मे क्या है, यह जरा भी समझ में नहीं आता ।

याँ लब पै लाख-लाख सखुन इज़्तराब मे ।
वाँ एक ख़ामुशी तेरी, सबके जवाब मे ॥

मैं तो उनके सामने हजारों बाते बनाता हूँ, पर वे मेरी सभी

बातों के जवाब मे एक चुप्पी साधे रहती हैं, मेरी बातों का जवाब ही नहीं देतीं।

इससे तो और आग वह बेदर्द हो गया।
अब आह आतशी से भी दिल सर्द हो गया॥–ज़ौक

मैंने समझा था कि मेरे रोने-धोने से उसका पत्थर-हृदय कुछ तो पसीजेगा, उसे मुझ पर तरस आयेगा, पर हुआ इसका उल्टा। मेरी गरम आहो ने उसे और भी गरम कर दिया, भड़का दिया। मुझे अपनी गरम आहो का बड़ा भरोसा था, उम्मीद थी, कि इनसे जरूर कामयाबी होगी पर अब इस तरफ से भी मेरा दिल ठण्डा हो गया, मुर्झा गया। इस हथियार का भरोसा था, पर अब मालूम हो गया कि यह हथियार भी बेकाम साबित हुआ। (माशूका जब संगदिली अख्त्यार कर लेती है, तब नहीं पसीजती, रहम नहीं करती)।

मुझको हर शब हिज्र की, होने लगी जूँ रोज़ हश्र।
मुझसे यह किस दिन के बदले आसमाँ लेने लगा॥–ज़ौक

जुदाई की हरेक रात मेरे लिये प्रलय के दिन-सी जान पड़ती है, काटे से नहीं कटती! आस्मान, तू मुझसे किस दिन के बदले ले रहा है?

अजल आई न शबे हिज्र मे, और तूने फलक!
बे-अजल हमको तमन्नाए अजल मे मारा॥–ज़ौक

ऐ आस्मान! जुदाई की रात मे मौत न आई, पर तूने मौत की चाह से हमें बे मौत ही रात भर मारा।

मौत ही से कुछ इलाजे दर्दे फ़ुरकत हो तो हो।
गुस्ल मैयत ही हमारा गुस्ले सेहत हो तो हो॥—ज़ौक़

जुदाई की बीमारी का इलाज मौत से ही हो, तो हो सकता है। मौत का स्नान ही हमारी आरोग्यता का स्नान हो सकता है।

अब आशिक अपनी माशूका से मुखातिब होकर कहता है—

तुझे ऐ संगेदिल! आरामे जाने मुब्तला समझे।
पड़ें पत्थर समझ पर अपनी, हम समझे तो क्या समझे॥

ऐ संगदिल—पत्थर-हृदय! तुझे हमने अपने सुख बढ़ाने-वाली समझा। हमारी शक्ल पर पत्थर पड़े, हमने क्या का क्या समझ लिया।

फ़ुरकत में तेरी तारे नफ़स सीने में मेरे।
काँटा सा खटकता है, निकल जाय तो अच्छा॥—ज़ौक़

तेरी जुदाई में मेरे प्राण मेरी छाती में काँटे की तरह खटकते हैं, किसी तरह यह काँटा निकल जाय तो अच्छा।

मैं जाता जहाँ से हूँ, तू आता नहीं याँ तक।
काफ़िर! तुझे कुछ ख़ौफ़ ख़ुदा का नहीं आता॥—ज़ौक़

मैं तो तेरी मुहब्बत में इस दुनिया से ही जाता हूँ, पर तुझसे यहाँ तक भी आया नहीं जाता! काफिर! क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरती?

बाकी न रहा खून भी, अब मेरे जिगर में।
अफसोस! हुआ चाहती है तर्क ग़िज़ा भी॥

तेरे लिये रोते-रोते मेरे जिगर में अब खून भी नहीं रहा है

अफसोस ! अब खाना पीना भी छुटना चाहता है।

ख़ूने दिल पीने को, और लख़्ते जिगर खाने को।
यह गिज़ा मिलती है जानाँ ! तेरे दीवाने को॥

प्यारी ! तेरे पागल को पीने के लिये ख़ून और खाने के लिए जिगर का टुकडा मिलता है, अब उसका यही आहार है।

जब कहा मैंने-तड़पता है बहुत अब दिल मेरा।
हँसके फरमाया-तड़पता होगा, सौदाई तो हो॥--हाली

जब मैंने कहा कि मेरा दिल आपके लिए बहुत तड़फता है तब उन्होंने हँस कर जवाब दिया, "तडफता होगा, तुम पागल ही तो हो।" (बेरहमी की हद हो गई !)

कहा उन्होंने शबे गम का माजरा सुन कर।
तेरे मिजाज की शोख़ी थी, इज्तराब न था॥--दाग़

उन्होंने जुदाई की रात की बातें सुन कर जवाब दिया, तुमने वृथा दुःख उठाया, मन की ऐसी चञ्चलता ठीक नहीं। मतलब यह कि तुमने जो दुःख उठाया, वह अपनी चञ्चलता की वजह से उठाया, विरह के सन्ताप से नहीं।

भा गये हैं आपके अन्दाज़ो नाज़।
कीजिये अगमाज जितना चाहिये॥

आपके नाज़ो अन्दाज मुझे पसन्द आ गये हैं। अब आपको अख़्त्यार है, चाहे जितने नख़रे कीजिये, चाहे जितना सताइये और तरसाइये।

तेरे सहरे नज़र मे हुआ थ जुनूँ ।
मेरे दिल की तो इसमें ख़ता ही न थी ॥
तेरे कूचे में आके बैठ गया ।
बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥—अकबर

तेरे कटाक्ष के जादू से ही मुझे यह उन्माद रोग हो गया है। इसमे मेरे दिल का क्या अपराध ? मै तेरी गली में आकर बैठ गया, क्योंकि इसके सिवा इस उन्माद के दूर करने का और उपाय ही न था ।

न देख ली कैसी कैसी आफ़त ।
जहाँ मे हमने तुम्हारे बाइस ॥
और आगे क्या-क्या ग़मो आलम ।
हम तुम्हारी दौलत न देख लेंगे ॥—ज़ौक़

हमने दुनिया मे तुम्हारी वजह से कैसी-कैसी आफतें नहीं भोगी हैं। और आगे भी तुम्हारी बदौलत हमे क्या-क्या शोक न उठाने होंगे ?

महरबानी की एक राह तो हो ।
गर सताने के है हज़ार तरीक ॥—दाग़

अगर तकलीफ़ या सताने के हजार तरीके हैं, तो मिहरबानी का भी एकाध तरीका होना चाहिये ।

सेराब न हो जिसमे, कोई तिशनये मकसूद ।
ऐ ज़ौक़ ! वह आबे बक़ा भी है तो क्या है ॥—ज़ौक़

जिससे किसी प्यासे की प्यास न बुझे, वह अमृत भी है तो

किस काम का ? आप कितनी ही सुन्दर हैं, पर आपसे अगर मेरी प्यास न बुझी, तो आपकी सुन्दरता से क्या ?

माशूका शिकायत के तौर पर कहती है:—

नित नया ज़ायका चखने का लपका है उनको ।
दरबदर झाँकते फिरने से उन्हें आर नहीं ॥
दाव-ये इश्क़ो मुहब्बत पै न जाना उनके ।
गुफ्तार ही गुफ्तार है, किरदार नहीं ॥

आजकल हरेक आदमी आशिक बना हुआ है । जहाँ किसी खूबसूरत औरत को देखा कि इश्क का दम भरने लगे । ऐसे लोग नित नया स्वाद चखने को दरदर मारे-मारे फिरते हैं ।

ऐसे लोगों की प्रेम-प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना अक़्लमन्दी नहीं । वे जिसे देखते हैं उसी से मुहब्बत करते फिरते हैं । उनमें बातो के सिवा तत्त्व नहीं ।

पाठक ! आपने ऊपर की कविताओं से समझा होगा कि बेचारे आशिक कैसी-कैसी खुशामदें करते हैं, जान देते हैं, पर बेरहम नाज़नियाँ उन्हें किस तरह मोहित करतीं और फिर किस तरह तरसातीं, भभकातीं और उनकी मुहब्बत को झूठी बताकर उन्हें निराश और दुःखी करती हैं । इस जगह इतनी कविताओं के देने की जरूरत न थी, पर हमने इतनी कवितायें इस गरज से दी है कि पाठक माशूकाओं की आदतों से वाकिफ होने के साथ ही साथ उर्दू शायरी का भी मजा लूटें ।

वैराग्य पद्य

सब तरह से दुःख देने वाली, सन्निपात ज्वर की तरह मोह, प्रलाप, प्रमाद, मूर्च्छा और निर्लज्जता प्रभृति पैदा करने वाली कामिनियों को जो सुखवल्लरी समझते हैं, वे यदि बुद्धिमान हैं तो मूर्ख कौन हैं ? वे ठीक अपथ्य सेवन करके रोग मोल लेने वालों की तरह हैं। हाँ, जो लोक परलोक की परवा नहीं करते, जो इस जन्म के बाद और जन्म नहीं मानते जो इस जगत मे आकर इस जगत के सुख भोगना ही अपने जीवन का लक्ष्य समझते हैं, उनके लिये ये सुन्दरियाँ, अनेक कष्ट देने वाली होने पर भी, परमानन्द-दायिनी हैं; पर जिन्हें पुनर्जन्म में विश्वास है, जिन्हे बारम्बार का जन्म-मरण बुरा मालूम होता है, जिन्हें सच्चे और नित्य सुख की दरकार है, उन्हे इन मोहनी, पर काली नागिनों से बचना चाहिये, क्योंकि इनके काटे हुए पुरुष को बारम्बार संसार-बन्धन मे बँधना होता है। संसार बन्धन मे बँधने या बारम्बार मरने और माँ के पेट में नौ महीने रह कर जन्म लेने में ऐसे घोर कष्ट है, जिन्हें हम बता नहीं सकते। आपको इस जन्म-मरण के भय का चित्र स्वामी शंकराचार्य जी के नीचे के श्लोक से मालूम होगा:—

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे भयदुस्तारे कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ।

फिर जन्म लेते हैं, और फिर माँ के पेट मे सोते है। यह असार संसार बड़ा भयकारी है। हे मुरारि ! कृपा कर मुझे इससे पार कीजिये।

हैं फिर-फिर लोग मरते जन्म लेते।
हैं फिर-फिर रहम में आ कष्ट देते।
विनय करते हैं, सुध अब नाथ! लीजे।
तनासुखके न फिर-फिर भाज भज रे।
विमुख गोविन्द भज गोविन्द भज रे॥

बहुत क्या कहे, स्त्री ही संसार-बन्धन की जड़ है। बेटे-बेटी नाती-पोते, दोहिते-दोहिती वगैरः उसके पत्ते और शाखें हैं। अगर आप लोग इस जड़ को ही त्याग दें तो संसार-बन्धन या बार-बार जनमने और मरने के घोरातिघोर कष्टों से बच सकते है।

दुनियादारों को सलाह

यह सलाह हमने अधिकारियों को दी है, अनधिकारियों को नहीं। दुनियादारों को जानना चाहिये कि स्त्रियों से सुख और दुःख दोनो ही होते है। यदि उनकी वजह से पुरुष को अनन्त दुःख उठाने पड़ते हैं, तो स्वर्गीय सुख भी उनसे ही मिलते हैं। अंग्रेज़ो मे एक कहावत है, "Women, money and wine have their blessing and their bane" स्त्री, सम्पत्ति और सुरा में सुख और दुःख दोनो ही है एमिएल महाशय कहते हैं, "Women is at once the delight and terror of man" स्त्री पुरुष के लिए हर्ष और भय दोनों ही का हेतु है। संसार मे वैराग्य को छोड़कर और ऐसी कोई बात नहीं है जिसमें सुख-ही-सुख हो। अगर सभी पुरुष स्त्रियों से नाता न जोड़ें, शादी-विवाह न करें तो ईश्वर की सृष्टि ही लोप हो जाय, संसार

ही न रहे इसलिये जिनसे पूर्ण वैराग्य न लिया जाय, उन्हें घर-गृहस्थी मे रहना चाहिये, पर जल मे कमल की तरह । गृहस्थ के सारे काम करो, पर मन को उसी तरह ईश्वर मे रखो, जिस तरह पनिहारी सिर पर घड़े लिये हुए अपने यार से भी बातें करती है और हँसती, पर मन को घड़े मे ही रखती है । अगर ऐसा न करे, तो घड़े गिर कर फूट जॉय ।

सोरठा

मोह प्रलाप प्रमाद, ज्ञाननाश निर्लज्जता ।
शोक कलेश विषाद, कहा न करै हिय घुस त्रिया ? ॥ २१ ॥

सार—स्त्रियाँ जिसके हृदय में प्रवेश कर जाती हैं, उसकी अवस्था सन्निपात-रोगी की-सी हो जाती है । ये अपने चाहने वाले को मजनूँ की तरह खब्तुलहवास करके, क्या-क्या कष्ट नहीं देतीं ? उसे जीतेजी मदारी के बन्दर की तरह नचातीं और मरने पर नरक में पहुँचाती है ।

21 What could not the beautiful-eyed woman do, by piercing the frail heart of a man, that woman who fascinates him, intoxicates him, vexes him takes him to task, gives him the pleasures of enjoying her and puts him to sorrow by her separation.

विश्रम्य विश्रम्य वनद्रुमाणां छायासु तन्वी-विचचार काचित्।
स्तनोत्तरीयेण करोद्धृतेन निवारयन्ती शशिनो मयूखान॥२२॥

वन के वृक्षों की छाया में बारम्बार विश्राम करती हुई, वह विरहिणी स्त्री अपने कोमल शरीर की रक्षा के लिए, अपना आँचल हाथ में उठा, उससे चन्द्रमा की किरणों को रोकती हुई घूम रही है ॥२२॥

खुलासा—वह विरहिणी स्त्री इतनी नाजुक है कि सूरज तो सूरज, चन्द्रमा की शीतल किरणों की रोशनी को भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। चन्द्र-किरणों से उसके नाजुक और सुकुमार शरीर को कष्ट न हो, इसीलिये उसने अपना आँचल मुँहके सामने कर रक्खा है। नजाकत के मारे ही वह जरा चलती है और फिर वृक्षों की छाया में सुस्ताने लगती है। इस नजाकत का क्या ठिकाना है!

कवियों की महिमा अपार है। वे लोग ... तब तक ता उसे करने लगते हैं, उसे चरम को पहुँचा ... नर्गीव हो जाने पर तो नाज़नी की नजाकत पर क्या खूब... बनी होती है। जब आलिङ्गन

लपेटे जो चोटी ... मिलने को जा रही हो, वह "अभि-
नज़ाकत से ... men who is going to meet her

वह नाजनी इतनी नाज़... इस श्लोकमें वर्णित स्त्री नियत समयपर अपने
... है ऐसी सुकुमार कि चन्द्रमा की किरणों
फूलों के हार लपेटे, तो मारे ... कर नहीं सकती; इसी से मुँह के सामने
महाराजा भर्तृहरि की ... जरा-जरा दूर चलने से थक कर, छाया में
किरणों को नहीं सह सकती है।

कमर चोटी पर फूलों के हार लपेटने में ही दोहरी हो गई। गज़ब की शायरी है। नाज़ुकत और सुकुमारता की हद हो गयी॥"

पण्डितेन्द्र जगन्नाथ को तो अपनी नायिका की नज़ाकत की तारीफ़ करने के लिये कोई उपमा ही नहीं मिलती। आप कहते हैं:-

> नितरां परुषा सरोजमाला न मृणालानि विचार पेशलानि।
> यदि कोमलता तवांगकानामथ का नाम कथापि पल्लवानाम्॥

हे भामिनी! हम तेरे शरीर की कोमलता की तुलना किस पदार्थ से करें, जब कि सरोज-माल भी तेरी कोमलता के आगे कठोर मालूम होती है? कमलनाल की कोमलता का तो विचार करना ही फिजूल है। जब कमल के कोमल पुष्पों की यह हालत है, तब उसके पत्तों का नाम लेने से क्या लाभ? वे बेचारे तेरी कोमलता की क्या बराबरी करेंगे? तेरी कोमलता की उपमा का मिलना ही असम्भव है।

क्या-क्या कष्ट नहीं दे सुकुमार नायिका के पैरों के तलवों की तरह नचातीं और मरने पर

गये हैं. नाज़ुक नर्म-नर्म।

21 What could not tl... नहीं. ऐ मखमल।
do, by piercing the frail
woman who fascinates hi... वे सुहलाये हैं, मखमल!
vexes him takes him to task... है? प्यारी के तलवों की
sures of enjoying her and ... हीं...
by her separation. ... सन्तोष कर लें। कवियों ने
... कुलाबे मिला दिये हैं।

दोहा

नारि विरहनी तरु तरे, बैठा गांस सों भाग।

चन्द्र किरण को आग सों, दूर करत दुख-पाग ॥ २२ ॥

सार—इस श्लोक में वर्णित स्त्री अभिसारिका * और परले सिरे की नाजुक-बदन है। उसके प्रत्येक काम से उसकी नजाकत झलकती है।

22. A woman frequently resting under the shade of trees in the forest roams about raising with her hands the cloth covering her breast to prevent the rays of moon.

अदर्शने दर्शनमात्रकामा दृष्ट्वा परिष्वंगरसैकलोला।
आलिंगितायां पुनरायताक्ष्यामाशास्महे विग्रहयोरभेदम्॥२३॥

जब तक हम विशाल-नयनी कामिनी को नहीं देखते, तब तक तो उसे देखने ही की इच्छा रहती है। दर्शन नसीब हो जाने पर तो आलिंगन करने की लालसा बलवती होती है। जब आलिङ्गन

---

* नियत समय पर अपने यार से मिलने को जा रही हो, वह "अभिसारिका" कहलाती है A women who is going to meet her lover by appointment. इस श्लोकमेंवर्णितस्त्रीनियत समयपर अपने यार से मिलने जा रही है, पर है ऐसी सुकुमार कि चन्द्रमा की किरणों की शीतलता को भी बर्दाश्त कर नहीं सकती; इसी से मुँह के सामने अपना आँचल कर रक्खा है और जरा-जरा दूर चलने से थक कर, छाया में विश्राम लेती और फिर चलती है।

भी हो जाता है, तब तो यह इच्छा होता है कि यह कामिनी हमारे शरीर से अलग ही न हो, हमारा दोनों का शरीर एक हो जाय।

खुलासा—प्रायः सभी जानते हैं कि एक बार किसी सुन्दरी को देख लेने या उसकी रूपमाधुरी की चर्चा सुन लेने पर, तबियत यही चाहती है कि उसके दर्शन भर हो जाँय। जब सौभाग्य से उसके दर्शन हो जाते हैं, तब तृष्णा और भी बढ़ती है। दर्शन के बाद उसे शरीर से चिपटाने की लालसा होती है। ज्यों ही हम उसे अपने शरीर से चिपटाते हैं, कि फिर उससे अलग होने को मन नहीं चाहता, दिल कहता है कि परमात्मा हमारे और इसके शरीर को कभी अलग न करे हम दोनों का शरीर एक हो जाय।

कामी पुरुष और धन-तृष्णा के फेरमें पड़े हुए मनुष्य की हालत एक सी होती है। जिस तरह कामी पुरुष पहले किसी सारङ्ग-लोचना के दर्शन भर चाहता है, दर्शन हो जाने पर आलिङ्गन के लिए लालायित होता है और आलिङ्गन हो जाने पर चाहता है कि यह चन्द्रानना मेरे शरीर से अलग ही न हो; उसी तरह तृष्णा के फेर मे पड़ा हुआ पहले सौ, फिर हजार, फिर लाख, फिर करोड़ और फिर भूमण्डल का राज्य चाहता है। सारी पृथ्वी का राज्य मिल जाने पर त्रिलोकी का आधिपत्य चाहता है। जब उसे त्रिभुवन का राज्य भी मिल जाता है, तब वह चाहता है कि मैं इसे सदा-सर्वदा भोगता रहूँ, यह मेरे हाथ से कभी न जाय।

जो मनुष्य धन को सदा तुच्छ मिट्टी के ढेले के समान समझते

है, उसके नजदीक नहीं जाते, कभी एक पैसा संग्रह नहीं करते, उन्हें धन की तृष्णा नहीं होती। उन्हीं की तरह जो पुरुष मोहिनी कामिनियों से दूर रहते हैं, उनके नजदीक नहीं जाते, उन्हें देखना भी नहीं चाहते, वे उन जादूगरनियों के फन्दे में नहीं फँसते। ऐसा कौन पुरुष है, जो किसी चन्द्रानना कामिनी को देख कर अपने मन को क़ाबू में रख सके? जब तक कोई खूबसूरतबला नजर नहीं आती, तभी तक खैर है, तभी तक धर्म-ईमान और खराई-सचाई प्रभृति की रक्षा है। उस्ताद जौक ने बहुत ठीक कहा है —

> शुक्र ! परदे ही में उस बुत को हया ने रखा।
> वर्ना ईमान गया ही था खुदा ने रखा॥

शर्म के मारे वह घर से बाहर न निकली, पर्दे में रही आई, यह अच्छा ही हुआ। अगर वह घर छोड़कर बाहर आती और हम उसे देख लेते, तो फिर हमारे ईमान का रहना कठिन ही था।

खूबसूरती वह शै है कि उसके आगे ईमान और धर्म कुछ नहीं रहते। कहा है.—Beauty is a witch, against whose charms faith melteth into blood *Much ado. ii l.* अर्थात् खूबसूरती वह जादूगरनी है, जिसके जादू से ईमान का खून हो जाता है। महात्मा गोथे ने भी एक जगह कहा है— Beauty is everywhere a right welcome guest अर्थात् खूबसूरती हर कहीं लायक और दिलावेज मिहमान है, अथवा सौन्दर्य्य का एक योग्य अतिथि की तरह सर्वत्र स्वागत

होता है, सौन्दर्य का सर्वत्र बोलबाला है, खूब सूरती की खातिर कहाँ नहीं होती? खूबसूरती का नशा शराब से भी जबर्दस्त है। शराब के पीने से नशा आता और आदमी मतवाला होता है पर सुन्दरी मृगनयनी से आँखे मिलते ही नशा चढ़ आता है। परमात्मा ने इनकी आँखों में एक अजीब नशा भर दिया है। महाकवि अकबर ने बहुत ही ठीक कहा है:—

करते वो निगाहों से अगर बादाफरोशी।
होता न गुजर जानिबे-मैखाना किसी का॥

अगर वे अपनी मदपूर्ण आँखों से मदिरा बेचतीं यानी अपनी मदभरी चितवन लोगों पर डालती, तो कोई भी शराब की दूकान की तरफ न जाता। शराब का काम उनकी आँखों से ही हो जाता, उनसे चार नजर होते ही नशा चढ़ आता।

हमारे एक हिन्दू कवि ने भी ऐसी ही बात कही है और बड़ी ही मजेदारी से कही है:—

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेतश्याम रतनार।
जियत मरत झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत इकबार॥

उसकी सफेद, श्याम और रतनारी आँखों मे अमृत है, हलाहल विष है और मद है; तभी तो वह जिसको तरफ एक बार देख लेती है; वह जीता है, मरता है और झुक-झुक पड़ता है।

ऐमरसन महोदय कहते हैं, 'Beauty is the pilot of the young soul.' अर्थात् सौन्दर्य नवयुवकों का पथ प्रदर्शक है। जहाज का माँझी जिस तरह जहाज को राह दिखाता है, जहाँ

चाहता है वहाँ ले जाता है, उसी तरह खूबसूरती जवानों को जहाँ चाहती है, ले जाती है। सारांश यह कि उठती जवानी के पट्ठे सुन्दरियों से आँख मिलाते ही उनके गुलाम हो जाते है। स्त्रियाँ जो चाहती है वही करते है, उनकी दिखाई राह पर चलते हैं और उनकी मरज़ी के खिलाफ कोई काम कर नहीं सकते। नौजवान दुनियादार इनके जाल मे फँसते है, इसमे तो कोई अचम्भे की बात ही नहीं। वे पहुँचे हुए वृद्ध तपस्वी, जो हवा और पानी मात्र पर जिन्दगी बसर करते है, हर क्षण जगदीश का नाम रटा करते है, ख्वाब मे भी कामिनी का दर्शन नहीं करते और दर्शन करने पर भी उनके दाम में न फसने का पक्के-से पक्का इरादा रखते हैं, उनको देखते ही, उनसे चार आँखें होते ही, उनके गुलाम हो जाते और हो गये हैं। विश्वामित्र, पराशर और शृङ्गी ऋषि को इन शब्दों मे न सही, दूसरे शब्दो मे अपनी-अपनी माशूकाओं से क़रीब-करीब यही कहना पड़ा होगा —

खुदा के होते बुतो को पूजूँ,
नहीं था मुतलक गुमान ऐसा।
मगर तुम्हें देखकर तो वल्लाह,
आ गया मुझको ध्यान ऐसा ॥—अकबर

संभावना नहीं थी कि मैं ईश्वर के होते हुए, तुम जैसी सौन्दर्य्य की प्रतिमाओं की पूजा करूँ, पर आज तुम्हे देखकर और ही बात हो गई। परमात्मा की कसम खाकर कहता हूँ कि अब तुम्हारी खूबसूरती पर लट्टू होकर मैं ईश्वर को भूल जाऊँगा।

फिर आप लोगों ने अपनी पिछली और समय की हालत का मुक़ाबला करते हुए कहा होगा—

जिस दिलको कैद हस्तिये दुनिया से नंग था।
वह दिल असीर हलक़-ये ज़ुल्फ़े बुतां है अब॥

एक दिन वह था कि हमारा दिल संसार के जञ्जालों में पड़ना शर्म की बात समझता था और एक आज है कि माशूका की ज़ुल्फ़ों में बेतरह उलझा पड़ा है। कैसा परिवर्तन है!

ऐ ज़ौक़! आज सामने उस चश्म मस्त के।
बातिल सब अपने दावे दानिशवरी हुए॥

उसकी मदमस्त मनोहर आँख के सामने आज हमारी योग्यता, बुद्धिमत्ता और प्रतिष्ठा का अन्त हो गया।

वैराग्य पक्ष

विषयों का यही हाल है। ज्यों-ज्यों हमारी इच्छायें पूरी होती हैं, त्यों-त्यों वे और बढ़ती हैं; इसलिये विषय विष से बचने के लिये, मनुष्य को विषयों का ध्यान ही न करना चाहिये। असल में, विषयों का ध्यान ही सारे अनर्थों का मूल है। अगर मन द्वारा विषयों का ध्यान ही न किया जाय, तो विषयों में प्रीति ही क्यों हो? जब विषयों में प्रीति ही न होगी, तब कोई भी अनर्थ हो न सकेगा।

स्त्री को एक बार देख लेने पर, उसे बार-बार देखने को मन चाहता है। बस, यहीं से सिर पर भूत सवार हो जाता है। इस-

लिये, जिनको जन्म-मरण के जञ्जाल से बचना हो, जिनको दुर्लभ मोक्ष-पद लाभ करना हो, जिनको अक्षय सुख भोगना हो, वे ऐसे निर्जन वन मे जाकर रहे, जहाँ इन ललित ललनाओं के दर्शन ही न हो। जब ये मोहिनी दीखेंगी ही नहीं, तो मन कैसे चलेगा ? न रहेगा बॉस, न बजेगी बॉसुरी।

छप्पय

बिन देखे मन होय, वाय कैसे कर देखें।
देखे ते चित होय, अंग आलिंगन सेवे॥
आलिगन ते होत, याहि तनमय कर राखै।
जैसे जल अरु दूध, एक रस त्यों अभिलाषै॥
मिल रहे तऊ मिलबो चहत, कहा नाम या विरह को ?।
बरन्यो न जात अद्भुत चरित, प्रेम-पाठ की गिरह को॥२३॥

सार – नवयुवती कामिनी के बगल में आने पर, उसे कोई भी कामी पुरुष, क्षण भर को भी छोड़ना नहीं चाहता, अथवा एक बार स्त्रियों का चन्द्रानन देख लेने पर, उसके फन्दे में न फँसना असम्भव है।

23. So long as I do not see her I desire to see her but having seen her, I long to embrace her and after having embraced her I desire that there may not be separation from her

whose eyes become extended at the time of embraced union

मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी चन्दनं वपुषि कुंकुमान्वितम् ।
वक्षसि प्रियतमा मनोहरा स्वर्ग एष परिशिष्ट आगतः ॥२४॥

अधखिले मालती के सुगन्धित फूलों की माला गले में पड़ी हो, केशर-मिला चन्दन शरीर में लगा हो और हृदयहारिणी प्राणप्यारी छाती से चिपटी हो, तो समझ लो कि स्वर्ग का शेष सुख यहीं मिल गया।

खुलासा—गले में खिलने ही वाले मालती के फूलों की माला पहनना, केशर और चन्दन शरीर में लगाना और मनोहर प्यारी को छाती से लगाना—स्वर्ग-सुख है। जिन्हें इस पाप-ताप-पूर्ण संसार में यह सुख प्राप्त हो, उनके लिये यही स्वर्ग है। स्वर्ग में इससे अधिक और कुछ नहीं है। पण्डितराज जगन्नाथ महोदय कहते हैं:—

विधाय सा मद्वदनानुकूलं कपोलमूलं हृदये शयाना।
तन्वी तदानीमतुलां बलारेः साम्राज्यलक्ष्मीमधरीचकार ॥

मेरी छाती पर सोने वाली नाज़नी ने जब अपना चिबुक-ठोडी मेरे मुँह पर, जहाँ वह रक्खी जानी चाहिये थी वहीं रक्खी, तब महेन्द्र की अतुल राजलक्ष्मी का सुख भी मुझे तुच्छ प्रतीत होने लगा।

किसी ने खूब और सच कहा है: -

> संसारे तु धरासार धरायां नगरं मतम् ।
> आगारं नगरे तत्र सार सारंगलोचना ॥
> सारंगलोचनाञ्च सुरतं सारमुच्यते ।
> नातः परतरं सारं विद्यते सुखदं नृणाम् ॥
> सारभूतन्तु सर्वेषां परमानन्द सोदरम् ।
> सुरतं ये न सेवन्ते तेषां जन्मैव निष्फलम् ॥

संसार मे पृथ्वी सार है, पृथ्वी पर नगर सार है। नगर मे घर सार है और घर मे मृगनयनी कामिनी सार है । मृगनयनी मे सुरत* सम्भोग सार है। उससे अधिक सुखदायी और सार वस्तु पुरुषो के लिये और नहीं है। जो पुरुष-चोले मे आकर समस्त पदार्थों के सार, परमानन्द के सगे भाई सुरत को सेवन नहीं करते, सम्भोग सुख नहीं भोगते, उनका इस दुनिया मे जन्म लेना ही बेकार है।

निश्चय ही संसारियों के लिये ऐश-आराम के ऐसे सामानों का मयस्सर होना, स्वर्ग-सुख उपभोग करना है। इस बात की सचाई को वे ही समझ सकते है, जो चतुर और कामशास्त्र-विशारद रसिक हैं। नपुंसकों को इस आनन्द का हाल क्या मालूम?

---

*सुरत = स्त्री पुरुष का सम्भोग, रतिकर्म, (मैथुन। इसे अंगरेज़ी में copulation या coition कह सकते है,) क्योंकि सुरत के समय स्त्री-पुरुष एक हो जाते या एक दूसरे मे मिल जाते है।

वैराग्य पक्ष

अपनी-अपनी रुचि अलग-अलग है। सब की इच्छायें एक दूसरे से भिन्न है। एक जिस चीज़ को अच्छी समझता है, दूसरा उसी को बुरी समझता है। जो चीज़ जिसको प्यारी न हो, वह कैसी ही सुन्दर और रगीली क्यों न हो उसे अच्छी नहीं लगती।

अंगरेज़ी मे भी एक कहावत है, "Fair is not fair, but that which pleaseth" सुन्दर सुन्दर नहीं है; किन्तु वही सुन्दर है, जो अपने मन को भावे।

चन्द्रमा सबको प्यारा लगता है, पर कमलिनियों और बिरही जनों को अप्रिय लगता है। संसार का यही हाल है। रसिक पुरुष मालती के फूलों की माला पहनने, केशर-चन्दन से अङ्गराग करने और प्राणप्यारियों को छाती से लगाने को ही स्वर्ग सुख समझते हैं। और कोई-कोई रसिक ऐसे भी है, जो इस सुख के आगे स्वर्ग की सारी सम्पदा को भी तुच्छ समझते है। एक ओर ऐसे लोग हैं तो दूसरी ओर कुछ ऐसे भी है, जो उन सभी सुखों को मिथ्या, अनित्य और परिणाम मे शोक, मोह, रोग और नरक का दाता समझते हैं। जिन नवयौवनाओं को कामी अबला समझते हैं, उन्हे वे सबला समझते हैं। जिन्हे कामी कोमलाङ्गी कहते हैं, उन्हें वे वज्राङ्गी कहते हैं। जिन्हें कामी निर्मला और रूपमाधुरी की खान समझते हैं, उन्हे वे कुमला और घृणित गन्दी चीज़ों का पिटारा समझते है। कामी पुरुष स्त्रियों का ही ध्यान करना

पसन्द करते हैं, पर वे ब्रह्म का ध्यान करना ही अच्छा समझते है। उनका कहना है, कामियो के भोग-विलास मे जो सुख है, वह अनित्य और परिणाम मे घोर दुःखो का देने वाला है, पर ब्रह्म-विचार मे लीन होने का सुख नित्य और परिणाम मे कल्याण करने वाला है। तात्पर्य यह है कि कामियो को ही सुन्दरियो मे स्वर्ग-सुख प्रतीत होता है, विरागियों को तो इनमे नरक-दुःख, किन्तु ब्रह्म-विचार मे वर्णनातीत परम सुख मालूम होता है।

दोहा

केसर मों अँगिया सनी, बनी नयन की नोक।
मिली प्राण-प्यारी मनों, घर आयो सुरलोक ॥२४॥

सार—खूबरू और कमसिन नाजनी को छाती से लगाने मे जो मजा है, बहिस्त में उससे बढ़कर मजा नहीं।

24 If there be on the head a garland of Malti flowers which are about to blossom, if sandal mixed with saffron is besmeared on the body and the beloved beautiful lady is embraced on the bosom, then I take this as the pleasure of heaven

---

प्राङ्मामेति मनागमानितगुणं जाताभिलाषं ततः
सव्रीडं तदनु श्लथोद्यतमनुप्रत्यस्तधैर्यं पुनः ॥

प्रेमार्द्रं स्पृहणीयनिर्भररहः क्रीडाप्रगल्भंततो
निःशंकांगविकर्षणादिकसुखं रम्यं कुलस्त्रीरतम्॥२५॥

पहले-पहल तो "न न" कहती * है। इसके बाद थोड़ी-थोड़ी अभिलाषा करती है। इसके पीछे लजाती हुई अंगों को ढीला कर देती है और फिर अधीर हो, प्रेम के रस में शराबोर हो जाती है। इसके भी पीछे, एकान्त क्रीड़ा की इच्छा करती है और भोग-विलास में तरह-तरह की चातुरी दिखाती हुई, निःशंक होकर मर्दन चुम्बनादि से असाधारण सुख देती है। ये सब मनोहर गुण कुल-बालाओं में ही होते हैं, इसलिए कुलकामिनियों के साथ ही रमण करना चाहिये॥ २५॥

इस श्लोक में महाराजा भर्तृहरि ने, नवोढ़ा—नई ब्याही हुई बहू से लेकर, प्रौढ़ा—पूर्ण युवती और अधेड़ अवस्था तक की अपनी स्त्री के हाव-भाव और भोग-विलास के सुखों का वर्णन बड़ी ही खूबी से किया है। उनके सुरत का चित्र ज्यों का त्यों खींच दिया है।

नई ब्याही हुई बहू पुरुष के साथ समागम होते समय भय के

---

* जीन पाल महोदय कहते हैं, Women are shy of nothing so much as the little word "Yes" at least they say it only after they have said "No" स्त्रियों को "हाँ" कहने में जितनी लज्जा मालूम होती है, उतनी और किसी दूसरी बात में नहीं। वे कम-से-कम "नहीं" कह चुकने पर ही "हाँ" कहती हैं।

मारे "न न" कहती है, अथवा अधिक सामर्थ्य न होने के कारण; "अब नहीं, अब नहीं" कहती है। बुद्धिमान् कामियों को, इन "न न" या "नहीं नहीं" के शब्दों मे विचित्र प्रकार का रस और मज़ा मालूम होता है। उस मज़े की बात भुक्तभोगी जानते हुए भी, ज़बान या क़लम से लिखकर बता नहीं सकते, क्योंकि उस मज़े का हाल दिल जानता है, पर दिल के ज़ुबान नहीं है और ज़बान के दिल नहीं। रसिक-शिरोमणि पण्डितराज जगन्नाथ कहते हैं—

श्रुतिशतमपि भूयः शीलितं भारतं वा।
विरचयति तथा नो हंत सन्तापशान्तिम्॥
अपि सपदि यथायं केलिविश्रान्तकान्ता।
वदनकमल वल्गत्कान्ति सान्द्रोनकारः।

काम-क्रीड़ा से थकी हुई स्त्री के मुख कमल से निकला हुआ रसमय 'नकार' 'नहीं-नहीं" कहना जिस तरह पुरुष के सन्ताप को शीघ्र ही हर लेता है, उस तरह सैकड़ों श्रुतियों और महाभारत प्रभृति पुराणों का अध्ययन और मनन भी नहीं कर सकता।

दूसरी अवस्था में "न न" कहते-कहते, फिर कामिनी की स्वयं इच्छा होती है। इच्छा होने पर वह लज्जा का भाव भी दिखाती है और अपने अङ्गों को ढीला भी कर देती है।

तीसरी अवस्था मे जब वह पूर्ण युवती हो जाती है, उसकी उम्र कोई २५–३० साल या इससे अधिक हो जाती है; तब उसे कन्दर्प-सुख का अनुभव हो जाता है और साथ ही उसका डर भी जाता रहता है। उस वक्त वह प्रेम-रस मे शराबोर होकर अधीर

हो जाती है और एकान्त स्थल में रति-केलि करने की इच्छा प्रकट करती है। उस समय, कामकलानिपुण अनुभवी और निर्भय होने से वह निर्लज्ज होकर नाना प्रकार के आसन-भेदों और चुम्बन आदि से ऐसा सुख देती है कि उसे गूंगे के सुपने की तरह ज़बान या कलम से बताना कठिन है।

ऐसा अपूर्व स्वर्गीय सम्भोग-सुख सलज्ज कुलबालाओं से ही मिल सकता है, वारवधुओं से नहीं। निर्लज्ज और निर्भय वाराङ्गनाओं में ये आनन्द कहाँ? क्योंकि कुलबालाओं में लज्जा है, भय है और प्रेम है, पर वारवधुओं में इन तीनों में से एक भी नहीं। कुलवधुएँ जिस आनन्द और मजे के साथ पुरुष की काम-पीड़ा और सन्ताप को हर सकती हैं, उस तरह वार-वधू नहीं।

छप्पय

ना ना कहि गुण प्रगट करति, अभिलाष लाज जुत।
शिथिल होय धर धीर, प्रेम की इच्छा करि उत॥
निर्भय रस को लेत, सेज – रण – खेलहि नारी।
क्रीड़ा माहि प्रवीण नारि सुखिया मन मांहीं॥
अह सुरत मांक अति ही सुरत, करत हरत चितगति करै।
कुलवधू कामिनी केलि कर, कलह काम की सब हरै॥ २५॥

25 A lady born of a noble family gives the best pleasures of sexual intercourse. Her qualification is that she at first refuses intercourse

and shortly afterwards becomes herself desirous of intercourse, then she shyly allows herself to approach loosely, gradually she loses patience, and with eager and amorous looks, shows her cleverness in secret movements and then she freely gives the pleasure of allowing parts of her body to be pulled and enjoyed.

उरसि निपतितानां स्त्रस्तधम्मिल्लकानां
मुकुलितनयनानां किञ्चिदुन्मीलितानाम् ॥
सुरतजनितखेदस्विन्नगण्डस्थलीना—
मधरमधु वधूनां भाग्यवन्तः पिबन्ति ॥२६॥

(छाती पर लेटी हुई है, बाल खुल रहे हैं, आधे नेत्र बन्द हो रहे है और मैथुन के परिश्रम से आये हुए पसीने गालों पर झलक रहे है,—ऐसी स्त्रियों के अधरामृत को भाग्यवान् लोग ही पीते है ॥ २६ ॥

खुलासा—स्त्री छाती पर पड़ी हो, उसके केश खुल रहे हों, आधी पलकें खुली हों और आधी बन्द हों, गुलाबी गालों पर रति-श्रम से पैदा हुए पसीने आ रहे हो, इस दशा में कोई-कोई भाग्य-शाली ही अपनी प्राणप्यारी के निचले ओठ का रस पान करते है।

स्त्री का अधरामृत पान करने में एक अजीब मजा है, तभी तो कवि लोग उस मजे की इतनी तारीफ करते हैं।

उस्ताद जौक भी फरमाते हैं—

तेरा जुबाँ से मिलाना जुबाँ जो याद आया।
न हाय हाय मै, तालू से फिर जुबान लगी॥

तेरी जीभ से जीभ मिलाने + या तेरे अधरामृत पान करने का ध्यान जब मुझे आया, तब मै घन्टों हाय-हाय करता रहा, इस लिए मेरी जीभ घण्टों तक तालू से न लगी।

छप्पय

खुले केश चहुँ ओर, फैल फूलन की बरसत।
मद मद झाके नैन, दुरत उघरतसे दरसन॥
सुरत खेद के स्वेद, कलित सुन्दर कपोल गहि।
करत अधर रस पान, परत अमृत समान लहि॥
ते धन्य धन्य सुकृती पुरुष, जे ऐसे उरझे रहत।
हित भरे रूप यौवन भरे, दम्पति सुख-सम्पति लहत॥

26. Fortunate must be the man who enjoys the honey of the lips of a lady who is lying on his bosom, whose scented hairs are unfastered, whose eyes are half-shut and whose cheeks shine with drops of perspiration after the exertion of sexual intercourse.

+ संस्कृत काव्य मे ज़बान चूसने के बजाय अधरामृत ही पान किया जाता है, यानी मुसल्मान कवि ज़बान चूसना लिखते हैं और संस्कृत कवि अधरामृत पीना।

आमीलितनयनानां यः सुरतरसोऽनुसंविदं कुरुते ॥
मिथुनैर्मिथोवधारितमवितथमिदमेवकामनिर्वहणम् ॥२७॥

आलस्ययुक्त नेत्रों वाली स्त्रियों की काम में तृप्ति करना, स्त्री-पुरुष दोनों का परस्पर काम पूजन है, जिसको काम-क्रीड़ा करने वाले दोनों स्त्री-पुरुष ही जानते हैं ॥ २७ ॥

खुलासा -काम-मद की अधिकता के कारण जिन स्त्रियों की आँखों में आलस्य भरा है, इसलिये वे ज़रा-ज़रा खुल रही हैं— ऐसी स्त्री के साथ सम्भोग करने में जो सुख मिलता है, उस सुख की तुलना नहीं। उस सुख का ज्ञान काम क्रीड़ा करने वाले दोनों स्त्री पुरुष ही जानते हैं।

स्त्री के नेत्रों का भारी-सा हो जाना, आधे नेत्रों का खुला रहना और आधे नेत्रों का बन्द रहना—स्त्री के पूर्णतया कामोन्मत्त होने के चिह्न हैं। यह समय और अवस्था हो काम-क्रीड़ा के लिये उचित है। ऐसी कामोन्मत्त नारी को जो चतुर पुरुष भोगता और सन्तुष्ट करता है, वह भाग्यवान है और स्त्री भी ऐसे पुरुष की दासी हो जाती है। अगर स्त्री अपने—आप ऐसी कामोन्मत्ता नहीं होती, तो कोक-कलाविद चतुर पुरुष चुम्बन मर्दन आदि तरकीबों से उसे काम-मद से मतवाली कर लेते हैं।

दोहा

मृगनैनी आलस भरी, सुरत सेस सुख साज।
पूजहिं दम्पति काम मिल, करहिं सुमंगल काज॥ २८ ॥

27 The pleasure arising out of sexual intercourse with a lady, with her eyes partly closed is known to both man and woman as the result of mutual intercourse and is their duty.

इदमनुचितमक्रमश्च पुंसां
यदिह जरास्वपि मान्मथा विकाराः ॥
यदपि च न कृतं नितम्बिनीनां
स्तनपतनावधि जीवितं रतं वा ॥ २८ ॥

विधाता ने दो बातें बड़ी ही अनुचित की है—(१) पुरुषों में, अत्यन्त बुढ़ापा होने पर भी काम-विकार का होना (२) स्त्रियों का स्तन गिर जाने पर भी जीवित रहना और काम-चेष्टा करना ॥ २८ ॥

खुलासा—ब्रह्मा को उचित था कि वह बूढ़ों मे काम-विकार न प्रकट होने देता और स्त्रियों को तभी तक जीवित रखता, जब तक कि उनके कुच-युगल सुन्दर, सघन और कठोर रहते। बुढ़ापे मे काम-विकार का प्रकट होना और स्तनों के सुकड़ जाने, गिर जाने अथवा थैलों की तरह लटक जाने पर भी स्त्रियों का जिन्दा रहना और काम-चेष्टा करना,दोनों ही विडम्बना मात्र है। जवानी जाते ही पुरुष की और स्तन गिरते ही स्त्री की काम-चेष्टा रसिकों के मन मे खटकती है।

जब तक स्त्री के कुच छोटी-छोटी नारङ्गियों, अथवा अनारों या कच्चे-कच्चे सेवों की तरह रहते हैं,तभी तक स्त्री-भोग में आनन्द

है, स्तन गिर जाने पर मज़ा नहीं। किसी ने इन कई बातों के लिये ब्रह्मा को दोषी ठहराया है। कहा है:—

शशिनि खलुकलंक' कण्टकं पद्मनाले।
युवतिकुचनिपातः पक्वता केशजाले॥
जलधिजलमपेयं पण्डिते निर्धनत्वं।
वयसि धनविवेको निर्विवेको विधाता॥

(चन्द्रमा में कलंक, पद्मनाल में काँटे, युवतियों के स्तनों का गिरना, बालों का पकना, समुद्र के जल का खारा होना, पण्डितों का निर्धन होना और बुढ़ापे में धन की चिन्ता — ये सब ब्रह्मा की मतिहीनता के परिचायक हैं।)

दोहा

विधिना द्वै अनुचित करी, वृद्ध नरन तन काम।
कुच ढरकन हू जगत में, जीवित राखी बाम॥ २८॥

सार—स्त्री-संभोग का आनन्द पुरुष की जवानी में और स्त्री के कुचों के कठोर और सघन बने रहने तक ही है।

28 It is very improper and contradictory that males are subject to passions in old age and it is also very improper and contradictory that females were not made to live and to have sexual intercourse only up to the time when their breasts are protuberant.

———

एतत्कामफलं लोके यद्द्वयोरेकचित्तता।
अन्यचित्तकृते कामे शवयोरिव संगमः ॥ १६ ॥

समागम के समय स्त्री-पुरुषों का एकचित्त हो जाना ही काम का फल है। यदि समागम में दोनों का चित्त एक न हो तो वह समागम-समागम नहीं वह तो मुर्दों का-सा समागम है ॥ २६ ॥

किसी ने कहा है'—

सुरते च समाधौ च मनो यत्र न लीयते।
ध्यानेनापि हि किं तेन किं तेन सुरतेन वा ॥

सुरत के समय सुरत में और समाधि के समय समाधि में यदि मन लीन न हो जाय, चित्त उन्हीं कामों में ग़र्क़ न हो जाय, तो उस सुरत और समाधि से कोई लाभ नहीं। स्त्री पुरुष के समागम के समय, दोनों का एक दिल हो जाना परमावश्यक है। दोनों का दिल एक हुए बिना कुछ आनन्द नहीं। यदि एक का दिल कहीं और दूसरे का कहीं हो और सङ्गम किया जाय, तो उस सङ्गम को स्त्री पुरुषों का सङ्गम नहीं, बल्कि दो लाशों का सङ्गम कह सकते हैं।

समागम के समय यदि दोनों में से किसी का भी चित्त समागम के लिए उत्कण्ठित न हो, तो समागम न करना चाहिए। वैसे समागम से आनन्द नहीं आता और वृथा बल क्षीण होता है। अगर एक का दिल हो और दूसरे का न हो, तो जिसका दिल हो उसे दूसरे का काम जगाना उचित है। जब दोनों ही कामो-

कैसे बलवान हो सकता है, फिर से नयी जवानी कैसे आ सकती है वगैर वगैरः।

(१८) गर्भ धारण करने के क्या उपाय हैं और सुवैद्य गर्भ न रहने के कारणों को कैसे जान सकते हैं इत्यादि।

जो पुरुष इन अवश्यमेव जानने योग्य विषयों को नहीं जानते, उन्हें स्त्री-संभोग का सुख कैसे मिल सकता है?

सारे कामशास्त्र का निचोड़ नीचे दो श्लोकों मे है और उसी एक बात के लिए "कामशास्त्र" जैसा बड़ा ग्रन्थ रचा गया है—

यद्यप्यष्ट गुणाधिको निगदित मामोऽङ्गनानां सदा।
नो याति द्रवता तथापि झटिति व्यायामिनां संगमे॥
प्रागेव पुंस सुरते न यावन्नारी द्रवेद्भोगफल न तावत।
अतो बुधैः कामकला प्रवीणैः कार्यं प्रयत्नो वनिताद्रवत्वे।

अर्थात्—यद्यपि स्त्री मे पुरुष की अपेक्षा सदा आठ गुणा काम कहा गया है, तो भी वह पुरुषसङ्गम से जल्दी स्खलित नहीं होती। संभोग करने से अगर स्त्री पहले स्खलित न हो, तो संभोग करना बेकार हुआ, इसका कोई फल न हुआ। इसलिये काम-कला जानने वाले चतुर पुरुष को द्रवित * करने की चेष्टा में कोई उपाय उठा न रखना चाहिये।

---

*द्रवित और स्खलित शब्द ऐसे हैं, जिनके कहने और लिखने में आजकल संस्कृत का अधिक प्रचार न होने से लज्जा नहीं मालूम होती। अश्लीलता का उतना दोष नहीं आता। यद्यपि (Etiquette) यानी

दोहा ...शादलसास्तथा

नार समागम कामफल, दुहु नहि चित ...संमदाः ।
जो कह होय विभिन्नता, शव-संगम-सम जौय ।तिनो

सार—सम्भोग-काल में स्त्री-पुरुष के एक दिल होने ही आनन्द है ।

अदब, आदाब या सौजन्य शिष्टाचार हमे इतने मे भी रोकता है, पर हमने अपने अल्प शिक्षित भाइयों की खातिर मे २५, २६, २७ और २६वे श्लोको की टीका-टिप्पणी मे एटीकेट का उतना ध्यान नही रखा है। जहाँ तक हमसे बना है वहाँ तक हरेक बात खोलकर लिखी है और अपने तई कानूनी पेचों से भी बचाया है।

कामशास्त्र का विषय बहुत बडा है। उस पर बडे-बडे ग्रन्थ अंगरेज़ी और संस्कृत प्रभृति भाषाओं में लिखे हुए है। हमने भी कामशास्त्र की जानने योग्य सभी बातें अपनी बनाई "स्वास्थ्यरक्षा" बारहवाँ संस्करण और "चिकित्साचन्द्रोदय" चौथे और पाँचवें भागो मे लिखी है। हमने कामशास्त्र पढने की जरूरत वहाँ समझा दी है। जो लोग कामशास्त्र और वैद्यकशास्त्र नहीं पढते, उनका इस दुनिया मे आना और मनुष्य-चोला धारण करना वृथा है। कामशास्त्र और वैद्यकशास्त्र में कुछ फर्क नहीं। सच पूछो तो कामशास्त्र वैद्यक शास्त्र का ही एक अंश है। लोग पहले शिकायत किया करते थे कि कामशास्त्र और वैद्यकशास्त्र सरल सुबोध हिन्दी मे नही, इसलिये पढें तो क्या पढ़ें। उन्हीं की शिकायत रफा करने के लिये हमने समस्त आयुर्वेद ग्रन्थों का

कैसे बलवान हो सके when both the man and the है वगैर' वगैरः of the same mind that the sexual (?-es are the greatest. If their minds are -rted, then the intercourse is like that of inanimate bodies

---

नवनीत एक ग्रन्थ में इकट्ठा किया है और उस ग्रन्थ का नाम रखा है, 'चिकित्साचन्द्रोदय'। इस ग्रन्थ के सात भाग हैं। हमारी राय में वे सातों ही भाग हर मनुष्य को आद्योपान्त पढ़ लेने चाहियें। जिस दिन भारत का प्रत्येक स्त्री-पुरुष उन सातों भागों को पढ़-पढ़ कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करेगा, उस दिन का भारत और ही भारत होगा।

सरकार किसी को कामशास्त्र पढ़ने से मना नहीं करती। अगर ऐसा होता तो Sexual Intercourse विषय पर अँगरेजी में अनेकों ग्रन्थ न निकल जाते। सरकार चाहती है कि जनता अश्लील और गन्दी पुस्तकें, जिनमें नंगी तस्वीरें हों, पास न रखे। पर अफसोस है कि आजकल के नासमझ नौजवान उन्हीं खोज में पागल की तरह अपना धन और समय बर्बाद करते हैं। आजकल के दग़ाबाज विज्ञापनबाज़ों की रंगीन बातों में आकर वी० पी० पर वी० पी० मँगाते और पीछे पुस्तकों को काम की न पाकर रोते और पछताते हैं। हमारे भोले-भाले पाठक "सचित्र कोकशास्त्र" का विज्ञापन पढ़ते ही आर्डर देते हैं। पर इतना नहीं समझते कि आसनों की तस्वीरें देकर कोक को कौन छापने की हिम्मत कर सकता है? जेल में किसे भय नहीं

प्रणयमधुराः प्रेमोद्गाढा रसादलसास्तथा
भणितिमधुरा मुग्धप्रायाः प्रकाशितसंमदाः ।
प्रकृतिसुभगा विश्रम्भार्द्राः स्मरोदयदायिनो
रहसि किमपि स्वैरालापा हरन्ति मृगीदृशाम् ॥३०॥

मृगनयनी कामिनियों के प्रणय-प्रीति से मधुर, प्रेम-रस से पगे काम की अधिकता से मन्द, सुनने में आनन्दप्रद, प्रायः अस्पष्ट और समझ में न आने योग्य, सहज-सुन्दर, विश्वासयोग्य और कामोद्दीपन करने वाले वचन, स्वच्छन्दतापूर्वक एकान्त में कहे जायँ, तो निश्चय ही सुनने वाले के मन को हर लेते हैं ॥ ३० ॥

है ? इसलिये हम फिर कहते हैं कि आप चालीस रुपये खर्च करके 'चिकित्साचन्द्रोदय'' सात भाग और 'स्वास्थ्यरक्षा'' देखें । आपको सम्पूर्ण आयुर्वेद और कामशास्त्र का ज्ञान हो जायगा । इस शास्त्र को पढ़ना आपका कर्त्तव्य है, धर्म है । यही हमारे मुनियों की और यही पाश्चात्य विद्वानों की राय है । देखिये, डाक्टर गन साहब कहते हैं—It is, therefore, every individual's duty to study the laws of his being, and to conform to them ignorance, or inattention on this subject is sin, and injurious consequences of such a course make out a case of gradual suicide. चिकित्सा-शास्त्र और काम शास्त्र पढ़ना हरेक मनुष्य का धर्म है । जो इन्हें नहीं पढ़ते, वे पाप करते हैं और अन्त में आत्महत्या आदि करके बे-मौत मरते हैं ।

खुलासा— कुरङ्गनयनी तरुणियों की प्रेम-रस से पगी हुई मधुर-मधुर बातें रसिक पुरुषों के कानों में अमृत-सा ढालती हैं। मुर्झाये हुए पुष्प-रूपी प्राणों को खिलाती हैं, सारी इन्द्रियों को प्रसन्न करतीं और मन में रसायन का काम करती हैं। लेकिन जब वे एकान्त-स्थल में स्वच्छन्दतापूर्वक कही जाती हैं, तब तो और भी गजब करती हैं। जिनसे ये कही जाती हैं, वे बात कहने वालियों के क्रीत-दास ही हो जाते हैं।

कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका की मीठी-मीठी बातें सुनकर महाकवि अकबर के शब्दों में कहता है –

बनोगे खुसरवे इक्लीमे दिल, शीरींज़बाँ होकर।
जहाँगीरी करेगी यह अदा, नूरेजहाँ होकर॥

मीठी मीठी बातें करने से तुम संसार के सभी लोगों के दिलों की रानी हो जाओगी। तुम्हारा यह गुण—मधुर भाषण नूरजहाँ की तरह सारे संसार को फतह करेगा।

दोहा

प्रणय-मधुर आलस भरे, सरस सनेह समेत।
मृगनैनिन के ये वचन, हरत चित्त को लेत॥३०॥

सार—सुनयनाओं की मधुर-मधुर बातों में जादू की-सी शक्ति होती है। उनकी अमृतभरी बातों पर कामी पुरुष मुग्ध हो जाते हैं।

31 Ladies with beautiful eyes always attract the mind by their unrestrained conversation which is sweet because of softness, full of love, very pleasing to the ear on account of delicacy, gives rise to joy, is naturally soothing and confiding and which arouses passions.

आवासः क्रियतां गांगे पापहारिणि वारिणि ।
स्तनमध्ये तरुण्या वा मनोहारिणि हारिणि ॥३१॥

या तो पाप-ताप नाशिनी गंगा के किनारों पर ही बसना चाहिये, या मनोहर हार पहने हुए तरुण स्त्रियों के स्तनों के मध्य में ही बसना चाहिये ॥३१॥

खुलासा—दो में से एक काम करना चाहिये—या तो पापहारिणी गङ्गा के किनारे बैठकर शंकर का भजन करना चाहिये या मोतियों के हार धारण करने वाली हृदयहारिणी कामिनियों के कठोर कुच सेवन करने चाहिये।

इस जगत में, कामी पुरुषों के लिए नवयुवतियों के कठोर कुच-युगल और सघन स्थूल जङ्घाओं से बढ़कर सुखदायी और दूसरा पदार्थ नहीं है; इसलिए वे उन्हीं का सेवन कर अपना मनुष्य-जन्म सफल करें। पर जिन्हें इस संसार की असारता और चञ्चलता का ज्ञान हो गया है, जिन्हें रूप-यौवन की अनित्यता का हाल मालूम हो गया है, और इसलिए कामिनियों से घृणा हो गई है, उन्हें सब द्विविधा त्याग, कहीं निर्जन और रमणीक स्थान में,

। यह

गङ्गा के तट पर पर्णकुटी बना, शिव-शिव रटना चाहिये। कामिनियों के भोगने से यहां अपूर्व सुख की प्राप्ति होगी, पर परलोक मे दुःखों का सामना करना पड़ेगा; मगर सबको तज, गङ्गा किनारे जा, हर-भजन करने से यहाँ भी सुख-शान्ति मिलेगी और वहां भी। पाठकों के समक्ष दोनो राहें हैं। अब उन्हें जो भी राह पसन्द हो, उसे ही चुन लें। त्रिशकु की तरह बीच मे लटकना और—

इधर के रहे न उधर के रहे।
खुदा ही मिला न विसाले सनम॥

वाली कहावत चरितार्थ करना भला नहीं।

दोहा

वास कीजिये गंग तट, पाप निवारत वारि।
कै कामिनी कुच युगल को, सेवन करहु विचारि॥३१

सार—गङ्गा-तट पर बसना और कामिनियों के कठोर कुचों का सेवन करना, ये दो ही काम जगत में मुख्य है। विचारवान विचार कर इनमें से किसी एक को चुन लें।

31 Let one take rest either on the bank of the river Ganges whose water clears away the sin; or between the breasts of a woman which are very attracting and where the breast chain is lying

प्रियपुरतो युवतीनां तावत्पदमातनोतु हृदि मानः।
भवति न यावच्चन्दनतरुसुरभिर्मधुसुनिर्मलः पवनः॥३२॥

मानिनी कामिनियों के हृदयों में अपने प्यारों के प्रति मान तभी तक ठहरता है, जब तक चन्दन के वृक्षों की सुगन्धि से पूर्ण मलयाचल का वायु नहीं चलता ॥३२॥

खुलासा--माननी के मन में उसी समय तक मान रहता है, और उसी समय तक उसकी भृकुटियाँ टेढ़ी रहती हैं, जब तक कि चन्दन के वृक्षों की सुगन्ध से मिला हुआ वायु उनके कोमल शरीरों मे नहीं लगता ।

आम की मनोहर मञ्जरियाँ, सुनिर्मल चन्द्रमा, कोकिल, भौंरे और मलय-पवन तथा वसन्त— ये सब कामदेव के साथी और उसके अस्त्र-शस्त्र है। वह इन्हीं से त्रिलोकी को वश में करता है ।

मानिनी कैसी ही कठोर क्यों न हो, किसी तरह मनाये न मानती हो, तोभी वह कोयल के कुहुकने, मलयपवन के चलने या घटाओं के छा जाने से शीघ्र ही मान छोड़, अपने प्रीतम की गोद मे आ जाती है। जो कामिनी पुरुष की अनेक तरह की खुशामदों से भी राजी न होती हो, वह मलयपवन प्रभृति की मदद से सहज में राजी हो जाती है। कवि ने ठीक कहा है कि मानिनी का मान तभी तक है, जब तक मलयाचल की हवा नहीं चलती। उसके चलते ही मानिनी आप खुशामद करने लगती है; क्योंकि वसन्त मे मलयाचल की ओर की हवा चलती है और वह स्त्रियों के दिलों मे बड़ी गुदगुदी पैदा करती है। इससे आयुर्वेद-आचार्यों ने वसन्त मे रात-दिन स्त्री-पुरुषों के अङ्ग मे कामदेव का रहना लिखा है। इस

यहाँ यह

मौसम मे मनहूस से मनहूस का भी काम जाग उठता है और रूठी हुई* स्त्रियाँ सहज में मान जाती है।

तब हीं लों मन मान अह, तब हीं लों भ्रूभग।
जौं लौं चंदन से मिल्यो पवन न परसत अंग ॥३३॥

सार—मलय पवन के चलते ही मानिनी स्त्रियाँ आप ही सीधी हो जाती है।

33 The pride of a woman before her lover remains only so long as the pure spring air bearing the sweet smell of sandal does not touch her body

*कामशास्त्र मे स्त्री के नाराज या उदासीन रहने के नव य

कार्पण्यादतिमानरोगबिरहोद्योगादि पारुष्यतो,
मालिन्यासममन्नतादि भयत. शोकाद्दरिद्रादपि।
भर्तृणां तनुतादिभिश्च वपुष काठिन्यत शंकना ॥
दोषाणाञ्च वृथा प्रयाति वनितावैराग्यमुच्चै. सदा ॥

पति की अत्यंत कजूसी, पति का जियादा प्यार करके सिर पर चढ़ा लेना, पति का सदा रोगी बना रहना, पति का निखट्टू या पुरुषार्थहीन होना, पति का उम्र, यौवन, विद्या, बुद्धि और कुल-शील आदि मे पत्नी के समान न होना, पति की मूर्खता, पति और सास-ससुर आदि का अत्यन्त भय, शोक, दरिद्रता पति के शरीर की सख्ती और कठोरता, पति का अधिक शंकायुत रहना और व्यभिचार या छिनाले की झूठी तुहमत लगाना प्रभृति कारणो से स्त्रियां अपने पतियो से अक्सर विरक्त, उदासीन, नाराज या असंतुष्ट रहती है। जिन पुरुषो को स्त्री-सुख की जरूरत हो, उन्हे उपरोक्त कारण यथासाध्य दूर करने की चेष्टा करनी चाहिये। ऐसा करने से ही स्त्री चाहने लगेगी।

ऋतु-वर्णन

वसन्त-महिमा

परिमलभृतो वाताः शाखा नवांकुरकोटयो ।
मधुरविरुतोत्कण्ठा वाचः प्रियाः पिकपक्षिणाम् ॥
विरलसुरतस्वेदोद्गारा वधूवदनेन्दवः ।
प्रसरति मधौ* राज्यां जातो न कस्य गुणोदयः ॥१३॥

जबकि सुगन्धियुक्त पवन चला करता है, वृक्षों की शाखाओं में नये-नये अंकुर निकलते हैं, कोकिला मदमत्त या उत्कण्ठित होकर मधुर कलरव करती है, स्त्रियों के मुखचन्द्र पर मैथुन के परिश्रम से

---

* मधौ = चैत्रे । चैत वसन्त के दो महीनों में से एक का नाम है, पर यहाँ यह सारे ही वसन्त के मौसम के लिए इस्तेमाल किया गया है।

निकले हुए पसीनों की हलकी-हलकी धारें मजा देने लगती हैं, उस वसंत की रात में, किसे काम पीड़ित नहीं करता ? ॥२३॥

खुलासा—वसन्त कामदेव का साथी और ऋतुओं का राजा है। इस ऋतु में सुगन्धि मिश्रित पवन चलने लगते हैं। शाखा-प्रशाखाओं में नवीन पत्रांकुर शोभा देने लगते हैं। चारों ओर फूल खिलते हैं। कोकिला मधुर कलरव करती है। साँझ सुहावनी और दिन रमणीय होने लगते हैं। स्त्रियाँ अनुरागिनी होने लगती हैं। बहुत क्या, इस ऋतु में सभी पदार्थों में मनोहरता आ जाती है।

हम अपने पाठकों के मनोरञ्जनार्थ महाकवि कालिदास-विरचित "ऋतु-संहार" से चन्द सुन्दर-सुन्दर पद्य उद्धृत करते हैं—

आकम्पितानि हृदयानि मनस्विनीनां
वातैः प्रफुल्ल सहकार कृताधिवासैः।
सम्बाधितस्परभृतस्य मदाकुलस्य
श्रोत्रप्रियैर्मधुकरस्य च गीतनादैः ॥

इस ऋतु में बौरे हुए आम के वृक्षों की सुगन्धि से सुगन्धित वायु ने धीरज धरने वाली कामिनियों के हृदयों में भी खलबली मचा दी है। मदोन्मत्त कोकिलों की कुहुक और भौंरों के मधुर गुञ्जार से चारों दिशायें भर गई हैं।

और भीः—

पुंस्कोकिलश्चूतरसेन मत्तः
प्रियामुखं चुम्बति सादरोयम्।

। पुरुषों के प्राण नाश करता है। बड़े ही दुःख का विषय है कि
॥ लिये विपद्‌काल में अमृत भी विष हो जाता है ॥ ३४ ॥

आतमा – कोकिल का मधुर कलरव और मलयाचल की
का मुखपूर्ण हवा प्राणिमात्र में नवजीवन का सञ्चार करते हैं।
अपनी शोकात्त और मनहूसो के दिलों में भी गुदगुदी होने लगती
अमो के चेहरों पर प्रसन्नता छा जाती है; पर कर्मों के फेर
न के कारण से, यही दोनो विरही स्त्री-पुरुषों को मछली
तड़फाते हैं। सच है, विपत्ति-कालमे सोना मिट्टी हो जाता
अमृत विष हो जाता है। पण्डितराज जगन्नाथ अपने
ी-विलास" मे कहते हैं:—

इस ।लयानिलमनलीयति मणिभवने काननीयति क्षणात. ।
मतवाले रहेण विकलहृदया निर्जलमीनायते महिला ॥
में मग्न -वेदना से विकल कामिनी मलयाचल के पवन को आग
बहुत मय भवन को वन समझ कर मछली का-सा आचरण
इतना ही यानी जलहीन मछली की तरह तड़फती है।
स्त्रियों को भी—

अकड़ कर ीरद्रुभुजङ्गपुंगवमुखायाताइवातापिनो,
रहने पर भा वाति दहन्ति लोचनमयी ताम्रा रसालद्रुमा ।
हन्त किरन्ति कूजितमयंहालाहलं कोकिला.—
ला बालमृणालकोमलतनुः प्राणान् कथं रक्षतु ॥

।के वृक्षों मे बसने वाले साँपों के मुख से निकली हुई हवा के

समान सन्तप्त, गरम हवा चलती है, लाल-लाल पत्तो वाले आम के वृक्ष नेत्रों को जलाते हैं, कोयल की वाणी विष-सा बरसाती है। इस दशा में नवीन कमल की डण्डी के समान कोमलाङ्गी वाला किस तरह अपनी प्राण-रक्षा करेगी ?

पाठक ! देख लिया, वसन्त में विरही जनो की कैसी दुर्दशा होती है। विरही स्त्री-पुरुष सभी शीतल और शान्ति मय पदार्थों को अग्निवत् समझते हैं। विरह-व्याकुला वाला काले अगर और चन्दन के रस को हलाहल विष और नील कमलों की माला को साँपों की क़तार समझने लगती है।

एक विरहिणी वसन्त मे अपने प्रीतम के घर न आने पर स्त्रपति, कोकिल, कामदेव और चन्द्रमा पर कैसी कुपित हो रही हैं और उनसे बदला लेने की ठान रही है। हम इस मनोहर उक्ति को महाकवि कालिदास-कृत 'शृङ्गार तिलक' से उद्धृत करते है। लीजिये पाठक ! इसका भी रसास्वादन कीजिये:—

आयाता मधुयामिनी यदि पुनर्ना—
यात एव प्रभुः प्राण यान्तु विभावसौ
यदि पुनर्जन्मग्रहं प्रार्थये।
व्याधःकोकिलबन्धने हिमकर—
ध्वंसे च राहुग्रहः कन्दर्पे हरनेत्र-
दीधितिरहं प्राणेश्वर मन्मथः॥

वसन्त की रात आगई पर मेरे स्वामी न आये। इसलिये मेरे प्राण आग मे नष्ट हों। अगर मरने के बाद फिर जन्म होता

हो, तो मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि कोकिल के बन्धन के लिये मैं व्याध होऊँ, चन्द्रमा का नाश करने के लिये राहु होऊँ, कामदेव के संहार के लिये शिवजी के नेत्र की किरण बनूं और अपने प्राणप्यारे के लिये कामदेव बनूँ; अर्थात वसन्त मे ये सब मुझे जिस तरह सता रहे है, परकाल मे मैं भी इन्हें सताऊँ और अपना बदला लूं।

दोहा

ऋतु बसन्त कोकिल कुहुक, त्योंही पवन अनूप।
विरह विपत के परत ही सुधा होय विषरूप ॥ ३८ ॥

सार—विरही स्त्री पुरुषों के लिये 'वसन्त' काल के समान है।

34. This month of Chaitra kills (as it were) those who are suffering from the pangs of separation, by the sweet sound of cuckoo and by the air of Malyachala mountain Alas! even nectar becomes poison in adversity (Sweet sound of the cuckoo and the gentle breeze in the spring season please every one, but those, whose beloved ones are away, feel their absence all the more by these messengers of spring)

आवासः किल किञ्चिदेव दयितापार्श्वे विलासालसः।
कर्णे कोकिलकाकलीकलरवः स्मेरो लतामण्डपः॥

गोष्ठी सत्कविभिः समं कतिपयैः सेव्याः सितांशो कराः
केषांचित्सुखयन्ति नेत्रहृदये चैत्रे विचित्राः क्षपाः ॥ ३५ ॥

भोगविलास से शिथिल होकर कुछ समय तक अपनी प्यारी के पास आराम करना, कोकिलाओं के मधुर शब्द सुनना, प्रफुल्लित लता मण्डप के नीचे टहलना, सुन्दर कवियों से बातचीत करना और चन्द्रमा की शीतल चांदनी की बहार देखना—ऐसी सामग्री में चैत्र मास की विचित्र रात्रियां किसी-किसी ही भाग्यवान के नेत्र और हृदयों को सुखी करती हैं ॥ ३५ ॥

खुलासा—कोयल कुहुकती हो, लताएँ फूल रही हों, चाँदनी छिटक रही हो, श्रेष्ठ कवि अपनी रसीली कविताएँ सुनाते हों और भोग-विलास से थक कर अपनी प्राण-प्यारी के पास आराम कर रहे हों—चैत के महीने की रातों में, जिन्हें ये सब मयस्सर हों वे निश्चय ही भाग्यवान हैं। जिन्होने पूर्व जन्म में पुण्य सञ्चय किये हैं, उन्हें ही ये स्वर्गीय सुख मिलते है, सब किसी को नहीं।

दोहा

कोकिल-रव फूली लता, चैत चान्दनी रैन।
प्रिया सहित निज महल में, सुकृती करत सुचैन ॥३५॥

(सार—चैत की चाँदनी रात में, विरले पुण्यात्मा ही अपने महल की छत पर, अपनी प्राणप्यारी के साथ आनन्द करते हैं।)

39 The wonderful nights of the month of Chaitra give pleasure to the mind and eyes of man who enjoys the sweet company of his beloved wife being tired with pleasurable copulation, hears the sweet songs of the cuckoo and takes delight in bright moon-light, whose time is passed in company with bards, but to others, whose beloved ones are away, these nights give pain.

पान्थस्त्रीविरहानलाहुतिकथामातन्वती मञ्जरी
माकन्देषु पिकाङ्गनाभिरधुना सोत्कण्ठमालोक्यते ॥
अप्येते नवपाटलापरिमलप्राग्भारपाटच्चरा
वान्ति क्लान्तिवितानतानवकृताः श्रीखण्डशैलानिलाः* ॥२६॥

इस वसन्त मे, जगह-जगह, बटोहियों की विरहव्याकुल स्त्रियों की विरहाग्नि मे आहुति का काम करने वाली आम की मञ्जरियां खिल

---

* श्रीखण्डशैल मलयाचल पर्वत का ही दूसरा नाम है। मलयाचल भारत की सात मुख्य पर्वत-श्रेणियों में से एक है। संभवतः यह घाटों का दक्षिणी भाग है, जो मैसूर के दक्खिन से शुरू होकर त्रावणकोर की पूर्वी सीमा बनाता है। कीलहार्न साहब कहते हैं, मलयाचल उस पर्वत-श्रेणी का नाम है, जो भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमीय तट पर है और जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से लगते हैं।

रही हैं । कोकिला उन्हें बड़ी अभिलाषा या उत्कंठा से देख रही है। नये पलाश के फूलों की सुगन्धि को चुराने वाले और राह की थकान को मिटाने वाले मलय वायु चल रहे हैं ॥२६॥

यहाँ ऋतुराज की स्वाभाविक महिमा का चित्र खींचा गया है। हम भी अपने मनचले पाठकों के मनोरञ्जनार्थ महाकवि कालिदास के "ऋतु-संहार" से एक श्लोक नीचे उद्धृत करते हैं:—

समदमधुकराणां कोकिलानाञ्च नादैः
कुसुमितसहकारैः कर्णिकारैश्च रम्यैः ।
इषुभिरिव सुतीक्ष्णैर्मानसं मानिनीनां
तुदति कुसुममासो मन्मथोद्दीपनाय ॥

यह कुसुम मास मतवाले भौंरों, कोकिल के शब्दों, अत्यन्त तेज तीरों के समान बौरे हुए आम के वृक्षों और मनोहर कनेर के वृक्षों के द्वारा, कामोद्दीपन करने के लिए मानिनी स्त्रियों के मनों को विद्ध कर रहे हैं।

छप्पय

विरहीजन-मन ताप करन, बन अम्बा बौरे।
पिकहु पञ्चम हेर टेर, विरही किये बौरे॥
भौंर रहे भन्नाय, पुहुप पाटल के महकत।
प्रफुल्लित भये पलास, दशों दिशि दौसी दहकन॥
मलयागिरिवासी पवनहु, काम अग्नि प्रज्वलित करत।
तिन कन्त बसन्त अरन्त ज्यों, घेर रह्यो यह नहिं टरत॥२६॥

सार—आम की मंजरियों का खिलना, कोकिला का उन्हें उत्कंठा से देखना और मलय पवन का चलना—ये ऋतुराज बसन्त की स्वाभाविक महिमा हैं।

36 In the spring season, the peahen eagerly looks at the mango blossoms. which adds in the flame of separation of a traveller s wife and the air from Malyachala blows stealing the smell of patal flowers and renewing her grief

———

सहकारकुसुमकेसरनिकरभरा मोदमूर्च्छितदिगन्ते ।
मधुरमधुविधुरमधुपे. मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा ॥३७॥

आम के बौरों की केसर की गहरी सुगन्ध से दशों दिशाएँ व्याप्त हो रही हैं, मधुर मकरन्द को पी-पीकर भौंरे उन्मत्त हो रहे हैं। ऐसे ऋतुराज बसंत में किसके मन में कामवासना का उदय नहीं होता ?॥३७॥

खुलासा—जिस समय बसन्त मे आमों के फूलों की सुगन्ध से दिशाएँ महकने लगती हैं, मधु के लोभी भौंरे मधु पी-पीकर उन्मत्त हो जाते हैं, उस समय प्राय. सभी प्राणियो की विषयवासना प्रबल हो उठती है। पुरुष स्त्रियों से और स्त्रियाँ पुरुषो से मिलने को तड़फड़ाने लगती है। बड़ी बड़ी मानिनी स्त्रियों का गर्व खर्व हो जाता है। जो दम्पति एकत्र होते हैं, वे इस ऋतु में आनन्द करते

हैं; परन्तु जो दूर-दूर होते हैं, वे विरह की आग में बुरी तरह जलते हैं।

सोरठा

फूले चहुँ दिशि आम, भई सुगंधित ठौर सब।
मत्त मधुपी अलिग्राम, मत्त भये झूमत फिरें ॥३७॥

सार—वसन्त में प्रायः सभी प्राणियों को कामदेव सताता है।

37. Who does not feel buoyant in the spring season when all the quarters are filled with smell issuing forth from the bunch of mango-blossoms and when the bees are busy in the collection of sweet honey from flowers?

अच्छाच्छचन्दनरसार्द्रकरा मृगाक्ष्यो
धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च ॥
मन्दो मरुत्सुमनसः शुचि हर्म्यपृष्ठं
ग्रीष्मे मदश्च मदनश्च विवर्द्धयन्ति ॥३८॥

मनोहर सुगन्धित माला, पंखे की हवा, चन्द्रमा की किरणें, फव्वारेदार घर, महल की छत और मृगनयनी कामिनी—ये सब मौसम गरमी में, मद और मदन दोनों को बढ़ाते हैं।

[पृ० १४१

अत्यन्त सफेद चन्दन जिनके हाथों में लग रहा है, ऐसी मृगनयनी सुन्दरियां, फव्वारेदार घर, फूल, चांदनी, मन्दी हवा और महल की साफ छत,-ये सब गरमी के मौसम में, मद और मदन दोनों ही को बढ़ाते हैं ॥३८॥

खुलासा—मृगनयनी के कमल समान हाथों में अरगजा चन्दन लगा है, फुआरे छूट रहे है, फूलों की शय्या बिछी है, चन्द्रमा की चारु चाँदनी छिटक रही है, वीणा बज रही है, चतुर गवैये गा रहे है, महल की स्वच्छ और परिष्कृत छत पर पलंग बिछ रहा है, इन सब सामग्री से मद और मदन दोनों ही की वृद्धि होती है, अर्थात जिन पुरुषों के मन में विषय भावना नहीं होती, उनके भी मन इन सामानों के सामने होने से उत्कंठित हो जाते है, पर ये सब धनी और राजा महाराजाओं को ही मयस्सर हो सकते है। हम अपने पाठकों के मनोरञ्जनार्थ चन्द सुन्दर सुन्दर श्लोक महाकवि कालिदास कृत "ऋतु-संहार" से उद्धृत करते हैं:—

(१)

सचन्दनाम्बु-व्यजनोद्भवानिलैः
सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः ।
सवल्लकी-काकलिगीत निस्वनैः
प्रबुध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः ॥८॥

(२)

निशाः शशांकः क्षतनीरराजयः
क्वचिद् विचित्रं जलयंत्रमन्दिरम्

मणिप्रकाराः सरसञ्च चन्दनं
शुचौ प्रिये यान्तिजनस्य सेव्यताम् ॥ ६ ॥

(३)

पयोधराश्चन्दनपंकशीतला--
स्तुषारगौरार्पितहारशेखराः ।
नितम्बदेशाश्च सहेम मेखलाः
प्रकुर्व्वते कस्य मनो न सोत्सुकम् ॥१०॥

इस ग्रीष्म ऋतु में चन्दन के पानी से भिगोये हुए पंखे की हवा से, हारयुक्त स्तन-मण्डलों को छाती से लगाने से और वीणा के मधुर स्वर के साथ गाना सुनने से सोया हुआ कामदेव भी चैतन्य हो जाता है ॥ १ ॥

हे प्यारो ! इस आषाढ़ के महीने में कहीं रात और चन्द्रमा, कहीं थोड़े जल वाला तालाब और कहीं फुहारेदार घर, कहीं नाना प्रकार के शीतल रत्न और कहीं सरस चन्दन, मनुष्यों के सेवनीय हो जाते हैं ॥ २ ॥

इस ऋतु में बर्फ के समान सफेद और उज्ज्वल हार धारण किये चन्दन-चर्चित शीतल पयोधर* और सोने की कौधनी पडे हुए नितम्ब † किसके चित्त को उत्कण्ठित नहीं करते ? ॥३॥

---

* पयोधर = स्तन, चूचियाँ ।

† नितम्ब = कमर का पिछला भाग, चूतड़ ।

छप्पय

मृगनैना के हाथ, अरगजा चन्दन लावत ।
छूटत फुहारे देख, पुष्प-शय्या विरमावत ॥
चारु चाँदनी चन्द, मन्द मारुत को ऐबो ।
बाजत बीन प्रवीण, संग गायन को गैबो ॥
चाँदनी उजरे महल की, निरखत चितगति हित टरन ।
पुरुषन को ग्रीष्म विषम में, ये मद-मदनहि विस्तरन ॥ ३८ ॥

37. Ladies having their hands besmeared with purest sandal water, houses having fountains playing therein, sweet smelling flowers, bright moon-light, fragrant creepers, the gentle breeze and the white roof of the palaces—these things in summer season, increase sexsual desires

---

स्रजो हृद्यामोदा व्यजनपवनश्चन्द्रकिरणाः
परागः कासारो मलयजरजः सीधु विशदम् ॥
शुचिः सौधोत्संगः प्रतनु वसनं पंकजदृशो ।
निदाघे तूर्णम् तत्सुखमुखपलभन्तं सुकृतिनः ॥३८॥

मनोहर सुगन्धित माला, पंखे की हवा, चन्द्रमा की किरणें, फूलों का पराग, सरोवर, चन्दन की रज, उत्तम मदिरा, महल की उत्तम छत,

महान वस्त्र और कमलनयनी सुन्दरी,–इन सब उत्तमोत्तम पदार्थों का, गरमी की तेजी से विकल हुए, कोई-कोई भाग्यवान पुरुष ही मजा ले सकते हैं ॥३६॥

खुलासा गरमी की ऋतु में, फूलों की माला, पंखे की हवा, चारु चाँदनी और कमलनेत्री कामिनी प्रभृति शीतल और शान्तिमय पदार्थों का भोग कोई कोई पुण्यवान ही कर सकते हैं। सबके लिये ये स्वर्गीय आनन्द देने वाले सामान मयस्सर हो नहीं सकते। जिन्होंने पूर्व जन्म में पुण्य किया है, जिनके ऊपर विष्णु प्रिया लक्ष्मी की कृपा है, वे ही इनका सुख लूट सकते हैं।

दोहा

पुष्पमाल पंखा-पवन, चन्दन चन्द सुनारि ।
बैठ चादनी जल लहर, जेठ मास घट वारि॥३६॥

391. In summer season, it is only the fortunate people who derive pleasure by the enjoyment of the following—sweet smelling garlands, air of fans, moon-light, pollens of flowers, tanks, sandal dust pure wine, white terrace of big palaces, fine clothes and the lotus-eyed beautiful maiden

---

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मिः शशधरः
प्रियावक्त्राम्भोजं मलयजरजश्चातिसुरभिः ॥

स्रजो हृद्यामोदास्तदिदमखिलं रागिणि जने।
करोत्यन्तः क्षोभं न तु विषयसंसर्गविमुखे ॥२१॥

लिपा-पुता साफ महल, निर्मल किरणों वाला चन्द्रमा, प्यारी का मुख कमल, चन्दन की रज और मनोहर फूलमाला—ये सब चीजें कामी पुरुषों के मन में अत्यन्त क्षोभ करती हैं, किन्तु विषय-वासना से विमुख पुरुषों के हृदयों में किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न नहीं करता ॥ ४० ॥

खुलासा—जो अनुरागी हैं, कामी हैं, उनके दिलों में स्वच्छ महल, निर्मल सुधाकर की रश्मियाँ, पुष्पमाला, खस के पंखे की हवा, फव्वारों का चलना, चन्दन की रज, वीणा का मधुर स्वर, सुरीले कण्ठों का मनोहर गान प्रभृति शीतल, पर कामोत्तेजक, पदार्थ एक प्रकार की हलचल-सी मचा देते हैं। इनसे उनकी काम-वासना—भोग-विलास की इच्छा और भी प्रबल हो जाती है। परन्तु जो संसार से उदासीन हैं, जिन्हें विरक्ति हो गई है, जिन्हें संसार की असारता और चञ्चलता का ज्ञान हो गया है, उनके दिलों में इन सब कामोत्तेजक पदार्थों से कुछ भी हलचल नहीं मचती। उनके लिये तो स्वच्छ महल और श्मशान, चाँदनी रात और घोर अँधेरी रात, पुष्पमाला और सर्पमाला, चन्दन की रज और श्मशान की राख तथा कामिनियों की जुल्फें और भयङ्कर कालसर्प प्रभृति सब बराबर हैं।

दोहा

शशिवदनी अरु शरद शशि, चन्दन-पुष्प-सुगन्ध ।
ये रसिकन के चित हरत, सन्तन के चित बन्ध ॥४०॥

सार—चारु चांदनी, चन्द्रमुखी प्रिया एवं अन्यान्य कामोत्तेजक पदार्थों से कामियों की ही कामवासना तेज होती है, विरक्त या उदासीनों की नहीं ।

40. Snow-white palaces, clear moon light, the lotus-like face of the beloved lady, fragrant sandal, the sweet smelling garland of flowers, (these things) disturb the mind of a lover, but those that are averse to the enjoyment of worldly pleasures, are not affected in the least by these objects.

तरुणी चैषा दीपितकामा विकसितजातीपुष्पसुगन्धिः ।
उन्नतपीनपयोधरभारा प्रावृट् कुरुते कस्य न हर्षम् ॥४१॥

कामदेव का उदय करने वाली प्रफुल्लित मालती की लता वाली,

उत्तम सुगन्धि धारण करने वाली, उन्नत पीन पयोधरा वर्षा ऋतु, तरुणी स्त्री की तरह, किसके मन में हर्ष उत्पन्न नहीं करती ? ॥४१॥

खुलासा—जिस भाँति सुन्दरी कमलनयनी तरुणी पुरुष के मन मे हर्ष उत्पन्न करती है, उसी तरह वर्षा ऋतु भी पुरुष के मन मे हर्ष उत्पन्न करती है, क्योंकि जिस तरह तरुणी स्त्री के चिकने मनोहर बाल होते हैं, उसी तरह वर्षा रूपिणी तरुणी स्त्री के बालो की जगह मालती लतायें होती हैं। जिस तरह तरुणी के शरीर से सुगन्धित तेल और इत्र वगैरः की खुशबू उड़ा करती है, उसी तरह वर्षा-रूपिणी तरुणी के शरीर से भी नाना प्रकार के फूलो की सुगन्धि आया करती है। जिस तरह तरुणी स्त्री के सघन पीन पयोधर होते है, उसी तरह वर्षा-रूपिणी तरुणी के भी सघन मेघ पीन पयोधर होते है। जिस तरह तरुणी स्त्री पुरुष के मन मे उत्कण्ठा, विषय-वासना उत्पन्न करती, उसी तरह वर्षा भी उत्कंठा उत्पन्न करती है। मतलब यह कि तरुणी नारी और वर्षा मे कोई भेद नहीं, दोनो हर तरह समान हैं। कवि ने ठीक ही कहा है कि वर्षा-रूपिणी तरुणी के दर्शनों से कौन हर्षित नहीं होता, जो पूर्ण विकसित जाती पुष्पो की सुगन्ध और सघन मेघो के उत्थान से मनुष्य के मन मे काम उत्पन्न करती है ?

"भामिनी विलास" मे लिखा है—

> प्रदुर्भवति पयोदे कज्जलमलिनं बभूव नभः।
> रक्तं च पथिक हृदयं कपोलपाली मृगीदृशः पांडुः ॥

बादलो के आकाश मे छाने से आकाश काजल के समान मलिन

हो गया, पथिक का हृदय अनुराग से भर उठा और मृगनयनी के गालों पर ज़र्दी छा गई।

सारांश यही है कि वर्षाऋतु के आते ही स्त्री-पुरुषों का चित्त प्रसन्न हो जाता है और उन दोनों की ही विषय-भोग भोगने की इच्छा प्रबल हो उठती है। इस ऋतु में केवल उन्हीं का चित्त हर्षित और उत्कण्ठित नहीं हो सकता, जो संसार से उदासीन या पुंसत्व-विहीन हैं।

दोहा

पीन पयोधर को वरन, प्रगट करत है काम।
पावस अरु प्यारी निरख, हर्षित होत तमाम ॥ ४१ ॥

41 Who does not feel pleasure in the rainy season which has all the qualities of a young woman, gives rise to amorous desires, bears the smell of blossomed jessamine flowers and has swollen heavy clouds over it?

वियदुपचितमेघं भूमयः कन्दलिन्यो ।
नवकुटजकदम्बामोदिनो गन्धवाहाः ॥
शिखिकुलकलकेकारावरम्या वनान्ताः ।
सुखिनमसुखिनं वा सर्वमुत्कण्ठयन्ति ॥४२॥

मेघों से आच्छादित आकाश, नवीन-नवीन अंकुरों से पूर्ण पृथ्वी नवीन कुटज और कदम्ब के फूलों से सुगन्धित वायु और मोरों के झुण्ड की मनोहर वाणी से रमणीय वनप्रान्त, वर्षा में सुखी और दुःखी दोनों तरह के पुरुषों को उत्कण्ठित करते है ॥ ४३ ॥

खुलासा -- हर शख्स का मन, चाहे वह सुखी हो चाहे दुःखी, घनघोर घटाओं, नये-नये अंकुरों से छायी पृथ्वी एवं कुटज और कदम्ब के फूलों की सुगन्धि से सुवासित पवन और मोरों की मधुर वाणी से पूर्ण मनोहर वनों को देखकर उत्कण्ठित होता ही है।

वर्षा की नेत्रों को प्रसन्न करने वाली,मन और आत्मा की तृप्ति करने वाली, शीतलता और शान्ति का सञ्चार करने वाली छवि पर कोई विरला ही मनहूस न मोहित होता होगा। इस ऋतु में बड़े बड़े मानी पुरुषों और मानिनी स्त्रियों के मान मर्दन हो जाते हैं। दोनों ही मान त्याग कर, एक दूसरे की खुशामद करने लगते हैं। भारी-से-भारी अपराध के अपराधी पतियों को मृगनयनी स्त्रियाँ सहज में क्षमा प्रदान कर देती है। देखिये, महाकवि कालिदास अपने "ऋतु-संहार" में कहते हैं: --

(१)

पयोधरैर्भीमगम्भीरनिस्वनै-

स्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम्।

कृतापराधानपि योषितः प्रियान्

परिष्वजन्ते शयने निरन्तरम् ॥

(२)

कालागुरुप्रचुरचन्दन-चर्चितांगयः

पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः

श्रुत्वा ध्वनिं जलमुचां त्वरितम्प्रदोषे

शय्यागृहं गुरुगृहात्प्रविशन्तिनार्य्यः ॥

वर्षा मे स्त्रियाँ भयंकर और गम्भीर गर्जना करने वाले मेघों और चमाचम चमकती हुई बिजलियों से डर-डर कर अपराधी पतियों को भी, शय्या पर, बारम्बार आलिङ्गन करने लगती हैं, अर्थात् भयभीत होकर पतियों के शरीर से चिपटने लगती है।

वर्षा की रातों मे बादलों की घोर गर्जना सुन-सुन कर स्त्रियाँ अपने शरीरों मे अगर और चन्दन का लेप कर, फूलों के गहनों से चोटियों को सजा और सुगन्धित कर, घर के काम-धन्धे जल्दी-जल्दी निपटा, सास के घर मे अपने सोने के कमरे में शीघ्र ही चली जाती है।

पण्डितराज जगन्नाथ एक मानिनी के सम्बन्ध में क्या खूब कहते हैं:—

मुञ्चसि नाद्यापि रुषं भामिनी! मुदिरालिरुदियाय।

इतिसुदृशः प्रियवचनैरपायि नयनाब्ज कोणशोण रुचिः ॥

हे भामिनी! आकाश मे मेघमाला छा गई है, किन्तु तू अब तक अपना रोष नहीं त्यागती? प्रियतम के इन वचनों से कमल-नयनी के नयन-कमल के कोने में जो ललाई आ गई थी, वह दूर हो गई, अर्थात् वह अपने प्यारे से राजी हो गई।

दोहा

अम्बर घन अवना हरित, कुटज कदम्ब सुगन्ध।
मोर शोर रमणीक वन, सबको सुख सम्बन्ध ॥४२॥

सार—वर्षा में दुखिया और सुखिया सभी के मन में कामवासना उदय हो आती है।

42 The sky overcast with clouds, the earth full of new sprouts, the air fragrant with the smell of newly-blossomed Kutaja and Kadamba flowers and the forest pleasant on account of the charming voice of peacocks,—all these give rise to amorous feeling in the hearts of hearts of happy and the unhappy men alike

———

उपरि घनं घनपटलं तिर्यग्गिरयोपि नर्तितमयूराः।
वसुधा कंदलधवला दृष्टिं पथिकः क्व यातु संत्रस्तः ॥४३॥

सिर के ऊपर घनघोर घटायें छाय रहा है, दाहिने बायें दोनों तरफ के पहाड़ों पर मोर नाच रहे हैं, पैरों के नीचे की ज़मीन नवीन अंकुरों से हरी हो रही है—ऐसे समय में, जबकि चारों ओर कामोद्दीपन करने वाले सामान नज़र आते हैं, विरह-व्याकुल पथिक को कैसे सन्तोष हो सकता है? ॥४३॥

खुलासा—सिर पर मेघों का शामियाना, पैरों के नीचे हरी हरी दूब का कालीन और अगल-बगल में मदमत्त मोरों का नाचना देखकर, बटोही के मनमें प्यारी से मिलने की उत्कट अभिलाषा हुए

बिन नहीं रहती। वह बहुत कुछ धीरज धरता है, पर जब चारों ओर कामोद्दीपक पदार्थों को देखता है, तब फिर अधीर हो जाता है। बहुत लिखने से क्या, वर्षा मे विरही जनों को बड़ा क्लेश होता है। देखिये महाकवि कालिदास कहते हैं:—

बलाहकाश्चाशनिशब्दमर्दलाः
सुरेन्द्रचापं दधतस्तडिद्गुणम्।
सुत क्ष्णधारा-पतनोग्रसायका—
स्तुदंति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्॥

इन दिनों वज्र के शब्दरूपी नगाड़े वाले बिजली की डोरी से युक्त इन्द्रधनुष धारण किये, तीव्र धारा के वृष्टि-रूपी भयंकर बाण वाले (वीर) बादल प्रवासियों के चित्त को बरबस व्यथित कर देते हैं।

यह तो हुई पुरुषों की बात, अब जरा परदेश में रहने वालों की प्राणप्यारियों के दुःख और कष्ट की बात भी सुनिये:—

विलोचनेन्दीवर-वारि-बिन्दुभि-
र्निषिक्त—बिम्बाधर—चारुपल्लवाः
निरस्त माल्याभरणानुलेपनाः
स्थिता निराशाः प्रमदाः प्रवासिनाम्॥

वर्षा में, विदेश में रहने वालो की स्त्रियाँ अपने नयन-कमलों के जल बिन्दुओं से अपने बिम्बाफल के समान सुन्दर अधर-पल्लवों-होठों को भिगोये, हार प्रभृति गहने और चन्दन अगर प्रभृति का अनुलेपन त्याग, पति के आने की आशा छोड़ (मनमारे) बैठी हुई है।

दोहा

घटा घोर चढ मोर गिरि, सोह हरित नव भूमि ।
विरही व्याकुल पथिक को, कहा तोप लखि भूमि ? ॥ ४३ ॥

सार—विरही स्त्री-पुरुषों को जिस तरह वसन्तमें घोर मनोवेदना और व्यथा होती है, उसी तरह वर्षा में भी उनको विरहाग्नि की तीव्र ज्वाला में जल-जल कर मछली की तरह तड़फना पड़ता है ।

43 How can a poor traveller feel pleasure (in the rainy season) when the thick clouds gather above, the peacocks dance on the mountain on both sides and the earth is white with new sprouts sprinkling with rain water? (He feels his loneliness and the absence of his beloved wife)

इतो विद्युद्वल्लीविलासितमितः केतकितरोः
स्फुरद्गन्धः प्रोद्यज्जलदनिनदस्फूर्जितमितः ।
इतः केकिक्रीडाकलकलरवः पक्ष्मलदृशां
कथं यास्यन्त्येते विरहदिवसाः संभृतरसाः ॥४४॥

एक ओर चपला का चमाचम चमकना, दूसरी ओर केतकी के फूलों की मनोहर सुगन्ध, एक ओर मेघ का गर्जन और दूसरी ओर

मोरों का शोर, ये सब जहाँ एकत्र हैं, वहाँ सुनयनी विरह-व्याकुला स्त्रियाँ अपने रस-पूर्ण विरह के दिनों को कैसे बितायेंगी ? ॥४४॥

खुलासा - आकाश में घनघोर घटायें घिर आई हैं; बिजली झमाझम कर रही है, बादलों की भयंकर गर्जना हो रही है, केतकी के मनोहर फूलों की सुगन्ध उड़ रही है, मतवाले मोर शोर कर रहे हैं; हाय! कामकला-प्रवीण सुनयनी तरुणियों के ये काम-वासना को बढ़ाने वाले दिन किस तरह कटेंगे ? क्योंकि उनके प्राणवल्लभ घरों पर नहीं हैं। जब वे अँधेरी रातों में बादलों की हृदय दहलाने वाली आवाजों और बिजली की भयंकर कड़क से भयभीत होंगी, तब कौन उन्हें छाती से लगाकर उनका भय मिटावेगा ? जब वे चारों ओर कामोद्दीपन करने वाले सामान देख कर काम-पीड़ित होंगी, तब कौन उनकी काम-शान्ति करेगा ?

दोहा

दमकत दामिनि मेघ इत, केतिक-पुष्प-विकास ।
मोर शोर निशि दिन करत, विरहीजन मन त्रास ॥४४॥

सार—वर्षा में प्रवासी पतियों की पतिव्रता स्त्रियों के दिन बड़ी ही मुसीबत में कटते हैं।

44. How would the women separated from their lovers pass those wet days when there is the flash of lightening here and the pungent smell of Ketki flowers

there. the roaring of clouds on this side and the dancing peacocks on the other '

अभ्रूचीसंभारे नभसि नभसि प्रोद्‌जलद्-
ध्वनिप्राप्ते तस्मिन् पतति दृषदा नीरनिचये ॥
इदं सौदामिन्याः कनककमनीयं विलसितम् ।
मुदं च म्लानिंच प्रथयति पथिष्वेव सुदृशाम् ॥४५॥

सावन की घोर अँधेरी रात में जबकि हाथ को हाथ नहीं सूझता मेघों की भयकर गर्जना, पत्थर सहित जल की वृष्टि होना और सोने के समान बिजली का चमकना सुन्दरी सुनयनाओं के लिये, राह में ही सुख और दुःख दोनों का कारण होता हैं ॥४५॥

खुलासा—सावन के महीनों मे, वर्षा सब दिनो से अधिक होती है। रात ऐसी अँध्यारी होती है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता। बादल बड़े जोरो से गरजते है। बिजली चमाचम चमकती है और ऊपर से पत्थर-मिली जल-वृष्टि होती है। उस समय राह की पगडण्डियाँ दिखाई नहीं देतीं। उस वक्त जो स्त्री अकेली अपने पति या प्यारे के पास जाती है, उसे निश्चय ही भयानक कष्ट और भय होता है। इस घोर कष्ट के समय भी जब उसे बिजली की सहायता से कभी कभी पगडण्डी दीख जाती है, तब प्रियतम से जल्दी ही मिलने की आशा से वह प्रसन्न भी होती है।

स्त्री-जाति बड़ी साहसी होती है। डरती है तब तो एक चूहे

की खड़खड़ से डर कर पति की छाती से चिपट जाती है और जब उसे अपने पति या यार के पास जाना होता है, तब सब विघ्न-बाधाओं और आफतों को तुच्छ समझ कर, घोर अन्धेरी रात में भयंकर श्मशान मे भी पहुँचती है। किसी पाश्चात्य विद्वान ने ठीक ही कहा है, "A woman when she either loves or hates, will dare anything." स्त्री जब प्रेम या घृणा, दो में से एक पर तुल जाती है, तब वह सब कुछ कर सकती है।

महाकवि कालिदास कहते हैं:—

अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता पयोमुचा
घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि ।
तडित्प्रभादर्शित मार्गभूतयः
प्रयांति रागादभिसारिकाः स्त्रियः

वर्षा में घोर गर्जन करने वाले मेघों से रात के अत्यन्त अँधेरी होने पर भी अभिसारिका स्त्रियाँ अपनी राह की जमीन को बिजली के प्रकाश से देखती हुई, बड़े चाव से अपने यारों के पास जा रही हैं।

दोहा

महा अन्धतम नभ जलद, दामिन दमक दुरान ।
हर्ष-शोक दोऊ करन, नियको तिय-हित जान ॥४५॥

सार—वर्षा की घोर अँधेरी रात में, वक्त मुकर्रर पर

अपने यारों के पास जाने वाली अभिसारिका नारियों को दुःख और सुख दोनों ही होते है।

45 In the pitch darkness of the month of Shravana, the loud roaring of the clouds in the sky falling of rains with hailstones and the golden flash of lightening give pain and pleasure to a woman thinking of her husband who is travelling on the way

---

असारेण न हर्म्यतः प्रियतमैर्यातुं वहि शक्यते
शीतोत्कम्पनिमित्तमायतदृशा गाढं समालिंग्यते ॥
जाताः शीतलशीकराश्च मरुतो वात्यन्तखेदच्छिदो
धन्यानां वत दुर्दिनं सुदिनतां याति प्रियसंगमे ॥४६॥

वर्षा की झाड़ी मे प्रियतम घर से बाहर निकल नहीं सकते। जाड़े के मारे कापती हुई विशाल नेत्रों वाली प्राणप्यारी स्त्रिया उनको आलिङ्गन करती हैं और शीतल जल के कणों सहित वायु मैथुन के अन्त में होने वाले श्रम को मिटा देते हैं, इस तरह वर्षा के दुर्दिन भी भाग्यवानों के लिये सुदिन हो जाते हैं। ४६॥

खुलासा - वर्षाकाल मे बाजे-बाजे वक्त ऐसी झड़ लग जाती है कि हफ्तों सूर्य के दर्शन नहीं होते। वैसे दिनो मे, भाग्यवान लोग दिन निकल आने पर भी, घर से बाहर नहीं जाते, अपने पलङ्गो पर ही पड़े रहते है। उनकी मृगनयनी स्त्रियाँ, जाड़े के मारे काँपती हुई, उन्हे अपनी छाती से लगा लेती हैं और मेह का

फुहारों से मिली हुई शीतल हवा उनकी मैथुन की थकान को मिटा देती है। जिन्होंने पूर्व जन्म में पुण्य किया है, उनको वर्षा के बुरे दिन भी इस तरह सुखदाई हो जाते हैं। पुण्यवानों को दुःख में सुख और जङ्गल में मङ्गल होता है।

छप्पय

प्राविट बपन मेह चर्यो दिन शान अधिकतर।
बाहर नहिं कढ़ि सकत, नेह सों पगा कोउ नर॥
कम्प होत जब गात तबहि प्यारी संग सोवत।
उठत अनङ्ग-तरङ्ग, अङ्ग सें अङ्ग समोवत
रत-खेद-स्वेद छेदन करत जालरन्ध्र आवत पवन।
इहि विधि दुर्दिवस हू मोदप्रद, होवहिं तिय-संग बसि भवन॥

सार—पुण्यवानों को वर्षा के दुर्दिन भी, अपनी प्राण-प्यारियों की सुहबत में सुदिन हो जाते हैं।

16 On a rainy day, the lover cannot come out of his house and the long eyed lady shivering with cold embraces fast her husband the cold wind blows carrying with it small particles of water that takes away the fatigue arising from copulation Surely, even the evil days of a fortunate man become good in the company of beloved wife.

शरद्-महिमा

अर्द्धं नीत्वा निशायाः सरभससुरतायासखिन्नश्लथांगः ।
प्रोद्भूतासह्यतृष्णो मधुमदनिरतो हर्म्यपृष्ठे विविक्ते ॥
संभोगक्लान्तकान्ताशिथिलभुजलतातर्जितं कर्करीतो ।
ज्योत्स्नाभिन्नाच्छधारंपिबतिनसलिलंशारदंमन्दभाग्यः॥४७॥

आधी रात बीतने पर, जल्दी-जल्दी मैथुन करके थक जाने पर और उसी की वजह से असह्य प्यास लगने पर, मदिरा के नशे की हालत में, महल की स्वच्छ छत पर बैठा हुआ पुरुष, यदि मैथुन के कारण थकी हुई भुजाओं वाली प्यारी के हाथों से लाई हुई झारी का निर्मल जल, शरद् की चाँदनी में नहीं पीता, तो वह निश्चय ही अभागा है ॥४७॥

छप्पय

छके मदन का छाक, मुदित मदिरा के छाके ।
करत सुरत रण रग, जग कर कछु-इक थाके ॥
पोढ रहे लिपटाय, अग अंगन मे उरझे ।
बहुत लगी जब प्यास, तबहिं चित चाहत सुरझे ॥
उठ पियत रात आधी गये, शीतल जल या शरद्को ।
नर पुण्यवन्त फल लेत हैं, निज सुकृनहिकी फरदको ॥४८॥

सार—शरद् की चाँदनी रात में मैथुन से थकी हुई कामिनी के हाथों का लाया हुआ जल भाग्यवान ही पीते हैं।

47. He is surely unfortunate who after the midnight being quite exhausted by speedy copulation, feeling very thirsty and being intoxicated with wine, does not drink the cool and pure autumn water bright as moonlight from the brasen pot on the lonely roof of the palace, brought by the weak hands of his wife who is also tired on account of copulation.

हेमन्त-महिमा
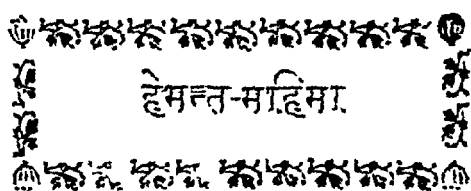
हेमन्ते दधिदुग्धसर्पिरशना माञ्जिष्ठवासोभृतः
काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्धवपुषः खिन्ना विचित्रै रतैः ।
पीनोरःस्थलकामिनीजनकृताश्लेषा गृहाभ्यन्तरं
ताम्बूलीदलपूगपूरितमुखा धन्याः सुखं शेरते ॥४८॥

हेमन्त ऋतु में जो दही, दूध और घी खाते हैं मँजीठ के रंग में रंगे हुए वस्त्र पहनते हैं; शरीर में केशर का गाढ़ा-गाढ़ा लेप करते हैं, आसन-भेद से अनेक प्रकार मैथुन करके दुःखी होते हैं पुष्ट जाँघों और सघन कठोर कुचों वाली स्त्रियों का गाढ़ आलिंगन करते हैं और

मसालेदार पान का बीड़ा चबाते हुए मकान के भीतरी कमरे में सुख से सोते हैं, वे निश्चय ही भाग्यवान है ॥४८॥

महाकवि कालिदास रचित भी एक श्लोक पढ़िये —

पुष्पासवामोदसुगन्धवक्त्रो, निःश्वासवातैः सुरभीकृतांगः ।
परस्परांगव्यतिषंगशायी, शेते जनः कामशरानुविद्धः ॥

हे प्यारी ! इस हेमन्त ऋतु में, कामार्त्त स्त्री-पुरुष फूलों की शराब की गन्ध से मुँह को और अपने श्वास वायु से अङ्गों को सुगन्धित किये, परस्पर लिपटे हुए सोते रहते हैं ।

सोरठा

दही दूध घृत पान, मजीठहि रंग के ।
आलिंगन रति दान, केसर चर्चि हिमन्त में ॥४६॥

48 Blessed is the man who, in the winter, eats the food rich with milk, curd and ghee, wears clothes coloured in scarlet red Manjistha, besmears his body thickly with paste of saffron and musk, is embraced by a woman with swollen breasts after being exhausted by various kinds of sexual intercourse and with his mouth full of betels, sleeps happily in his house.

शिशिर-महिमा
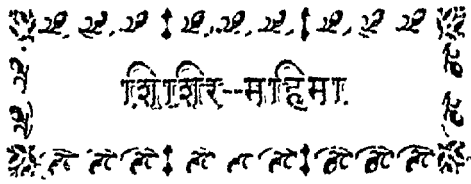
चुम्बन्तो गंडभित्तीरलकवति मुखे सीत्कृतान्यादधाना
वक्षःसूत्कंचुकेषु स्तनभरपुलकोद्भेदमापादयन्तः ॥
ऊरूनाकंपयंतः पृथुजघनतटात्स्रंसयंतोंशुकानि
व्यक्तं कांताजनानां विटचरितकृतः शैशिरा वांति वाताः ॥४६

स्त्रियों के केशयुक्त गालों को चूमता हुआ, ज़ोर के जाड़े के मारे उनके मुँह से "सी-सी" कराता हुआ, अंगिया-रहित खुले हुए स्तनों को रोमाञ्चित करता हुआ, पेड़ुओं को कंपाता हुआ और पुष्ट जाँघों से कपड़ा हटाता हुआ, शिशिर का वायु जार पुरुषों का-सा आचरण करता हुआ बह रहा है ॥४६॥

खुलासा— पति स्त्री के साथ जो-जो काम करता है, शिशिर का वायु भी वही सब काम करता है। पति गालों को चूमता है, शिशिर का वायु भी बालों को इधर-उधर करता हुआ गालों को चूमता है। पति मैथुन के आनन्द में मग्न करके स्त्री के मुँह से "सी-सी" कराता है; उसी तरह शिशिर का वायु भी जाड़े की अधिकता के मारे उनके मुखों से 'सी-सी" कराता है। पुरुष स्तनों को रोमाञ्चित करता है, शिशिर वायु भी वही करता है।

पुरुष स्त्री की जाँघों से कपड़ा हटाता, शिशिर-वायु भी जाँघों से वस्त्र हटाता है। बहुत क्या—शिशिर का वायु हर तरह स्त्रियों के साथ पतियों का सा आचरण करता है - पराई स्त्रियों को दिन-दहाड़े बेखटके भोगता है।

छप्पय

चुम्बन करत कपोल, मुखहि सीकार करावत।
हृदय माहिं वसि जात, कुचन पर रोम चरावत॥
जघन को थहरात, वसन हू दूर करत झुक।
लग्यो रहत मग माहिं, द्वार को रोक रह्यो दुक॥
यह शिशिर पवन विटरूप धर, गलिन-गलिन भटकत फिरत।
मिल रहे नारि नर घरन में, या की भटभेर न भिरत॥४६॥

सार—शिशिर ऋतु का वायु, पराई स्त्रियों के साथ जारों का-सा काम करता है।

49 The wind in the winter season blows behaving itself like a lustful man at the time of copulation, it causes the hair of the breast, which is without any jacket to stand on end, it kisses the face with flowing hairs and with shivering sounds in the mouth just as one hears at the time of copulation, shaking the thighs and making the clothes of hips and loins to fly about

केशानाकुलयन्दृशो मुकुलयन्वासो बलादाक्षिप-
न्नातन्वन्पुलकोद्गमं प्रकटयन्नालिंग्य कम्पञ्छनैः।
वारम्वारमुदारसीन्कृतकृतोदन्तच्छदान्पीडयन्-
प्रायःशैशिर एष संप्रति मरुत्कांतासु कांतायते ॥५०॥

बालों को बखेरता, आँखों को कुछ-कुछ मूँदता, साड़ी को ज़ोर से उड़ाता, देह को रोमाञ्चित करता शरीर में सनसनी पैदा करता, काँपते हुए शरीर को आलिंगन करता, बारम्बार सीसी कराकर होठों को चूमता हुआ, शिशिर का वायु पतियों का-सा आचरण करता है ॥५०॥

खुलासा—शिशिर-वायु स्त्रियों के साथ बेहया, मस्त अथवा शहवतपरस्त पतियों का-सा काम करता है।

छप्पय

विलुलित करत सुकेश, नयन हू छिन-छिन मूँदत।
बसनन खेंचे नेन, देह रोमाञ्चन रूँदत ॥
करतहृदय को कम्प, करत मुखहू सों सीसी।
पीड़ा करतहिं होठ, बधारहु मार सिरीसी ॥
यह शीतकाल में जानिये, अद्भुत गति धारत पवन।
निशि-द्यौस हुये दुबके रहो निज नारी सग निज भवन ॥५०॥

50. The air in the winter season acts like a husband in the case of woman by scattering their hairs, shutting their eyes, forcibly removing their upper garments, causing the hair stand on

end, slowly shaking the body by touch and giving pain to the lips by their continuous shivering sounds.

असारः सन्त्वेते विरतिविरमायासविषया
जुगुप्सन्तां यद्वा ननु सकलदोषास्पदमिति ॥
तथाप्यन्तस्तत्वे प्रणिहितधियामप्यतिबल—
स्तदीयोऽनाख्येयः स्फुरतिहृदयेकोऽपिमहिमा ॥५१॥

संसारिक विषय-भोग असार, विरति में विघ्न करने वाले और सब दोषों की खान हैं"—इत्यादि निन्दा लोग भले ही करें, फिर भी इनकी महिमा अपार है और इनके शक्तिशाली होने में कोई सन्देह नहीं, क्योंकि ब्रह्म विचार में लीन तत्ववेत्ताओं के हृदय में भी ये प्रकाशित होते हैं ॥५१॥

खुलासा—यद्यपि संसारी विषय-भोग असार और थोथे हैं, हमारे वैराग्य या संसार-त्याग में बाधक हैं, सभी दोषों के मूल कारण हैं, जीव का सब तरह से अनहित करते हैं, मनुष्य को निर्लज्ज और मति-हीन करते एव ज्ञानको भी बहाते हैं; इतने दोष होने पर भी, कहना पडता है, कि ये बडे ही शक्तिशाली और अपार महिमावान हैं। इनकी शक्ति और सामर्थ्य का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि जिन्होंने संसार त्याग दिया है, जो दिवारात मूल कारण की खोज मे लगे रहते हैं, उन

तत्ववेत्ता ब्रह्मज्ञानियों के हृदय में भी ये कामाग्नि सन्दीपन कर देते हैं।

छप्पय

यद्यपि भोग निसार, विरति में विघ्न करैं नित।
सब दोषन की खानि, जीव को साधैं अनहित॥
करैं निलज मतिहीन, ज्ञान कूं धोय बहावैं।
सर्वस देहिं नसाय, बुरो जग बीच कहावैं॥
यदि निन्दा या की करैं कोउ, तदपि है महिमा बहुत।
हिय बसत ब्रह्मज्ञानीहुँ के, तहँ पामर की गिनती हि कुत॥५१॥

सार—संसारी विषय-भोग अत्यन्त बलवान हैं। औरों की क्या चलाई, ये संसार त्यागी ब्रह्मज्ञानियों के हृदयों में भी कामाग्नि प्रज्वलित कर देते हैं।

151. If these objects of pleasure be unsubstantial or such as may take us far from abondoning the world and if the people blame them thinking them to be the seat of all vices, yet great and indescribable is their power in as-much as they conquer even those who have attained high spiritual knowledge.

भवन्तो वेदान्तप्रणिहितधियामाप्तगुरवो
विदग्धालापानांवयमपि कवीनामनुचराः॥

तथाप्येतद्भूमौ न हि परहितात्पुण्यमधिकं
नचास्मिन्संसारे कुवलयदृशो रम्यमपरम् ॥५२॥

आप वेदान्तवेत्ताओं के माननीय गुरु हो और हम उत्तम काव्य-रचयिता कवियों के सेवक हैं, तो भी हमें यह बात कहनी ही पड़ती है कि परोपकार से बढ़ कर पुण्य नहीं है और कमलनयनी सुन्दर स्त्रियों से बढ़ कर और सुन्दर पदार्थ नहीं है ॥ ५२ ॥

खुलासा—आप वेदान्त-पारङ्गत पण्डितों के मान्य गुरु हैं, आप मे अपार विद्या-बुद्धि है। हम कुछ पढ़े लिखे विद्वान नहीं, केवल काव्यशास्त्र-विनोदी कवीश्वरों के अनुचर हैं। तो भी हमें अपनी समझ के अनुसार कहना पड़ता है कि इस जगत में "परोपकार' से उत्तम पुण्य नहीं है और "मृगनयनी कामिनियों" से बढ़कर दूसरी सुन्दर वस्तु नहीं है। इसलिये बुद्धिमानों को धन उपार्जन करके तन-मन-धन से परोपकार-पुण्य सञ्चय करना और सुलोचना कामिनियों के साथ भोग विलास करना चाहिये। संसार में रहने वालों के लिये ये दोनों ही परमोत्तम धर्म हैं। हाँ, जिनका दिल इस नापायेदार दुनिया से उदास या खट्टा हो गया है, उनकी बात दूसरी है।

छप्पय

पढ़े वेद-वेदान्त, भये विद्यार्णव पारा।
तिनहू के तुम गुरु, बुद्धिबल पाय अपारा॥
हम कछु जानत नाहिं, पढ़े नहिं विद्या भारी।
रहे कविन के दास, कहैं ये बात विचारी॥

यह जग बिच पर उपकार-सम, अपर कछु है पुण्य नहिं।
अरु पंकजनयनी त्रियन सों, वस्तु अधिक नहीं सुखद कहिं ॥४२॥

(सार—परोपकार से बढ़कर पुण्य नहीं है और स्त्री-भोग से बढ़कर कोई सुख नहीं है।)

22 If you are the respected preceptor of Vedantists, I am also the follower of poets who take delight in beautiful epic poems. Nevertheless, know it for certain that in this world, there is no higher virtue than doing good to others and nothing more beautiful than a lotus-eyed woman.

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः प्रलापै-
र्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनीयम् ॥
अभिनवमदलीलालालसं सुन्दरीणां
स्तनभरपरिखिन्नं यौवनं वा वनं वा ॥५३॥

युक्तिशून्य वृथा प्रलाप से तो क्या प्रयोजन ? इस जगत में दो ही वस्तुएँ सेवन करने योग्य हैं—(१) नवीन मदान्ध लीलाभिलाषिणी और स्तन भार से खिन्न सुन्दरी स्त्रियों का यौवन अथवा (२) वन ॥५३॥

खुलासा—वाहियात और बे-सिर पैर की बकवाद से कोई फायदा नहीं। हमारी समझ में तो इस जगत में दो ही चीजें

पुरुषों के सेवन करने योग्य हैं —(१) नवयौवना स्त्रियाँ, अथवा (२) वन ।

यदि मनुष्य संसारत्यागी न होना चाहे, संसार में ही रहना चाहे, इस दुनिया के विषय-भोग भोगना चाहे, तो कमलनयनी नवयौवनाओं के यौवन की बहार लूटे । चाहे इनका आनन्द अनित्य और परिणाम मे दुःखमूलक ही है; पर संसारियों के लिये, इस संसार में इनसे बढ़कर दूसरी चीज़ ही नहीं ।

देखिये, रसिक शिरोमणि पण्डितेन्द्र जगन्नाथ महाराज कहते हैं:—

तया तिलोत्तमीयन्त्या मृगशावकचक्षुषा ।
ममाऽयं मानुषो लोको नाकलोक इवाभवत् ॥

उस तिलोत्तमा नामक अप्सरा के समान आचरण करने वाली मृगशावकनयनी के कारण से मेरा यह मृत्युलोक स्वर्गलोक के समान हो गया है ।

सच है, जिसके घर में अप्सरा समान नवयुवती है, उसे इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग है । स्वर्ग में इससे बढ़कर और क्या रक्खा है ? कारलाइल कहते हैं:—"If in youth the universe is majestically unveiling and every where heaven revealing itself on earth, nowhere to the young man does this heaven on earth so immediately reveal itself as in the young maiden.' यदि यौवन मे विश्व गौरव के साथ अपने तईं प्रकट करता है, यदि स्वर्ग पृथ्वी

पर प्रादुर्भूत होता है, तो युवक के लिये स्वर्ग का प्रादुर्भाव युवती मे ही होता है, अन्यत्र नहीं।

किन्तु इनमें रहकर आगे-पीछे का सभी खयाल भुला देना भला नहीं। इनको भोगो और अवश्य भोगो, कोई क्षति नहीं; पर अपनी आगे की यात्रा का ध्यान जरूर रक्खो, क्यों कि यहाँ का मुक़ाम थोड़े ही दिनो का है। जो अपनी आगे की सफर के लिये भी पहले से ही प्रबन्ध करते है, उन्हें जो स्वर्गीय सुख यहाँ मिल रहे हैं वह आगे भी मिलेंगे। यहाँ स्वर्ग भोगा और मरने पर नरक में डाले गये; इसमें तो चतुराई नहीं। इसलिये संसारियों के लिये स्त्री भोग के साथ पुण्य-सञ्चय भी करते जाना चाहिये। सब तरह के पुण्यो मे परोपकार सर्वश्रेष्ठ पुण्य है, इसलिये यही करना उचित है। जो अपनी ही नवयौवना के साथ भोग विलास करेंगे, उन्हें कोई भय नही। वे तपस्वियो के तपस्वी समझे जायेंगे और उन्हें अगले जन्म मे फिर स्वर्ग-सुख-दायिनी कमलनेत्री सुन्दरियाँ मिलेंगी। यदि वे स्वर्गलोक मे जन्म लेंगे तो वहाँ भी हूरें या अप्सरायें मिलेंगी; पर बिना पुण्य सञ्चय के वे यहाँ मिलेंगी, न वहाँ। कहा है :—

> क्या वह दुनिया, जिसमे कोशिश हो न दीं के वास्ते।
> वास्ते वाँ के भी कुछ—या सब यहीं के वास्ते ॥ज़ौक़॥

इस संसार में आकर कुछ परलोक बनाने की भी फिक्र करनी

चाहिये। यह उचित नहीं, कि उधर की फिक्र बिलकुल ही छोड़ दी जाय।

नाम मंजूर है, तो फैज़ के असबाब बना।
पुल बना, चाह बना, मस्जिदो तालाब बना ॥ज़ौक़॥

अगर तू चाहता है कि तेरा नाम संसार मे प्रतिष्ठा के साथ लिया जाय, तो तू परोपकार कर, पुल बना, कूएँ बना, मन्दिर और तालाब बना।

अब रही उनकी बात जो इस संसार की असारता से वाकिफ हो गये हैं, जिनका मन विषय-भोगों से हटा-सा गया है, जिन्हे विषय विषों से घृणा होगई है। उन्हे सच्चे दिल से विषयों को त्याग देना चाहिये, मन मे भी, कभी भूल कर भी, विषयों का ध्यान न करना चाहिये। ऊपर से सन्यासी बनना और भीतर विषयों की चाह रखना बहुत ही खराब है।

मन मे एक बात स्थिर कर लेनी चाहिये। इस जगत मे स्थिर-बुद्धि का ही सदा भला होता है चञ्चल-बुद्धि का सर्व नाश होता है। बुद्धि को स्थिर करके किसी एक बात पर जम जाना चाहिये चाहे भोग ही भोगे जाय, अथवा योग ही साधा जाय।

रसिक कवि ने खूब कहा है—

दोहा

रसिक सुनहु तुम कान दै, सब ग्रन्थन को सार।
योग भोग में इक बिना, यह संसार असार॥

मनो और हू बात पै, मुख्य बात ये दोय।
कै तिय-जोबन मे रमै, कै बनबासी होय ॥५३॥

सार—मनुष्यों को या तो नवीनायें भोगनी चाहियें अथवा संसार के झगड़े छोड़, वन में जा, तप करना चाहिये।

53. What is the use of so much unreasonable wild talk? There are only two things which a person should always desire enjoyment of— (i) viz. the youth of a beautiful lady who is desirous of new amorous enjoyments and is bent down under the load of her breasts or (ii) the forest.

सत्यं जना वच्मि न पक्षपाता-
ल्लोकेषु सर्वेषु च तथ्यमेतत्
नान्यन्मनोहारि नितम्बिनीभ्यो
दुःखैक हेतुर्न च कश्चिदन्य ॥५४॥

हे मनुष्यो! हम पक्षपात त्यागकर सच कहते है कि इस संसार मे स्त्रियों में बढकर न कोई मन को हरने वाली वस्तु है और न कोई दुःखदायी वस्तु है ॥५४॥

खुलासा—इस जगत में सुख और दुःख दोनों ही का कारण

एक मात्र मनोहर नितम्बों वाली स्त्री है। और भी स्पष्ट शब्दों में यों कह सकते हैं कि स्त्री ही सुख देने वाली और स्त्री ही दुःख देने वाली है, यानी सुख और दुःख दोनों का हेतु एक मात्र स्त्री ही है। पाश्चात्य लोगों में एक कहावत है कि स्त्री, सम्पत्ति और सुरा—इन तीनों में दुःख और सुख दोनों ही हैं।

निस्सन्देह, इस जगत में पुरुष के लिये स्त्री से बढ़ कर सुख-दायी और मनोहर दूसरी वस्तु नहीं। स्त्री अपने मधुर वचनों, सुन्दर हाव भाव और उत्तम सेवा से पुरुष के शारीरिक और मानसिक क्लेशों को शीघ्र ही हर लेती है। स्त्री विपद् में सच्चे मित्र की तरह परामर्श देती और धैर्य धारण कराती है। और सब विपद् में पुरुष को त्याग देते हैं, पर वह अपने पति को नहीं त्यागती। भोजन के समय, जिस हित और प्रेम से वह खिलाती-पिलाती है, उस तरह सिवा जननी के और कोई भी नहीं खिलाता-पिलाता। सम्भोग-काल में, वह वेश्या की तरह अपने पति का सब तरह से मनोरञ्जन करती है। इतना ही नहीं, उसके वंश की वृद्धि भी करती हैं, यानी स्त्री से ही पुत्र-पौत्रादि होते हैं। मनुष्य कैसा ही दुःखित क्यों न हो, स्त्री घर में आते ही उसके उसके सारे खेद और श्रम को हर लेती तथा उसे नरक से बचाती और स्वर्ग में ले जाती है। स्त्री से ही राम कृष्ण, भगीरथ, ध्रुव, प्रह्लाद, अर्जुन, भीम बुद्ध, शङ्कराचार्य्य,दयानन्द और गाँधी जैसे महा-पुरुष पैदा हुए और होते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि स्त्री के समान सुखदाई इस जगत में दूसरी चीज नहीं। मनोहर वह इतनी

होती है कि अपनी एक मुसक्यान में ही पुरुष का मन हर लेती है। पर ये सब सुख तभी मिलते है, जब कि स्त्री सती साध्वी और सच्ची पतिव्रता होती है। यही स्त्री अगर कुलटा, व्यभिचारिणी अथवा कर्कशा होती है तो पुरुष के लिये यहीं—इसी लोक में—साक्षात् नरक हो जाता है। पर सच्ची पतिव्रता किसी विरले ही पुण्यात्मा को मिलती है।

जिसे पतिव्रता स्त्री मिलती है, उसे दुःख-दैन्य, आपद्-मुसीबत और शोक-चिन्ता प्रभृति सता नहीं सकते; क्योंकि पतिव्रता नरक को स्वर्ग मे, दुःख को सुख मे, विपद् को सम्पद् में और शोक को हर्ष में परिणत कर देने की क्षमता रखती है। वह घर के काम-काज करती, पुत्र-कन्याओं को पालती, उन्हे सुशिक्षा देती और कुपथगामी पति को सुपथगामी बना देती है। पुरुष की कड़ी कमाई का पैसा बड़ी ही किफायत से खर्च करती और उसे नष्ट होने से बचाती तथा पति का शोक हर लेती है। स्त्रियों के सम्बन्ध मे गोल्डस्मिथ महोदय ने, जो इंगलैंण्ड के एक नामी विद्वान् थे खूब कहा है। हम अपने पाठकों के ज्ञानवर्द्धनार्थ आपके अनमोल वचन नीचे देते हैं:—"Women, it has been observed, are not naturally formed for great cares themselves, but to soften ours." यह देखा गया है कि स्त्रियाँ महत् चिन्ताओं को स्वयं सहने के लिये नहीं, वरन् हमारी चिन्ताओं को घटाने के लिये बनाई है। आपने एक जगह लिखा है:—
"She who makes her husband and her children

हो चाहे असती, पतिव्रता हो चाहे व्यभिचारिणी, स्त्री के कारण पुरुष को नाना प्रकार के कष्ट उठाने ही पड़ते है। स्त्री के लिये ही वह स्वास्थ्य और जीवन का खयाल न रखकर भी रात-दिन अविरत परिश्रम करता है। स्त्री के लिये ही पुरुष दुर्जनों के कुवचन सहता, उनको हाथ जोड़ता, उनके कदम पकड़ता और न करने योग्य कर्म करता है। बहुत कहाँ तक कहे, स्त्री के लिये पुरुष नीच-से नीच कर्म करता, जेल जाता और फाँसी चढ़ता है। अगर इस जगत में चन्द्रानना कमलनयनी कामनियाँ न होतीं तो कौन बुद्धिमान राजाओं और अमीरों की सेवा में अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर अधीर-चित्त होता ?

यह सब तो पुरुष स्त्री की मोह माया मे फँस स्वयं करता और स्वयं दुःख भोगता है। पर यदि दुर्भाग्य से स्त्री कुलटा होती है, तब तो वह घर में ही नाना प्रकार के कष्ट और यन्त्रणाये भुगाती है। कुलटा कामिनी का शरीर यदि पुष्पवत् कोमल भी होता है, तो उसका हृदय वज्रवत् कठोर होता है। उसके दिल में दया-माया और स्नेह नाम को भी नहीं होता। वह सच्ची पिशाचिनी होती है। शम्बरासुर और विचित्तिकी माया को समझना सहज है, पर कुलटा की माया को समझना कठिन है। वह अबला दीखने पर भी सबला और गौ होने पर भी बाघ होती है। वह निरंकुश होकर पुरुष को नाना प्रकार से नचाती और सेवक की तरह उससे काम कराती है। वृथा विलास चिन्ह दिखा कर उससे पैर दबवाती और अपनी इच्छा होने से उसका

रक्त-मांस चूसती है। जरा-सी फरमायश पूरी न होने से और घर की एक चीज भी समय पर न आने से उसके प्राण ले लेती और उसके कलेजे को वाक्यबाणों से विद्ध करके चलनी बना देती है। बहुत कहाँ तक कहें, नरक के दुःख कुलटा के दिये दुःखों के सामने लजा जाते हैं।

सारांश यही है कि अगर स्त्री नवयौवना, रूपवती और पतिव्रता हो तो पुरुष को जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, उनसे उसे उतना कष्ट या मनोवेदना नहीं होती। वह स्वयं बाहर के कष्टों को हर लेती है। पर पतिव्रता के होने पर भी पुरुष कष्ट और अपमान से बच नहीं सकता। इसलिए इसमें शक नहीं कि स्त्री सुख और दुःख दोनों ही की हेतु है, यानी स्त्री से सुख भी है और दुःख भी है। सुख थोड़ा और नाम मात्र को है और वह भी अज्ञानी के लिए। ज्ञानी और विरागी की नजर में तो दुःख-ही-दुःख है, इसलिए जिन्हें कष्ट और झगड़ों से बचना हो, जिन्हें आत्मा का कल्याण करना हो, वे इस मनोहर विष-बेल से बचें। फौन्टनेली महोदय कहते हैं:—"A beautiful woman is the "hell" of the soul, the "purgatory" of the purse and the "paradise" of the eyes." सुन्दरी कामिनी आत्मा का नरक, सम्पत्ति का नाश और नेत्रों का स्वर्ग है। गिरधर कविराय कहते हैं :

तीनों मूल उपाधि की, ज़र जोरू ज़मीन।
है उपाधि तिसके कहाँ, जाके नहिं ये तीन॥

जाके नहिं ये तीन, हृदय में नाहिन इच्छा ।
परम सुखी सो साधु, खाय यद्यपि लै भिक्षा ॥
कह गिरिधर कविराय, एक आतम रस भीनो ।
निर्भय विचरै सन्त, सर्वथा तज कर तीनों ॥

दोहा

कहहिं सत्य तज पक्ष हम, लोक-विमोहन नारि ।
अरु या सो दुखद अपर, नहिं कछु लेहु विचारि ॥ ५४ ॥

सार—स्त्री से बढ़कर सुखदायी और दुःखदायी और कोई नहीं ।

54. O men, I tell you the truth and without any partiality that, in this world, there is nothing so attractive to the mind as the women and again, nothing so painful also.

तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः ।
यावदेव न कुरंगचक्षुषां ताड्यते चपललोचनाञ्चलैः॥५५॥

विवेकियों के हृदय में निर्मल विवेकरूपी दीपक का प्रकाश तभी तक रहता है, जब तक कि मृगनयनी स्त्रियों के चञ्चल नेत्र रूपी आँचल से वह बुझाया नहीं जाता ॥ ५५ ॥

खुलासा—अन्तःकरण में कामादि मल-रहित निर्मल विवेक का दीपक उसी समय तक जलता है, जब तक कि मृगलोचनी के

चञ्चल नेत्र रूपी आँचल की फटकार नहीं लगती। और भी स्पष्ट शब्दो मे यो कह सकते है कि स्त्रियो के कटाक्ष से विवेकी पुरुषोंका भी विवेक ध्वंस हो जाता है। "भामिनी-विलास" में लिखा है:—

तदवधि कुशलीपुराणशास्त्रस्मृति-
शतचारुविचारजो विवेकः।
यदवधि न पदं दधाति चित्ते हरिण-
किशोरदृशो दृशोर्विलासः॥

कुशलता और पुराण शास्त्र तथा स्मृतियों के अनेक चारु विचारो से उत्पन्न हुआ विवेक भी तब तक है, जब तक मृग के बच्चे की-सी आँखो वाली कामिनी के नेत्र-विलास हृदय में प्रवेश नहीं करते, अर्थात् स्त्री की तीखी नजर पड़ते ही विवेक और चतुराई सब काफूर हो जाते हैं।

उस्ताद जौक भी कुछ ऐसी बात कहते हैं:—

ऐ ज़ौक ! आज सामने उस चश्मे मस्तके।
बातिल सब अपने दावये दानिशवरी हुए॥

ऐ जौक ! उसकी मदनमत्त मनोहर आँख के सामने आज हमारी योग्यता और बुद्धिमत्ता का अन्त हो गया।

सच है, जब तक चञ्चल नेत्रो वाली कामिनी की नजर से नजर नहीं मिलती, तभी तक विवेक बुद्धि और विचारों का अस्तित्व समझिये। उसकी नजर से नजर मिलते ही इनका खात्मा हो जाता है।

दोहा

दीपक जरत विवेक को, तौ लों या चित माहि ।
जौ लों नारि-कटाक्ष-पट, पवनसु परसत नाहि ॥५५॥

सार—मृगनयनी युवती से चार नजर होते ही विवेक और बुद्धि सब हवा हो जाते हैं ।

55. The light of reasoning flickers in the heart of a wise man only so long as it is not put out by the moving eyes of a lotus-eyed woman as if by a scarf.

वचसि भवति संगत्यागमुद्दिश्य वार्त्ता
श्रुतिमुखरमुखानां केवलं पण्डितानाम् ॥
जघनमरुणरत्नग्रथिकाञ्चीकलापं
कुवलयनयनानां को विहातुम् समर्थः ॥५६॥

शास्त्र-वक्ता पण्डितों का स्त्री त्याग का उपदेश केवल कथन मात्र ही है । लाल रत्न-जटित करधनी वाली कमलनयनी स्त्रियों की मनोहर जंघाओं को कौन त्याग सकता है ? ॥५६॥

खुलासा—पाण्डित्यका ढकोसला दिखाने वाले पण्डित वास्तव में भी त्याग का उपदेश नहीं देते, खाली अपना पाण्डित्य दिखाने के लिये जबान से बकते हैं । वे गोस्वामी तुलसीदास की इस कहावत के अनुसार "पर उपदेश कुशल बहुतेरे, आप चलहि ऐसेनर न

घनेरे" लोगों को उपदेश भर ही देते हैं, आप खुद अमल नहीं कर सकते। वे किसी ललित ललना के कटाक्ष बाणों से विद्ध नहीं हुए हैं, इसी से बातें बनाते हैं। जब स्वयं उन पर पड़ेगी, तब सब शास्त्रों को भूल जाँयगे।

महाकवि दाग़ ने ऐसों ही के लिये कहा है—

दिल्लगी दिल्लगी नहीं नासह !
तेरे दिल को अभी लगी ही नहीं ॥

उपदेशकजी ! दिल्लगी दिल्लगी नहीं है, उसी समय तक आप इसे दिल्लगी समझते हैं, जब तक कि आपके दिल को लगी नहीं है अगर किसी से दिल लगा, तो आपका सारा पाण्डित्य हवा हो जायगा।

सौन्दर्य मामूली चीज़ नहीं। ऐसा कौन है जिसे सौंदर्य अपनी ओर न खींच सके? मिष्टर क्लेण्डन कहते हैं, 'A beautiful object doth attract the sight of all men, that it is no man's power not to be pleased with it. सुन्दर पदार्थ में मनुष्य मात्र की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति है कि कोई भी मनुष्य उससे प्रसन्न हुए बिना रह नहीं सकता। सुन्दरता मनुष्य के दिमाग में चढ़ जाती और उसे नशे से मस्त कर देती है। देखनेवाले का दिल वश में नहीं रहता ज़िम्मरमैन महोदय ने ठीक ही कहा है, Beauty is worse than wine, it intoxicates both holder and the beholder. सौन्दर्य शराब से भी बुरा है। यह उसके रखने वाले और उसके देखने वाले

दोनों को मतवाला कर देता है। सुन्दरियों के सौन्दर्य को देखकर, मन और इन्द्रियों को वश में रखने के पूर्ण अभ्यासी भी अपने मन को वश में रखने में असमर्थ होते हैं। पुराणों में लिखा है कि पूर्व काल में, मरीचि, शृङ्गी विश्वामित्र और पराशर जैसे महामुनि, जो केवल वृक्षों के पत्ते और हवा भक्षण करके जीते थे, इन मोहिनियों को सामने पाकर इन्हें त्याग न सके, तब साधारण लोगों की क्या गिनती? शेक्सपियर ने कहा है, "Beauty is a witch against whose charms faith melteth into blood" सुन्दरता ऐसी जादूगरनी है कि उसके जादू से धर्म-ईमान गल कर खून हो जाते हैं, यानी रूप के सामने धर्म-ईमान नहीं ठहरता, न जाने कहाँ काफूर हो जाता है।

कुण्डलिया

पण्डित-जन जब कहत हैं, तिय तजिये की बात।
कहत वृथा बकवाद वह, तजी नेक नहिं जात॥
तजी नेक नहिं जात, गात-छवि कनक बरन बर।
कमल-पत्र-सम नैन बैन बोलत अमृत सार॥
मोहत मुख मृदु हास, अङ्ग आभूषण मण्डित।
ऐसी तिय को तजै कौन सो है वह पण्डित? ॥५९॥

सार—सुन्दरी नवयौवना कामिनी को सामने पाकर त्यागना खेल नहीं, टेढ़ी खीर है। इसकी निंदा करने वाले चाहे अनेक हों, पर त्यागने वाला एक भी नहीं।

56. It is only in the speeches of the talkative scholars that the abandonment of the company of a woman is advocated but who is strong-minded enough to give up in actual practice the lips of lotus-eyed woman wearing girdle set with red jewels.

———

स्वपरप्रतारकोऽसौ निन्दति योऽलीकपण्डितो युवतीः।
यस्मात्तपसोऽपि फलं स्वर्गस्तस्यापि फलं तथाऽप्सरसः॥५७॥

जो विद्वान युवतियों की निन्दा करता है, वह निश्चय ही झूठा पण्डित है। उसने पहले आप धोखा खाया है और अब दूसरों को धोखा देता है, क्योंकि अनेक प्रकार की तपस्याओं का फल स्वर्ग है और स्वर्ग का फल अप्सरा-भोग है॥५७॥

खुलासा—जो विद्वान पण्डित नवयौवना कामनियों की निन्दा करते हैं, उनमे अनेक दोष बताते हैं, वे पागल है। वे स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अनेक प्रकार की तपश्चर्य्या और जप-तप करते है। तप सिद्धि होने पर स्वर्ग मे जाना चाहते हैं। वहाँ उनको भोगने के लिए अप्सरायें मिलेगी, तब यहीं उनके भोगने में कौन-सी बुराई है? यह तो सीधी-सी बात है कि तपस्या का फल स्वर्ग है और स्वर्ग का फल अप्सरायें।

"आप पाण्डेजी बैगन खावें, औरों को परमोध बतावें" ऐसे परोपदेशक दुनिया में बहुत है। आप वही काम करते हैं, पर औरों को मना करते हैं। ऐसे महापुरुषों के सम्बन्ध में ही महाकवि

दाग कहते हैं:—

> हूरके वास्ते ज़ाहिद ने इबादत की है।
> सैर तो जब है, कि जन्नत मे न जाने पावे॥

भक्त महाशय ने स्वर्गीय अप्सराओं या हूरों के भोगने के लिए ईश्वर की उपासना की है। बड़ा मजा हो, अगर ये स्वर्ग मे जाने ही न पावें।

महाकवि जौक कहते है:—

> कब हकपरस्त है, जाहिदे जन्नत परस्त है।
> हूरों पै मर रहा है यह शह्वत परस्त है॥

कौन कहता है, भक्तजी ईश्वर-उपासक हैं? ये तो घोर कामी और इन्द्रिय-दास हैं। स्वर्ग की अप्सराओं पर मर रहे है। जो स्वर्ग की कामना से तप करते हैं, उनकी स्त्री-निन्दा ध्यान देने योग्य नहीं, वे वृथा निन्दा करते हैं। आप स्वर्ग मे जाकर स्त्री ही भोगेंगे, और करेंगे क्या? स्वर्गीय अप्सरायें या हूरें भी तो आखिर स्त्रियाँ ही हैं न? ऐसे धोखेबाजो की बातों मे न आना चाहिये।

उस्ताद जौक ने भी कहा है:—

> रेशे सफेद शैख मे, है जुल्मते फरेब।
> इस मक्र चाँदनी पर, न करना गुमान ऐ सुब्ह॥

शेखजी की सफेद दाढ़ी मे कपट का अन्धकार छिपा हुआ है। इस झूठी चाँदनी पर प्रातःकाल की सफेदी का धोखा मत खाना;

यानी इनकी बात मान कामिनियों को भोगना न छोड़ना। ऐसे-ऐसे पोंघ-बसन्त अपनी सिद्धाई जमाने को कपट से ऐसी बेतुकी बातें कहते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं, जिनको इन नारी-रत्नों की कद्र ही नहीं मालूम, इससे इनकी निन्दा करते हैं। जिसे जिसकी क़द्र ही नहीं मालूम, वह तो उसकी निन्दा ही करेगा। जङ्गल में पड़े हुए गजमोतियों को भीलनी पाकर भी फेंक देती है; पर उनकी क़ीमत जानने वाला जौहरी उन्हें उठा कर छाती से लगा लेता है। जिसने शराब नहीं पी, जिसे शराब का मजा नहीं मालूम, वह शराब की निन्दा ही करता है। उसे कोई लाख सम-झावे, वह नहीं समझता। ऐसे ही मौके का एक शेर महाकवि दाग ने कहा है:—

लुत्फ़ मै तुझसे क्या कहूँ ज़ाहिद।
हाय! कमबख्त तूने पी ही नहीं॥

हे भक्त! मैं तुझे शराब का मजा कैसे बताऊँ? कम्बख्त तूने उसे पिया ही नहीं। जो मदिरा पीता है और नाज़नियों को भोगता है, वही जानता है कि उनमें क्या मजा है। उस मजे का हाल जबान से बताना कठिन ही नहीं, असम्भव है। सच मानिये, पृथ्वी पर अगर स्वर्ग है, तो कमलनयनी उठती जवानी की सुन्दरियों में ही है।

दोहा

नारिन की निन्दा करत, ते पण्डित मतिहीन।
स्वर्ग गये तिनको सुनें, सदा अप्सरा लीन॥ ५७॥

सार—स्त्रियों की निन्दा करने वाला पाखण्डी है। आप उन्हें भोगना चाहता है, पर दूसरों को रोकता है।

57. Those scholars who speak ill of women are liars in as much as they deceive others and also themselves, for the result of austerity is heaven and the result of attaining heaven is the enjoyment of nymphs.

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः ॥
किं तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥५८॥

इस पृथ्वी पर मतवाले हाथी का मस्तक विदारने वाले शूर अनेक हैं, प्रचण्ड मृगराज सिंह के मारने वाले भी कितने ही मिल सकते हैं परन्तु बलवानों के सामने हम हठ करके कहते हैं, कि कामदेव के मद को मर्दन करने वाले पुरुष कोई विरले ही होंगे ॥५८॥

खुलासा—हाथियों और सिंहों को पराजित करने वाले शूरवीर इस पृथ्वी पर अनेक मिल सकते हैं, पर कामदेव को वश में करने वाला अथवा कामिनी के कटाक्ष-बाणों से पराजित न होने वाला कोई एक भी कठिनाई से मिलता है। बड़े-बड़े युद्ध-क्षेत्रों में विजयी होने वाले शूरवीरों की भी शूरवीरता उन कामिनियों के

आगे न जाने कहाँ चली जाती है। बड़े-बड़े बहादुरों की जबान से यही निकलता है—

मर गये हम इक इशारे से निगाहे नाज़ के।

पर बकौल स्वामी शंकराचार्यजी के सच्चा शूरवीर वही है, जो मनोज, कामदेव के बाणों से व्यथित न हो अर्थात् कामिनी के दाम में न फँसे। कहा है—

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा ?
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ॥
प्राज्ञोऽथ धीरश्च शमस्तु को वा ?।
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ॥

संसार में सब से बड़ा शूरवीर कौन है ? सब से बड़ा शूरवीर वही है, जो कामदेव के बाणों से पीड़ित न हो। बुद्धिमान, धीर और समदर्शी कौन है ? जो स्त्री के कटाक्ष से मोहित न हो।

हमें एक 'सर्वजीत" नामक राजा की कथा याद आ गई है। उसे हम अपने पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे लिखते हैं। पाठक उसे कोरे मनोरञ्जन का ही मसाला न समझें, बल्कि सच्चा सर्वजीत बनने की चेष्टा करें.—

सर्वजीत राजा

एक राजा ने सारी पृथ्वी को जीतकर अपना नाम 'सर्वजीत' रक्खा। सब देशों की रैयत और उसके मातहत राजा-महाराजा उसे 'सर्वजीत' कहने लगे, लेकिन स्वयं राजमाता, राजा की

जननी—उसे 'सर्वजीत' न कह कर, उसे उसके पुराने नाम से ही पुकारती।

एक दिन राजा ने अपनी माँ से कहा—"माताजी ! सारा संसार मुझे 'सर्वजीत' कहता है, पर आप मुझे मेरे पुराने नाम से ही क्यों पुकारती हो ?" राजमाता ने कहा—'बेटा ! बाहर के देशों के जीतने से कोई सर्वजीत' नहीं हो सकता। तूने सारा संसार जीत लिया, पर अपना शरीर, मन और इन्द्रियाँ तो जीती ही नहीं। तेरा शरीर दिन-दिन क्षय हो रहा है और तेरी इन्द्रियाँ तुझे विषय-भोगों और कुकर्मों की तरफ ले जा रही हैं। पहले तू भीतरी शत्रु—काम, क्रोध, मोह, लोभ प्रभृति और अपने मन तथा इन्द्रियों को वश में कर, तब मैं तुझे 'सर्वजीत' खुशी से कहूँगी। देख, व्यास भगवान ने कहा है:—

न रणे विजयाच्छूरोऽध्ययनान्न पण्डितः।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन न दाता चार्थदानतः ॥१॥
इन्द्रियाणां जये शूरो धर्मं चरति पण्डितः।
हितप्रायोक्तिभिर्वक्ता दाता सम्मानदानतः ॥२॥

रण-क्षेत्र में विजयी होने से कोई शूर नहीं हो सकता, शास्त्र पढ़ने से कोई पण्डित नहीं हो सकता, धड़ाधड़ व्याख्यान देने से कोई वक्ता नहीं हो सकता और अन्न दान करने से कोई दाता नहीं हो सकता।

जो इन्द्रियों पर जय प्राप्त करता है, वह शूरवीर कहलाता है; जो धर्म पर चलता है, वह पण्डित कहलाता है, जो हित-

कारी बातें कहता है, वह वक्ता कहलाता है और जो दूसरों का आदर-सम्मान करता है, वह दाता कहलाता है।

छप्पय

हाथी मारनहार होत केतेक शूरे ।
मृगपति नष्ट कर सकें, बकें नहिं नेकहु पूरे ॥
बड़े बड़े बलवन्त वीर, सब तिनके आगे ।
महाबली ये काम, जाहि देखत सब भागे ॥
अभिमान भरे या मदन को, मान मार मेटे अवधि
नर धरम-धुरन्धर धीर वे, विरले या संसार-मधि ॥५८॥

सार– शूरवीर इस जगत में बहुत है, पर कामिनियों के कटाक्ष-बाणों से घायल न होने वाला सच्चा शूरवीर शायद ही कोई एक हो।

58 There are many a hero on this earth who can tear the head of a mad elephant and there are also many powerful enough to kill a fearful lion but I can challenge all the strong men and say that there are few who can fully control the excitements of passions.

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति स नरस्तावदेवेन्द्रियाणां
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ॥

भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथगता नीलपक्ष्माण एते
यावल्लीलावतीनां हृदि न धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतन्ति ॥५६॥

पुरुष सन्मार्ग में तभी तक रह सकता है, इन्द्रियों को तभी तक वश में रख सकता है, लज्जा को उसी समय तक धारण कर सकता है, नम्रता का अवलम्बन उसी समय तक कर सकता है, जब तक कि लीलावती स्त्रियों के भौंह रूपी धनुष से कानों तक खींचे गये, श्याम बरौनी रूपी पङ्ख धारण किये, धीरज को छुड़ाने वाले नयन-रूपी बाण हृदय में नहीं लगते ॥ ५० ॥

खुलासा—पुरुष उसी समय तक सन्मार्गी, इन्द्रियविजयी, लज्जाशील और विनीत रहता है, जब तक वह कामिनी के कटाक्ष से घायल नहीं होता अथवा उसकी किसी नाज़नी से आँखें नहीं लड़तीं। आँख लड़ते ही वह उसकी एक-एक अदा पर पागल हो जाता है और बकौल महाकवि गालिब यही कहता है—

बलागे जाँ है गालिब ! उसकी हर बात।
इबारत क्या, इशारत क्या, अदा क्या ॥

उसका देखना-भालना, बोलना सभी ग़ज़ब ढाहने वाले हैं।

बहुत लिखना व्यर्थ है, चंचलनयनी कामिनी से चार नज़र होते ही मनुष्य के शान्ति, सन्तोष, लज्जा और शर्म सब हवा हो जाते हैं। उस्ताद ज़ौक ने ठीक ही कहा है:—

छोडा न दिल में सब्र न आराम न शिकेब।
तेरी निगह ने साफ किया घर के घर पे हाथ ॥

तेरी दृष्टि ने सब्र-सन्तोष, शान्ति और सुख सबका पटड़ा कर दिया—(इतना ही नहीं) सारे घर पर ही हाथ साफ कर दिया।

कामिनी के कटाक्ष का मारा पुरुष कामातुर हो जाता है, उस समय उसमे भय, लज्जा और धीरज नहीं रहता। वह डर-भय और लाज-शर्म को ताक पर रख कर, अधीर हुआ, उसे देखने, मिलने और आलिङ्गन करने के लिये छटपटाता है। उसको एक प्रकार का नशा-सा हो जाता है, इसलिये वह सारे काम मतवालों के-से किया करता है। लोगो के समझाने-बुझाने का कुछ फल नहीं होता। वेदान्तियो की वेदान्त-विद्या, भागवतियो की भागवत और गीतावालो की गीता, इस मौक़े पर कुछ भी काम नहीं करते, सभी निष्फल हो जाते है।

क्षेमेन्द्र महाशय ने ठीक ही कहा है—

न श्रुतेन न वित्तेन न वृत्तेन न कर्मणा।
प्रवृत्तं शक्यते रोद्धुं मनोभवपथेमनः॥

कामदेव की राह पर आया हुआ मन किसी भी उपाय से उस राह से हटाया नहीं जा सकता।

बक़ौल महाकवि दाग़, नाज़नियो के तीरे निगाह के घायलों की अपनी कही सुनिये:—

नाला निकला तो कभी दिलसे कभी आहोफ़ुग़ाँ।
पर तेरे वस्ल का अरमान निकला ही नहीं॥

मेरे दिलसे कभी आह निकलती है, तो कभी दीर्घ निःश्वास; पर तेरे मिलने की चिरपालित अभिलाषा कभी नहीं निकलती।

है तेरी राहे मुहब्बत में हज़ारों फितने ।
देख, मुझको वजुज़ इस राह के चलता ही नहीं ॥

तेरे प्रेम की राह में हजारों विघ्न-बाधायें हैं; किन्तु मुझे देख, कि उस राह पर चले बिना मेरा मन ही नहीं मानता, यानी मैं और राह का पथिक बनना नहीं चाहता ।

दोहा

इन्द्री दम लज्जा विनय, तो लों सब शुभ कर्म ।
जो लों नारी-नयन-शर, छेदत नाहीं मर्म ॥ ५६ ॥

सार—स्त्रियों के नयन-बाण लगते ही पुरुष के लज्जा और नम्रता प्रभृति गुण हवा हो जाते हैं ।

59. A man is in right path, has his passions under his control and has modesty and humility in him only so long as the eyes of women with beautiful eye-lids in the form of arrows with wings, stealing the patience, thrown from brows in the form of bows that are strung up to the ears, do not pierce the heart

---

उन्मत्तप्रेमसंरम्भादारभन्ते यदंगनाः ।
तत्र प्रत्यूहमाधातुम् ब्रह्मापि खलु कातरः ॥ ६० ॥

अतिशय प्रेम की उमंग से उन्मत्त होकर स्त्रियाँ जिस काम को

आरम्भ कर देना है, उस काम में विघ्न-बाधा उपस्थित करने ब्रह्मा भी डरता है ॥ ६० ॥

खुलासा—इश्क के जोश और जल्दी में स्त्री जो काम कर बैठती है, उससे उसे मनुष्य तो कौन चीज है, स्वयं ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता। स्त्री अत्यन्त काम-पीड़ित होने पर जो छल-बल और साहस के काम करती है, उनको देख कर उसके बनाने वाला ब्रह्मा भी दाँतों तले अँगुली देने लगता है। सास-ससुर, पति-पुत्र कोई भी उसे कुकर्मों से विरत कर नहीं सकते।

कामवती स्त्री अत्यन्त कुटिल, क्रूर आचरण वाली और लज्जाहीना हो जाती है। उस समय वह अपने पति, पिता, माता, पुत्र, बन्धु और कुटुम्बी तक से द्रोह करने और उनका नाश करने में भी नहीं हिचकती। घमासान युद्धक्षेत्र में भी वह बन्दूक की गोलियों और तोपों के गोलों की परवा न करके, यदि उसे जाना हो तो पहुँचती है। जिस श्मशान पर अकेला-दुकेला मर्द भी न जा सकता हो, उस पर वह घोर अँधेरी रात में बादलों के गरजने, बिजली के कड़कने और ऐसी ही अनेक आपदाओं के होने पर भी-बेधड़क पहुँचती है। स्त्री के साहस की बात न पूछिये। ऐसा कौन-सा काम है, जिसे वह इच्छा करने पर नहीं कर सकती? किसी पाश्चात्य विद्वान ने भी कहा है, "A woman, when she either loves or hates, will dare anything." स्त्री जब प्रेम या घृणा किसी एक पर तुल जाती है, तब सब कुछ करने का साहस कर सकती है।

किसी कवि ने कहा है—

कहा न अबला कर सकै॥ ? कहा न सिन्धु समाय ?
कहा न पावक मे जरे ? काहि काल नहिं खाय ?

"रसिक" कवि ने कहा है—

कहा त्रिया नहि कर सके, कामवती जब होय ?
'रसिक' सास पति पुत्र सब कर न सकैं कछु कोय ॥

दोहा

महामत्त या प्रेम को, जब तिय करत उद्योत ।
तब वाके छल बल निरखि, विधिहू कायर होत ॥६०॥

सार—कामोन्मत्त स्त्री जो चाहे सो कर सकती है।

60. Even Brahma (the creator) has not the power to obstruct the work which a woman underakes being impassioned with the excitements of love.

तावन्महत्त्वं पाण्डित्यं कुलीनत्वं विवेकिता ।
यावज्ज्वलति नांगेषु हन्त पञ्चेषुपावकः ॥६१॥

बड़ाई, पण्डिताई, कुलीनता और विवेक,—मनुष्य के हृदय मे तभी तक रह सकते है, जब तक शरीर मे कामाग्नि प्रज्वलित नहीं होती ॥६१॥

॥ एक पुत्र छोड़कर स्त्री सब कुछ कर सकती है। केवल यहीं उसकी नहीं चलती।

खुलासा—इश्क़ मे जात-पाँत और नीच-ऊँच का विचार नहीं है। कामी पुरुषो के विवेक या सत् असत् की विचार शक्ति को तो स्त्रियाँ अपनी एक नजर में ही हर लेती हैं। जब भले और बुरे को विचारने की शक्ति नहीं रहती, तब मनुष्य में कुलीनता प्रभृति गुण कैसे रह सकते हैं? अनेक पुरुष मुसलमानियों के प्रेम में फँस कर मुसलमान हो गये है। कितने ही मेमों के मोह-जाल में फँसकर अपने हिन्दुत्व और ब्राह्मणत्व को तिलाञ्जलि देकर काले साहब बन गये है। यह तो कुछ नहीं, हमने कितने ही उच्च कुल के हिन्दू मेहतरानियों के इश्क मे गिरफ्तार होकर मेहतर होते देखे हैं। इसमे जरा भी शक नहीं कि, कामाग्नि के प्रज्वलित होते ही, बड़प्पन और कुलीनता प्रभृति हवा हो जाते हैं।

जब से अँगरेजी राज इस देश में हुआ है, अनेकों अमीरो के लड़के भारत में बी० ए०, एम० ए० पास करके,बैरिष्टरी या सिविल सर्विस की परीक्षा पास करने इंग्लैण्ड जाते हैं। ये विद्वान नवयुवक वहाँ की मिसों की लुनाई, सुघड़ाई और रूप-माधुरी देखकर पागल हो जाते है। कितने ही उनको ब्याह लाते है और इस तरह अपने दीनो ईमान या धर्मको खोकर जातिच्युत होते है। यहाँ के लोग उनकी हँसी उड़ाते और घोर-निन्दा करते है। पर इससे होता क्या है? उनके वश की बात नहीं। नवयौवना मिसों से चार नजर होते ही, वे अपनी विद्या-बुद्धिको भूलकर उन पर पागल हो जाते हैं। महा कवि अकबर ने ऐसे ही एक लन्दन प्रवासी का,

जो एक मिस के केश-पाश में फँस गया था, अच्छा चित्र खींचा है:-

रात उस मिस से कलीसाँ में हुआ मैं दो चार।
हाय वो हुस्न, वो शोखी, वो नज़ाकत, वो उभार॥
जुल्फ-पेचों में वो सजधज कि बलायें भी मुरीद।
कदे राना में वो चमखम कि कयामत भी शहीद॥
दिलकशी चाल मे ऐसी कि सितारे रुक जायँ।
सरकशी नाज़ में ऐसी कि गवर्नर झुक जायँ॥
आतिशे हुस्न से तकवा को जलाने वाली।
बिजलियाँ लुत्फे-तबस्सुम से गिराने वाली॥
पिस गया, लोट गया दिल मे सकत ही न रही।
सुर थे तमकीन के जिस गत मे वो गत ही न रही॥
अर्ज़ की मैने कि ऐ गुलशने फितरत की बहार।
दौलतो इज्जतो ईमाँ तेरे कदमो पै निसार॥
तू अगर अहदे वफा बाँध के मेरी हो जाय।
सारी दुनिया से मेरे कल्ब को सेरी हो जाय॥

रात के समय उस मिस से गिरजे मे मेरी मुठभेड़ हो गई। हाय! उसके रूप-लावण्य, उसकी चञ्चलता, उसकी जवानी के उभार का बयान कैसे करूँ? उसकी पेचदार लटो में वह बला की सजधज थी कि जिसको देखकर बलायें स्वयं उसका लोहा मान ले। उसके नाज़ुक शरीर मे वह चमक-दमक कि जिसको देखकर प्रलय भी उस पर मरने लगे। उसकी चाल में ऐसी कशिश कि जिसको देखकर सितारो की चाल भी मन्दी पड़ जाय। उसके

हाव-भावों में ऐसी ऐंठ कि जिसको देखकर गवर्नर लोग भी उसके सामने सिर झुका दें। उसकी खूबसूरती में ऐसी लपट कि जिससे सदाचार के भाव भस्म हो जायँ। उसकी मन्द मुसक्यान में ऐसी चकाचौंध कि जिससे प्रेमी के दिल पर बिजली गिर पड़े। उसके देखते ही मेरा दिल पिस गया और मेरे शरीर की सारी ताक़त निकल गई। मैं ज़मीन पर बेहोश होकर लोटने लगा। धीरज के स्वर जिस गति में बज रहे थे, वह गति ही हृदय में न रही। मैंने कहा—"ऐ प्रकृति की फुलवाड़ी की बहार! मेरा धन-धर्म और मान-मर्यादा सब तेरे चरणों में अर्पण हैं। यदि सच्ची मुहब्बत की प्रतिज्ञा करके तू मेरी हो जाय, तो मेरा जी सारे संसार में भर जाय।"

दोहा

बुद्धि विवेक कुलीनता, तौं लौं ही मन माहिं।
कामबाण की अग्नि तन, जौ लौं भभकत नाहिं॥

सार—प्रेम, कुलीनता, विवेक और पाण्डित्य प्रभृति सद्गुणों का शत्रु है।

61 Respectability, wisdom, good sense and family distinction find place in a man only so long as the fire of passion has not begun to burn in him.

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथितविनयोऽप्यात्मबोधोऽपि बाढं ।
संसारेऽस्मिन् भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् ॥
येनैतस्मिन्निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती ।
वामाक्षीणां भवति कुटिलभ्रूलता कुञ्चिकेव ॥ ६२ ॥

शास्त्रज्ञ, विनयी और आत्मज्ञानियों में कोई विरला ही ऐसा होगा जो सद्गति का पात्र हो; क्योंकि यहाँ वामलोचना स्त्रियों की बाँकी भ्रूलता-रूपी कुञ्जी उनके लिए नरक द्वार का ताला खोले रहती है ॥ ६२ ॥

खुलासा— शास्त्रज्ञ और ब्रह्मज्ञानियों की सद्गति तो तभी हो सकती है, जब कि वे कामिनी की बाँकी भौंहों की झपेट में आने से बचें। उनकी कमान-सी भौंहों को देख कर बड़े-बड़े वेदान्तियों की अक्ल मारी जाती है। वह हजार गीता, भागवत और उपनिषदों का पाठ करें, हजार योगवासिष्ठों का परिशीलन करें, पर उनके चित्त पर चढ़ी कामिनी का उतरना बहुत कठिन है। पण्डितेन्द्र जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास" में लिखते हैं.—

> उपनिषदः परिपीता गीतापि च हन्त मतिपथं नीता ।
> तदपि न हा विधुवदना मानससदनाद्बहिर्याति ॥

उपनिषदों का पान किया और गीता भी भली भाँति पढ़ा-समझा और मनन किया, परन्तु हाय! इतना सब करने पर भी, वह चन्द्रवदनी कामिनी मेरे मनरूपी घर से बाहर नहीं जाती।

ईश्वर की राह में कामिनी और काञ्चन दो घाटियाँ हैं।

अगर संसार मे कामिनी और काञ्चन न होते, तो इस संसार-सागर से तरना और मोक्ष-लाभ करना कठिन न होता। मोक्ष की राह मे कामिनी और काञ्चन दो घाटियाँ पड़ती है। इन घाटियों को पार करना अति कठिन है। जो इन घाटियों को लाँघने में समर्थ हो, वही सद्‌गति या मोक्ष का अधिकारी हो सकता है।

महात्मा कबीर कहते हैं—

चलूँ चलूँ सब कोइ कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुर्लभ घाटी दोय॥ १॥
एक कनक अरु कामिनी, ये लाँबी तरवारि।
चाले थे हरि भजन को, बिच ही लीन्हा मारि॥ २॥
नारि पराई आपनी, भुगतै नरकै जाय।
आगि-आगि सब एकसी, देत हाथ जरि जाय॥ ३॥
नारी तो हम भी करी, पाया नहीं विचार।
जब जानी तब परिहरी, नारी बड़ा विकार॥ ४॥
नारि नसावे तीन सुख, जेहि नर पासे होय।
भक्ति, मुक्ति अरु ज्ञान में पैठि सके नहिं कोय॥ ५॥
एक कनक अरु कामिनी, दोउ अग्नि की झाल।
देखे ही तें पर जले, परसि करे पैमाल॥ ६॥

जहाँ काम तहाँ राम नहिं, राम तहाँ नहिं काम ।
दोऊ कबहूँ ना रहें, काम राम इक ठाम ॥७॥

(१)

चलूँ चलूँ सब कहते हैं, पर कोई विरला ही पहुँचता है, क्योंकि उस (भगवान की) राह में कनक और कामिनी दो दुर्लंघ्य घाटियाँ हैं ।

(२)

कनक और कामिनी ये दो लम्बी तलवारें हैं । हरिभजन को चले थे, पर इन तलवारों ने बीच राह में ही मार लिया ।

(३)

स्त्री अपनी हो चाहे पराई, भोगने से नरक में जाना ही पड़ता है; क्योंकि अपनी आग और पराई आग, दोनों में ही हाथ देने से हाथ जलता है ।

(४)

जब हम में विवेक-विचार नहीं था, तब हमने भी स्त्री की थी; लेकिन जब उसका असल तत्व जाना, तब उसे त्याग दिया; क्योंकि स्त्री बड़ी विकारवान है ।

(५)

स्त्री तीन सुखों को नष्ट कर देती है । जिसके स्त्री होती है, उसे ज्ञान नहीं होता; अतः ईश्वर की भक्ति में भी मन नहीं लगता और भक्ति बिना मुक्ति नहीं मिलती ।

(८६)

कनक और कामिनी दोनों आग की लपट है। इनके देखने से ही पर जलते हैं और छूने से तो प्राणी नष्ट ही हो जाता है।

जहाँ तक स्त्री है वहाँ राम नहीं और जहाँ राम है वहाँ स्त्री नहीं भगवानकी भक्ति और स्त्री की प्रीति दोनों एकही पुरुष नहीं कर सकता। जिस तरह दिन और रात एकत्र नहीं हो सकते: उसी तरह राम और काम भी एकत्र नहीं रह सकते।

सारांश यह, कि मोक्ष लाभ करने या जन्म-मरण से बचकर परमपद पाने में ये स्त्रियाँ ही बाधक हैं। लोग इनके जाल में फँस जाते हैं, अतः जन्म-जन्मान्तर तक नरक भोगते हैं। उनको सद्गति मिलना कठिन हो जाता है। बक़ौल महाकवि जौक, कोई समझदार, जहाँदीदा पुरुष ही इस स्त्री-जाल में फँसने से बचता है। कहा है:—

दुनिया है वह सैयाद, कि सब दाम में इसके।
आ जाते हैं, लेकिन कोई दाना नहीं आता॥

दुनिया वह जाल है कि इसमें सभी फँस जाते हैं; कोई विचारशील ही इसमें से बचता है। जो इस जाल में नहीं फँसता, वही नरकों से बचता और मुक्ति लाभ करता है।

छप्पय

सब ग्रन्थन के ज्ञानवान अरु नीतिवान नर।
तिनमें कोऊ होत मुक्ति मारग में तत्पर॥

सबको देत बहाय, बक्र-नयैनी यह नारी ।
जाकी बाँकी भौंह नचत अति ही अनियारी ॥
यह कूँजी नरक कपाट की, खोलन को झुकत फिरत ।
जिनके न लगत मन दृगन में, ते भवसागर को तरत ॥६२॥

सार—सुन्दरी स्त्रियां पुरुषों की सद्गति में बाधक हैं

62. One may be versed in the Shastras, reputedly wise and humble, but there are few who can claim the higher and better life—after death for, there is the oblique brow of women having beautiful eyes moving in it, which like a key, opens the lock of the gate of hell

---

कृशः काणः खंजः श्रवणरहितः पुच्छविकलो
व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावृततनुः ॥
क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरककपालार्पितगलः
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि निहन्त्येव मदनः ॥६३॥

काना, लँगड़ा, कनकटा और दुम कटा कुत्ता, जिसके शरीर में अनेक घाव हो रहे हैं, उनसे पीव और राध भरते हैं, दुर्गन्ध का ठिकाना नहीं है घावों में हजारों में कीड़े पड़े हुए हैं, जो भूख से व्याकुल हो रहा है और उसके गले में हाँडी का घेरा पड़ा हुआ है, कामान्ध होकर कुतिया के पीछे-पीछे दौड़ता है। हाय! कामदेव बड़ा ही निर्दयी है, जो मरे को भी मारता है ॥६३॥

खुलासा—कुत्ता इतने क्लेशों से व्याप्त होने पर भी, शरीर में दम न होने पर भी और क्षुधा से व्याकुल होने पर भी, कामान्ध होकर, कुतिया के पीछे दौड़ता है। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि कामदेव बड़ा ही नीच और निर्दयी है, क्योंकि वह मुसीबत से मरते हुओं पर भी, अपने सत्यानाशी बाण छोड़ने में आगा-पीछा नहीं करता। जो कामदेव ऐसे दुर्बलों का यह हाल करता है, वह मावा-मलाई, घी-दूध और रबड़ी-पेड़े खाने वाले सण्ड-मुसण्डों का तो और भी बुरा हाल करता होगा। धूर्त्त साधु-सन्त और पण्डे महन्त जो नित्य माल पर माल उड़ाते हैं, क्या काम-बाणों से रक्षित रहने में समर्थ हो सकते होंगे? कदापि नहीं। जो ऐसा कहते हैं, वे महापापी और मिथ्यावादी हैं। वे एक पाप तो जारकर्म का करते हैं और दूसरा मिथ्याभाषण का।

हमारे देश के अनेक तीर्थों में जो कुकर्म होते हैं, उनको याद आने से कलेजा फटने लगता है। हमारी बेचारी माँ, बहिनों और बेटियों की आबरू बचना कठिन हो रहा है। सच तो यह है, दुष्टों ने तीर्थों और मन्दिरों को इन कुलाङ्गनाओं को फँसाने का जाल मुकर्रर कर रक्खा है। मोटे ताजे वैरागी सन्त और महन्त मुफ्त का बढ़िया-से-बढ़िया माल उड़ाते हैं। इसके बाद जब उन्हें कामदेव सताता है, तब भोली-भाली स्त्रियों को बहका कर, उन्हें उल्टी पट्टियाँ पढ़ाकर, उनकी लाज लूटते और उनका सतीत्व भङ्ग करते हैं। घोंघा बसन्त भोंदू लोग ऐसे सण्ड-मुसण्डों को सच्चा महात्मा समझते हैं। मन में इतना भी नहीं समझते कि हमारे

लड्डू-पेड़े, रबड़ी-मलाई, मोहनभोग और खीर-पूरी प्रभृति उड़ाने वालों को क्या काम नहीं सताता होगा ? ये अपनी कामाग्नि को किस तरह शान्त करते होंगे ? सब पेड़ के पत्ते और हवा खाकर जीवन-निर्वाह करने वालों को ही कामदेव सताता है, तब क्या इनको छोड़ देता होगा ? महात्मा भर्तृहरि के कुत्ते से लोगों को शिक्षा ग्रहण कर, सावधान रहना चाहिये और स्त्रियों को तीर्थों या मन्दिरों में जाने से सर्वथा रोकना चाहिये। यह हम भी नहीं कहते कि सभी महात्मा और पुजारी कहाने वाले ऐसे कुकर्म करते हैं, पर चूंकि हमने ये दुष्कर्म आँखो से देखे हैं, अतः कहना पडता है कि ६६ फीसदी इन कुकर्मों मे फॅसे रहते हैं। क्या आप इन्हे विश्वामित्र और पाराशर प्रभृति महर्षियों से भी अधिक इन्द्रिय-विजयी समझते हैं ? स्त्री-पुरुष—अग्नि और घी, आग और फूँस अथवा चुम्बक पत्थर और लोहे के समान हैं। घी और आग के पास-पास होते ही घी पिघलने लगता है। फूँस के पास अग्नि के आते ही फूँस मे झट से आग लग जाती है। चुम्बक के सामने लोहा आते ही चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींचता है। ये नेचरल (Natural) या स्वाभाविक मामले हैं, इनमे मनुष्य का वश नहीं। इसीलिये महात्माओं ने कहा है—

नारी निरखि न देखिये, निरखि न कीजे दौर।
देखत ही तें विष चढे, मन आवे कछु और॥
सब सोना की सुन्दरी, आवे बास-सुबास।
जो जननी हो आपनी, तोहू न बैठे पास॥

स्त्री को कभी घूर कर न देखना चाहिये उससे आँखें न मिलानी चाहिये क्योंकि स्त्री के देखने से ही विष चढ़ता है और फिर मन बिगड़ जाता है।

अगर सुन्दरी सोने की भी हो और उससे सुगन्ध आ रही हो, यदि वह अपनी पैदा करने वाली महतारी हो, तो भी उसके पास न बैठना चाहिये।

आशा है कि हमारे देश के सीधे-सादे लोग इन पंक्तियों पर ध्यान दे अपने घरों की इज्जत-आबरू पर पानी न फिरने देंगे।

छप्पय

दुबरो कानो हीन-श्रवण, बिन पूछ नवाये।
बूढ़ो विकल शरीर, वारबिन छार लगाये॥
झरत शीशतें राध, रुधिर कृमि टारत डोलत।
क्षुधा क्षीण अति दीन, गले घट कण्ठ कलोलत॥
यह दशा श्वान पाई तऊ, कुतियन ते उरझत गिरत।
देखो अनीत या मदन की, मृतकन को मारत फिरत॥६३॥

सार—कोई भी प्राणी कामदेव के बाणों से अछूता बच नहीं सकता।

63. A dog thin, one-eyed, lame, deaf, without tail, with sores full of puss and worms walking over its body, hungry, old, having the round neck of a broken pot round its shoulder, goes after a bitch for inter course Alas Kamadeva

(Cupid) makes senseless even those, who are almost dead. (An animal under the influence of Cupid is devoid of all sense)

स्त्रीमुद्रां झषकेतनस्य परमां सर्वार्थसम्पत्करीं
ये मूढाः प्रविहाय यान्ति कुधियो मिथ्याफलान्वेषिणः ॥
ते तेनैव निहत्य निर्दयतरं नग्नीकृता मुण्डिताः
केचित्पञ्चशिखीकृताश्च जटिलाः कापालिकाश्चापरे ॥६४॥

जो मूर्ख सब अर्थ और सम्पदों का देने वाला, कामदेव की मुद्रारूपी स्त्रियों को त्याग कर, स्वर्ग प्रभृति की इच्छा से, घर छोड़ कर निकल गये हैं, उन्हें विरक्त भेष में न समझना चाहिए। उन्हें कामदेव ने अनेक प्रकार के कठोर दण्ड दिये हैं। इसी से कोई नंगा फिरता है, कोई सिर मुंडाये घूमता है, किसी ने पञ्चकेशी रखाई है, किसी ने जटा रखाई है और कोई हाथ में ठीकरा लेकर भीख माँगता फिरता है ॥ ६४ ॥

खुलासा—स्त्री कामदेव की मुद्रा या मुहर है। जिस तरह राजा की मुद्रा या मुहर का अनादर करने वाले को राजा अनेक प्रकार के दण्ड देता है, उसी तरह कामदेव भी अपनी स्त्री मुद्रा का अनादर करने वालों को नाना प्रकार के दण्ड दे किसी को नङ्गा करके फिराता है, तो किसी से भीख मँगाता

यही भाव नीचे की कविता मे और भी स्पष्ट रूप से झलकता है :—

कुण्डलिया

कामिनी मुद्रा काम की, सकल अर्थ की देन।
मूरख याको तजत है झूठे फल के हेत॥
झूठे फल के हेत, तजत तिनहीं को दौड़े।
गहि-गहि मूँडे मूड़, वसन बिन कर-कर छोड़े॥
भगवा करि-करि भेष, जटिल ह्वै जागत जामिनि।
भीख माग के खात, कहत हम छाड़ी कामिनि॥६४॥

सार—स्त्री-त्यागियों को कामदेव नाना प्रकार के दण्ड देता है।

64. Those fools, that throw aside the token of king Kamadeva, namely the women who are productive of love and all sorts of fortunes, and run after unknown subjects, are cruelly punished by the king Kamadeva, some by being made to roam about naked, some by being made to have their heads shaved, some by being allowed to keep only five bunches of hair on their head and some by being made to beg with a pot in their hand

—— o ——

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना-
स्तेऽपि स्त्रीमुखपङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहंगताः ॥
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं भुञ्जन्ति ये मानवा-
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम् ॥६५॥

विश्वामित्र पराशर, मरीचि और शृङ्गी प्रभृति बड़-बड़े विद्वान ऋषि-मुनि, जो वायु, जल और पत्ते खा कर गुजारा करते थे, स्त्री के मुख-कमल को देखकर मोहित हो गये, तब जो मनुष्य, अन्न, घी, दूध, दही प्रभृति नाना प्रकार के व्यञ्जन खाते और पीते हैं, कैसे अपनी इन्द्रियों को वश में रख सकते हैं? यदि वे अपनी इन्द्रियों को वश में कर सकें, तो विन्ध्याचल पर्वत भी समुद्र में तैर सके ॥ ६५ ॥

खुलासा—कामदेव बड़ा बली है। उसने जब केवल जल, वायु और पत्ते खाने वाले मुनियों को न छोड़ा, तब वह घी-दूध खाने वालों को कब छोड़ सकता है? महामुनि विश्वामित्र जब अपना ज्ञान-ध्यान और विवेक-बुद्धि खोकर स्वर्गीय अप्सरा मेनका की रूपच्छटा पर मुग्ध हो गये, महर्षि पराशर नाव में बैठे-बैठे अनजान नाविक की कन्या पर मोहित हो गये और हया-शर्म को तिलाञ्जलि देकर, दिन-दहाड़े अपनी माया से दिन में अन्धकार करके, अपनी कामाग्नि की शान्ति में मशगूल हो गये, जब मरीचि और शृङ्गी जैसे ऋषि वेश्याओं के हाव भावों पर मर मिटे, तब साधारण लोग मोहिनियों के मोह-पाश से कैसे बच सकते हैं? कहा है :—

स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः

इस पृथ्वी पर स्त्रियों ने किसका मन खण्डित या आकृष्ट नहीं किया ? अर्थात् स्त्रियों ने प्रायः सभी का मन हरा, सभी के दिलों पर अपनी छाप जमाई ।

छप्पय

कौशिकादि मुनि भये, वात-पय-पर्णाहारी ।
तेहू तिय-मुख-कमल देख, सब बुद्धि बिसारी ॥
दधि घृत ओदन दूध, मधुर पकवान मलाई ।
नित प्रति सेवन करें, रहें बहु मोद बढ़ाई ॥
बहु विधि नाना नर जग भरे, वे नहिं मन करि सके बस ।
यदि होवहिं तो गिरिविन्ध्य जनु, उदधि मध्य उतराहिं तस ॥६५॥

सार—जब विश्वामित्र और पराशर जैसे मुनि स्त्रियों के माया-जाल में फँस गये, तब और कौन बच सकता है ?

65. Vishwamitra, Parashara and others who lived upon air, water and dry leaves only (they also) became captivated as soon as they saw the charming lotus-like faces of women. Surely then if those who live upon rice mixed with ghee, butter and milk, can be successful in controlling their passions, Vindhya mountains would float on the ocean.

———

स्त्री-त्याग की प्रशंसा

संसारेऽस्मिन्नसारे कुनृपतिभुवनद्वारसेवावलम्ब-
व्यासंगध्वस्तधैर्यम् कथममलधियो मानसं सन्निदध्युः
यद्येतः प्रोद्यदिन्दुद्युतिनिचयभृता न स्युरम्भोजनेत्राः
प्रेंखत्कांचीकलापाःस्तनभरविनमन्मध्यभागास्तरुण्यः॥६६॥

अगर इस असार संसार में, पूर्ण चन्द्रमा की-सी कान्ति वाली, कमल की-सी आंखों वाली, कमर में लटकती हुई करधनी पहनने वाली, स्तनों के भार से झुकी हुई कमर वाली युवती स्त्रियां न होतीं, तो निर्मल-बुद्धि मनुष्य, दुष्ट राजाओं के द्वार की सेवाओं में अनेक कष्ट उठा कर अधीर-चित्त क्यों होते ? ॥ ६६ ॥

खुलासा – पुरुषों को अपने पेट के लिये, राजा-महाराजाओं और अमीर उमराओं की सेवा करके, उनकी टेढ़ी भृकुटियों से हर समय काँपते रहने और बारम्बार अपमानित होने एवं अन्यान्य प्रकार की अनेकों मुसीबतें उठाने की क्या जरूरत थी ? संसार में पुरुष अपनी प्राणप्यारी के लिये ही नाना प्रकार के कष्ट सहता है, उसी के लिये रणक्षेत्र में जाकर अपनी गर्दन दे देता है, उसी के लिये तरह-तरह की जिल्लत और बेइज्जती बर्दाश्त करता है। उसी के सुख की गरज़ से, वह अपने चार शत्रुओं तक की खुशामदें करके अपने मान को मलीन करता है। बहुत कहना व्यर्थ है, स्त्री ही पुरुषों के मानमर्दन और दीनता का कारण है।

छप्पय

नो असार संसार जान, सन्तोष न तजते।
भार भार के भरे भूप को, भूल न भजते॥
बुद्धि विवेक निधान, मान अपने नहिं देते।
हुकुम विरानो राख, दुःख सम्पद नहिं लेते॥
जो यह नहिं होती शशि-मुखी, मृगनयनी केहरि कटी।
छवि जटी छटा निकसी छुरी, रस लपटी छूटी लटी॥ ६६॥

सार—स्त्रियों के ही कारण से पुरुषों को नाना प्रकार की तकलीफें उठानी पड़ती हैं।

66. If there would not have been such lotus-eyed young women with face shining like a newly-risen moon, wearing sweet sounding girdle, whose waist is bent under the load of breasts, then persons of pure intellect would not have put up with various insults by serving in the courts of wicked kings.

सिद्धाध्यासितकन्दरे हरवृषस्कन्धावगाढद्रुमे
गंगाधौतशिलातले हिमवतः स्थाने स्थिते श्रेयसि॥
कः कुर्वीत शिरःप्रणाममलिनं म्लानं मनस्वी जनो
यद्वित्रस्तकुरंगशावनयना न स्युः स्मरास्त्रं स्त्रियः॥६७॥

यदि त्रस्ता मृगशावकनयना कामाग्निरूपा यामिनी इस जगत में न होती, तो सिद्ध महात्माओं की गुफायें, महादेव के वाहन नन्दीश्वर—बैल के कन्धा रगड़ने से त्रस्त और गंगाजल से पवित्र हुई शिलाओं वाले हिमालय के स्थान छोड़ कर कौन मनस्वी—बुद्धिमान पुरुष लोगों के सामने जा उन्हें माथा झुका प्रणाम करके अपने मान को मर्दित करता ? ॥ ६७ ॥

खुलासा—संसार में एकमात्र स्त्री के ही कारण से, पुरुषों को अनेक तरह से नीचा देखना पड़ता है। अगर स्त्री न होती तो पुरुष हिमालय पर्वत की गुफाओं में अथवा गङ्गा-तट पर किसी उत्तम वृक्ष की छाया में बैठ कर, शिव शिव करता हुआ अपने दिन सच्ची सुख-शान्ति से व्यतीत करता। उसे अपनी मान-प्रतिष्ठा खोकर जने-जने की खुशामद करने की कौन-सी आवश्यकता थी ? इसमें जरा भी शक नहीं कि संसार में एकमात्र स्त्री ही के कारण पुरुष को तरह-तरह की जिल्लतें उठानी और जगह-जगह बेइज्जती सहनी पड़ती है।

कुण्डलिया

अभय, हरिण-शावक-नयन काम-बाण-सम नार।
जो घर में होती नहीं, सहजहिं होतो पार॥
सहजहिं होतो पार, बैठ गिरगुहा सिद्ध वन।
जहाँ तरुन सों अङ्ग खुजात फिरें हरवाहन॥
स्वच्छ फटिक हिम शैल तले जहँ बहैं गंगापय।
निशिदिन धरि हरि ध्यान, चित्त कर रागिन निर्भय॥ ६७॥

सार—स्त्रियों के कारण ही पुरुषों को जगह-जगह नीचा देखना पड़ता है, नहीं तो वन पर्वतों में किस चीज का अभाव है ?

67. If there would not have been women, who are the instruments of Kamdeva and who have eyes like those of the fearless young deer, then what high-minded man would have humiliated himself by bowing his head down before men and women, leaving the blissful region of the Himalayas in whose caves pious men reside and where the bull of God Shiva rubs his shoulder against the trees and where the mountain slabs are washed by the water of the Ganges.

संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ।
अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥६८॥

हे संसार ! यदि तुझमें मद से मतवाले नेत्रों वाली दुस्तरा स्त्रियाँ न होतीं, तो तेरे परली पार जाना कुछ कठिन न होता ॥ ६८ ॥

खुलासा—मनुष्य इस लोक में, कर्म-बन्धन या जन्म-मरण की फाँसी से पीछा छुड़ाने के लिए आता है। मोक्ष की साधना के लिए ही उसे मनुष्य देहरूपी पारसमणि मिलती है कि वह नियत अवधि के भीतर, उससे मोक्षरूपी सोना बना ले। पर यहाँ

आने पर उसका बचपन तो खेल-कूद और पढ़ने-लिखने में बह जाता है । यौवनावस्था आने पर वह चञ्चलनयनी, उन्नत नितम्बिनी, पीनपयोधरा कामिनियों के रूप-जाल में फँस जाता है । इनमें वह ऐसा भूलता है कि उसकी सारी उम्र बीत जाती है और उसे अपने कर्त्तव्य-कर्म की याद तक नहीं आती । इतने में ही उसकी अवधि पूरी हो जाती है और उससे पारसमणि रूपी मनुष्य-देह छिन जाती है, यहाँ से वह मोक्षरूपी सोना बनाये बिना ही, फिर कोरा चला जाता है । तात्पर्य यह कि कामिनियों के कारण मनुष्य इस संसार-सागर से पार नहीं हो सकता । उसके इस काम में वे बाधा डालती हैं । सच है, संसार में यदि कामिनी और काञ्चन न होते, तो फिर किसी को भी इस भवसागर को पार करने में कठिनाई न होती । रसिक कवि ने खूब कहा है:—

दोहा

मदमाती मृगलोचनी जो होती नहिं नार ।
कञ्चन न दुर्लभ वस्तु था जग से परलो पार ॥

सोरठा

जो नहिं होती नार तो तरिबो जग में सुगम ।
यह लोचन तलवार, पार होन नहिं देत हैं ॥

सार—संसार-सागर से पार होने में, नेत्रों से जादू करने वाली सुन्दरी स्त्रियाँ ही बाधा-स्वरूप हैं ।

68. O world, it would not have been very difficult to cross you if there were not this great obstacle in the form of woman having beautiful eyes.

यौवन-प्रशंसा

राजंस्तृष्णांबुराशेर्न हि जगति गतः कश्चिदेवावसानं।
को वाऽर्थोऽर्थैः प्रभूतैः स्ववपुषि गलिते यौवने सानुरागे ॥
गच्छामः सद्म यावद्विकसितनयनेन्दीवरालोकिनीनामा-
क्रम्याक्रम्य रूपं झटिति न जरया लुप्यते प्रेयसीनाम्॥६९॥

हे महाराज ! इस तृष्णारूपी समुद्र के पार कोई न जा सका। अर्थात प्यारा यौवनावस्था के चले जाने पर, अधिक धन-सञ्चय में क्या लाभ होगा ? हम शीघ्र ही अपने घर क्यों न चले जाँय, क्योंकि, कहा ऐसा न हो कि विकसित कुमुद और कमल के समान नेत्रों वाली हमारी प्यारियों के रूप को वृद्धावस्था घुला-घुला कर बिगाड़ डाले ॥ ६९ ॥

खुलासा—राजन् ! तृष्णा-पिशाचिनी का अन्त नहीं। यह दिन-दिन बढ़ती ही जाती है। हजार होने पर लाख की, लाख होने पर करोड़ की और करोड़ होने पर अरब-खरब की अथवा

साम्राज्य की इच्छा होती है। मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, उसके बाल पक जाते हैं, दाँत गिर जाते हैं पर तृष्णा न बूढ़ी होती है और न उसका कोई अङ्ग क्षीण होता है। वह तो बढ़ती ही जाती है। किसी ने कहा है:—

> निःस्वो वष्टि शतं शती दशशतं लक्षं सहस्राधिपो
> लक्षेशः क्षितिपालतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
> चक्रेशः पुनरिन्द्रतां सुरपतिर्ब्राह्मम्पदं वाञ्छति
> ब्रह्मा शैवपदं शिवो हरिपदं आशावधिं को गतः ?॥

निर्धन सौ रुपये चाहता है, सौ वाला हजार चाहता है, और हजारपति लाख रुपये चाहता है, लखपति राजा होना चाहता है, राजा सम्राट होना चाहता है, सम्राट् इन्द्र होना चाहता है, इन्द्र ब्रह्मा होना चाहता है, ब्रह्मा शिव होना और शिवजी विष्णु होना चाहते हैं। किसकी आकांक्षा का शेष हुआ है ? मतलब यह, आज तक कोई भी इस तृष्णा-नदी के पार न जा सका। क्या हम इसके पार पहुँच सकेंगे ? हरगिज नहीं। तब हम क्यों इस पिशाचिनी के फेर में पड़कर, अपनी जवानी को बर्बाद करें, क्योंकि जवानी एक बार जाकर फिर नहीं आती ?

महाकवि दाग ने कहा है:—

> रहती है कब बहारे जवानी तमाम उम्र।
> मानिन्द बूये गुल इधर आई उधर गई॥
> जो जाकर न आये वह जवानी देखी।
> जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा॥

जवानी की बहार सारी उम्र कहाँ रहती है ? वह तो फूल की खुशबू की तरह इधर आती और उधर चली जाती है। जवानी तो जाकर फिर नहीं आती और बुढ़ापा आकर फिर नहीं जाता।

और भी किसी हिन्दी-कवि ने कहा है—

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवे कोय॥

अगर तृष्णा के फेर में पड़े रहनेसे, इधर हमारी जवानी चली गई और उधर हमारी प्राणप्यारी की जवानी चली गई, तो हमारे धन जमा करने से क्या लाभ होगा ? हमने अपनी आजादी इसी लिये खोई है कि हम धन कमाकर, घर में जा अपनी नवयुवती का यौवन-सुख भोगें; पर हमारे एक इसी धुन में लगे रहने से सब चौपट हो जायगा। इसलिये हमें शीघ्र ही घर जाना चाहिये और जवानी के, प्रात-कालीन दीपक के समान, निस्तेज होने से पहले अपनी प्राणवल्लभा की जवानी का आनन्द उपभोग करना चाहिये; क्योंकि यदि हम प्रवास में रहें और प्यारी हमारे पास न रहे, हमसे दूर रहे; तो हमारा धन और हमारी जवानी दोनो ही वृथा हैं। ऐसी जवानी और ऐसी दौलत से कोई लाभ नहीं। किसी ने कहा है:—

वित्तेन किं ? वितरणं यदि नास्ति दीने,
किं सेवया ? यदि परोपकृतौ न यत्नः।
किं संगमेन ? तनयो यदि नेक्षणीयः,
किं यौवनेन ? विरहो यदि वल्लभाया॥

अगर गरीब और मुहताजों को धन न दिया जाय, तो धन के होने से क्या लाभ? वह धन निष्फल है। यदि पराया उपकार न किया जाय, तो सेवा निष्फल है। जिस स्त्री-संगम से पुत्र न पैदा हो, वह स्त्री-संगम वृथा है। यदि प्यारी के साथ जुदाई हो, तो जवानी वृथा है। ऐसी जवानी से क्या फ़ायदा? सारांश यह है कि जब स्त्री पुरुष दोनों ही जवान हों, तभी काम-क्रीड़ा का आनन्द है। बुढ़ापे में क्या रक्खा है? स्त्री-भोग का आनन्द जवानी में ही है, क्योंकि जवानी में ही बदन में ताक़त रहती है और जवानी में ही कामदेव का जोश रहता है। अगर स्त्री का यौवन उतार पर आ जाय, उसके स्तन सिकुड़ जायँ या थैले से लटकने लगें तब क्या आनन्द है? उस समय स्त्री उलटी बुरी लगती है। जो मज़ा है, नवीना नारी में ही है। कहा है:—

> नवंवस्त्रं नवच्छत्रं नव्या स्त्री नूतनं गृहम्।
> सर्वत्र नूतनं शस्तं सेवकान्ने पुरातने॥

सब देशों में नया कपड़ा, नया छाता, नयी स्त्री और नया घर, ये अच्छे समझे जाते हैं। केवल नौकर और अन्न ये पुराने अच्छे समझे जाते हैं। कहा है:—

> शशी दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी,
> सरो विगतवारिजं मुखमनक्षरं स्वाकृतेः।
> प्रभुर्धनपरायणः सततदुर्गतः सज्जनो।
> नृपाङ्गणगतःखलो मनसि सप्तशल्यानिमे॥

दिन का मलीन चन्द्रमा, क्षीण यौवन कामिनी, बिना कमलों

का तालाब, सुन्दर सूरतवाला निरक्षर— मूर्ख, धन का लोभी स्वामी, दरिद्री सज्जन और राजसभा में दुष्ट, ये सात मेरे हृदय में काँटे की तरह खटकते हैं।

सारांश यह है कि सब काम अपने-अपने समय पर अच्छे लगते और अपना फल देते हैं। खेतो सूख जाने पर बरसने से क्या लाभ ? समय पर चूक कर, पीछे पछताने से क्या फायदा ? पानी आ जाने पर मेड़ बाँधने और-बुढ़ापा आ जाने पर शादी करने से क्या लाभ ? नीति में लिखा है:—

(१)

निर्वाण दीपे किमु तैलदानं
चौरे गते वा किमु सावधानम्
वयोगते किं वनिता-विलास.
पयोगते किं खलु सेतुबन्ध ॥

(२

शीतेऽतीते वसनमशन वासरान्ते निशान्ते
क्रीडारम्भ. कुवलयदृशां यौवनान्ते विवाहः ॥
सेतोर्बन्धः पयसि गलिते प्रस्थिते लग्नचिन्ता
सर्वञ्चैतद्भवति विफलं स्वस्वकाले व्यतीते ॥

दीपक बुझ जाने पर तेल डालने से क्या ? चोर के माल ले जाने पर सावधानी से क्या ? जवानी चली जाने पर वनिता-विहार से क्या ? जल के चले जाने पर पुल बाँधने से क्या ? ॥१॥

जाड़ा चला जाने पर कपड़े पहनने से क्या ? साँझ हो जाने

पर भोजन करने से क्या ? रात बीत जाने पर नीलकमलों के समान नेत्रो वाली स्त्रियों के साथ प्रसङ्ग करने से क्या ? जवानी चली जाने पर विवाह करने से क्या ? जल के चले जाने पर पुल बॉधने से क्या । प्रस्थान कर देने पर, लग्न-चिन्ता से क्या । अर्थात ये सब अपना-अपना समय बीतने पर निष्फल हैं ॥२॥

बुढ़ापे मे चौदह-चौदह और सोलह-सोलह बरस की उठती जवानी की कामनियो के साथ जो नासमझ बूढ़े खुर्राट विवाह करते है, वे इस श्लोक से शिक्षा ग्रहण करे । क्या सिरस का फूल हीरे मे छेद कर सकता है ? ऐसे अधर्म्मियो की इस लोक मे बदनामी होती और परलोक मे उन्हे भयंकर दण्ड मिलता है। इनकी स्त्रियॉ इनके लात मार कर, या तो कहार और रसोइयों से आशनाई करतीं अथवा साईस और कोचवानो के साथ भाग जाती है। हॉ, कोई-कोई कलियुगी पतिव्रता, अपने बूढ़े बालम को बिना जरा-सा भी कष्ट दिये, सेंत-मेंत मे पुत्र-रत्न देकर, उसके कुल का नाम चला देती अथवा वंश को डुबोने से बचा लेती है। धिक्कार है ऐसे विवाह और ऐसी औलाद को ! ऐसी वर्ण-सङ्कर सन्तान से वंश का नाम लोप हो जाना कहीं भला ।

कुण्डलिया

नरवर ! तृष्णासिन्धु के, पार न कोई जाय ।
कहा अर्थ सचय किये, कालसर्प वय खाय ॥
काल सर्प वय खाय, नेह अरु प्रेम नसावै ।
कहा होय घर गये, तबै कछु हाथ न आवै ॥

तामें तबलों वेग, भाग चलिये हारे घर ।
कमल नयन तिय रूप, जरा जबलों नहिं नरवर ॥६९॥

सार—कमल नयनी कामिनियों के भोगने का समय युवावस्था ही है। जो पुरुष धन-तृष्णा में फंस, अपनी और अपनी पत्नी की जवानी का सुख नहीं भोगते, वे बड़े ही मूर्ख है। धन भी तो सुख-भोगों के लिए ही कमाया जाता है, जब सुख-भोग न भोगे, तब धन कमाना वृथा ही हुआ।

69. O sovereign, no one has been able to cross this ocean of desires, and when this my young age full of affection is lost in itself, then what is the use of earning much wealth. I should, therefore, go home before old age takes away the beauty of my beloved lady whose eyes are like blossomed lotuses

— —

रागस्यागारमेकं नरकशतमहादुःखसंप्राप्तिहेतु-
र्मोहस्योत्पत्तिबीजं जलधरपटलं ज्ञानताराधिपस्य ॥
कन्दर्पस्यैकमित्रं प्रकटितविविधस्पष्टदोषप्रबन्धं
लोकेऽस्मिन्नह्यनर्थंमूनिजकुलदहनं यौवनादन्यदस्ति ॥७०॥

अनुराग के घर, नरक के नाना प्रकार के दुःखो के हेतु, मोह की उत्पत्ति के बीज, ज्ञानरूपी चन्द्रमा के ढकने को मेघ-समूह, कामदेव के मुख्य मित्र, नाना दोषो को स्पष्ट प्रकटाने वाले और अपने कुल को दहन करने वाले यौवन के सिवा, इस लोक मे दूसरा कोई अनर्थ नहीं है ॥७०॥

खुलासा—सारी आफतो का मूल अनुराग, यौवनावस्था में ही होता है। इस अवस्थामे ही मनुष्य को प्रेम या इश्क की बीमारी लगती है। उस्ताद जौक कहते हैं:—

इश्क का जोश है जब तक कि जवानी के है दिन।
यह मर्ज करता हे शिद्दत इन्हीं अय्याम मे ग्वास ॥

प्रेम रूप व्याधि के उभरने का खटका जवानी मे ही रहता है। ये दिन ही इस बीमारी के लिये खास हैं।

जब मनुष्य पर इश्क का भूत सवार हो जाता है, तब वह ज्ञानी और पण्डित होने पर भी अज्ञानी और मूर्ख होजाता है, उसे बुरे-भले का विचार नहीं रहता। उसको आँखों के सामने उसका माशूक ही हरदम फिरता रहता है। वह अपने माशूक को प्राप्त करने के लिये नाना प्रकार के उपाय करता है। यदि मनोकामना पूरी नहीं होतीं, तो वह कुपित होती है। क्रोध से उसकी रही-सही बुद्धि भी मारी जाती है। बुद्धि के नष्ट होने से मनुष्य बिना पतवार की नाव की तरह शीघ्र ही नष्ट हो जाताहै। अनेको नौजवान इस प्रेम या इश्क़ की बीमारी मे गिरफ्तार होकर जान से मारे गये। अनेको के घर तबाह होगये और

अनेकों करोड़पति खाकपति हो गये। स्पष्ट है कि अनुराग या मुहब्बत हजारों आफतों की जड़ है। अनुरागी इस जन्म में स्त्री का गुलाम हो कर रहता है। वह कठपुतली की तरह उसे जो नाच नचाती है, वह वही नाच नाचता है। परमात्मा को कभी भूल कर भी याद नहीं करता। मौत का ख्याल न रहने से नाना प्रकार के अत्याचार और जुल्म करता है। लेकिन यह अनुराग जवानी में ही होता है इसलिये कवि ने जवानी की निन्दा की है। इसमें शक नहीं कि जवानी अनेक प्रकार के अनर्थों की जड़ है। कहा है'—

यौवनं धनसम्पत्ति प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ?॥

जवानी, धन सम्पत्ति, प्रभुता और अज्ञानता इनमें से प्रत्येक अनर्थकारी है। जहाँ ये चारों एकत्र हों, वहाँ की तो बात ही न पूछिये।

छप्पय

इन्द्रिन को हित-धाम, काम मित्र महावर।
नरक-दुख को हेतु, मोह को बीज मनोहर॥
ज्ञान-सुधाकर-राम, सजल सावन को बादर।
नाना विधि बकवाद करन को बड़ो बहादुर॥
सब ही अघकों है मूल यह, यौवन अकृतहि को कवच।
या बिन और को कर सकै, सुन्दर सुख पर ग्यारा कच ?॥५०॥

सार—जवानी अनर्थों की जड़ है। अतः जवानी में मनुष्य को खूब सावधानी से चलना चाहिये।

70 In this world there is nothing more harmful than young age, which is the seat of affection, the root cause of the miseries of a hundred hells, the very seed for the growth of delusion, the clouds as it were for covering the moon of reasoning, the only friend of Kamdeva, the doer of many kinds of vices and the destroyer of its own self

---

शृङ्गारद्रुमनीरदे प्रसृमरः क्रीड़ारसस्रोतसि
प्रद्युम्नप्रियबान्धवे चतुरतामुक्ताफलोदन्वति ॥
तन्वीनेत्रचकोरपार्वणविधौ सौभाग्यलक्ष्मीनिधौ
धन्यःकोऽपि न विक्रियां कलयति प्राप्ते नवे यौवने॥७१॥

शृङ्गार रूपी वृक्षों के सींचने वाले, क्रीड़ा रस को विस्तार से प्रवाहित करने वाले; कामदेव के प्यारे मित्र, चातुर्यरूपी मोतियों के समुद्र, कामिनियों के नेत्र रूपी चकोरों को पूर्णचन्द्र, सौभाग्य-लक्ष्मी के खजाने यौवन को पाकर, जो विकारों के वशीभूत नहीं होते, वे निश्चय ही भाग्यवान हैं ॥७१॥

खुलासा- यौवन विषय वासनाओं को बढ़ाने वाला और भोग-

विलास का जबर्दस्त सोता है। यह स्त्रियों को प्यारा लगने वाला तथा चतुराई और सुख-सम्पत्तियों की खान है। जवानी मे मनुष्य की भोगविलास की इच्छाएँ बहुत ही तेज हो जाती हैं, इस-लिये यह बड़ा ही नाजुक समय है। इस अवस्था में जो पुरुष अपनी इन्द्रियों को वश में रख सकता है, इन्हें कुमार्ग में जाने से रोक सकता है, वह सचमुच ही भाग्यवान है। धातुओं के क्षीण होने पर, बुढ़ापा आने पर, तो सभी शान्त हो जाते हैं, पर इस दीवानी जवानी में ही जो शान्त रहे, स्त्रियों के जाल मे न फँसे, वही प्रशंसा-योग्य है। भीष्म पितामह ने अपनी सारी उम्र बिना स्त्री के ही बितादी, जीवन-भर ब्रह्मचर्य पालन किया। यदि वे चाहते तो स्वर्ग की अनेक अप्सरायें उनके चरणों को धो-धोकर पीतीं। पर यदि वे ऐसा करते, तो महाशक्तिशालियों मे उनकी गणना न होती और संसार उन्हें धर्मधुरीण शूरशिरोमणि न कहता।

छप्पय

यह यौवन घनरूप, सदा सींचत शृङ्गार तर।
क्रीड़ा-रस को गेह, चतुरता-रत्न देत कर॥
नारी-नयन चकोर, चोप को चन्द विराजत।
कुसुमायुध को बन्धु, सिन्धु शोभा को भ्राजत॥
ऐसो यह यौवन पायकें, जे नहिं धरत विकार मन।
ते धरम-धुरन्धर धीर-मणि, शूरशिरोमणि सन्तजन॥७१॥

तेरे सफेद वस्त्र चाँदनी का चमत्कार दिखा रहे है और तेरा मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा की तरह शोभायमान है; अत. तू निश्चय ही पौर्णिमा है ।

श्यामलेनांकितं बाले भाले केनापि लक्ष्मणा ।
मुखं तवांतरासुप्तभृङ्गफुल्लांबुजायते ॥ १ ॥

हे बाले! तेरी पेशानी या मस्तक मे जो एक काला-काला चिह्न-सा है, उससे तेरा चेहरा ऐसा मालूम होता है, गोया खिले हुए कमल के बीच भौंरा सो रहा हो ।

स्मयमानननां तत्र तां विलोक्य विलासिनीम् ।
चकोराश्चंचरीकाश्च मुदं परतरां ययुः ॥ २ ॥

उस मन्द-मन्द मुस्कराने वाली नायिका को देखकर चकोरों और भौंरों को खूब आनन्द आया; यानी चकोर उसे चन्द्रमा समझ कर खुश हुए और भौंरे कमल समझ कर ।

दिवानिशं,वारिणि कण्ठदघ्ने दिवाकराराधनमाचरन्ती ।
वक्षोजताये किमु पक्ष्मलाक्ष्यास्तपश्चरत्यंबुजपंक्तिरषा ॥ ३ ॥

जल मे कण्ठ तक रहकर, दिन-रात सूर्य की आराधना करने वाली, यह कमलों की कतार क्या सुनयनी नायिका के कुच बनने के लिये तप कर रही है ?

आननं मृगशावाक्ष्या वीक्ष्य लोलालकावृतम् ।
भ्रमद्भ्रमरसम्भारं स्मरामि सरोरूहम् ॥ ४ ॥

हिरन के बच्चे की-सी आँखों वाली सुन्दरी के मुँह को चञ्चल

अलकों से ढका हुआ देखने से मुझे ऐसा मालूम होता है, गोया कमल के ऊपर भौंरो का झुण्ड घूम रहा है।

जगदन्तरममृतमयैरंशुभिराप्लावयन्नभिराम्।

उदयति वदनव्याजात् किमु राजा हरिणशावकनयनायाः ॥५॥

मृगशावकनयनी के चेहरे के बहाने से ससार को अपनी अमृत-मय किरणा से भर देने के लिये, क्या चन्द्रमा उदित हुआ है ?

तिमिर शारद-चन्द्रिरचन्द्रिकाः कमलविद्रुम चम्पककोरकाः।

यदि मिलकति तदापि तदाननं खलु तदा कलया तुलयामहे ॥६॥

घोर अन्धकार, शरद् का चन्द्रमा, चाँदनी, कमल, मूँगा और चम्पा कली- ये सब अगर किसी समय एक ही पदार्थ मे इकट्ठे पाये जायें, तो मैं उस नायिका के चेहरे के एक अश की तुलना कर सकूँ, यानी घोर अन्धकार से उसके काले-स्याह बालों की, शरद् के चाँद से उसके मुख की, चाँदनी से लावण्य की, कमल से नेत्रों की, प्रवाल से होठों की और चम्पा की कलियों से दाँतों की तुलना करूँ।

उर्दू कवियों की मनोहर उक्तियाँ

कोई स्त्रियों के दाँतों की तारीफ़ करता है, तो कोई उसके होठों की प्रशंसा में कविता रचना है, और कोई उसके गाल के तिल पर ही अपनी शायरी का खातमा करता है। उर्दू-कवियो की तारीफ़ोंके

नमूने भी देखिये:—

> दाँत यूँ चमके हँसी में रात उस माहपारा के।
> मैंने जाना, माहतावाँ पारा-पारा हो गया ॥१॥
>
> अश्क़के क़तरे, नहीं देखते हैं उस रुख़ पर।
> सितारे धूप में हम दोपहर को देखते हैं ॥२॥
>
> बहर में मोती पानी पानी, लालका ख़ूँ पत्थर-में।
> देखो, लबो दन्दाँ से तुम्हारे लालो गुहर के झगड़े हैं ॥३॥
>
> न क्यों तेरे दाँतो से झूठा हो मोती।
> कि दावा किया था सफाई का झूठा ॥४॥

वह चन्द्रमुखी रात को जो हँसी, तो इसके दाँतों की कतार की चमक से मुझे ऐसा मालूम हुआ गोया चन्द्रमा के टुकड़े-टुकड़े हो गये ॥१॥

उसके गाल पर पसीने की बूँदें नहीं हैं, वे तो दोपहर के समय धूप तारे दिखाई दे रहे हैं ॥२॥

तेरे दाँतो की आभा को देखकर, समन्दर मे मोती शर्म के मारे पानी-पानी हो रहा है और तेरे ओठों की सुर्खी को देखकर लाल-का दिल पहाड़ की गुफा मे स्पर्द्धा के मारे खून-हो गया है। देख तो सही, तेरे दाँत और ओठो के कारण, मोती और लालों की

माहताबाँ—चाँद। माहपारा—चन्द्रवदनी। पारा पारा हो गया—टुकड़े-टुकड़े हो गया। अश्क—आँसू। रुख़—गाल। कतरा-बूँद। बहर—समुद्र। लब—होठ।

कैसी बुरी दशा हो रही है ॥३॥

मोती ने तेरे दाँतों से सफ़ाई में बढ़ जाने का दावा किया था; मगर वह तेरे दाँतों के मुकाबले झूठा निकला ॥४॥

एक हिन्दी कवि कीभी काव्यकला-कुशलता का नमूना देखिए:—

गोरे मुख पर तिल लखत, ताहि करूँ प्रणाम।
मानो चन्द्र बिछाय कर, पौढ़े शालिग्राम ॥

गोरे मुँह पर जो तिल शोभायमान है, उसे मैं प्रणाम करता हूँ; क्यों कि मुझे ऐसा जान पड़ता है, मानो चन्द्रमा को बिछाकर शालिग्राम सो रहे हों।

मियाँ नज़ीर अकबराबादी की तारीफ़ों के चन्द नमूने देखिये:—

छोटा-सा ख़ाल उस रुख़ ख़ुरशीद ताब ।
ज़र्रा समा गया है दिले आफ़ताब में ॥

उस सूर्य की भाँति चमकने वाले मुख पर छोटा-सा तिल देखने मे ऐसा मालूम होता है, जैसे सूर्य में एक छोटा सा कण।

सहर इस झमक से आया नज़र एक निगार राना।
कि खुद उसके हुस्ने रुख़ को लगा तकने ज़र्रा आसा ॥

सवेरे ही मुझे एक सुन्दर प्रतिमा दिखाई दी कि मैं सूर्य-कण की भाँति उसके मुखारविन्द की शोभा को देखने लगा; यानी सूर्य उसके सामने कण की तरह था।

बुतों की मजलिस में शब को माहरू,
जो और टुक भी क़याम करता ।
कनिश्त वीराँ, सनम को बन्दा,
बरहमनों को गुलाम करता ॥

अगर वह चन्द्रमुखी मूर्त्तियों की सभा में रात को जरा देर और ठहर जाती, तो मन्दिर उजड़ जाते, मूर्तियाँ उसकी गुलाम हो जातीं और ब्राह्मण, पुजारी उसके सेवक हो जाते । उसके सौन्दर्य पर देवता और मनुष्य दोनों मोहित हो जाते हैं ।

सफाई उसकी झलकती है, गोरे सीने में ।
चमक कहाँ य अलमास के नगीने में ॥

उसके गोरे-सीने में जो सफाई और चमक-दमक झलक रही है, अलमास के नगीने में वह चमक कहाँ है ?

नहीं हवा में य बू नाफए खुतन की-सी ।
लटक है य तो, किसी जुल्फे पुरशिकन की-सी ॥

हवा में जो महक आ रही है, यह खुतन देश की कस्तूरी की नहीं । मुझे तो यह उसकी घूँघर वाली लटों की महक-सी मालूम होती है ।

महाकवि गालिब के भी चन्द नमूने देखिए:—

जहाँ तेरा नक्शे कदम देखते हैं ।
ख़याबाँ ख़याबाँ इरम देखते हैं ॥

जहाँ हमें तेरा चरण-चिह्न दिखाई देता है, उसी स्थान को हम स्वर्ग से बढ़ कर समझते हैं।

महाकवि दाग़ का भी एक नमूना लीजिये:—

बुझ गया गुलरू के आगे शमा और गुल का चिराग़।
बुलबुलों में शोर, परवानों मे मातम हो गया॥

उसके सुन्दर मुख के आगे दीपक और फूल दोनों की प्रभा फीकी पड़ गई। तभी तो बुलबुलें शोर कर रही हैं और परवाने (पतङ्ग) शोक मना रहे हैं।

कहाँ तक लिखें, विद्वानों ने स्त्रियों की तारीफ़ में पोथे-के-पोथे लिख डाले हैं।

उपदेशक की सलाह

अगर कोई ज्ञानी पुरुष इन स्त्री-दासों को नसीहत देता है, उनको स्त्रियों की प्रीति का नफ़ा-नुक़सान समझाता है, तो ये चिढ़ते और उसे खोटी-खरी सुनाते है। अगर कोई कहता है— भैया! प्रेम की यह राह बहुत ही ख़राब है, इसमें बड़ी तकलीफ़ें हैं, तो बुरा मानते है। महाकवि दाग़ ने कहा है—

बुरी है ऐ दाग़ राहे उल्फ़त।
ख़ुदा न ले जाय ऐसे रस्ते।
जो अपनी तुम ख़ैर चाहते हो।
तो भूल कर दिल्लगी न करना॥

ऐ दाग़ ! प्रेम की राह बुरी है । भगवान इस राह मे किसी को न ले जाय । जो तुम अपना भला चाहते हो, तो भूलकर भी इस राह पर कदम न रखना ।

उस्ताद ज़ौक ने भी कहा है:—

> मालूम जो होता अंजामे मुहब्बत ।
> मैने न कभी भूल के इस नामे मुहब्बत ॥

अगर मुझे प्रेम का नतीजा मालूम होता तो मैं कभी भूल के भी प्रेम का नाम न लेता ।

भाई ! प्रेम का नाम लेना सहज है, पर प्रेम करना कठिन है । भाँग खाना सहज है, पर उसकी लहरें सहना मुश्किल है । इस राह मे मजनूँ और फरहाद की जो दुर्दशा हुई, वह क्या तुम्हें नहीं मालूम ! इसमें जान तक के लाले पड़ जाते हैं । इन बातों को सुन कर स्त्री-दास फरमाते हैं—

स्त्री-दास का जवाब

> मर गये तो मर गये, हम इश्क़ मे नासेह को क्या ।
> मौत आने के लिये है, जान जाने के लिये ॥
> जिसने दिल खोया, उसी को कुछ मिला ।
> फ़ायदा देखा, इसी नुक़सान मे ॥

हम इश्क मे मर गये तो मर गये, उपदेशक महाशय की क्या हानि ? मौत आने को है और जान जाने को है । जिसने किसी

को दिल दिया, उसे ही कुछ मिला। हमने तो इसी हानि में लाभ देखा।

उपदेशकजी! प्रेममय जीवन ही जीवन है। जिसमें प्रेम नहीं उसका जीवन सारशून्य—थोथा है। गुलाब में कांटे हैं, पर क्या कॉंटो के भय से लोग गुलाब छोड़ सकते है? चन्दन के वृक्षों पर सर्प लिपटे रहते हैं, तो क्या सर्पों के भय से कोई चन्दन को ग्रहण नहीं करता? मधु के छत्ते पर विषैली मधु-मक्खियॉं छाई रहती हैं, तो क्या कोई मधु का छत्ता तोड़ कर मधु नहीं लेता? हजार दुःख-कष्ट झेलने पड़ें मैं झेलूंगा, क्योंकि मुझे अपनी माशूक बिना नहीं सर सकता। किसी ने कहा है—

हैं तेरी राहे मुहब्बत में हज़ारों फितने।
देख मुझको, बजुज इस राह के चलता ही नहीं॥

देखिये, मिष्टर शिलर महोदय कहते हैं--"I have experienced earthly happiness, I have lived and I have loved." मैंने पार्थिव जीवन का अनुभव किया है। मैंने जीवनोपयोग किया है और प्रेम भी किया है।

होल्टी महोदय कहते है—"Love converts the cottage into a palace of gold" प्रेम झोंपड़े को सुवर्णमय महल में परिणत कर देता है।

कोरनर महोदय कहते हैं—"Only since I loved is life lovely, only since I loved I knew I that lived,"

जब से मैंने प्रेम किया, तभी से मैंने अनुभव किया कि मै जीवित हूँ।

कहिये पाठक ! विद्वानो के ये जवाब सुनकर आपका दिल भरा या नहीं ? जव विद्वानो का यह हाल है, तब मूर्खों का क्या कहना ? उनको दोषी ठहराना अन्याय है। जब शास्त्र-ज्ञाता पण्डित ही इन मोहनियों के जालों मे फँस जाते हैं, तब और इनसे कौन बच सकता है ? कहा है—

> मनुष्यं दुर्लभं प्राप्य वेदशास्त्राण्यधीत्य च।
> बध्यते यदि संसारे को विमुच्यते मानवः ?

दुर्लभ मनुष्य-शरीर को पाकर और वेदशास्त्र पढ़कर भी यदि मनुष्य संसार-बन्धन मे बँध जावे, तो संसार बन्धन से कौन छूटेगा ?

और भी—

> पाठकाः पाठनारश्च ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः।
> सर्वेव्यसनिनो मूर्खा यः क्रियावान् स पण्डितः ॥

जा शास्त्र पढ़ने और पढ़ाने वाले केवल शास्त्रों को विचारते हैं, पर उन पर अमल नहीं करते, वे मूर्ख और व्यसनी हैं। जो उनको पढ़कर स्त्री-पुत्र और धन-दौलत प्रभृति से विरक्त होते हैं, वही पण्डित हैं ।

स्त्रियाँ जगत की जूठन, नरक-कूप, महागन्दी और अपवित्र हैं। इनके भीतर राध, लोहू, पीप, खखार प्रभृति के पनारे बह रहे

वाली स्त्री को लोग प्यारी, प्राणप्यारी, प्रिया, कल्याणी, प्राणाधिका प्रभृति क्यों कहते हैं, यह बात समझ में नहीं आती ?

वास्तव में स्त्री दुःख और आपदाओं की खान है, पर लोगों को यह बात मालूम नहीं होती। वजह यह है कि हिप्नोटाइज़ करने वालों की तरह, स्त्री नज़र-से-नज़र मिलते ही, अपनी जादू भरी आँखों से, मदिरा की तरह, मोह पैदा कर देती है। उस मोह से मनुष्य का ज्ञान नष्ट हो जाता है। ज्ञान नष्ट हो जाने से उसे कुछ-का-कुछ दीखने लगता है। जिस तरह मोहान्ध पुरुष अभक्ष्य को भक्ष्य, अकार्य को कार्य और दुर्गम को सुगम समझने लगता है, उसी तरह साक्षात् विष होने पर भी मोहान्ध को स्त्री विष-सी न दीख कर अमृत-सी दीखती है। अमृत-सी दीखने की वजह से ही कामान्ध पुरुष उसे "प्राणप्यारी" कहते हैं।

दोहा

सुधि आये सुधि-बुधि हरत, दरसन करत अचेत।
परसत मन मोहित करत, यह प्यारी किहि हेत ? ॥ ७२ ॥

73. How can we call a woman "beloved" whose recollection even gives pain, whose very sight increases intoxication of mind and whose touch creates a great sensation in us

तावदेवामृतमयी यावल्लोचनगोचरा ।
चक्षुः पथादपगता विषादप्यतिरिच्यते ॥७४॥

स्त्री जब तक आँखों के सामने रहती है, तब तक अमृत सी मालूम होती है किन्तु आँखों की ओट होते ही, विष से भी अधिक दुःखदायिनी हो जाती है ॥७४॥

खुलासा—स्त्री पुरुष के पास होने से निश्चय ही अमृत-सी मालूम होती है, क्योंकि वह अपने हाव भाव, कटाक्ष और मधुर वचन तथा सेवा प्रभृति से पति के चित्त को हाथ मे लिए रहती है; पर अलग होते ही मन मे भारी विरह-वेदना करती है। वियोग-विकल पुरुष का खाना-पीना और नियमित समय पर सोना प्रभृति छूट जाना और साथ ही स्वास्थ्य तक नष्ट हो जाता है। स्त्री का विरह पुरुष के शरीर पर जहर का काम करता है उसके मन मे घोर सन्ताप होता है इसी से कहा है कि स्त्री आँखो के सामने से हटते ही विषवत् हो जाती है।

ऐसी ही बात महाकवि कालिदास ने "शृङ्गार-तिलक" मे कही है—

अपूर्वो दृश्यते वह्निः कामिन्याः स्तनमण्डले ।
दूरतो दहते गात्रं हृदि लग्नस्तु शीतलः ॥

कामिनी के स्तन-मण्डलों में अपूर्व अग्नि है, जो दूर से तो शरीर को जलाती है और हृदय से लगाने पर शीतल हो जाती है।

मतलब यह है कि स्त्री स्मरण करने से सन्ताप करती, देखने

से चित्तको हर लेती और मनुष्य को अन्धा बना देती, छूने से बल नाश करती और नेत्रों के सामने से हटने पर विरहाग्नि में जलाती है। स्त्री से किसी तरह भी पुरुष को सुख नहीं। स्मरण करने में सुख, न देखने में सुख, छूने में सुख, न भोगने में सुख, पास रहने में सुख, न अलग होने में सुख। फिर भी लोग स्त्री पर जान देते हैं, यह क्या कम आश्चर्य की बात है ?

वियोगियों के सम्बन्ध में उर्दू कवियों की उक्तियाँ

प्राणप्यारी स्त्री अथवा आशाना की जुदाईमें पुरुष पागल-सा हो जाता है। उसके शरीर में खून और मांस का नाम नहीं रहता, हाड़ों का कङ्काल रह जाता है। जिन्दगी भार मालूम होती है। विरही पुरुष हर क्षण मौत को याद करता है; पर मौत भी उस विपत्ति के समय में उससे बैर-सा कर लेती है। यहाँ हम अपने मनचले पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उर्दू-कवियों की चन्द कवितायें देते हैं। पाठक देखें कि विरही पुरुषों की क्या हालत होती है:—

> वह मैं कि मुझे आलमे बाला की ख़बर थी।
> ऐ बेख़बरी! ख़ाक नहीं अपनी ख़बर आज॥

एक दिन था कि मुझे पृथ्वी ही नहीं स्वर्ग तक की बात मालूम थी; पर आज मुझे अपनी भी खबर नहीं कि हूँ या नहीं हूँ। बेख़बरी! तेरा भला हो। प्यारी की जुदाई की वजह से अजब बेखबरी, बेहोशी छाई हुई है।

बेकसी सदमये हिजरों की मुझे ताब नहीं।
काश दुश्मन ही आवे जो अहबाब नहीं॥

एक तो विरह का दुःख और उस पर विजनता; बताइये, किस तरह कोई दुःख उठाये। मैंने माना कि मेरे मित्र नहीं है, जो आकर मुझे धीरज दे; पर दुश्मन तो हैं, वही चले आवें; जिससे विजनता तो किसी तरह कम हो।

सब्र आना तो मुहब्बत में बहुत मुश्किल है।
मौत भी तो नहीं इसको वह काफ़िर दिल है॥

प्रेम में धीरज आना तो बहुत कठिन है। इस काफिर दिल को मौत भी नहीं आती। यह प्रेमकी आग मे तप कर ऐसा कठोर हो जाता है कि मौत भी इसे शान्ति नहीं दे सकती। बेचारे धैर्य की तो बात ही क्या?

कौन ग़मख़्वार इलाही शबेग़म होता है।
अब तो पहलू में मेरे दर्द भी कम होता है॥

दुःख की रात मे कोई किसी का साथी नहीं होता। मुझे आज अत्यन्त दुःख है। शायद इसलिए हज़रते दर्द भी मेरे दिल से आज खिसक गये हैं। उनके होने से तबियत बहलती रहती थी। (शायराना नाज़ुक ख़यालों का अन्त हो गया)।

बेकसी–मजबूरी। सदमा–तकलीफ़। हिजरों–वियोग। काश–खुदा करे। अहबाब–मित्र। गमख़्वार–ग़मखानेवाला दोस्त। शब–रात। शबेगम–रंज की रात।

अमीर महोदय कहते हैं—

पुतलियाँ तक भी फिर जाती हैं, देखो दम निज़ा।
वक़्त पड़ता है, तो सब आँख चुरा जाते हैं॥

जब बुरा समय आता है तब पुतलियाँ तक फिर जाती हैं। अपने- बेगाने सब आँख चुरा जाते हैं; कोई काम नहीं आता।

कोई और कवि कहता है:—

होता नहीं है कोई बुरे वक़्त में शरीक।
पत्ते भी भागते हैं, खिज़ाँ में शजर से दूर॥

बुरे समय में कोई साथी नहीं होता, पतझड़ में पत्ते भी वृक्ष को छोड़ भागते हैं।

वियोगी कहता है कि मेरा यार मेरे पास नहीं। उसकी जुदाई की मुसीबत का पहाड़ मुझ पर फट पड़ा है। ऐसे वक़्त में आकर मेरे दुःखों का अन्त कर दे तो भला हो, पर हाय! वह भी ऐसे कठिन समय में बुलाने से भी नहीं आती!

एक विरही कहता है:—

मैं जाग रहा हूँ हिज्र की शब।
पर मेरे नसीब सो रहे हैं॥

इस वियोग की रात में मैं जाग रहा हूँ, पर मेरे नसीब सो रहे हैं, यानी मेरा यार मेरे पास नहीं आता।

खिज़ाँ—पतझड़। शजर-वृक्ष।

हिज्र को यह रात कैसी रात है।
एक मैं हूँ या खुदा की ज़ात है॥

वियोग—जुदाई की यह रात कैसी रात है कि एक मैं हूँ या मेरा खुदा है; दूसरा कोई नहीं।

तारे ही गिनके काटते रात फ़िराक की मगर।
निकला सितारह भी कहीं को तो ख़ाल-ख़ालसा॥

वियोग की रात को हम तारे गिन-गिन कर ही काट देते, पर हमारा दुर्भाग्य तो देखिये कि उस रात को तारे भी निकले तो बहुत ही कम निकले।

आशिक को ज़रा भी जुदाई भी कैसी अखरती है, उसका नमूना देखिये —

शबे वस्ल खिली चाँदनी।
वह घबराके बोले सहर हो गई॥

मिलन की रात को चाँदनी ऐसी खिली कि दिन-सा मालूम होने लगा। वह घबराकर बोले—"हाय! सवेरा हो गया, अब जुदाई के सदमे उठाने होंगे।"

दी मुअज़्ज़िनने शबे-वस्ल अज़ाँ पिछली रात।
हाय कमबख़्त को किस वक़्त खुदा याद आया॥

हिज्र—वियोग। ख़ाल-ख़ालसा—दूरी पर, बहुत कम। शबेवस्ल—मुलाकात की रात। सहर—सवेरा। मुअज़्ज़िन—मुल्ला, जो मसजिद में चार घड़ी रात रहे अज़ाँ देता है। उस समय दीनदार मुसल्मान हाथ मुँह धोकर मसजिद में नमाज़ पढ़ते हैं। अज़ाँ—बाँग।

मिलने की रात को तड़का होने से कुछ पहले मुल्ला ने अज़ाँ दी, तो वह घबरा के बोले—"हाय! कम्बख्त को किस वक्त खुदा याद आया। अब हम अलग-अलग हो जायँगे!"

किसी विरही से किसी ने उसकी मिज़ाज-पुर्सी की—कुशल-प्रश्न किया; तो आप कहने लगे:—

न पूछो कि दिल शाद है या हज़ीं है।
खबर भी नहीं य कि है या नहीं है॥

क्या पूछते हो, हमारा दिल खुश है या नाखुश? हमें तो यह भी खबर नहीं कि वह है भी या नहीं।

विरह की रात का वर्णन उस्ताद ज़ौक़ ने खूब किया है। उसका ज़रा-सा नमूना हम देते हैं। जिन्हें सब का आनन्द लेना हो, वे हरिदास एण्ड कम्पनी लिमि०, मथुरा, से "उस्ताद ज़ौक़" मँगा देखें।

कहूँ क्या ज़ौक़ अहवाले शबे हिज्र।
कि थी एक-एक घड़ी सौ-सौ महीने॥१॥
कहा जी ने मुझे यह हिज्र की रात।
यक़ीं है सुबह तक देगी न जीने॥२॥

ऐ ज़ौक़! वियोग - जुदाई की रात का हाल क्या कहूँ? एक-एक घड़ी सौ-सौ महीने-सी मालूम होती थी।

दिल ने कहा कि यह वियोग की रात है। निश्चय है कि यह सवेरे तक जिन्दा न रहने देगी।

शाद—खुश। हज़ीं—रंजीदा। शबे हिज्र—वियोग की रात।

महाकवि नज़ीर की शायरी की बानगी भी देख लीजिये—

क्रिया जो यार ने हमसे पयाम रुखसत का।
तो दम निकल गया सुनते ही नाम रुखसत का॥

यार ने जो हमसे विदाई की बात छेड़ी तो विदाई का नाम सुनते ही हमारा दम निकल गया।

अब ज़रा विरही की कमज़ोरी के नमूने भी मुलाहिज़ा फरमाइये—

मुझ ज़ुल्फ़ के मारे को न ज़ञ्जीर पिन्हाओ।
काफ़ी है मेरी क़ैद को एक मकड़ी का जाला॥

मुझ ज़ुल्फ़ के मारे को ज़ञ्जीर मत पहनाओ। मेरे बदन में ज़रा भी दम नहीं। मैं जुदाई के कष्ट उठाते-उठाते एक दम दुर्बल हो गया हूँ। मेरे क़ैद करने के लिये एक मकड़ी का जाला ही काफी है।

पयाम—पैग़ाम। रुखसत—विदाई, छुट्टी। ज़ुल्फ़—लट।

सूचना—यदि ऐसे-ऐसे शेरों और ग़ज़लों का आनन्द लूटना चाहते हैं, तो श्रीमान् पण्डित ज्वालादत्तजी शर्मा कृत "उस्ताद ज़ौक़", 'महाकवि दाग़' और "महाकवि ग़ालिब" हरिदास एण्ड कम्पनी लि०, मथुरा से मँगावें। पण्डितजी उर्दू कवियों पर आलोचनात्मक लेख लिखने में सिद्धहस्त हैं। हमने ये कविताएँ आपही की पुस्तकों से उद्धृत की हैं। बाबू रघुराजसिंह बी० ए० के लिखे महाकवि नज़ीर से भी हमने कुछ शेर लिये हैं। उर्दू कवि-वचनमाला के चारों भाग प्रत्येक हिन्दी

और भी:—

ये नतवा हूँ कि आया जो यार मिलने को।
तो सूरत उसकी उठाकर पलक न देख सका॥

यार की जुदाई मे ऐसा कमजोर हो गया हूँ कि जब यार मुझसे मिलने को आया, तो मैं पलक उठाकर उसकी सूरत तक न देख सका।

कहिये पाठक! अब तो आपने देख लिया कि प्यारी की जुदाई में वियोगी पुरुषों की क्या दुर्दशा होती है। जब तक स्त्रियां सामने रहती हैं, तभी तक सामने स्वर्ग दीखता है, उसके नजरों

जानने वाले के देखने की चीज़ है। इन कवियों की एक-एक कविता लाखों रुपये में भी सस्ती हैं। लेखक महाशयों ने उर्दू न जानने वालो के सुभीते के लिये, प्रत्येक कविता का हिंदी अनुवाद भी साथ-साथ कर दिया है। इन पुस्तकों की पबलिक ने अच्छी कद्र की है। जिन हिन्दी-प्रेमियों ने ये पुस्तकें नहीं देखी हैं, वे इनके लिये ३) मूल्य और ॥।) पोस्टेज—कुल ४) का लोभ न करें। ये सच्चे आबेहयात या सुधारस का आनंद देने वाली पुस्तकें हैं। वहमी सज्जन वहम मे गोते न लगायें, सूचना को झूठी न समझें। इसी से नीति, वैराग्य और शृङ्गार—इन तीनों शतकों में ही हमने मौके-मौके से इनके अधिक नमूने दिये हैं। जिन्होंने किसी मित्र के पास "नीतिशतक" और "वैराग्यशतक" देखे, उन्होंने जी जान से मुग्ध होकर ये दोनों शतक तो मँगाये ही, पर साथ ही "दाग़" "ग़ालिब" "ज़ौक़" और "नज़ीर" भी मँगाये बिना न रहे।

की ओट होते ही प्राण निकलने लगते है—मृत्यु-काल से भी अधिक वेदना होती है।

> जौलो सन्मुख नयन के अवला अमृत-रूप।
> दूर भये ते सहज ही होय यही विष रूप ॥७४॥

सार—स्त्री सामने हो तो अमृत है, पर दूर हो तो विष है।

74. A woman is like nectar so long as she is in front of the eyes. She becomes more painful than poison when removed from before the eyes.

> **नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम्।**
> **सैवामृतलता रक्ता विरक्ता विषवल्लरी ॥७५॥**

सुन्दरी नितम्बिनी को छोड़कर न और अमृत है न विष। स्त्री अगर अपने प्यारे को चाहे तो अमृतलता है और जब वह उसे न चाहे, तो निश्चय ही विष की मंजरी है ॥७५॥

खुलासा—इस जगत में स्त्री ही अमृत है और स्त्री ही विष है। जब वह अपने आशिक को चाहती है, तब तो अमृत-सी दीखती है और वही जब अपने आशिक से नाराज हो उसे नहीं चाहती, तब विष हो जाती है। इस बात को पुरुषमात्र आसानी से समझ सकते हैं। स्त्री जब अपने प्यारे को प्यार करती है, तब उसका प्यारा उस पर जी-जान निछावर करता है: उसके इशारों पर कठपुतली की तरह नाचता है; पर ज्योंही वह अपने चञ्चल स्वभाव-अनुसार उसे छोड़ दूसरे को चाहने लगती है; त्योंही

उसका वही प्यारा, उसे विष-सी समझ कर, उसके प्राणनाश पर भी उतारू हो जाता और अपनी भी जान दे देता है।

'पञ्चतन्त्र' में भी लिखा है :—

नामृतं न विषं किञ्चिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम्।
यस्याः संगेन जीव्येत म्रियेत च वियोगतः॥

स्त्री के सिवा अमृत और विष दूसरी कोई चीज नहीं है; क्योंकि उसके संग से प्राणी जीता और उसके वियोग में मरता है।

"भामिनी-विलास" में भी लिखा है :—

श्यामं सितं च सुदृशो न दृशोः स्वरूपं
किं तु स्फुटं गरलमेतदथामृतं च॥
नो चेत्कथं निपतनादनयोस्तदैव
मोहं मुदं च नितरां दधते युवानाः॥

सुलोचनी स्त्री की आँखों में जो श्यामता और शुभ्रता-कलाई और सफेदी दीखती है वह कलाई और सफेदी नहीं है; किन्तु विष और अमृत है। यदि यह बात न होती तो युवा पुरुष उसकी नजर-से-नजर मिलते ही मोहित और आनन्दित न होते।

स्त्री की आँखों में जो श्यामता या कलाई है, वह विष है और जो शुभ्रता या सफेदी है, वह अमृत है। जिसे वह खुश हो कर अमृत की नजर से देखती है, उसे परम आनन्द होता है और जिसे वह नाराज होकर विष की नजर से देखती है, उसे मोह या दुःख होता है। क्या खूब कहा है! वाह पण्डितराज, वाह!

दोहा

नहिं विष नहिं अमृत कहूँ, एक तिया तू जान ।

मिलवे में अमृत-नदी बिछुरे विष की खान ॥७५ ॥

सार—स्त्री ही अमृत और स्त्री ही विष है। जब वह चाहे तब तो अमृत है और जब न चाहे तब विष है।

75 There is no better nectar than a woman and no worse poison than a woman also If she is loving, she is a creeper of nectar, but if, she forsakes, she is verily a creeper of poison,

— o —

आवर्तः संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानाम् ।
दोषाणां सन्निधानं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम् ।
स्वर्गद्वारस्य विघ्नो नरकपुरमुखं सर्वमायाकरण्डम् ।
स्त्रीयन्त्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणीनां मोहपाशः॥७६॥

सन्देहों का भँवर, अविनय का घर, साहसों का नगर, पाप-दोषों का खजाना, सैकड़ों तरह के कपट और अविश्वास का क्षेत्र, स्वर्ग-द्वार का विघ्न, नरक-नगर का द्वार सारी मायाओं का पिटारा, अमृत के रूप में विष और, पुरुषों को मोह जाल में फँसाने वाला स्त्री यन्त्र न जाने किसने बनाया ?

सुन्दरी स्त्रियाँ ऊपर से गोरी पर भीतर से काली होती हैं। इनका शरीर फूल की तरह कोमल और कमनीय होता है, पर इनका हृदय वज्रवत् कठोर होता है। ये दान, मान, सेवा, अस्त्र और शस्त्र किसीसे भी वश में नहीं होतीं। न कोई इनको प्यारा है और न कोई कुप्यारा। इनका स्वभाव है कि ये नये-नये पुरुषों की अभिलाषा किया करती हैं। लज्जा, नीति, चतुराई और भय के कारण से ये सती नहीं बनी रहतीं, केवल चाहने वाला न मिलने या मौका हाथ न आने से ही ये सती बनी रहती हैं। असत्य, साहस, माया, मत्सरता और लोभ, इनमें स्वभाव से ही होते है। पुरुषों से इनमें दूनी क्षुधा, चौगुनी शर्म, छैगुनी हिम्मत या बुद्धि होती है और कामदेव तो अठगुना होता है। जब ये अपनी बराबरवालियों के साथ एकान्त मे बैठती हैं, तब कहा करती है:—'अहो, वेश्याएँ बड़ा आनन्द करती है, वे स्वतन्त्रता-पूर्वक नये-नये पुरुषों को भोगतीं और इच्छानुसार उनका धन खर्च करती हैं।' अथवा कोई कोई कहती है, "मेरा मर्द तो पशु है। भोग-विलास की बातें तो जानता ही नहीं। संझा होते ही भैंस की तरह पड़ जाता है। मैंने इसका हाथ पकड़ कर कुछ भी सुख न पाया। देख! फलानी का पति कैसा छैल छबीला नट-नागर है इत्यादि।" जो पुरुष इनकी खूब खुशामद करता है, इनकी फरमायशों को जबान से निकलते ही पूरी करता है, साथ ही रूपवान, विद्वान, धनवान और गुणवान होता है, उसे छोड़ कर ये महाधूर्त, नीच और अधम के साथ चली जाती हैं। कोई पाश्चात्य

विद्वान कहते हैं:—"A woman in love is very poor judge of character." स्त्री जिसे चाहती है या जिससे आशनाई करती है, उसके चरित्र की परख नहीं करती। कहा है—

गुणाश्रयं कीर्त्तियुत च कान्त पतिरतिज्ञं सधनं युवानम्।
विहाय शीघ्रं वनिता व्रजन्ति नरान्तरं शीलगुणादिहीनम्॥

गुणाधार, कीर्तिमान, सुन्दर, रतिक्रीड़ा-कुशल, धनवान और जवान पुरुष को भी त्याग कर स्त्रियाँ नीच, निर्गुण और कुरूप के साथ चली जाती हैं।

दुष्टा स्त्रियाँ मिथ्या विलास-चिह्न दिखाकर अपने पति को पागल रखती हैं और उससे पैर तक दबाती हैं। एक को नेत्र-विकारों से रिझाती है, दूसरे के साथ वचन-विलास करती है, तीसरे को चेष्टाओं से प्रसन्न करती है और चौथे को मोह में फँसाती हैं। स्त्रियाँ बहुरूपिणी हैं। जब यह कामवती होती है और पर-पुरुष से मिलती हैं, तब ऐसे-ऐसे छलबल और कौशल करती हैं कि चतुर-से-चतुर की भी अक्ल काम नहीं करती। उस समय, जरूरत होने से, ये अपने पति-पुत्र और पिता-माता तक की हत्या कर सकती हैं[1]। स्त्री के मन में क्या है, वह कब क्या करेगी,

[1] संसार में ऐसा कौन-सा नीचे-से-नीचा काम है, जो इस प्रेम के कारण नहीं करना पड़ता? प्रेम-पन्थके पथिकों को जात-पाँत तो क्या चीज़ है, अपने प्यारे माता-पिता, बहन-भाई और अपनी औलाद तक से मुँह मोड़ना और नाता तोड़ना पड़ता है। अभी हाल ही में सुना है कि,

इन बातों का जानना बड़ा कठिन है। × लोक में कहावत भी मशहूर है, "त्रिया चरित्र जाने न कोई, खसम मार कर सती होई।" शास्त्रों में भी कहा है:—

नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं मनोरथं दुर्जनमानवानाम्।
स्त्रियाश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः॥

राजा के चित्त, सूम के धन, दुर्जन के मनोरथ; स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य की बात देवता भी नहीं जानते, मनुष्य बेचारा कौन चीज़ है?

स्त्रियाँ के संशयों का भँवर, साहसों का नगर और नाना प्रकार

हमारे एक परिचित की बेचा बहन अपने प्यारे, आँखों के तारे, पाले-पनासे पुत्र रत्नों को छोड़, एक यवन के साथ भाग गई। किसीने ठीक ही कहा है:—Cruel love! what is there to which thou dost not drive mortal hearts" ऐ निर्दयी प्रेम! संसार में ऐसा क्या है जिसे करने पर तू मनुष्यों को विवश नहीं करता?

× थैकरेने कहा है:—"I think, women have an instinct of dissimulation, they know by nature how to disguise their emotions far better the most than the most consummate male courtiers can do." मेरे विचार में, स्त्रियों में कपटाचार स्वाभाविक होता है। नितान्त कार्य-कुशल राज सभासदों की अपेक्षा भी वे अपने भावों को अधिक उत्तमता से छिपा सकती हैं। स्त्रियाँ अपनी बात को जितनी अच्छी तरह छिपा सकती हैं, और कोई नहीं छिपा सकता।

की माया और अविश्वास का पिटारा होने में ज़रा भी सन्देह नहीं। जो इनका विश्वास करते हैं, वे बुरी तरह मारे जाते है। इसलिये, चतुर पुरुषो को स्त्रियो का विश्वास भूलकर भी न करना चाहिये। इनसे सदा सावधान और सतर्क रहना चाहिये। जितनी विद्या शुक्र और बृहस्पति मे है, उतनी तो इनमे स्वभाव से ही होती है*।

शास्त्रकारों ने कहा है —

नदीनाच नखिनाच शृङ्गिणां शस्त्रपाणिनाम्।
विश्वासो नैव कर्त्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च॥

नदी का, नाखून वाले जानवरों का, सींग वाले पशुओं का, हथियार बाँधने वालों का, स्त्री का और राजा का विश्वास कभी न करना चाहिये।

श्री शङ्कराचार्य्यजी ने अपनी 'प्रश्नोत्तर माला' मे भी कहा है—'विश्वासपात्रं न किमस्ति? नारी।' अर्थात् कौन विश्वास-योग्य नहीं है? स्त्री। इतने सब औगुणों के सिवा, यह पुरुष की मोक्ष प्राप्ति मे भी बाधा स्वरूप है। इसकी तिरछी नज़र के तले पड़ने से ही पुरुष इसका दास हो जाता है और ऐसा दास हो जाता है कि फिर पीछा नहीं छूटता। जवानी में तो इसे छोड़ने को आप ही जी नहीं चाहता। जब कुछ विरक्ति होने

---

*लेसिङ्ग महोदय कहते हैं — "There are certain things in which a woman's vision is sharper than a hundred eyes of the males" कुछ ऐसी भी बातें हैं जिनमे स्त्री की नज़र पुरुषो की सौ आँखो से तेज़ होती है।

लगता है, तब इसकी औलाद में मन फँस जाता है। ज्ञान का उदय होने पर भी, पुरुष विचारने लगता है, अगर मैं स्त्री-बालकों को छोड़ कर वन में चला जाऊँगा, तो इनका लालन-पालन कौन करेगा ? मेरे न रहने से इनको अमुक कष्ट होगा, इन पर अमुक आफ़त आयेगी। अच्छा तो, लड़के-लड़कियों की शादी विवाह करके वन को चला जाऊँगा और तभी भगवान का भजन करूँगा। इस तरह वह विचार ही करता रहता है कि मौत आ जाती है और उसके विचार धरे के-धरे रह जाते हैं। ठीक उस तोते का-सा हाल होता है, जो मन में विचार कर रहा था कि आदमी हट जाँय, तो मैं पिंजरे से निकल भागूँ। आदमी हटे, तोता निकलने की चेष्टा करने लगा कि एक काल सर्प ने आकर उसे अपना भोजन बना लिया। स्त्री के सम्बन्ध में महात्मा कबीर कहते हैं —

नारी कहूँ कि नाहरी, नख सिख सों यह खाय।
जल बूड़ा तो ऊबरै, भग बूड़ा बहि जाय॥
नैनों काजल पायके, गाढ़ा बाँधे केश।
हाथों मेहदी लायके, बाघिन खाया देश॥

छप्पय

परम भवन को भौंर, भवन है गूढ़ गरब को।
अनुचित कृत को सिन्धु, कोप है दोष अवर को।
प्रगट कपट की कोट, खेत अप्रीति करन को।
सुरपुर को बटमार, नरकपुर द्वार करन को।

यह युवती-यन्त्र "कौन रच्यो, महा अमृत-विष को भरयौ ? ।
थिर चर नर किन्नर सुर असुर, सब के गल-बन्धन करयौ ॥७६॥

सार—स्त्री बड़ा जबर्दस्त जाल है । फिर भी लोग इसमें जाकर फँसते और बड़े खुश होते हैं, यह आश्चर्य्य की बात है । इसमें एक बार फँसने पर इससे निकलना कठिन है ।

76 Who has created this machine in the form of woman who is the very seat of doubts, the house of insolence, the city of courage, the object of vices, the field of misbelief, full of hypocrisy the obstructer to the gates of heaven, and the very gate of the city of hell, the basket of delusion, the poison in the garb of nectar and the snare for catching men.

सत्यत्वेन शशांक एष वदनीभूतो नवेन्दीवर-
द्वन्द्वं लोचनतां गतं न कनकैरप्यंगयष्टिः कृता ॥
किन्त्वेवंकविभिः प्रतारितमनास्तत्त्वं विजानन्नपि
त्वङ्मांसास्थिमयं वपुर्मृगदृशां मन्दो जनः सेवते॥७७॥

अगर हमसे पक्षपात-रहित सच्ची बात पूछी जाय, तो हमको कहना होगा कि चन्द्रमा स्त्री का मुख नहीं, कमल उसके नेत्र नहीं,

उसका भी शरीर और सब प्राणियों की तरह हाड़, चाम और मांस का है। इस बात को जान कर भी, कवियों की मिथ्या उक्तियों के भुलावे में पड़ कर हम लोग स्त्रियों पर आसक्त रहते और उन्हें सेवन करते हैं ॥ ७७ ॥

खुलासा—जिस तरह संसार के और प्राणियों के शरीर हाड़, मांस और रक्त प्रभृति से बने है, उसी तरह स्त्रियों के शरीर भी इन्हीं पदार्थों से बने हैं, इस बात को हम लोग जानते हैं। पर कवियों के झूठे बढ़ावों में आकर, हम लोग भी उनके मुख को चन्द्रमा, नयनों को कमल और देह को सुवर्ण-निर्मित समझ कर उन पर मर मिटते हैं। यह हमारी बड़ी भारी ग़लती है।

वैराग्य पक्ष

भला कहाँ पीयूष-निधि चन्द्रमा और कहाँ स्त्रियों का कफ, थूक और खखार से भरा मुँह? कहाँ भगवान के हाथ में विराजने-वाला सुदर्शनीय कमल और कहाँ गन्दे पदार्थों से बने स्त्रियों के नेत्र! कहाँ सूर्य की-सी आभा वाला सुवर्ण और कहाँ हाड़, चाम और माँस से बने स्त्रियों के शरीर? सच बात तो यह है कि हम नरक के कीड़ों का-सा आचरण करते है। नरक के कीड़े मल, मूत्र, राध, लोहू प्रभृति गन्दे पदार्थों में रमते और सुखी रहते हैं। हम भी उन्हीं की तरह हाड़, चाम, माँस, राध, खून और मलमूत्र प्रभृति के भण्डार में रमण करते और अपने को भाग्यवान समझते

हैं। इसमें और नरक के कीड़ों में कोई भेद है कि नहीं, यह बात ज़रा विचार करने से ही समझ में आ जायगी।

कुण्डलिया

नहिं शशांक-सम वदन तिय, नील जलज सम नैन।
अङ्ग कनक-सम है नहीं, कोकिल सम नहिं बैन॥
कोकिल-सम नहिं बैन, झूठ कवि उपमा दीन्ही।
जानत हैं सब भेद, तऊ पट आँखिन कीन्ही॥
हाड़ चाममय नार, मन्दमति निशिदिन सेवहिं।
करें उपाय अनेक, ग्लानि चित नेक न देवहिं॥७७॥

सार—सब प्राणियों की तरह स्त्रियों का शरीर भी हाड़, चाम और माँस का है। उन्हें चन्द्रमुखी; कमल-नयनी और सुवर्ण की-सी कान्तिवाली समझना सरासर भूल है।

77. In reality neither the moon has transformed itself into the face of a woman nor the lotus has turned itself into her eyes, nor is her body made up of gold, knowing all these facts however but being deceived by the false analogy of the poets, senseless people indulge in the body of woman which consists of skin, flesh and bones

---

लीलावतीनां सहजा विलासा-
स्त एव मूढस्य हृदि स्फुरन्ति॥

रागो नलिन्या हि निसर्गसिद्ध-
स्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडंघ्रिः ॥७८॥

जिस तरह मूर्ख भौंरा कमलिनी की स्वाभाविक ललाई को देख कर उस पर लुब्ध हो जाता और उसके चारों ओर गूंजता फिरता है, उसी तरह मूर्ख पुरुष मतवाली स्त्रियों के स्वाभाविक हाव-भाव और नाज़-नखरों को देख कर उन पर लुब्ध होजाते हैं ॥७८॥

खुलासा—कमलिनी में जो एक प्रकार की सुर्खी होती है, उसे भौंरा प्यार की निशानी समझता है और इसीलिये उस पर आशिक़ होकर उसके चारों ओर गूंजता हुआ घूमा करता है। कमलिनी की तरह नवयौवना स्त्रियों में भी विलास हाव-भाव और नाज़-नख़रे स्वभाव से ही होते हैं, पर अज्ञानी लोग उनके हाव-भावों को देखकर मनमें समझते हैं कि ये स्त्रियाँ हमें चाहती हैं, पर असल में वे चाहती-वाहती नहीं। हाव-भाव दिखाना तो उनका स्वभाव है। उनके हाव भावों को प्यार के चिह्न समझना महामूर्खता है। स्त्रियों को पुरुषों का तड़पते देखने में भी एक प्रकार का मज़ा-सा आया करता है, इसीलिये चञ्चल स्त्रियाँ जहाँ पुरुषों को देखती हैं, वहाँ नाज़-नख़रे किया करती है और जब उनका शिकार मछली की तरह तड़पता है, तब मन में बड़ी खुश होती हैं।

दोहा

कामिनि बिलसत सहज ही, मूरख मानत प्यार।
चाह सुमानें ज्यों कुसुमिनि, भौंरा भ्रमत गँवार ॥७८॥

सार—लीलावती चञ्चल स्त्रियों के हाव-भाव और नाज-नखरों को मुहब्बत की निशानी समझना नादानी है। यह तो उनका स्वभाव है।

78. The amorous plays of sportful women are quite natural to them but they arouse passion in the hearts of foolish men, just as a black bee hovers over a lotus being attracted by its redness which is natural to it

———

यदेतत्पूर्णेन्दु द्युतिहरमुदाराकृतिधरं—
मुखाब्जं तन्वंग्याः किल वसति यत्राधरमधु।
इदं तावत्पाकद्रुम फलमिवातीवविरसं—
व्यतीतेऽस्मिन्काले विषमिव भविष्यत्यसुखदम् ॥७९॥

स्त्री का पूर्णिमा के चन्द्रमा की छवि को हरने वाला कमल मुख, जिसमें अधरामृत रहता है, मन्दार के फल की तरह अज्ञात या यौवनावस्था तक ही अच्छा मालूम होता है, समय बीतने यानी बुढ़ापा आने पर वही कमलमुख अनार के पके और सड़े फल की तरह विष-सा हो जाता है ॥ ७९ ॥

खुलासा—जिस तरह अनार का फल अपने समय में अमृत का मजा देता है, पर समय निकल जाने पर बदजायका और कड़वा हो जाता है, उसी तरह स्त्री का पूनो के चाँद को शर्माने वाला

कमल-सा मुँह, उठती जवानी या भर-जवानी मे ही अमृत-सा रहता है। जवानी दीवानी के जाते ही वह सड़े हुए अनार के फल की तरह निकम्मा और विष-सा हो जाता है; क्योंकि बुढ़ापा आते ही दाँत गिर जाते हैं, चमड़े में झुर्रियाँ पड़ जाती हैं और सुर्खी चली जाती है। बेकन महोदय कहते है—Beauty is as summer fruits which are easy to corrupt and can not last. सौन्दर्य्य ग्रीष्म ऋतु के फलों के समान है, जो जल्दी ही सड़ जाते और अधिक समय तक नहीं ठहर सकते।

दोहा

अधर मधुर मधु सहित मुख, हुतो सबन शिर मौर।
सो अब बिगरे फलन-सम, भयौ और सों और ॥७६॥

सार—स्त्री की सारी शोभा जवानी में ही है। जवानी गई, फिर कुछ नहीं।

79 The beautiful lotus-like face of a woman that surpasses the beauty of the full moon having honeyed lips in it is very pleasant in young age only but when that time is past, it becomes painful like poison just like the fruit of Mandara

---

उन्मीलत्त्रिवलीतरङ्गनिलया प्रोत्तुङ्गपीनस्तन-
द्वन्द्वेनोद्यतचक्रवाकमिथुना वक्त्राम्बुजोद्भासिनी ॥

कान्ताकारधरा नदीयमभितः क्रूराशयानेष्यते ।
संसारार्णवमज्जनंयदिततोदूरेणसंत्यज्यताम् ॥ ८० ॥

खुलासा—स्त्री एक नदी है । उसके पेट पर जो त्रिवली के समान तीन रेखाएँ-सी हैं, वही इस नदी की लहर है । इसके दोनों कठोर कुच चकवे के जोड़े हैं और इसके जो क्रूर अभिप्राय हैं,वही भँवर हैं । जिस तरह और नदियाँ समुद्र मे जाकर गिरती हैं, उसी तरह स्त्री-नदी भी संसार-सागर मे जाकर गिरती है । जिस तरह और नदियों मे गिरी हुई चीज नदी के प्रवाह के साथ बहती हुई समुद्र मे जा पड़ती है, उसी तरह स्त्री-नदी में गिरी हुई वस्तु भी संसार-सागर मे जा पड़ती है । जो पुरुष इस स्त्री-नदी मे स्नान या क्रीड़ा प्रभृति करते हैं, वे उसके तेज बहाव मे बहते हुए संसार-सागर में जा पड़ते हैं । समुद्र मे गिरे बाद बचना कठिन हो जाता है, इसलिए जो पुरुष संसार-सागर से डूबने से बचना चाहें, वे स्त्री-नदी से दूर रहें । इस भयंकर नदी के पास भी न जाँय । इस स्त्री-नदी का जोर साधारण नदियों की अपेक्षा बहुत अधिक है । और नदियों मे तो वही डूबता है, जो उनके अन्दर घुसता या तैर देता है; पर स्त्री नदी तो सामने आये हुए पुरुष को अपने बल से, अजगर की तरह, भीतर खींच लेती और फिर उसे संसार-सागर मे ले जा पटकती है । "भामिनी विलास" कर्त्ता पण्डित-वर जगन्नाथ महाराज ने और ही तरह रूपक बाँधा है । उनका

आशय कुछ और है, फिर भी उसका रसास्वादन कीजिये:—

रूपजला चलनयना नाभ्यावर्ताकचावलि भुजङ्गा ।
मज्जन्ति यत्र सन्तः सेयं तरुणी तरंगिणी विषमा ॥

रूप ही जल है, चंचल नयन मछलियाँ हैं, नाभि भँवर है और सिर के बाल सर्प हैं, यह तरुण स्त्री-रूपी नदी दुस्तर नदी है। इस नदी मे शृङ्गारशास्त्र-प्रवीण सज्जन स्नान करते हैं।

महाकवि कालिदास के एक रूपक का भी रसास्वादन कीजिये। उसमें कुछ और ही मजा है:—

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं लावण्यलीलाजलं,
श्रोणी तीर्थशिला च नेत्रशफरी धम्मिल्ल शैवालकम् ।
कान्तायाः स्तन चक्रवाक युगलं कन्दर्पबाणानलैं,
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्मितम् ॥

ब्रह्मा ने कामदेव के बाणों की अग्नि-ज्वाला से जलते हुए पुरुषों के स्नान करने के लिये स्त्री रूपी सुन्दर तालाब बनाया है। इस तालाब में क्या-क्या चीजें हैं? इस तालाब में स्त्री की दोनों भुजायें तो कमल की डंडी हैं, उसका मुँह कमल है उसके लावण्य का विलास जल है, कमर उतरने की सीढ़ी है, उसके नेत्र मछलियाँ हैं, उसके बँधे हुए केश, बाल सिवार है और दोनों स्तन चक्र-वाक के जोड़े हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि कन्दर्प-ताप को स्त्री के पयोधर-कुच ही शान्त करते हैं। शरीर में कामबाणों की ज्वाला उठने पर, स्त्री

हो उस ज्वाला को शान्त करती है, पर बीमार होकर दवा खाने और आरोग्य होने की अपेक्षा बीमार न होना कहीं अच्छा है।

छप्पय

त्रिवली तरल तरंग, लसत कुच चक्रवाक-सम ।
प्रफुलित आनन कञ्ज, नारि यह नदी मनोरम ।
महा भयानक चाल, चलत भवसागर-सन्मुख ।
हाथ धरत ही ऐंच लेत, जितको अपनो रुख ।
संसार-सिन्धु चाहत तर्यो, तौ तू यामें दूर रह ।
जाको प्रवाह अति ही प्रबल, नेक न्हात ही जात बह ॥८०॥

सार—स्त्री-रूपी दुस्तर नदी से सदा दूर रहो, क्योंकि इसके सामने जाने वाले की भी खैर नहीं।

80. A woman who is compared to a river, having the beautiful linings on the stomach like waves (of the river), having developed breasts like the pair of Chakrabak and the face shining like the lotus, but whose intention is very crooked should be shunned carefully if one does not wish to be drowned in it (A river may appear very pleasing in sight but anything falling in it is taken to the deep ocean, so also the woman may appear attractive but any one indulging in her is ruined.)

जल्पन्ति सार्द्धमन्येन पश्यन्त्यन्यं सविभ्रमाः ।
हृदये चिन्तयन्त्यन्यं प्रियः को नाम योषिताम् ? ॥८१॥

स्त्रियाँ बात तो किसी से करती हैं, देखती किसी और को हैं, और दिल में चाहती किसी और को हैं । विलासवती स्त्रियों का प्यारा कौन है ? ॥ ८१ ॥

खुलासा—वास्तव में स्त्रियों का प्यारा कोई भी नहीं । जो एक ही समय में बात एक-से करती हैं, देखतीं दूसरे को और दिल में चाहतीं तीसरे को हैं, उनका प्रेम किससे हो सकता है ?

स्त्री स्वभाव से ही चञ्चल है । इसका चित्त एक जगह स्थिर नहीं रहता । इसके मन में कुछ बातों में कुछ और आँखों में कुछ । इसके चित्त का पता नहीं । यह सदा किसी एक से मुहब्बत नहीं रखती । बेईमानी, धोखेबाज़ी, छल, कपट, झूठ और बेवफाई तो परमात्मा ने इसे खूब ही दी है । महाकवि दाग़ ने खूब कहा है—

तुमसे बचकर इक वफ़ा हिस्से में अपनी लग गई ।
तुमने खूबी कौन-सी छोड़ी ज़माने के लिये ।

सच है, सभी अच्छी चीजें तुम्हारे हिस्से में आ गईं । एक वफा ज़रूर तुमसे बच कर मेरे हिस्से में आ गई है । इस खूबी को छोड़ कर और सब खूबियाँ तुम्हारे पास मौजूद हैं ।

स्त्री बाहर से जैसी मनोहर दीखती है, भीतर से वैसी नहीं होती । उसका शरीर मनोहर होता है, पर हृदय वज्रवत् कठोर

होना है। वह अपने चन्द्र मुख से मधु-जैसी मीठी-मीठी बातें करती है और तीक्ष्ण चित्त से चोट मारती है। इसलिये कहते हैं कि उसकी जीभ में मधु और हृदय मे हलाहल विष रहता है। पर जिन्होंने संसार नहीं देखा है, जिन्हें इस जगत की टेढ़ी-सीधी बातें नहीं मालूम, वे नातजुर्बेकार नौजवान इन बातों को न समझ कर, इन कुटिला कामिनियों का पूर्ण विश्वास कर बैठते हैं। इनके यह कहने पर कि आप ही हमारे सूरज, आप ही हमारे चाँद और आप ही हमारे परमेश्वर हो, आप ही से हमे जगत मे उजियाला है,—नवयुवक पागल-से हो जाते हैं और इन्हें सती सीता और सावित्री समझ कर इनके क्रीतदास हो जाते हैं। और जब कामी पुरुष सोलह आने इनके काबू मे हो जाते हैं, तब ये निरंकुश होकर अपनी माया रचने लगती है। एक को आँखों के इशारों से, दूसरे को बातों से, तीसरे को चेष्टाओं से प्रसन्न करतीं और चौथे अपने पति को अपनी माया मे पागल बनाये रखती हैं। उसे सूझता होने पर भी अन्धा कर देती हैं। उसके मौजूद रहते कुकर्म करती हैं पर उस भोंदू को कुछ नहीं सूझता। बुद्धिमानों को इन के सतीत्व पर हरगिज़ विश्वास न करना चाहिये, क्योंकि किसी एक की होना तो विधाता ने इनके भाल में लिखा ही नहीं।

किसी ने ठीक ही कहा है:—

यदि स्यात्पावक शीतः प्रोष्णो वा शशलाञ्छनः
स्त्रीणां तदा सतीत्वं स्याद् यदि स्याद् दुर्जनो हितः ॥

अगर आग शीतल हो जाय, चन्द्रमा गरम हो जाय और दुर्जन हितकारी हो जायँ, तभी स्त्रियों के सतीत्व का विश्वास किया जा सकता है।

और भी कहा है--

> यो मोहान्मन्यते मूढो रक्तेयं कामिनी
> स तस्या वशगो नित्यं भवेत् क्रीडाशकुन्तवत् ॥

जो मूढ़ मनुष्य यह समझता है कि यह स्त्री मुझे प्यार करती है, वह उसके वश होकर खेल के पक्षी की तरह हो जाता है। पर वास्तव में वह उसे नहीं चाहती। उसको न कोई प्यारा है और न कोई कुप्यारा। जिस पर तबियत आ जाय वह उसी की है; पर उसकी भी सदा-सर्वदा नहीं। चञ्चल नारी-जाति का चित्त कभी भी स्थिर हो सकता है?

दोहा

> मन में कछु बातन कछु, नैनन में कछु और।
> चित्त की गति कछु और ही यह प्यारी किहि ठौर ? ॥८१॥

सार—स्त्री बेवफा है। उसकी मुहब्बत सर्वदा किसी के साथ रह ही नहीं सकती। जिसकी स्त्री वफादार और सती हो वह निस्सन्देह पूर्ण पुण्यात्मा है।

81. A woman while talks with one man, looks amorously towards some other and at the same time, she thinks in her mind of a quite different person Who can be said to be the true lover of a woman ?

एक भले घर की कुलटा की नफ़रत पैदा करने वाली कहानी ।

ग़ज़ब का त्रियाचरित्र

यद्यपि दिल्ली के आख़िरी बादशाह के उस्ताद महाकवि ज़ौक़ ने कहा है—

सोहबते अहले सफ़ा से ग़ैरह दिल कब साफ़ हो ।
ज़ङ्ग से आलूदा हो जाता है आहन आब में ॥

महात्माओं की संगति से कलुषित-हृदय पुरुषों की चित्तशुद्धि नहीं होती । लोहा अगर पानी में डाला जाता है, तो साफ़ होने के बजाय उसमें जंग ही लग जाती है ।

यद्यपि उस्ताद के कलाम में शक करने की गुञ्जायश नहीं— अनेक स्थलों में ठीक ऐसा ही होता भी है, पर मेरा विश्वास नीचे के शेर और कबीरदास के निम्नलिखित दोहों पर

अधिक था:—

सत्सङ्गः केशवे भक्तिर्गंगाम्भसि निमज्जनम् ।
असारे खलु संसारे त्रीणि साराणि भावयेत् ॥

सत्पुरुषों का सङ्ग कृष्ण की भक्ति और गङ्गाजल का स्नान, इस असार संसार में ये तीन ही सार समझे जाते हैं ।

एक घरी आधी घरी, आधी सों भी आध ।
कबिरा संगति साधु की, कटै कोटि अपराध ॥
कबिरा सङ्गति साधु की, नित प्रति कीजै जोय ।
दुर्मति दूर बहावसी, देसी सुमति बताय ॥

एक घड़ी, आधी घड़ी और पाव घड़ी–जितना भी समय मिले; सत्पुरुषों की सङ्गति अवश्य करनी चाहिये, क्योंकि उनकी संगति से करोड़ों अपराध नष्ट हो जाते हैं ।

साधु पुरुषों की संगति नित्य करनी चाहिये, क्योंकि उससे कुमति दूर होती है और सुमति आती है ।

इस संसार रूपी कड़वे वृक्ष के दो ही फल हैं:—(१) मीठा बोलना और (२) सज्जनों का संग । लेखनी में सामर्थ्य नहीं, जो सत्संग की महिमा बखान सके । यद्यपि लोहा पानी में जाकर साफ नहीं होता, उस पर उल्टी जङ्ग चढ़ जाती है, तो भी पारस के साथ मिलने से वह सोना हो जाता है । उसी तरह सत्सङ्ग से नीच भी महापुरुष हो जाता है । सप्त ऋषियों की सङ्गति से नित्य प्रति हत्या करने वाला व्याधा महामुनियों की गणना मे आगया । बहुत

क्या, सत्संग की महिमा मेरे दिल पर अच्छी तरह जमी हुई थी, इसलिये मुझे बाल्यावस्था से ही साधु-महात्माओं की संगति जियादा पसन्द थी। मेरे गाँव मे कोई भी महात्मा आता, तो मै उसके आने का समाचार पाते ही उसके पास जरूर पहुँचता।

एक बार हमारे गाँव के श्मशान में एक सन्यासी आकर ठहरे। वह जाति के ब्राह्मण, पूर्ण विद्वान, सर्व त्यागी और वास्तविक महात्मा थे। उनकी उम्र भी जियादा न थी, कोई चालीस बरस के होंगे। उनका शरीर हृष्ट-पुष्ट और गठीला था। उनके चेहरे से एक प्रकार का अपूर्व तेज टपका पड़ता था। उनको देखते ही हर मनुष्य के दिल में उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति का भाव उदय होता था। उनकी शोहरत सारे गाँव मे फैल गई, इसलिये सैकड़ों स्त्री-पुरुष उनके दर्शनो के लिये श्मशान मे जाते और उनके दर्शन करके नेत्र सफल करते थे। अधिक क्या कहूँ, मेला-सा लगा रहता था। मै भी नित्य, बिना नागा उनके दर्शनो को जाया करता था। वह हर समय वेदान्त-चर्चा किया करते थे। उनकी तर्कशक्ति, विद्वत्ता और प्रबल युक्तियो को देखकर लोग दंग रह जाते थे। हरेक के मुँह से वाह-वाह निकलती थी। पर एक बात उनमे विशेष रूप से देखने मे आती थी। वह यह कि उन्हे स्त्रियों का—खास कर जवान स्त्रियों का वहाँ आना पसन्द नहीं था। उनके ढंग-ढौल से ऐसा प्रतीत होता था, मानो उन्हे युवतियों के दर्शन से घृणा है। वे हम लोगो को संसार की असारता और देह की क्षण-भङ्गुरता इस तरह समझाते थे कि हम सभी

श्रोताओं के दिलों पर उनकी बातों का असर फौरन ही हो जाता था। हमारे दिलों में सच्चे वैराग्य का उदय हो आता था। उनके मुँह से निकली हुई स्त्रियों की निन्दा सुनकर तो स्त्रियों का नाम सुनने से भी घृणा-सी हो जाती थी। वे अपनी बातचीत के दौरान में संस्कृत के श्लोक बहुतायत से कहा करते थे। नीचे लिखा हुआ श्लोक तो वे एक-दो बार नित्य ही कहा करते और शेष में दर्दभरी आह सी खींचा करते थे। वह श्लोक यह था—

> सुचिन्तितमपि शास्त्रं परिचिन्तनीयम्
> आराधितोऽपि नृपतिः परिशंकनीयः ।
> क्रोडेस्थितापि युवतीः परिरक्षणीयः ,
> शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतो वशीत्वम् ॥

शास्त्र को अच्छी तरह पढ़ लेने पर भी उसका पाठ हमेशा करते रहना चाहिए। राजा को अपने ऊपर मिहरबान देखकर भी उससे डरते रहना चाहिये। गोद में बैठी हुई भी जवान स्त्री की रक्षा बड़ी होशियारी से करनी चाहिये। क्योंकि शास्त्र, राजा और जवान स्त्री ये किसी के भी वशीभूत होकर नहीं रहते।

उनके मुख से यह श्लोक बारम्बार सुनने से मुझे कुछ शङ्का-सी हुआ करती थी। मैं पूछना चाहता था कि महाराज! आप युवतियों की इतनी निन्दा क्यों किया करते हैं; पर उनके तेज-प्रताप या रौब से पूछने की हिम्मत न कर सका। एक बार हिम्मत बाँध कर मैं कह ही तो उठा, "भगवन! स्त्रियाँ न हों, तो ईश्वर की

सृष्टि ही लोप हो जाय, यह संसार सूना हो जाय, यहाँ कुछ भी दिखाई ही न दे। पुरुष और प्रकृति से ही यह सृष्टि है। अकेला पुरुष सृष्टि-रचना नहीं कर सकता। जगत की रचना में प्रकृति की सहायता की परमावश्यकता है। भगवान रामचन्द्र, भगवान श्रीकृष्ण, महाराजा हरिश्चन्द्र, महाराज भरत और प्रह्लाद प्रभृति स्त्री से ही पैदा हुए हैं। किसी ने कहा है:—

नारी निंदा मत करो, नारी नर की खान।
नारी से नर ऊपजे, ध्रु-प्रह्लाद-समान॥

नारी-जाति की निन्दा मत करो, क्योंकि नारी ही नरों की खान है। नारी से ही ध्रुव और प्रह्लाद जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया है।

मेरी बात सुनकर वे कहने लगे, "भैया! तुम्हारी बात सच है। निस्सन्देह, स्त्री बिना ईश्वर की सृष्टि नहीं चल सकती। स्त्री से ही जगत की उत्पत्ति है। इस विषय में मेरा मत-भेद नहीं। मेरा तो कहना है कि स्त्रियों की प्रीति निश्चल नहीं होती। उनका दिल बड़ा चञ्चल होता है। क्षण-भर में वे पराई हो जाती हैं। जिस तरह गाय नई-नई घास चरना चाहती है, उसी तरह स्त्रियाँ नित्य नये पुरुषों को भोगना चाहती हैं। बलवान पुरुषों से भी उनकी कामाग्नि शान्त नहीं होती। अब मैं तुम्हें चन्द ऐसी कहानियाँ सुनाता हूँ, जिनसे तुम्हें मेरी बातों की सत्यता में अणु-मात्र भी सन्देह न रहेगा ध्यान देकर सुन—

किसी शहर में एक विद्वान, रूपवान और रतिशास्त्रपारङ्गत

ब्राह्मण रहता था। वह अपनी स्त्री को प्राण से भी अधिक प्यार करता था, लेकिन उसकी स्त्री कलहकारिणी थी। वह अपनी सास-ननद और दिवरानी-जिठानियों से रोज तकरार किया करती थी, इसलिए वह ब्राह्मण नित्य के क्लेश से दुःखी होकर, अपनी प्यारी स्त्री को लेकर, किसी दूसरे नगर को चल दिया। चलते-चलते वे दोनों एक घोर वन में पहुँचे। ब्राह्मण की स्त्री को बड़े जोर से प्यास लगी। उसने अपने पति से कहा, 'मुझे प्यास बहुत जोरसे लगी है, आप कहीं से जल लावें तो मेरी जान बचे।' ब्राह्मण लोटा-डोर लेकर पानी की खोज में गया। बड़ी खोज से उसे एक कुँआ मिला। वह पानी भर कर वापस लौटा। लेकिन आकर क्या देखता है कि उसकी प्राण-प्यारी मरी हुई पड़ी है और पास ही एक काल भुजङ्ग बैठा है। ब्राह्मण को देखते ही साँप जङ्गल में भाग गया। ब्राम्हण ने समझ लिया कि मेरी स्त्री को सर्प ने डसा है।

उसने बहुत देर तक तो विलाप किया, फिर जङ्गल से लकड़ी लाकर चिता बनाई और उस चिता में स्त्री-सहित जलने की तैयारी की। इतने में आकाशवाणी हुई, 'हे विप्र! अगर तू अपनी आयु में से आधी इसे दे दे, तो यह जी सकती है।' यह वाणी सुनते ही ब्राम्हण ने स्नान ध्यान से पवित्र हो, तीन बार संकल्प का मन्त्र कह कर अपनी स्त्री को आधी उम्र दे दी। ब्राम्हणी तत्काल जी उठी। ब्राम्हण ने उससे यह बात न कही। जङ्गल से फल-मूल लाकर उसे खिलाये और आप खाये। फिर वहाँ से दोनो चल दिये।

चन्द रोज बाद ये दोनों स्त्री-पुरुष एक बड़े नगर में पहुँचे। नगर के बाहर एक मनोहर बाग था। ब्राह्मण वहीं ठहर गया। स्नान-पूजा में निपटकर उसने ब्राह्मणी से कहा, 'मैं शहर में जाकर खाने-पीने का सामान ले आता हूँ, तुम यहीं बैठी रहो। आकर भोजन बनाऊँगा और फिर दोनों खाँयगे।' यह कह कर ब्राह्मण तो शहर में चला गया और ब्राह्मणी अकेली बैठी रही। उस बाग के कुएँ की सीढ़ियों पर एक लँगड़ा आदमी बैठा हुआ मनोहर स्वर से गीत गा रहा था। उसके गाने से स्त्री का काम जाग उठा। वह काम-पीड़ित हो, लँगड़े के पास जाकर बोली, 'हे भद्र पुरुष! तू मेरे साथ भोग कर। अगर तू मेरी काम शान्ति न करेगा, तो तुझे मुझ अबला की हत्या लगेगी। स्त्री हत्या बहुत बड़ा पाप है।' लँगड़ा बोला, 'हे कल्याणि! मैं रोगी हूँ, अङ्गहीन हूँ, मुझमें तेरी शान्ति न होगी।' स्त्री बोली, 'मैं तेरी एक बात नहीं सुनूँगी। अगर तू मेरा कहना न मानेगा, तो मैं अभी हल्ला करके तुझे राजा के सिपाहियों से पकड़वा दूँगी।' आखिरकार वह लँगड़ा भय से या और किसी वजह से उसकी बात पर राजी हो गया। उसने उससे संगम किया। संगम हो चुकने पर वह बोली, 'हे भद्र! तुम बड़े अच्छे पुरुष हो, मेरी आत्मा तुमसे सन्तुष्ट है। अबसे मैं तुम्हारी हो चुकी। मैंने तुम्हें आत्मसमर्पण किया। अब तुम भी हमारे साथ चले चलो।' लँगड़े ने कहा, 'मैं न तो चल सकता हूँ और न कमा सकता हूँ, इसलिए मुझे ले चलनेसे तुम्हें कष्ट होगा।' स्त्रीने कहा, 'तुम चुप रहो, मैं सब इन्तजाम कर लूँगी।'

इन दोनों मे ये बातें हो ही रही थीं कि ब्राह्मण शहर से आटा-दाल, घी और लकड़ी लेकर आया। भोजन बनाकर खाने की तैयारी करने लगा तब ब्राह्मणी बोली, 'हे स्वामिन्! यह लॅगड़ा भी भूखा है। इसे बिना खिलाये खाना उचित नहीं। इसलिए इसे भी परोस दीजिये।' भोले ब्राह्मण ने आप खाया, स्त्री और उस लॅगड़े को भी खिलाया। खा-पीकर जब वे आगे चलने लगे तब स्त्री बोली, 'हे पतिदेव! आप और मै दो ही जने हैं, आप कहीं चले जाओगे तो अकेले में मेरा मन न लगेगा। इसलिए इस लॅगड़े को आप कन्धे पर रखकर ले चलें, तो मुझे बात-चीत का सहारा हो जायगा।' ब्राह्मण बोला, 'प्यारी! मुझे अपना शरीर ही भारी हो रहा है, मै इसे न ले चल सकूंगा।' तब स्त्री ने स्वयं उसे गाँठ में बाँध कर अपने सिर पर धर लिया। ब्राह्मण ने उसकी बातों मे आकर इन्कार नहीं किया। कुछ दिनो बाद वे एक और गाँव के निकट पहुँचे। ब्राह्मण कुएँ से पानी भरने लगा। उसकी स्त्री ने उसे कुएँ मे धकेल दिया और अपनी गठड़ी को लेकर आगे चल दी। पुलिस ने चोरी का माल समझ कर उसकी गठड़ी खुलवाई, तो उसमे लॅगड़ा निकला। सिपाही उसे हाकिम के पास ले गये। हाकिम ने पूछा, 'यह क्या मामला है? तू ने मर्द को गठरी मे क्यों बाँध रखा है?'

ब्राह्मणी ने जवाब दिया—'यह मेरा पति है। यह चल नहीं सकता, इसलिए मैं इसे गठरी मे धर कर घूमती हूँ। महाराज! पतिव्रता का यही धर्म है।' हाकिम उसकी बात से खुश होकर

उसे राजा के पास ले गया। राजा उसका पति-स्नेह देख कर बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे आनन्द से जीवन बिताने के लिए दो गॉव इनाम मे दिये।

कुछ रोज बाद वह ब्राह्मण भी किसी तरह कुएँ से निकलकर उसी नगर में आया। उस स्त्रीने उसे देखते ही राजासे प्रार्थना की, कि महाराज ! यह आदमी मेरे पतिका शत्रु है। राजा ने सुनते ही बिना विचार किये ब्राह्मण को शूली पर चढ़ाने की आज्ञा दे दी। तब ब्राह्मण ने राजा से कहा, 'आप धर्मात्मा राजा हैं। आपने मुझे दण्ड दिया,सो तो मैं भोगूंगा ही, पर इसके पास मेरी कुछ संक्रान्त वस्तु है, वह मुझे दिला दीजिये। इसके बाद मुझे फॉसी पर चढ़वाइये।' राजाने कहा, 'हे पतिव्रते ! तूने इसकी कुछ संक्रान्त वस्तु ली है ?' ब्राह्मणी ने कहा, 'मैंने तो इससे कुछ भी नहीं लिया है।' ब्राह्मण बोला, 'तू हाथ में पानी लेकर तीन बार यह कह दे, कि इसने मुझे जो कुछ भी दिया हो, वह मैं वापस देती हूँ।' स्त्री राजा के भयसे इस बात पर राजी हो गई और तीन बार वैसा ही कह कर संकल्प छोड़ दिया। संकल्प का जल छोड़ते ही वह मर गई। राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ। राजा ने विप्रसे इस घटना का रहस्य पूछा। ब्राह्मण ने सारा किस्सा ज्योंका त्यों सुना दिया। सुनते ही राजा ने खुश होकर वह दोनो गॉव ब्राह्मण को दे दिये और अपने दरबार में एक उच्च पद भी प्रदान किया।

इसी से मुझे कहना पड़ता है कि जिस ब्राह्मण ने अपनी स्त्रीके लिये मॉ-बाप और भाई-बन्धु छोड़े, अपना आधा जीवन दिया,

उसी स्त्री ने उसके साथ ऐसे-ऐसे जाल किये, उसके प्राणनाश में भी कोई बात उठा न रखी। अब कहो, स्त्रियों की प्रीति का क्या विश्वास किया जाय? किसीने ठीक ही कहा है—

एताः स्वार्थपरा नार्य्यः केवलं स्वसुखे रताः।
न तासां वल्लभः कोऽपि सुतोऽपि स्वसुखं विना॥

स्वार्थ परायण स्त्रियाँ केवल अपना सुख ही चाहती हैं। अपने सुख के आगे उन्हें कोई भी प्यारा नहीं, यहाँ तक कि अपने पेट से पैदा हुआ पुत्र भी प्यारा नहीं।

अच्छा और भी एक कहानी सुनः—

किसी नगर में एक वैश्य रहता था। वह अपनी स्त्री को अत्यधिक प्यार करता था। उसके मित्रों ने कहा, 'भाई! तुम अपनी स्त्री का इतना विश्वास मत करो, स्त्री की प्रीति का जरा भी भरोसा नहीं। रूखी चीज़ में चिकनाई हो, कठोर वस्तु में नरमी हो और नीरस में रस हो, तो स्त्रियों में प्रेम हो सकता है।

'मित्र! तुम अपनी स्त्री के झूठे प्रेम के पागल मत बनो। अगर मेरी बात पर विश्वास नहीं है, तो आज उससे विदेश जाने की बात कहो, पर जाओ कहीं नहीं, दिन भर मेरे घरमें रहो, रात को अपनी स्त्री के पलंग के नीचे घुस जाओ और तमाशा देखो।' उस वैश्य ने अपने मित्र के कहने के मुताबिक ही अपनी स्त्री से विदेश जाने की बात कही। वह भी सुनते ही प्रसन्न हो गई और उनके लिए पूरी मिठाई प्रभृति बनाने में लग गई।

किसी ने कहा है—

> दुर्दिवसे घनतिमिरे वर्षतिजलदे महाटवीप्रभृतौ ।
>
> पत्युर्विदेशगमने परमसुखं जघन चपलायाः ॥

घटाटोप दिन या बुरे दिन से गहरे अँधेरे से मेह बरसने से, महावन से और पति के परदेश जाने से चपल जाँघों वाली पर-पुरुषरता स्त्रियाँ बहुत खुश होती है।

बहुत क्या, वैश्य की स्त्री ने पूरी-मिठाई बाँधकर पति को विदा कर दिया। चलते समय कहा, 'आप जल्दी आ जाना। मुझे आपके बिना यह मनोहर शय्या काँटों से भरी मालूम होगी। रात को नींद न आवेगी। खैर, काम है. इसलिए जैसे-तैसे दिन काटूँगी।'

पति के चले जाने पर शाम को उसने साबुन से मल-मलकर खूब स्नान किया। नये-नये कपड़े और गहने पहने। कसकर पलङ्ग तैयार किया और दूध के समान सफेद चादर बिछाई। रात को उसका यार आया और पलङ्ग पर बैठ गया। उधर वह वैश्य भी चिराग जलते ही दूसरे द्वार से आकर पलङ्ग के नीचे छिप गया। ज्योंही वह स्त्री पलङ्ग पर चढ़ने लगी कि उसका पैर खाट के नीचे छिपे हुए उसके पति से छू गया। वह फौरन ताड़ गई कि दुष्ट पति मेरी परीक्षा लेने के लिए यहीं छिपा है। अब कोई त्रिया-चरित्र करना चाहिये। ज्योंही उसका यार उसे आलिङ्गन करने को तैयार हुआ, वह बोली, 'हे महानुभाव! आप मेरा शरीर न छुएँ। मै पतिव्रता और महा सती हूँ। अगर छूओगे तो शाप

देकर भस्म कर दूँगी।' ये बातें सुनते ही उसका यार बोला, 'फिर तूने मुझे बुलाया ही क्यों है ? अगर सती थी तो मुझे न बुलाती।' वह बोली, 'सुनो, मैं आज देवी के दर्शन करने गई थी। देवी बोली, 'पुत्री ! तू मेरी भक्त है, पर दुःख है कि तू आगामी छः महीने में विधवा हो जायगी। हाँ, अगर तू आज रात को पर पुरुष को बुलाकर उसे आलिङ्गन करे, तो तेरे पति की उम्र बढ़ जाय और उस पुरुष की उम्र घट जाय। बस इसी मनोरथ सिद्धि के लिए मैंने आपको बुलाया है।' नीचे से अपनी स्त्री की बातें सुनकर वैश्य बोला, 'धन्य पतिव्रते, धन्य ! कुल का आनन्दवर्द्धन करने वाली धन्य ! मैंने दुष्टों की बातों में आकर तेरी परीक्षा लेनी चाही थी ; लेकिन तू तो पतिव्रताओं में मुख्य है। तूने पति की आयु बढ़ाने के लिए ऐसा घोर तप किया, जो परपुरुष के साथ आलिङ्गन करने को तैयार हो गई ! मेरे जैसा भाग्यवान कौन है ? आ ! मेरे कन्धे पर चढ़ जा।' फिर उस स्त्री के यार से कहने लगा—'हे महानुभाव ! आप मेरे पूर्व जन्म के पुण्य से आये हैं। आपकी कृपा से मेरी आयु बढ़ गई। आपको धन्यवाद है। आप भी मेरे कन्धे पर चढ़िये।' वह यार तो चढ़ना नहीं चाहता था, पर उसने उसे जबर्दस्ती चढ़ा लिया और दोनों को कन्धों पर लिये हुए नाचता फिरा। साथ ही उन दोनों का गुणानुवाद भी करता रहा।

देखा बच्चा ! स्त्री में कितनी तेज़ अक्ल है। सरासर कुकर्म देखकर भी वैश्य शान्त हो गया, उल्टा अपनी स्त्री की बड़ाई करने

लगा। यह सब वैश्य की स्त्री की चतुराई का फल था। स्त्रियों को जितनी जल्दी बात सूझती है, उतनी जल्दी पुरुषों को नहीं। इसी से कहा है:—

भोजनं द्विगुणं स्त्रीणां बुद्धिः तासां चतुर्गुणा।
निश्चय षड्गुणः पुंभ्यः कामश्चाष्टगुणः स्मृतः॥
स्त्रीणां द्विगुणाहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा।
साहसं षड्गुणञ्चैव, कामश्चाष्टगुणः स्मृतः॥

स्त्रियाँ मर्दों की अपेक्षा दूना खाती हैं। उनमें मर्दों से चौगुनी अक्ल, छः गुना निश्चय और अठगुना काम होता है।

स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा दूनी भूख, चौगुनी शर्म, छः गुना साहस और अठगुना काम होता है।

उशना वेद यच्छास्त्रं यच्च वेद बृहस्पतिः।
स्त्री बुद्ध्या न विशिष्येत तस्माद्रक्ष्याः कथं हि ताः॥

शुक्र और बृहस्पति जितने शास्त्र को जानते हैं, उतना स्त्री की बुद्धि के सामने कुछ भी नहीं है। फिर स्त्रियों की रक्षा की जाय तो कैसे की जाय?

क्यों बच्चा, सन्तोष हुआ या और भी सुनना चाहता है? अच्छा ले, एक बात और भी सुनाता हूँ:—

जाटनी और नायन का त्रिया चरित्र

किसी नगर में एक जाट रहता था। उसकी स्त्री कुलटा थी, पर उस बेचारे को यह बात मालूम नहीं थी। हाँ, उसके

यार दोस्त उसकी स्त्री का हाल जानते थे। वह कहते, 'यार ! स्त्री की प्रीति किसी एक से नहीं होती। स्त्री पर विश्वास करना बड़ी भूल है।' उसके दिल में अपने मित्रों की बात जम गई। वह उसकी फिराक में रहने लगा। एक दिन उसने एक सन्यासी को अपने घर भोजन कराना चाहा, इसलिये वह उसे अपने घर लिवा लाया। स्त्री से कहा, 'तू महाराज की सेवा कर, मैं बाजार से खीर का समान ले आता हूँ, क्योंकि महात्मा जी कहते हैं —

अमृतं शिशिरे वह्निरमृतं प्रियदर्शनम्।
अमृतं राजसम्मानममृतं क्षीरभोजनम् ॥

जाड़े मे आग अमृत है, प्यारे का दर्शन अमृत है, राजसम्मान अमृत है और खीर का भोजन अमृत है। इसलिये आज खीर ही बनेगी। देख, इधर उधर मत टरख जाना।' वह तो ऐसा कह कर चल दिया। उसके जाते ही स्त्री गहने कपड़े पहन कर सन्यासी से बोली, 'आप बैठिये, मैं अपनी सखी से मिलकर अभी आती हूँ।' सन्यासी से ऐसा कह कर वह चलदी। दैवयोग से राह मे उसका पति उसे मिल गया। उसने देखते ही कहा, 'राँड़ ! मैं लोगों की बात झूठी समझता था। पर आज मालूम हुआ कि उनकी बात सच है। चल, तुझे आज सजा दूँगा।' ऐसा कहता हुआ वह उसे अपने घर ले आया। घर मे आकर, उसे खूब मारा-पीटा और कस कर एक खम्भे से बाँध दिया। फिर अपने हाथों से ही पकाकर साधु को खीर खिलाई और आपने भी खूब शराब पीकर खीर खाई। फिर वह नशे मे सो गया।

आधी रात बीतने पर, जाट को सोया समझ कर, जाटनी की एक सखी या दूती नायन उसके पास आकर कहने लगी, 'देख, तेरा यार तेरे बिना मर रहा है। तू क्यों नहीं जाती ?' उसने कहा, 'देखती नहीं, इस हालत मे कैसे जाऊँ ?' नायन ने कहा, 'कठिन स्थानों मे जाकर जो स्वादु फल खाते है, उन्हींका जन्म मैं, ऊँटो की तरह, सार्थक समझती हूं। परलोक मे सन्देह है, जनापवाद चित्र-विचित्र होता है और दूसरे के साथ रमण करना अपने हाथ की बात है। जवानी के फल भोगने वाली स्त्री ही धन्य है। दैवयोग से एकान्त स्थान मे दूसरा कुरूप पुरुष भी मिल जाय, तो स्त्री को चाहिये कि, अपने सुन्दर पतिको त्याग कर उससे रमण करे। मैं तेरी जगह बँध जाती हूँ, तू उसके पास जाकर उसकी इच्छा पूरी कर।' यह कह कर नायन ने उसे खोल दिया। फिर उस स्त्री ने नायन को अपनी जगह बाँध कर यार के घर की राह ली।

ज्योंही वह स्त्री गई कि जाट जागा और गाली देता हुआ खम्भे से बँधी हुई स्त्री के पास आया और उसकी नाक काट ली। नायन कुछ न बोली। जाट ने समझा कि मैंने अपनी स्त्री की नाक काट ली है। थोड़ी देर बाद वह स्त्री आई। उसने नायन से पूछा, 'कहो सखी! खैर तो है ?' नायन ने कहा, 'हाँ बहन! सब खैर है, केवल नाक नहीं है।' फिर नायन वहाँ से अपने घर चली गई और स्त्री को वहीं बाँधती गई। तड़काऊ वह जाट फिर जागा और कहने लगा, 'राँड़ अभी तो नाक काटी है,

अब कान काटता हूँ ।' सुनते ही स्त्री बोली, 'अगर मैंने स्वप्न मे भी परपुरुष का ध्यान किया हो, तो ईश्वर मेरी नाक जोड़ दे और यदि मै कुलटा हूँ तो मुझे भस्म कर दे ।' फिर थोड़ी देर बाद बोली, 'अरे दुष्ट ! मेरी नाक फिर जुड़ गई, अब भी क्या मैं सती नहीं हूँ ?' यह बात सुनते ही उसके पति ने आकर देखा, तो जमीन पर खून पड़ा पाया और नाक ज्यो-की त्यों पाई । वह हजार जान से अपनी स्त्री की तारीफें करने लगा । उधर वह महात्मा, जो चुपचाप पड़ा हुआ इस अद्भुत लीला को देख रहा था, मन-ही-मन कहने लगा—

शम्बरस्य च या माया या माया नमुचेरपि ।
बले. कुम्भीनसेश्चैव सर्वास्ता योषितो विदुः ॥

शम्बर की, नमुचि की, बलि और कुम्भीनसकी जितनी माया है, उस सबको स्त्रियाँ जानती हैं ।

अनृतं सत्यमित्याहुः सत्यं चापि तथानृतम् ।
इति या ताः कथं धीरैः संरक्ष्या. पुरुषैरिह ॥

जो झूठ को सच और सच को झूठ कहती हैं, धीर पुरुष, इस संसार में उनकी रक्षा कैसे कर सकते है ?

नाति प्रसंग. प्रमदासुकार्यो
नेच्छेद्बलं स्त्रीषु विवर्द्धमानम् ।
अति प्रसक्तै. पुरुषैर्यतास्ताः
क्रीडन्ति काकैरिव लूनपक्षै· ॥

स्त्रियों को जियादा मुँह न लगावें और उनका बल न बढ़ने दे, क्योंकि अति आसक्त हुए पुरुषों से वह पंखनुचे हुए कौए के समान खेलती हैं।

आगे चल कर नाई की स्त्री अपने घर पहुंची। सवेरे ही नाई ने किसी की हजामत बनाने के लिये उससे अपना उस्तरा माँगा। नाइन ने उस्तरा दूर से फेंक मारा। यह देख, नाई ने भी क्रोध मे भर कर उस्तरा उसी की तरफ फेंक मारा। बस, ऐसा होते ही नाइन चिल्लाने लगी, 'अरे कोई मुझे बचाओ, मेरे पति ने मुझ निरापराधिनी की नाक काट ली है।' लोग इकट्ठे हो गये। पुलिस नाई को पकड़ कर ले गई। राजा ने नाई को शूली चढ़ाने की आज्ञा दी। तब नाई को बेकसूर मारे जाते देख कर, वह सन्यासी राजसभा में जाकर बोला, 'महाराज! नाई बेकसूर है। यह सब स्त्री-चरित्र है।' फिर सन्यासी ने रात की सारी घटना कह सुनाई। राजा ने नाई को छोड़ दिया और स्त्री को जेल की सजा दी।

संन्यासी की कही हुई कहानियाँ सुन कर, मुझे उन पर अत्यन्त श्रद्धा हो गई। हम लोग सन्ध्या हुई देख अपने-अपने घर जाना चाहते थे, कि इतने मे सन्यासी की पीठ का कपड़ा हवा से उड़ गया। उनकी आदत थी कि वे अपनी पीठ कभी किसी को न देखने देते। पीठ पर हर समय कोई कपड़ा रखते थे। आज पीठ का कपड़ा उड़ जाने से, मैंने उनकी पीठपर घाव का एक भारी निशान देखा। मुझे उस चिह्न को देखकर कुछ कौतुहल-

सा हुआ। मैंने हिम्मत करके पूछा, 'महाराज! आपकी पीठ पर यह कैसा दाग है? अगर हर्ज न हो, तो इसका भी वृत्तान्त कृपा करके मुझसे कहिये।' मेरी बात सुनते ही मन्यासी महाराज सिहर उठे। उनका चेहरा पीला पड़ गया। उन्होंने मेरी बात उड़ाकर, पीठ फिर कपड़े से ढक ली पर मेरा मन उस चिह्न का कारण जानने को अधीर हो उठा। सब आदमी चले गये, पर मैं रात के ग्यारह बज जाने पर भी न उठा, वहाँ बैठा ही रहा। जब एकान्त हो गया, तब मैंने फिर बात छेड़ी। सन्यासी ने मेरा हठ देख कर कहा—

'कोई दिलसोज़ हो तो कीजे बयाँ
सरसरी दिल की वारदात नहीं ॥हाली॥

भैया, कोई सहृदय हो तो दिल का हाल सुनाये। यह साधारण घटना नहीं जो हर किसी को सुना दी जाय।

मुसीबत का इक-इक से अहवाल कहना।
मुसीबत से है यह मुसीबत ज़ियादा॥

जिस-तिस से अपनी मुसीबत की कहानी कहते फिरना— मुसीबत से भी ज़ियादा मुसीबत है।'

मैंने कहा, "महाराज! मैं आपका हूँ। मैं आपके लिए जान देने तक को तैयार हूँ। आपकी कही हुई बात जीवन-भर मेरे ही अन्दर रहेगी। मेरे, आपके और ईश्वर के सिवा उसे और कोई न जानेगा। आप कृपा करके मुझसे सारी बात बेखटके कहिये।"

तब महात्माजी बोले, 'अच्छा बच्चा! सुनोगे ही, बिना सुने न मानोगे? अच्छा लो सुनो :—

सन्यासी की आत्म-कथा।

मैंने एक धनी घर में जन्म लिया था। छोटी ही उम्र में मुझे बच्चा छोड़कर मेरे माँ बाप स्वर्ग को सिधार गये, पर मेरे लिए अच्छी खासी सम्पत्ति और आमदनी छोड़ गये। चूंकि मेरा जन्म शुक्ल-घराने में हुआ था, इसलिये मेरे जिजमान भी बहुत थे। हमारे यहाँ पुरोहिताई होती थी। जिजमानों के यहाँ से खूब धन-धान्य मिलता था। हर तरह पौ बारह थे। पाँचो उँगली सदा घी में रहती थीं। मेरे बेहद आमदनी थी, तो भी, मैं धन बढ़ाने की इच्छा से लेन देन या बोहरगत करता था। अड़ोस-पड़ोस, मुहल्ले-टोले और दूर-दूर के गाँवोंके आदमियों को मैं हैन्डनोट, तमस्सुक और हुण्डी लिखा-लिखाकर सूद पर क़र्ज़ देता था। पुरोहिताई की आमदनी तो थी ही, अब व्याज से भी खूब रुपया बढ़ने लगा। धन की वजह से मेरा रोब-दाब भी खूब था। थोड़े दिनों में, मैं म्यूनिसिपैलिटी का चेयरमैन हो गया। सरकार ने भी मुझे राय-बहादुर की पदवीसे विभूषित किया। जिन्दगी खूब आरामसे बसर हो रही थी। खुशामदी हर वक्त घेरे रहते थे। कह चुका हूँ कि मेरे माँ-बाप मुझे छोटा ही छोड़ कर मर गये थे, इसलिये अब तक मेरा विवाह न हुआ। यार-दोस्त और नाते-रिश्तेदार सभी मुझे

शादी कर लेने को दबाने लगे। कोई कहता, बिना स्त्री के यह धनवैभव किसी काम का नहीं। घरवाली बिना घर कैसा? कहा है:—

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं हि गृहिणीहीनमरण्यसदृशं मतम्॥

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या च प्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥

घर का नाम घर नहीं है, किन्तु स्त्री का नाम घर है। गृहिणी बिना घर वन के समान है।

जिसके घर मे माता नहीं है और मधुभाषिणी स्त्री भी नहीं है, उस घर को छोड़ कर वन मे चला जाना चाहिये, क्योंकि माता और स्त्री-हीन घर वन के समान है।

किसी ने कहा, वराहमिहिर जी कह गये हैं—

जये धरिण्याः पुरमेव सारं
पुरे गृहं सद्मनि चैक देशः।
तत्रापि शय्या शयने वरा स्त्री-
रत्नोज्ज्वला राज्यसुखस्य सारः॥

कोई कहने लगा—

अपत्यं धर्मकार्य्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा।
दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्चह॥

उत्पादनमपत्यस्य जातस्यपरिपालनम् ।
प्रत्यहं लोकयात्राया प्रत्यक्षंस्त्रीनिबन्धनम् ॥

बच्चे जनना, धर्म-कार्य करना, बीमारी में तीमारदारी करना, उत्तम रतिसुख एवं पुरखों के और अपने लिए स्वर्ग की प्राप्ति—ये सब काम एकमात्र स्त्री पर ही निर्भर हैं ।

स्त्री ही बच्चे जनती है, जन कर वही उन्हें पालती है और घर के तमाम काम भी वही करती है । सभी कामों में वही गृहस्थ की एकमात्र सहायता करने वाली है ।

भाई ! संसार की उत्पत्ति ही स्त्री-पुरुषों से है । पितरों का ऋण चुकाने वाले के लिए सन्तति की दरकार है । बिना पुत्र के कुल का नाम नहीं चलता और पुत्र बिना स्त्री के हो नहीं सकता, इसलिए आपको विवाह अवश्य करना चाहिये ।" लोगों के समझाने-बुझाने से मैं विवाह के लिए राजी हो गया । चूंकि मैं धनवान था, रूपवान था और कुलीन था, इसलिये एक उत्तम कुलीन की रूपवती कन्या मुझे मिल गई । यथा-विधि विवाह-कार्य सम्पन्न हो गया ।

विवाह होने से पहले मेरे घर का काम नौकर-नौकरानियों से चलता था, पर स्त्री ने आते ही बरस दिन के भीतर सबको धता बताया । वह कहा करती थी, "मैं भी तो आपकी दासी ही हूँ । ऐसा कौन-सा काम है, जिसे मैं नहीं कर सकती ? मैं सब काम कर सकती हूँ, फिर इनको रख कर धन नाश करने की क्या दरकार ? सिर्फ दो मियाँ बीवियों का खाना ही पकाना

पड़ता है। मैं ब्राह्मण की पुत्री और ब्राह्मण की स्त्री हूँ, अगर मुझसे इतना-सा काम भी न होगा, तो क्या होगा ? इतनी अमीरी और आराम-तलबी अच्छी नहीं। स्त्री का दिन भर हाथ-पर-हाथ धरे बैठा रहना अच्छा नहीं। बेकाम बैठे रहने से मन में सौ तरह के बुरे खयालात पैदा होते हैं। इसी से बड़े लोग बहू-बेटियों को कभी ख़ाली बैठने नहीं देते। घर में कुछ भी काम नहीं होता, तो चरख़ा ही कतवाते हैं।

'मैंने अँग्रेज़ी तो नहीं पढ़ी है, पर हिन्दी की पाँचवीं पुस्तक में पढ़ा है कि बेंजमिन फ्रैंकलिन महोदय कहा करते थे— "काहिली और घमण्ड का टैक्स राजाओं और पार्लमेण्टों के लगाये हुए टैक्सों से कहीं बहुत ज़ियादा भारी होता है (1)।" जौन पाल महाशय का कहना है कि सुस्ती बहुत-सी आपद्-विपदों का एक नाम है (2)। अँग्रेज़ों में एक कहावत है कि बेकारी कमज़ोर दिलों की पनाह और बेवकूफ़ों की तातील है (3)। जर्मनों में भी एक कहावत है कि सुस्ती संसार में सबसे भारी फ़िज़ूलख़र्ची है (4)। एनसेम महोदय कहते हैं, 'बेकारी ज़िन्दा आदमी की गोर है (5)।' फ्रैंच कहते हैं, 'आलस्य सारी बुराइयों की जड़ है (6)।" बर्टन साहब कहते हैं, "काहिली या बेकारी शरीफ़ी को पहचानते है शरीर और मन का विष है, शरारत की धाय है, तालीम की सौतेली माँ है, हानियों की मुख्य जन्मदातृ है, सात भयानक पापों में से एक है, शैतान के आराम करने का मुख्य गद्दा है एवं चिन्ता और खेद ही नहीं, इनके सिवा

और-और भी बहुत-से रोगों का बड़ा कारण है (7)।" स्पेनवाले कहते हैं कि काहिली से दिल पर जङ्ग लगती है (8)। अब आप ही कहिये कि मुझे आलस्य त्यागना चाहिये या आलसी होना चाहिये। एमील महाशय ने ठीक कहा है कि स्त्री के हाथ से ही कुटुम्ब की रक्षा और नाश है। मुझे हर तरह घर का पैसा बचाना चाहिये। इन्सान काम करने के लिए पैदा हुआ है। मौत के बाद आराम-ही-आराम है। देखिये मौलाना हाली ने क्या कहा है—

---

1. Idleness and pride tax with a heavier hand than kings and parliaments.—*Ben Franklin.*

2. Idleness is many gathered miseries in one name. *Jean Paul.*

3. Idleness is only the refuge of weak minds and the holiday of fools.—*Pr.*

4. Idleness is the greatest prodigality in the world. *Ger Pr.*

5 Idleness is the sepulchre of a living man *Anselm.*

6. Idleness is the root of all evils. *Fr. Pr.*

Idleness is the badge of gentry, the bone of body and mind the nurse of naughtiness, the step-mother of discipline, the chief author of mischief, one of the seven deadly sins, the cushion on which the devil chiefly reposes and a great cause not only of melancholy but of many other diseases —*Burton.*

8. Idleness rusts the mind —*Sp. Pr.*

फ़राग़त से दुनिया में दम भर न बैठो।
अगर चाहते हो फराग़त ज़ियादा॥
है जान के साथ काम इन्साँ के लिये।
बनती नहीं जिन्दगी में बेकाम किये॥
जीते हो तो कीजिये कुछ जिन्दों की तरह।
मुर्दों की तरह जिये तो क्या ख़ाक जिये॥

अगर आप चाहते है कि हम आराम से रहे, तो दम-भर भी ख़ाली मत बैठो, क्षण-भर भी बेकार मत रहो।

आदमी की जान के साथ काम लगा हुआ है। जिन्दगी मे बिना काम किये काम नहीं चलता।

जीते हो तो जिन्दों की तरह काम भी करो। मुर्दों की तरह जीने से क्या फायदा?

मै अपनी बीवी की पाण्डित्य-पूर्ण बातें सुनकर दङ्ग हो गया। आज मुझे मालूम हुआ कि मेरी पत्नी कोरी रूपवती ही नहीं, पूर्ण विदुषी और गुणवती है। ऐसी सुलक्षण स्त्री पाने से मैं अपने तई भाग्यवान समझने लगा। हाँ, इतना जरूर हुआ कि पुराने नौकरों को विदा करते समय मेरे दिल मे एक तरह की वेदना हुई, पर धीरे-धीरे इन बातो को भूल गया। फिर भी उनमे से यदि किसी को मै कष्ट पाते देखता, तो अपने यहाँ से खाने को आटा, दाल वगैरः दिलवा दिया करता, क्योकि मेरे यहाँ इन चीजो की कमी नहीं थी।

मेरी स्त्री सवेरे ही मुझसे बहुत पहले उठती, घर को साफ

करती, बर्तन मलती, चीजों को यथास्थान रखती, समय पर सुन्दर सुस्वादु भोजन बनाती, मुझे बड़े स्नेह से परोस कर खिलाती, रात को मेरे पाँव दाबती और जब तक मेरी आँख न लगती, पाँव दाबती ही रहती। बहुत क्या, वह मुझे हर तरह से सन्तुष्ट रखती थी। दिन-पर-दिन उसकी श्रद्धा-भक्ति मुझ में बढ़ती ही जाती थी। इसलिए मुझे भी उस पर मुग्ध होना पड़ा। पतिप्राणा और सती-साध्वी स्त्री पाकर कौन प्रसन्न नहीं होता? कौन अपने भाग्य की सराहना नहीं करता?

यद्यपि स्त्री के मुँह-सामने स्त्री की तारीफ करना नीतिकारों ने बुरा कहा है, तो भी जब कभी उसकी सेवा से मेरी अन्तरात्मा बहुत ही प्रसन्न और सन्तुष्ट हो उठती, मैं उसके सामने ही उसकी बड़ाई करने लगता। मेरी प्रशंसापूर्ण बातें सुन कर वह सिर नीचा कर लेती और कहती, 'पतिदेव! आप मेरे परमेश्वर हैं। मेरा तन-मन-धन सर्वस्व आप पर निछावर है। हमारे भारत में ही सीता, सावित्री, द्रौपदी, दमयन्ती और गान्धारी प्रभृति अनेकों प्रातःस्मरणीय पतिव्रतायें हो गई हैं, उनके मुक़ाबले में मैं तुच्छ हूँ। मैं आपकी क्या सेवा करती हूँ। स्त्री का धर्म ही पति-सेवा है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है:—

> एकै धर्म एक व्रत नेमा।
> काय-वचन-मन पतिपदप्रेमा॥

स्त्री का एक ही धर्म, एक ही व्रत और एक ही नेम है कि वह काय, वचन और मन से पति के चरणों में प्रेम रखे।

"पराशर संहिता" में लिखा है—

'दरिद्रं व्याधितं मूर्खं भर्त्तारं वावमन्यते ।
सा मृता जायते व्याली वैधव्यंच पुन. पुनः ॥

जो स्त्री अपने दरिद्री, रोगी और मूर्ख पति की भी अवज्ञा करती है, वह मरने पर साँपिन होती और कितने ही जन्मों तक उसे विधवा होना पड़ता है ।

"मनुसंहिता" मे लिखा है—

वैवाहिको विधिः स्त्रीणाम् संस्कारो वैदिकः स्मृत. ।
पतिसेवा गुरौवासो गृहार्थोऽग्निपरिक्रिया ॥

स्त्रियों के लिए विवाह ही उनका वैदिक संस्कार है, पति की सेवा ही उनके लिए गुरु-कुलवास है और घर के धन्धे करना ही अग्निहोत्र है ।

और भी:—

भर्त्ता देवो गुरुर्भर्त्ता, धर्म तीर्थ व्रतानि च ।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य, पतिमेकं समर्चयेत् ॥

स्त्री अपने पति ही को देवता, पति को ही गुरु, पति को ही धर्म और पति को ही व्रत समझे, सबको छोड़ कर केवल एक पति को ही पूजे ।

नास्ति स्त्रीणां पृथग् यज्ञो न व्रत नाप्युपोषितम् ।
पतिं शुश्रूषते येन, तेन स्वर्गे महीयते ॥

शास्त्रों में स्त्रियों के लिए यज्ञ, व्रत और पूजा-उपासना की

आज्ञा नहीं है केवल पति-सेवा से ही उन्हें स्वर्ग मिलता है।

"पञ्चतंत्र" में लिखा है—

न सा स्त्रीत्यभि मंतव्या यस्यां भर्त्ता न तुष्यति ।
तुष्टे भर्त्तरि नारीणां तुष्टा स्युः सर्वदेवताः ॥

उसे स्त्री न समझे, जिससे कि उसका स्वामी खुश नहीं रहता। पति के प्रसन्न होने से स्त्री पर सब देवता प्रसन्न हो जाते हैं।

दावाग्निना विदग्धेव सपुष्पस्तवकालता ।
भस्मी भवतु सा नारी यस्या भर्त्ता न तुष्यति ॥

जिस तरह फूल और फलों के गुच्छे वाली लता दावाग्नि से भस्म हो जाती है, उसी तरह वह स्त्री नष्ट हो जाती है, जिसका पति प्रसन्न नहीं होता।

मितं ददाति हि पिता, मितं भ्राता मितं सुतः ।
अमितस्य हि दातारं भर्त्तारं का न पूजयेत् ॥

पिता परिमित सुख देता है, भाई परिमित सुख देता है; लेकिन पति अमित सुख देता है, इसलिये अमित सुख देने वाले भर्त्ता की पूजा किसे न करनी चाहिये ?"

उस दिन मैं अपनी प्यारी बीबी की तकरीर सुनकर दिलो-जान से खुश हो हो-गया था, आज की तकरीर सुनकर मैं और भी सन्तुष्ट हुआ। बेसाख्ता मेरे मुँह से "पञ्चतन्त्र" का यह श्लोक निकल गया :—

पतिव्रता पतिप्राणा पत्युः प्रियहितेरता ।
यस्य स्यादीदृशी भार्य्या: स धन्यः पुरुषोभुवि ॥

जिसकी स्त्री पतिव्रता है, पतिप्राणा है, पति के प्रिय और हित में तत्पर है, वह पुरुष पृथ्वी पर धन्य है।

मैं ऐसी पतिव्रता का मिलना अपने पूर्व जन्म के पुण्यों का फल समझता था। मैं मन-ही-मन कहा करता था कि यह स्त्री अवश्य ही पूर्वजन्म की स्त्री है, तभी तो मुझे इतना चाहती है। कहा है—

> सती च योषित् प्रकृतिश्च निश्चला
> पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि ॥

सती स्त्री और निश्चल प्रकृति जन्म-जन्मान्तर में भी पुरुष के साथ रहती है। यही बात ठीक है। निश्चय ही यह मेरी पहले जन्म की भार्या है।

यों तो वह जिस दिन से मेरे घर आई थी, उसी दिन से मैं उसकी खूब खातिर करता था। वह जो कहती थी, सोई करता था, जो माँगती थी, सोई ला देता था। लेकिन अब उसकी श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, स्नेह, पाण्डित्य और विद्वता आदि अपूर्व गुणों का परिचय पाकर उसका क्रीतदास ही हो गया। मुझ पर मनु महाराज के निम्नलिखित श्लोकों का बड़ा प्रभाव था—

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥
> जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
> तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः ॥

तस्मादेता सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः ।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च ॥

जिन घरो में स्त्रियों का आदर होता है, उन घरो पर देवताओं की कृपा रहती है। जहाँ स्त्रियो का आदर नहीं होता, वहाँ देवताओं के नाराज रहने से सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं।

जिस घर में स्त्रियों का निरादर होता है, उस घर की स्त्रियाँ दुखित होकर शाप दे देती हैं। उनके शाप या बद्दुआ से वह घर इस तरह नष्ट हो जाता है मानो किसी ने विष देकर सबको मार डाला हो।

इसलिए, जो पुरुष समृद्धि चाहते हों, उन्हें चाहिये कि नित्यप्रति उत्सव प्रभृति के समय गहने, कपड़े और खाने पीने के पदार्थों से स्त्रियों की पूजा करें, उनका सत्कार करें।

मैं अक्षर-अक्षर मनु महाराज की आज्ञा पर चलता था। घर मे सोने-चाँदी के जेवर तो पहले से ही थे। अब मैंने दीवाली के त्योहार पर, कोई दो लाख के मोतियो की माला, हीरे पन्ने का हार और हीरे का काँटा प्रभृति अमूल्य गहने ला दिये। इतना ही नहीं, अपना सारा रुपया-पैसा उसके हाथ मे देकर निश्चिंत हो गया। आजकल मेरे दिन बड़े ही आराम से कट रहे थे।

एक दिन मैं मित्रों के साथ बैठकर हुक्का पी रहा था। बातों-ही-बातो मे मेरे मुँह से अपनी स्त्री की तारीफ की बातें निकल गई। मैंने कहा, भाइयो, मेरी स्त्री स्वर्ग की देवी और बड़ी ही सती-साध्वी है। आजकल मुझे इस पृथ्वी पर ही

स्वर्ग दीख रहा है ! मुझे घर-द्वार कहीं की फिक्र नहीं, मैं अपने सारे काम तुम्हारी भौजाई के हाथों में सौंप कर बेफिक्र हूँ।' एक मित्र ने मेरी बात काट कर कहा, 'शुक्लजी, घर से एक-दम लापरवाह रहना अक्लमन्दी नहीं। थोड़ा बहुत खयाल रखा करो। शास्त्र मे लिखा है—

बृहस्पतेरपि प्राज्ञो न विश्वासे व्रजेन्नरः।
य इच्छेदात्मनो वृद्धिमायुष्यञ्च सुखानि च ॥

जिस बुद्धिमान को अपनी आयु और सुख की वृद्धि की इच्छा हो, उसे देवगुरु बृहस्पति का भी विश्वास न करना चाहिये।

विश्वास तो किसी का भी न करना चाहिये, जिसमें स्त्री का विश्वास तो किसी हालत में भी न करना चाहिये। कहा है—

नदीनां च नखिनां च शृंगिणां शस्त्रपाणिनाम्।
विश्वासो नैव कर्त्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥

नदी का, नाखून वाले पशुओं का, सींग वाले जानवरों का, हथियार बाँधने वालों का, स्त्री का और राजकुल का विश्वास हरगिज़ न करना चाहिये।

महाराज भर्तृहरि ने भी कहा है—

को वा वीचिषु बुद्बुदेषु च तडिल्लेखासु च स्त्रीषु च।
ज्वालाग्रेषु च पन्नगेषु च सरिद्वेगेषु च प्रत्ययः ॥

जल की तरंग, बुलबुले, बिजली, स्त्री लोग, आग की शिखा, साँप और नदी के प्रवाह मे विश्वास करना सर्वथा अनुचित है।'

मैंने कहा, 'मित्रवर ! आपकी बात को मिथ्या और असंगत नहीं कहता, पर पांचों उँगलियाँ समान नहीं होतीं, संसार की सभी औरतें बदकार और व्यभिचारिणी नहीं हैं। इस जगत में पिंगला-सी कुलटा भी हैं और सीता-सावित्री-सी सती भी हैं। जिस तरह मर्द भले और बुरे दोनों तरह के हैं, उसी तरह स्त्रियाँ भी नेक और बद हैं। मैंने कामशास्त्र पढ़ा है। मुझे सती और असती स्त्रियों की पहचान मालूम है। मैंने आपकी भाभी को खूब देख लिया है। वह सौ टञ्चका खरा सोना है।' मेरी बातें सुनकर वह चला गया, कुछ न बोला। साल भर चैन से कट गया। इस बीच में किसी ने कुछ भी शिकायत न की।

एक दिन गाँव के कई आदमियों के साथ मैं दो तीन कोस पर मेले में गया। हम लोग वहाँ से लौटे आ रहे थे कि एक और मित्र ने कहा, "भाई, स्त्री जाति बड़ी ही चालाक है। उसकी माया को समझना बड़ा कठिन काम है। स्त्री के दिल में क्या है, इस बात को देवता भी नहीं जानते, पुरुष की तो ताक़त ही क्या है, जो उसके भेद को जाने। स्त्री कितनी ही भक्ति क्यों न दिखावे, कितना ही प्यार क्यों न करे, उसे सदा सन्देह की नज़र से देखना चाहिए। मैं समझता हूँ, मेरी स्त्री जैसी पतिव्रता है, संसार में और नहीं है। अहा ! कैसी अच्छी बातें हैं। कैसा स्वर्गीय-प्रेम है ! हम दोनों का कैसा मेल है ! लेकिन भाई, यह हमेशा याद रखो कि रोशनी के नीचे ही अँधेरा रहता है। जिसके हाथ में चिराग़ है, वह कुछ

नहीं देख सकता; बल्कि दूसरे ही देख सकते हैं कि कहाँ ऊँचा है और कहाँ नीचा है। भाई! साफ बात कहने के लिए क्षमा करना। लोग तुम्हें निरा औरत का गुलाम कहते है। सुनते हैं आपके घर में कुछ गोलमाल है। परमात्मा करे, यह बात क़तई झूठी हो; लेकिन तुम्हें होशियार अवश्य रहना चाहिये। एक बात और है, अपने तईं जो प्यार करे, उसकी कभी न कभी परीक्षा जरूर करनी चाहिये। भगवान सब के दिलों की भीतरी बातों को जानते हैं, तो भी अपने भक्तों की परीक्षा लिया करते हैं। बिना परीक्षा तुम कैसे समझ सकते हो कि तुम्हारी स्त्री तुम्हें प्यार करती है या धोखा देती है। अगर तुम्हारा यह खयाल है, कि मैं हृष्ट पुष्ट और बलिष्ट हूँ, मेरी स्त्री मुझसे अवश्य सन्तुष्ट होगी, तो यह आपकी भूल है। सुनिये, शास्त्रकारों ने कहा है:—

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां, नापगानां महोदधिः।
नांतकः सर्वभूतानां, न पुंसां वामलोचना ॥ १ ॥

काकेशौचं द्यूतकारे च सत्यं,
सर्पैक्षांतिः स्त्रीषुकामो नराणाम्।
क्लीवे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता,
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥ २ ॥?

यदतस्तन्न जिह्वायां यज्जिह्वायां न तद्बहिः।
यद्बहिः तन्न कुर्वन्ति विचित्रचरिताः स्त्रियः ॥ ३॥

अंतर्विषमया ह्येता बहिश्चैव मनोरमाः।
गुञ्जाफलसमाकाराः स्वभावादेव योषितः ॥ ४ ॥

दास बनाते और सब तरह से सुखी करते हैं। फिर, मैं भी भगवान की तरह अपनी स्त्री की परीक्षा क्यों न करूं? परीक्षा करने मे हानि ही क्या है? परीक्षा का फल मेरे बड़े काम आयेगा। अगर खरा सोना निकला, तो मैं अपने प्यार की मात्रा और भी बढ़ा दूंगा। लोग भी फिर इस तरह की दिल बिगाड़ने वाली बाते न बनायेंगे। भगवान रामचन्द्र जानते थे कि सीता एक दम निर्दोष है, खरा सोना है, चन्द्रमा कलङ्की है, पर सीता निष्कलङ्क है। इतने पर भी उन्होंने सीता की अग्नि-परीक्षा की। उसका नतीजा अच्छा ही हुआ। सीता और उनका-दोनों का ही मुँह संसार के सामने उज्ज्वल हुआ। मैं भी वैसा ही क्यों न करूँ?

इस तरह सोच विचार कर,एक दिन मैंने अपनी स्त्री से कहा, 'आज मुझे बड़ा जरूरी काम है। वह काम बिना बाहर जाये हो नहीं सकता।'' वह मेरी बात सुनते ही मेरे गले लगकर बार-बार रोने लगी और कहने लगी, ''स्वामिन्। आपका एक क्षण भर का वियोग भी मैं सहन नहीं कर सकती। आपके बिना मेरा जीवन खतरे मे समझिये। आप मुझे छोड़ कर कहीं न जाइये।' उसका उस समय रोना-कलपना देख कर मेरा दिल कमजोर होने लगा। मैं मन-ही-मन कहने लगा, 'हाय मैं ऐसी सती को वृथा क्यो दुःख दे रहा हूँ? लोगों की ऊल-जलूल बातों में आकर, मैं क्यों अपने सुख को मिट्टी कर रहा हूँ? अचल हिमालय चलायमान हो तो हो सकता है, सूर्य पूर्व की जगह पश्चिम में उगे तो

उग सकता है, समुद्र अपनी मर्यादा उल्लङ्घन करे तो कर सकता है, अग्नि अपनी दाहक शक्ति त्यागे तो त्याग सकता है, पर मेरी यह प्राण प्यारी असती या कुलटा नहीं हो सकती।' मै ऐसे ही विचारों में गोते खा रहा था कि अन्दर से मेरी अन्तरात्मा ने कहा कि 'कदाचित तुम्हारा ख्याल ठीक हो, पर परीक्षा कर लेने में कौनसा हर्ज है ? एक बार परीक्षा कर लेने से सदा को वहम मिट जायगा। मैंने स्त्री से कहा, "काम जरूरी न होता, तो मैं तुम्हें इतनी तकलीफ न देता। इस बार मुझे जाने दो, भविष्य में कहीं न जाऊँगा।" उसने कहा, 'तुम्हारे बिना मैं रात भर अकेली कैसे रहूँगी ? मुझे घर खाने को दौड़ेगा। अपने एक मात्र आश्रय तुम्हें छोड़कर मै कैसे जाऊँगी ? तुम्हारे बिना मुझे एक पल प्रलय के समान मालूम होता है।" यह कहते-कहते वह फिर फूट-फूट कर रोने लगी। उसकी कमल-सी आँखों से गङ्गा-जमुना की-सी धारें बहने लगीं। आँसुओं के मारे उसका अंचल और मेरा कुर्ता तर हो गये। मैंने कहा, "बिना जाये काम न चलेगा, बड़ा नुकसान होगा। अब मेरे दिल को कच्चा न करो। श्यामा की माँ से कहे जाता हूँ। वह आकर रात को तुम्हारे पास सो रहेगी।" उसने कहा, "नहीं, नहीं, मै आपका नुकसान नहीं चाहती, आपका नुकसान भी तो मेरा नुकसान है। लाचारी है। आप चिन्ता छोड़िये। श्यामा की माँ को मैं ही बुला लूंगी। आप भगवान का नाम लेकर यात्रा कीजिये। देखो, राह-बाट मे सब तरह से होशियार रहना।"

मै उसे दम दिलासा देकर घर से बाहर निकल गया। उस समय सन्ध्या के पाँच-साढ़े पाँच बजे होंगे। थोड़ा सा दिन बाकी था। कुछ रात होने तक मैं इधर-उधर फिरता रहा। ज्योंही अन्धकार का पूर्ण राज्य हो गया, हाथ को हाथ न सूझने लगा, मै अपनी खिड़की के सामने खड़े हुए इमली के पेड़ पर चढ़ गया। ध्यान रहे कि मेरे घर के चारों तरफ एक चहारदीवारी थी। उस वृक्ष से मेरे घर का करीब-करीब बहुत सा हिस्सा दिखाई देता था। मै पेड़ पर बैठा ही था कि इतने मे किसी ने आकर खिड़की के किवाड़ खटखटाये और धीरे से कहा, 'करुणा ! किवाड़ खोल।" आने वाले की आवाज मेरी जानी हुई-सी मालूम हुई। करुणा मेरी स्त्री का नाम था। करुणा ने आकर दरवाजा खोल दिया। तब उस मर्द ने कहा, 'मैं थोड़ी-देर में नशे-पत्ते से टिचन होकर आता हूँ। तुम खाने-पीने का इन्तजाम करो।'

यह कह कर वह आदमी चला गया। करुणा खिड़की के किवाड़ बन्द करके, रसोई की धुन मे लगी। सड़क पर सामने लाल्टेन जल रही थी जब वह लाल्टेन के नजदीक पहुँचा, तब मैंने रोशनी में उसका चेहरा देख कर पहचान लिया। वह और कोई नहीं, हमारे पाड़े का चौकीदार था। वह कभी-कभी मेरे घर आया-जाया करता था।

'खाने पीने का इन्तजाम करो'—इस फिकरे को सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। शरीर थरथर थरथर काँपने लगा। जमीन घूमती हुई मालूम होने लगी। आँखों के सामने अँधेरा

छा गया। ऐसा मालूम होने लगा, मानो मैं अभी पेड़ से नीचे गिर पड़ूँगा। थोड़ी देर में अपने दिल को मजबूत करके मैं सम्हल बैठा और निश्चय किया कि देखना चाहिये आगे क्या होना है। कोई दो घण्टे बाद उसी चौकीदार ने आकर फिर आवाज़ दी। आवाज़ सुनते ही करुणा दौड़ी आई और दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़ा खुलते ही, उसने करुणा को गोद में उठा, उसका मुँह चूम लिया। इतना ही नहीं, उसने द्वार पर ही उसे ज़ोर से छाती से चिपटा लिया और बोसे-पर-बोसे लेने लगा। फिर वह उसे गोद में लिये हुए ही घर के भीतर दाखिल हो गया। मैं अन्दाज़ से समझ गया कि दोनों मेरे पलँग पर बैठे हैं। कुछ देर में उनकी धीरे-धीरे आने वाली आवाज से मालूम हुआ कि मज़े में गाना गाया जा रहा है। कभी-कभी हँसी-मज़ाक भी होता है। ऐसा मालूम होता था, मानो दोनों बेखटके हैं। उन्हें ज़रा भी डर या खौफ नहीं है।

इधर खिड़की तो बन्द कर दी गई, पर जल्दी में साँकल बन्द नहीं की गई। उस समय मेरी बुरी हालत थी, क्रोध के मारे काँप रहा था। दिल में इतना जोश आया कि उसी समय उनके सामने जाकर खड़े हो जाने की इच्छा होने लगी, पर अक्ल कहती थी, ज़रा धीरज से काम लो। इस लिए मन को रोक कर कहा 'अहो! यह तो परले सिरे की व्यभिचारिणी है, कुलटा है नीच है, दग़ाबाज़ है, बेवफ़ा है। इस पर क्रोध करने से क्या फ़ायदा? पिसे को पीसने से क्या लाभ? जो हो गया है, वह तो अब

मिट नहीं सकता । अगर यह आज पहले पहल ही कीच मे फँसती, तो इसे न फँसने देता, पर यह तो कब की भ्रष्ट हो चुकी है। मैं बहुत दिनों से धोखा खा रहा था। अब क्या? इसलिये धीरज धरकर देखना चाहिये कि आगे-क्या-क्या होता है।'

इस तरह दिल को समझा-बुझाकर, आगे की नयी घटना देखने की राह देख रहा था। कुछ देर बाद देखा कि करुणा बाहर की तिदरी मे आकर खड़ी है। उसके सिर के बाल बिखर रहे है और छाती बिल्कुल खुली हुई है। यह तमाशा देखकर मेरी तबियत फिर भड़क उठी। लेकिन थोड़ी देर में फिर सम्हल गई। मुझे खूब याद है, उसने धोती पहन कर, मेरे हुक्के मे तमाखू चढ़ाई और उसे भीतर दे आई। फिर वह रसोई मे घुसी। वहाँ जाकर उसने देखा कि, वह जो कुछ चूल्हे पर चढ़ा गई थी वह जलकर खाक हो गया है। उसने जली हुई चीज को धोकर बर्तन साफ किया और उसमे फिर कोई चीज पकने को रक्खी। इन कामों मे उसे एक घण्टे के करीब लगा। भोजन तैयार हो जाने पर, उसने आसन बिछा दिया। आसन के सामने चौकी रख कर, बगल में जल से भरा एक चाँदी का लोटा और गिलास रख दिया। फिर वह रसोई मे जाकर थाल सजाने लगी। ये सब, कुछ तो देखकर और कुछ अटकल लगा कर मैंने समझ लिया।

अब जियादा बर्दाश्त न हुई। एक दम से जोश आ गया। मै धीरे-धीरे वृक्ष से उतरा और चुपचाप खिड़की की राह घर मे घुस गया। जाकर क्या देखता हूँ, कि धूल से भरे हुए पैरों से चौकी-

दार मेरे दूध के समान सफ़ेद और नर्म नर्म पलंग पर बेखबर सो रहा है। भाई, उस समय मेरे दिल की क्या हालत हुई होगी, इस बात का अन्दाजा तुम खुद ही कर सकते हो। मैं तो उसे अपने पलँग पर सोते हुए देखते ही जल कर खाक हो गया। एड़ी से चोटी तक खून गर्म हो गया। क्रोध की हद न रही। सच तो यह है कि मैं गुस्से से अन्धा हो गया। मुझे जरा भी होश न रहा। सामने से देखा कि चौकी पर चाँदी का थाल रख दिया गया है। सामने ही एक गँड़ासा पड़ा दीखा। मैंने आव देखो न ताव, चट से गँडासा उठाकर चौकीदार की गर्दन पर मारा और उसका सिर धड़ से जुदा कर दिया। इन बातों के कहने में देर लगी है, पर उसका काम तमाम करने में देर न लगी। मैं फौरन ही उल्टे पैरों बाहर आकर, उसी वृक्ष पर चढ़ गया।

मेरे वृक्ष पर चढ़ जाने के बाद, करुणा रसोई से निकल कर चौकीदार को भोजन के लिए बुलाने को कमरे में घुसी। वहाँ जाकर उसने देखा कि बिस्तर खून से लथपथ हो रहा है और चौकीदार का सिर धड़ से अलग पड़ा हुआ है। वह वहाँ का दृश्य देखकर घबरा गई, क्योंकि उसके सर से पसीना टपक रहा था और होश-हवास फाख्ता थे। बाहर एक शमादान जल रहा था। वह उसके सामने खड़ी होकर, सिर पर हाथ रख कर, कुछ सोचने लगी और रह रह कर लम्बी साँस लेने लगी। फिर वह बैठ गई और करीब आध घण्टे तक उसी तरह बैठी रही। इसके बाद उसने खाने का सामान चौकी से उठाकर रसोई में रख दिया।
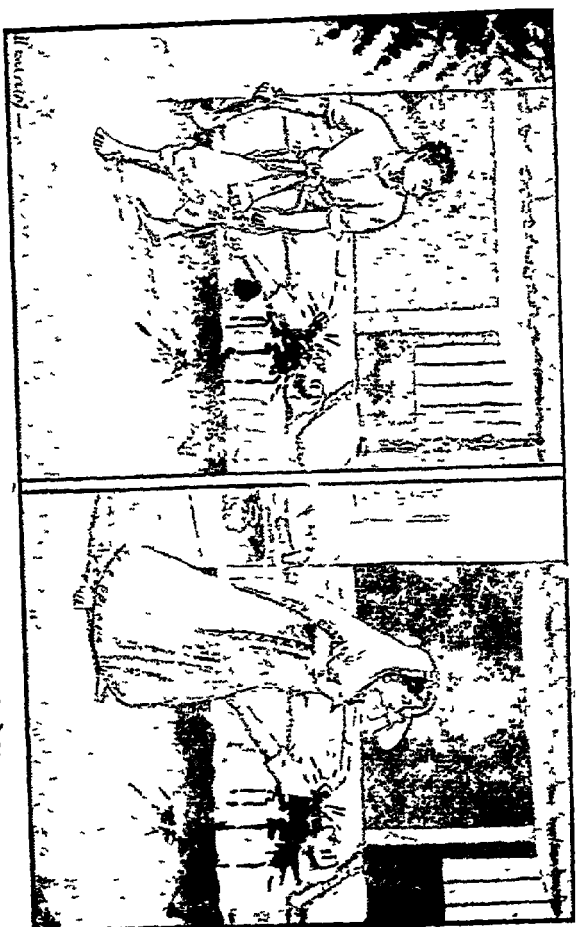
मैने चौकीदार का सिर धड से जुदा कर दिया। मै फौरन ही उलटे पैरों आकर उस वृक्ष पर चढ गया। करुणा चौकीदार को भोजन के लिए बुलाने को कमरे मे घुसी। वह वहाँ का दृश्य देख कर घबरा गई। वह उसके सामने खडी होकर, सिर पर हाथ रख कर कुछ सोचने लगी।

[पृष्ठ ३०८

पीछे उसने एक टाट की बोरी लाकर, उसमें चौकीदार की लाश रखी और उसका मुँह अच्छी तरह से बाँध कर उसे सर पर उठा लिया और एक कुदाल हाथ मे लेकर घर से बाहर निकली। कहने की जरूरत नहीं कि वह घर से बाहर जाते समय खिड़की का ताला बन्द करती गई। उसके कुछ दूर चले जाने पर, मैं भी पेड़ से नीचे उतर, कुछ फासिले से उसके पीछे हो लिया। वह उस लाश को सर पर रखे हुए, दो कोस दूर के एक श्मशान-घाट पर पहुँची। लाश को नीचे पटक कर, उसने एक गहरा खड्डा खोदा और उसमे लाश दफना दी। इसके बाद वह फिर घर लौटी और थोड़ी देर मे घर पहुँच गई। मै भी उसके पीछे पीछे आकर उसी पेड़ पर चढ़ गया।

मैं उसी वृक्ष से फिर देखने लगा कि अब वह क्या करती है। घर मे आकर उसने दरवाजा बन्द कर दिया और बिस्तर, चादर और लिहाफ वगैर: गोबर और पानी मे मल-मल कर धोने लगी, लेकिन खून न छूटा। तब उसने उन्हें एक बड़ी बाल्टी मे भिगो दिया। तख्तपोश और ज़मीन पर जो खून के दाग़ थे, वे सब उसने गोबर और मिट्टी से साफ कर दिये। ये सब काम करके वह दालान मे आकर कुछ सोचने लगी।

इस समय मेरा क्रोध कुछ कम हो गया, लेकिन दिल नफरत मे भर गया। मैं मन-ही-मन कहने लगा, 'जो स्त्री पति की गोद मे बैठ कर रह-रह कर काँप उठती थी, जो घर में चूहे के खड़का करने से डर जाती थी, वही आज मोटी-ताजी लाश को, जिसे

दो आदमी भी आसानी से उठा नहीं सकते, सिर पर रख कर अकेली, रात के एक बजे श्मशान पर पहुँची ! जो स्त्री अपना मतलब साधने के लिए ऐसे-ऐसे काम कर सकती है, उसके लिए ऐसा कौन-सा काम है जिसे वह न कर सकती हो ? यह अबला कुल-कामिनी है या आदमी को कच्चा ही चबा डालने वाली सबला राक्षसी है ? क्या मेरे आदर और प्यार का यही नतीजा है ? कौन कह सकता है कि यह किसी दिन मुझे भी न मार डालेगी ? रोशनी के नीचे अँधेरा रहता है, अब यह बात मेरी समझ में अच्छी तरह से आ गई । अब मेरी आँखें खुल गईं । मेरे मित्रों ने मुझे कितनी ही बार सावधान किया, पर उस समय मेरी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ था । मेरी मति मारी गई थी। मेरे हाथ में चिराग़ था, इसलिए मुझे कुछ न दीखता था । अब मोह का पर्दा हटते ही, चिराग़ दूसरे के हाथ मे जाते ही, मुझे अपना बुरा-भला दीखने लगा । अब भी मै सावधान हो सका हूँ, इसके लिए मै अपने तईं धन्यवाद देता हूँ । अस्तु, सवेरा होने मे विशेष देरी न देखकर, मै पेड़ से नीचे उतर आया और खिड़की के पास जाकर आवाज़ लगाई। मैंने इतनी जल्दी दो तीन आवाज़े लगाइं कि वह और कुछ सोचने का मौक़ा न पा सकी । अतः उसने फ़ौरन दरवाज़ा खोल दिया ।

मेरे घर में घुसते ही, उसने झटपट बैठने के लिए आसन बिछा दिया । इसके बाद उसने हुक्क़ा चढ़ा कर मेरे हाथों में दे दिया और कहने लगी, "तुम कह गये थे, पता नहीं मैं कितनी रात रहे

चला आऊँ, इसलिये अभी तक दिया बाले बैठी हूँ। तुम जैसा कठोर कोई न होगा। श्यामा की माँ को बुलाने आदमी भेजा था, मगर मालूम हुआ कि वह घर में नहीं है। इसी से चिराग जलाये बैठी हुई, तुम्हारी राह देख रही हूँ। मालूम होता है, सवेरा होने मे अब देर नहीं है।"

हुक्के का जल खराब होने का बहाना करके, मैंने जेब से सफरी हुक्का निकाला और उस पर चिलम रख कर पीने लगा। साथ ही उसकी बातचीत का ढंग और चेहरे का उतार-चढ़ाव देखने लगा। देखा, आज रात को घर में इतनी गड़बड़ी हो गई है, ऐसी भयङ्कर घटना घटी है, लेकिन उसके चेहरे से वह बात मालूम नहीं होती। वह पहले जिस तरह प्यार-मुहब्बत से बातें किया करती थी, आज भी वैसे ही कर रही है। किसी बात में जरा भी फर्क नहीं। मैंने पूछा, "बिस्तर चौक में क्यों पड़ा है ?" उसने झट जवाब दिया, "अकस्मात् बिल्ली ने आकर पेशाब कर दिया। क्या करती, लाचार होकर कपड़े पानी में भिगो दिये हैं। रात को तालाब पर कैसे जा सकती थी ?" मैंने पूछा, "यह आसन किस लिए बिछा हुआ है ?" उसने कहा, 'आपके सिवा और किसके लिये ? आप आयेंगे, इसलिये सब तरह की तैयारी कर रखी है। भोजन-ओजन सब तैयार है। सिर्फ खाने-भर की देर है। लाऊँ क्या ? आप थके हुए हैं, इसी से विलम्ब कर रही हूँ।' मैंने कहा, "अभी नहीं खाऊँगा। रात को बहुत खा लिया था, इसलिये पेट भरा हुआ है। जरा बड़ी बोरी तो लाओ। कुछ काम है।" उसने

कहा, "उस पर बिल्ली ने हग दिया था, इसलिये वह भिगो रखी है।" मैंने कहा, "यहाँ जो कुदाल रखा था, वह कहाँ गया?" उसने कहा, "अमृत बाबू का लड़का ले गया था, पर जब उसने लौटाकर दिया तो वह कीच में सना हुआ था, इसलिए उसे भी पानी मे भिगो रखा है।" उसके ये सब जवाब सुनकर मैंने झुँझलाते हुए कहा, "इस बड़े थैले में कुछ रख और फिर उसे श्मशान-घाट ले जाकर क्या किया था?" मेरी यह बात सुनते ही उसके समझने मे कुछ शेष न रहा। उसने एकदम से जल-भुनकर कहा, "ओह! तुही वह कलमुहाँ है?" यह कहते हुए, उसने सामने रखा हुआ गंडासा उठाकर मेरी पीठ पर मारा। मै उससे कुछ न कह, अपनी पीठ पर पट्टी बाँध, चुपचाप घर से निकल आया। इस समय सूरज खूब ऊँचा चढ़ आया था। लोग अपने-अपने काम-धन्धों मे लग गये थे। मैंने कहा, "शास्त्र में ठीक ही लिखा है

आस्तां तावत्किमन्येन दौरात्म्येनेह योषिताम्।
विधृतं स्वोदरेणापि घ्नन्ति पुत्रं स्वकं रुषा ॥

स्त्रियों के दौरात्म्य की हद नहीं, ये नाराज होकर अपने पेट से निकले हुए पुत्र को भी मार डालती हैं।

इस समय यहाँ से निकल भागने में ही जीवन की खैर है। यह हत्यारी मुझे मारे बिना न छोड़ेगी। अगर और तरह न मार सकेगी, तो विष खिलाकर या किसी और तरह मार

डालेगी। जीवन रहेगा, तो अपने मोक्ष या अपने उद्धार का उपाय तो कर सकूँगा। ऐसा विचार करके, मैं वहाँ से फौरन ही नौ दो ग्यारह हुआ। गलियों मे छिपता हुआ, अपने उसी उपदेशक मित्र के पास पहुँचा। मित्र ने मेरी हालत देखकर पूछा—"कहो, खैर तो है? यह क्या हाल है? पीठ मे से खून क्यों बह रहा है?" मैंने पहले महाकवि अकबर का यह शेर कह सुनाया :—

जिसकी उल्फत का बडा दावा था अकबर! कल तुम्हे।
आज हम जाकर उसे देख आये, हरजाई तो है॥

भाई! जिसकी मुहब्बत का हमे कल बड़ा घमण्ड था, आज उसे हमने देख लिया, वह तो कुछ नहीं, निरी हरजाई है। मित्र! तुमने सच कहा था; पर समय आये बिना काम नहीं होता। बिल्वमंगल को महात्मा नारद ने बहुत समझाया, पर उन्होंने वेश्या का संग न छोडा। लेकिन समय आने पर फौरन ज्ञानोदय हुआ और उन्होंने उसे त्याग दिया। मैंने आपकी बात मानकर, कल रात को स्त्री की परीक्षा की। वह तो अव्वल दर्जे की कुलटा निकली। वह अपनी गली में पहरा देने वाले नीच चौकीदार से फँसी थी। इसके बाद मैंने सारी कहानी आदि से अन्त तक सुना दी। मित्र ने पुलिस के भय से मुझे एक गुप्त स्थान में छिपा दिया और जब तक मुझे पूरी तरह से आराम न हो गया, मेरी खूब ही सेवा-शुश्रूषा की।

इस घटना से मेरा दिल ऐसा खट्टा हुआ कि मैंने अपनी

सारी दौलत उसी कुब्जा के पास छोड़कर जङ्गल की राह ली। मुझे अब संसार अत्यन्त बुरा मालूम होता है। जब कभी मेरे मन में वेदना होती है, यह श्लोक मेरे मुँह से निकल जाता है। अब तो मैं सभी को उपदेश देता रहा हूँ कि भाइयो! स्त्री-जाति से सावधान रहो। इस काली नागिन का विश्वास मत करो। जो इसके फन्दे में फँस कर ईश्वर को भूलता है, अपना मनुष्य-जन्म वृथा गँवाता है। स्वामी शंकराचार्य ने बहुत ठीक कहा है—

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः।
संसारोऽयमतीव विचित्रः॥
कस्य त्वं कः कुत आयातः।
तत्त्वं चिन्तय यदिदं भ्रातः॥
भजगोविंदं भजगोविंदं गोविंदं भज मूढ मते॥

कौन तेरी स्त्री है? कौन तेरा पुत्र है? यह संसार अतीव विचित्र है। हे भाई! इस असल बात को विचार कर कि, तू कहाँ से आया है? कौन तेरा है? अरे मूढ़! सबको तज और गोविन्द को भज!

बकौल मौलाना हाली—

रंजिशो इल्तफ़ातो नाज़ो नियाज़।
हमने देखे बहुत नशेबो फ़राज़॥

सुख-दुख, मिलन और विरह प्रभृति संसार के उतार-चढ़ाव हमने खूब देख लिये। अब हमारी तो यह राय है कि इस

संसार में अपना कोई नहीं है। सभी अपना-अपना मतलब गाँठने को हमारे बने हुए हैं। सच्ची मुहब्बत किसी में भी नहीं। यद्यपि दुनिया धोखे की टट्टी है, तो भी सारा संसार इसमें फँसा हुआ है। क्या किया जाय, बिना फँसे काम भी तो नहीं चलता। सब फँसते हैं, पर कोई दाना, विचारवान नहीं फँसता। जो नहीं फँसता, वही इस लोक और परलोक में सुख पाता है। किसी कवि ने खूब कहा है—

दुनिया ने किसका राहे फना में दिया है साथ ?
तुम भी चले चलो यूँही जब तक चली चले॥

संसार ने किसी का साथ नहीं दिया। इसलिये जब तक यह चल रहा है तुम भी चले चलो, इससे दिल मत लगाओ। दिल लगाओ तो इसके बनाने वाले के साथ लगाओ, क्योंकि अन्त में वही दयामय काम आयेगा। यों तो वह दयामय धर्मात्मा और पापात्मा सभी पर दया करता है पर धर्मात्मा उसे विशेष प्यारे हैं। इसलिये धर्म-संग्रह करना चाहिये। कहा है :—

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्म संग्रहः॥

शरीर अनित्य है, हमेशा नहीं रहेगा, ऐश्वर्य भी सदा नहीं रहेगा और मृत्यु सदैव निकट है, इसलिये धर्म संग्रह करो।

यस्य धर्मविहीनानि दिनान्यायान्ति यान्ति च।
स लोहकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति॥

धर्म के बिना जिसके दिन आते और जाते हैं, वह लुहार की धौंकनी की तरह साँस लेता हुआ भी नहीं जीता।

—❀—

मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हलाहलमेव केवलम्।
अतएव निपीयतेऽधरो हृदयं मुष्टिभिरेव ताड्यते ॥ ८२ ॥

स्त्रियों की बातों में अमृत और हृदय में हलाहल विष है: इसलिए पुरुष उनका अधरामृत पान करते और उनकी छातियों का मर्दन करते हैं।

खुलासा—मनुष्य का स्वभाव है कि वह अमृत को शौक से पीता और विष से घृणा करता है, इसलिये पुरुष स्त्रियों के निचले होठों को चूसते और उनके कुचों को मलते (पीटते) हैं क्योंकि उनके होटों में अमृत और कुचों के नीचे हृदय में विष रहता है।

महाकवि कालिदास स्त्रियों के मनमोहक रूप से खुश और उनके हृदय की कठोरता से दुखित होकर कहते हैं:—

इंदीवरेण नयनं मुखमंबुजेन कुंदेन दंतमधरं नवपल्लवेन।
अंगानि चंपकदलैः स विधायवेधाः कांते! कथं घटितवानुपलेन चेतः॥

हे प्यारी! उस ब्रह्मा ने नील कमलों से नेत्र, कमल-सा मुख, कुन्द-से दाँत, नये पत्तों जैसे होठ और चम्पा के पत्तों के समान अन्यान्य अङ्ग बनाकर, स्त्री का हृदय पत्थर से क्यों बनाया?

स्त्रियों का हृदय पत्थर के समान होता है, इसमें शक नहीं। इस हृदय के कठोर होने के कारण से ही उनमें दया, वफा और

मुहब्बत नहीं होती। जो उनके ऊपर जान देता है, जो उनकी इच्छा पूरी करने के लिए दिन को दिन और रात को रात नहीं समझता, जो उनके लिए घोर परिश्रम करता और तरह तरह की झिल्लतें सहता है, उनको धन और गहने देता, उनका मान रखता और खुशामद करता एवं रतिक्रीड़ा से उनको अच्छी तरह सन्तुष्ट करता है उनको वे निर्दयतापूर्वक, ज़रा-सी देर में, त्याग कर चली जाती हैं। ऐसी स्त्रियों का हृदय यदि पत्थर का नहीं तो किसका है ?

दोहा

अधरन मे अमृत बसत, कुच कठोरता वास।
याते इनको लेत रस, उनको मर्दन त्रास॥ ८२॥

भाव—स्त्री का दिल पत्थर से बना है और उसमें विष भरा है, इसी से उसमे वफ़ादारी नहीं, किन्तु निर्दयता, छल-कपट, दगाबाजी और फ़रेब प्रभृति दुर्गुण भरे है।

82. There is sweetness in the speech of a woman and poison in her heart, therefore, the lips are tasted and the breasts are pressed by the fist.

—❀—

एक स्त्री की पहले सिरे की बेवकूफ़ाई

अपूर्व त्रिया चरित्र !

प्राचीन काल में अमरावती नाम की एक नगरी बहुत ही उन्नत दशा में थी। चारों दिशाओं से व्यापारी देश-देशों का माल लेकर वहाँ आते थे और इस प्रान्त का माल दूर देशों में ले जाते थे। उस नगर में सैकड़ों करोड़पति थे। लखपतियों की तो गिनती ही न थी। शहर के साहूकारों में रतनसेन नाम का एक साहूकार सबसे अधिक धनी था। उसे कोई अरबपति और कोई खरबपति कहता था। उसका धन-वैभव देखकर, धनेश, कुबेर लाज के मारे मुँह छिप कर, हिमाचल के एक अञ्चल में जा छिपा था। आजकल के अमेरिकन धन-कुबेर राकफेलर, कारनेगी और फोर्ड भी उसके सामने तुच्छ थे। भारत में तो आजकल वैसा धनी मशाल लेकर ढूँढ़ने से भी न मिलेगा। उसके धन का अन्दाजा इसी से लगा लीजिये कि वह नित्य प्रति नौ लाख का एक रत्न-जटित कम्बल ओढ़ता और सवेरा होते ही उस कम्बल की रकम गरीबों को बाँट दी जाती थी।

संसार में सर्व सुखी कोई नहीं रहता। भगवान ने सुखिया से-सुखिया के पीछे एक न एक दुःख लगा रखा है। यद्यपि रतनसेन सारे भारत में अद्वितीय धनशाली था, उसके सुख-वैभव को देख

कर स्वर्ग के देवताओं को भी ईर्ष्या होती थी, पर वह अटूट धन-सम्पत्ति होने पर भी, सन्तान के लिए दुःखी रहता था, क्योंकि इस अपार सम्पत्ति को भोगने वाला कोई न था। उसने सन्तान के लिए तन्त्र मन्त्र जानने वाले पण्डितो से अनेको यज्ञ, हवन और अनुष्ठान कराये। इन सब कर्म काण्डो के फल स्वरूप या पूर्व जन्म के पुण्यों का समय आने से, उसके एक अपूर्व रूप-लावण्यवती परम सुन्दरी कन्या ने जन्म लिया। सेठ के महलो मे नौबत बजने लगी। गरीब और मुहताजों को इतना धन लुटाया गया कि उस नगर मे एक भी कगाल न रहा। कितने ही जन्म-दरिद्री तो लखपती बन गये।

रतनसेन ने उस कन्या का नाम कन्दर्पकला रखा। जन्म भर मे एक कन्या पाने से, सेठ उसका लालन पालन राजकुमार और राज कन्याओ से भी अच्छा करने लगा। कन्या भी चन्द्रकला की तरह बढ़ने लगी। समय बीतते क्या देर लगती है? कन्दर्पकला पॉच वर्ष की हो गई। सेठ ने कन्या की शिक्षा प्रभृति के सम्बन्ध मे पण्डितो से राय ली। पण्डितो ने कहा, "सेठ साहब! कन्या को पहले अच्छी शिक्षा दिलाइये। जिस तरह पुत्र को विद्याभ्यास कराना चाहिये, उसी तरह कन्या को भी विद्या पढ़ानी चाहिये। अशिक्षिता कन्या गृहस्थी रूपी गाड़ी को उचित रूप से चला नहीं सकती। "हेमाद्री-धर्मशास्त्र" मे लिखा है:—

कुमारी शिक्षयेद्विद्यां, धर्मनीतौ निवेशयेत्।
द्वयोः कल्याणदा प्रोक्ता, या विद्यामधिगच्छति॥

ततो वराय विदुषे, कन्या देया मनीषिभिः ।
एषः सनातनः पन्था, ऋषिभिः परिगीयते ॥
अज्ञातपतिमर्य्यादाम्, अज्ञातपतिसेवनाम् ।
नोद्वाहयेत् पिता बालाम्, अज्ञानधर्मशासनाम् ॥

कुँवारी कन्या को विद्या पढ़ानी चाहिये और धर्मनीति सिखानी चाहिये, क्योंकि जो कन्या विदुषी होती है, वह माँ और बाप—दोनों के कुलों का कल्याण करती है ।

जब कन्या विद्या और धर्मनीति में दक्ष हो जाय, तब किसी विद्वान वर के साथ उसका विवाह कर देना चाहिए। ऋषियों ने यही सनातन रीति बतलाई है।

जब तक कन्या पति की मर्य्यादा और पति-सेवा की विधि न जान ले और धर्मशासन से अनजान रहे, तब तक उसकी शादी न करनी चाहिए।

पण्डितों की व्यवस्था लेकर सेठ ने कहा, 'महाराज! विद्या पढ़ाने की बात तो मुझे स्वीकार है, पर जितनी विद्या, धर्मनीति और समाजनीति पढ़ाने की बात शास्त्र में लिखी है, उतना पढ़ने-सीखने के लिये कम-से-कम दस बरस तो चाहिएँ। अगर कन्दर्प-कला को इतनी ही शिक्षा देनी होगी, तो वह कम-से-कम पन्द्रह-सोलह बरस की हो जायगी। उतनी उम्र में विवाह करने से तो हम लोगों को नरक में जाना होगा; क्योंकि शास्त्र में लिखा है :—

अप्राप्तरजा गौरी, प्राप्ते रजसि रोहिणी ।
अव्यञ्जना भवेत्कन्या, कुचहीना च नग्निका ॥
व्यञ्जनैस्तु समुत्पन्नैः सोमो भुंक्ते हि कन्यकाम् ।
पयोधराभ्यां गन्धर्वा, रजस्यग्निः प्रतिष्ठितः ॥
तस्माद्विवाहयेत्कन्यां, यावन्नर्तुमती भवेत् ।
विवाहश्चाष्टवर्षायाः कन्यायास्तु प्रशस्यते ॥
व्यञ्जनं हन्ति वै पूर्वं, परं चैव पयोधरौ ।
रतिरिष्टांस्तथा लोकान्हन्याच्चपितां रजः ॥
ऋतुमत्यां तु तिष्ठन्त्यां स्वेच्छा दानं विधीयते ।
तस्मादुद्वाहयेन्नग्नां मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥
पितृवेश्मनि या कन्या रजः पश्यत्यसंस्कृता ।
अविवाह्या तु सा कन्या, जघन्या वृषलीस्मृता ॥

जब तक लड़की रजोवती नहीं होती, उसे "गौरी" कहते है और रजोवती होने पर "रोहिणी कहते है । जब तक यौवन के चिह्न प्रकट नहीं होते, उसे "कन्या" कहते है और कुच या स्तन न आने तक "नग्निका" कहते है ।

जवानी के चिह्न प्रकट हो जाने पर कन्या को चन्द्रमा भोगता है, स्तन आ जाने पर गन्धर्व और रजोवती हो जाने पर अग्नि भोगता है ।

इसलिए कन्या को रजोवती या ऋतुवती होने से पहले ही— आठ वरस की उम्र मे विवाह कर देना चाहिये ।

स्तनादि स्त्री-चिह्न प्रकट हो जाने पर शादी न कर देने से पहले के पुण्य-कर्म नष्ट हो जाते हैं, स्तन आ जाने पर विवाह न करने परत्र लभ्य पुण्यों का नाश होता है। सुरत या मैथुन-योग्य होने पर शादी न करने से स्वर्ग आदि लोक नहीं मिलते और रजोवती होने पर भी विवाह न कर देने से पितर या पुरुखे नरक में जाते हैं, इसलिये स्त्री-चिह्न आने से पहले ही कन्या का विवाह कर देना चाहिये।

अगर कन्या शादी से पहले ही ऋतुमती हो जाय तो इसका विवाह उसकी अनुमति से करना चाहिये। स्वायम्भुव मनु ने कहा है कि इसलिए कन्या का विवाह उसके नग्निका या रजोरहित होने की हालत में ही कर देना उचित है।

जो कन्या बाप के घर में बिना विवाह हुए, रजोदर्शन करती है, रजस्वला होती है, वह विवाह के अयोग्य और शूद्रा के समान होती है।'

पण्डितोंने कहा—"सेठजी ! ये श्लोक स्वार्थियों ने पीछेसे धर्म-शास्त्रों में घुसेड़ दिये है। अगर ऐसा होता तो "हेमाद्री" वाला यह कभी न लिखता कि जब तक कन्या विद्या न पढ़ ले, धर्म नीति न जान ले, पति-मर्यादा से अनजान रहे, शादी न करनी चाहिये। सीता, सावित्री, द्रौपदी और दमयन्ती प्रभृति की शादी पूर्ण यौवना होने पर ही, स्वयम्वर-प्रथा के अनुसार हुई थी। आठ-दस साल की कन्या धर्मनीति और पति-मर्यादा आदि नहीं जान सकती। अगर पहले के समय में आठ साल की कन्या की

शादी होती तो महर्षि सुश्रुत सोलह साल की स्त्री और पच्चीस साल के पुरुष को गर्भाधान के लिए मैथुन की राय न देते उन्होने स्पष्ट कहा है—

पंचविंशे ततोवर्षेपुमान्नारी तु षोडशे ।
समत्वागतवीर्य्यौ तौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥

—सुश्रुत-सूत्रस्थान, अध्याय ३५

ऊनषोडषवर्षायामप्राप्त पंचविंशतिम् ।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थ स विपद्यते ॥
जातो वा न चिरञ्जीवेत जीवेद्वादुर्बलेन्द्रिय
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥

—सुश्रुत-शरीरस्थान, अध्याय १०

"गर्भाधान के समय पुरुष की उम्र २५ साल की और कन्या की १६ साल की होनी चाहिये, क्योंकि इन अवस्थाओं मे पुरुष और स्त्री मे समान बलवीर्य हो जाता है।

"सोलह बरस से कम उम्र की स्त्री अगर पच्चीस बरस से कम उम्र का पुरुष गर्भाधान करता है तो गर्भ कोख मे ही बिगड़ जाता है—बालक पैदा नहीं होता; अगर पैदा भी होता है, तो बहुत दिन जीता नहीं; अगर किसी तरह जी भी जाता है, तो कमजोर और रोगी होता है। इसलिए अत्यन्त छोटी उम्र यानी १६ साल से कम उम्र की स्त्री मे गर्भाधान हरगिज न करना चाहिये।

"अब आप ही सोचिये, जब सोलह साल से कम अवस्था की

कन्या में गर्भाधान करने की मनाही है, तब पहले शादी करने से क्या लाभ ? जब तक वर और वहू 'विवाह' किस चिड़िया का नाम है, इस बात को न समझे, तब तक विवाह मे क्या आनन्द है ? अत आप बाई की शादी सोलह बरस की उम्र में ही करें।" सेठ ने ब्राह्मणों की बात ठीक समझी, अतः स्वीकार करली।

समय जाते देर नहीं लगती। कन्दर्पकला ने सोलहवे बरस में कदम रक्खा। माता-पिता को वर खोजने की फिक्र पड़ी। नगर-नगर और गाँव-गाँवमे नाई और ब्राह्मण भेजे गये। ईश्वर की दया से कुल-शील-धन वैभव प्रभृति में समान घर और सुन्दर रूपवान विद्वान, बलवान और वीर्यवान वर मिल गया। वर का नाम गुणनिधि था। गुणनिधि वास्तव में ही गुणों का भाण्डार था। जिस तरह कन्दर्पकला अपने बाप की इकलौती और लाड़ली बेटी थी, उसी तरह गुणनिधि भी अपने पिता का इकलौता और लाड़ला पुत्र था। लड़की और लड़के ने एक दूसरे के चित्र देखकर एक दूसरे को पसन्द कर लिया। सेठ ने सेठानी से कहा कि शास्त्र में भले और बुरे जमाई के लक्षण इस प्रकार लिखे हैं:—

जमाई के गुण

विद्याशौर्यधनाश्रयो गुणनिधिः ख्यातो युवा सुन्दरः ।
सच्चारः सुकुलोद्भवो मधुरवाग् दाता दयासागरः ॥
भोगी भूरिकुटुम्बवान् स्थिरमति पापार्तिहीनो बली ।
जामाता परिवर्णितः कविवरैरेवंविधः सत्तमः ॥

"विद्वान, बहादुर, धनवान, गुणवान, सच्चरित्र, अच्छे कुल में पैदा हुआ, मीठा बोलने वाला, दातार फैयाज, दया का समुद्र, भोगी, बहुत से कुटुम्बियोंवाला, स्थिर बुद्धि, धर्मात्मा और बलवान जमाई अच्छा होता है।

जमाई के दोष

वृद्धो दुर्व्यसनी दयाविरहितो रोगी महापापवान् ।
षण्ढो दुष्कुलकोद्भवश्च पिशुनो धूर्तोऽतिवद्धस्पृह: ॥
निर्वित्त: कृपणोऽतिचंचलमतिर्नित्यप्रवासी ऋणी ।
भिक्षुः स्नेहविवर्जितः सुमतिभि: कार्यो वरो नेदृश ॥

"बूढ़े, बुरे-बुरे व्यसनों में फंसे हुए, निर्दयी, रोगी, घोर पापी, नामर्द, नीच कुल में पैदा हुए, चुगलखोर, धूर्त, इच्छाओं को बहुत ही रोकने वाले, निर्धन, कंजूस बहुत ही चञ्चल बुद्धि, हमेशा परदेश में रहने वाले, कर्जदार, भिकारी और स्नेह-हीन पुरुष को जमाई न बनाना चाहिये।

"कन्दर्प की माँ! अपने गुणनिधि में सभी उत्तम गुण हैं, दूषणों का नाम भी नहीं। सच पूछो तो जमाई यथा नाम तथा गुण है इसलिए कन्या देना ठीक है।"

शुभ लग्न में विवाह की तैयारी शुरू की गई। दोनों ओर से विराट आयोजन हुआ। नियत समय पर गुणनिधि की बारात आई। शुभमुहूर्त में गुणनिधि ने कन्दर्पकला का पाणिग्रहण किया। कन्या के पिता ने अपनी इकलौती बेटी के दहेज में करोड़ों की सम्पत्ति,

हाथी, घोड़े, दास-दासी, रथ और पालकी वगैरः दिये। बाराती और गुणनिधि के पिता अपने नगर को चले गये। दहेज का सामान उनके साथ भेज दिया गया, पर गुणनिधि को कन्दर्पकला के पिताने अपने घर ही रख लिया। गुणनिधि का बाप सज्जन पुरुष था। उसने अपने समधी की बात, बिना किसी आपत्ति के मान ली। गुणनिधि ससुराल में घर-जमाई की तरह रहकर, स्वर्गीय सुख भोगने लगा। कन्दर्पकला भी उससे सब तरह से प्रसन्न और सन्तुष्ट थी। माता-पिता भी अपनी पुत्री और जामाता को प्रेमपूर्वक रहते हुए देख कर फूले नहीं समाते थे।

कुछ समय बीतने पर रत्नसेन की आढ़त में सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, चीन लङ्का, फारस और रोम देश के व्योपारी तरह-तरह के मसाले, रेशम, रेशमी कपड़े, मोती और शीशी प्रभृति नाना प्रकार का माल लाये। उन व्योपारियों को माल की बिक्रीसे प्रचुर धन-लाभ हुआ। अब वह लोग अमरावती से यहाँ का माल खरीद कर, फिर उन देशों को जाने की तैयारी करने लगे। उन लोगों का खूब धन कमाते देखकर, गुणनिधि का दिल भी यहां से माल भर कर उन देशों मे जाने को हुआ। उसने सास ससुर से आज्ञा माँगी। सास-ससुर ने इन्कार किया। कहा, "बेटा! अपने धन की कमी नहीं, अटूट धन-भण्डार है। तुम्हीं भोगने वाले हो विदेश जाकर क्या करोगे?" गुणनिधि ने कहा—"पिता जी! वैश्य का धर्म ही धन-वृद्धि करना है। अक्षय धनराशि होने पर भी, वैश्य को सन्तोष न करना चाहिये। देखिये, शास्त्र में लिखा है—

कोऽतिभारः समर्थानां, किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सुविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम्॥

सामर्थ्यवानों के लिए बहुत भारी क्या है? व्यापारियों के लिए दूर क्या है? विद्वानों को परदेश क्या है? मधुरभाषियोंको गैर या पराया कौन है?

क्लेशस्याङ्गमदत्त्वा सुखमेव सुखानिनेहलभ्यन्ते।
मधुभिन्मथनायस्तैराश्लिष्यति बाहुभिर्लक्ष्मीम्॥
दुरधिगमः परभागो यावत् पुरुषेण साहसं न कृतम्।
जयतितुलामधिरूढो भास्वानिह जलदपटलानि॥

इस संसार में शरीर को दुःख दिये बिना सुख नहीं मिलता। मधुसूदन भगवान ने समुद्र मथने से थकी हुई भुजाओं द्वारा ही लक्ष्मी पाई।

जब तक पुरुष साहस न करे, तब तक उसे पराया भाग मिलना कठिन है। तुला राशि को प्राप्त होकर ही सूर्य बादलों को जीतता है।"

गुणनिधि की बातें सुनकर रतनसेन राजी हो गया। दस-बीस लाख का माल देकर उसे विदा कर दिया। कन्दर्पकला पति के विदेश जाने से दुखी जरूर हुई, पर उसने भी रो-धोकर अपनी ओर से विदाई देदी। सब व्योपारियों के साथ गुणनिधि विदेश यात्रा को चल दिया।

अपने प्रिय पति के विदेश चले जाने पर, कन्दर्पकला अपनी

सखियों के साथ चौसर-शतरञ्ज प्रभृति खेल खेल कर दिन काटने लगी। कन्दर्पकला इन दिनों काम-मद से मतवाली हो रही थी। एक दिन सन्ध्या के समय, वह अपनी सखियों के साथ, महल की छत पर बैठकर, शतरञ्ज खेल रही थी। महल ठीक लबे-सड़क था। उसके सामने होकर हजारों आदमी और गाड़ी-घोड़े प्रभृति निकल रहे थे। खेलते-खेलते उस मृगशावकनयनी की दृष्टि एक सुन्दर, रूपवान, बलवान, यौवनमदोन्मत्त गठीले जवान पर पड़ी। क्षण-भर में उसकी मति बदल गई। वह पातिव्रत्य धर्म का माहात्म्य भूलकर, व्यभिचार कर्म करने पर आमादा हो गई। प्रबल कामदेव के वश मे होकर, उसे इस नीच कर्म के परिणाम का कुछ भी ध्यान न हुआ। उसने अपने वैभवशाली पिता की इज्जत धूल में मिलने का भी विचार न किया। कहा है—

कुलपतनं जनगर्हां बन्धनमपि जीवितव्यसन्देहम्।
अंगीकरोति कुलटा सततं परपुरुषसंसक्ता॥

कुल में दाग लगना, लोकनिन्दा बन्धन औरजीवन में सन्देह —इन सबको परपुरुषरता कुलटा स्वीकार कर लेती है।

बहुत लिखने से क्या, वह चञ्चलनयनी अपने काम विकार को न रोक सकी। उसका शरीर कामताप से जलने लगा, होठ सूखने लगे, दिल धड़कने लगा और कामज्वर चढ़ आया। उसने कामशान्ति के लिए, उस नौजवानको अपने पास बुलाने का विचार स्थिर कर लिया। उपको अन्तरात्मा—कामशै_न्म

(conscience) ने उससे कहा, "अयि चपले! आज तू अपने जीवन को भ्रष्ट करने पर क्यों उतारू हुई है? अपना शीलव्रत क्यों भङ्ग करती है? देख, नदी अपनी कगार रूपी मर्य्यादा का नाश नहीं करती, उसी तरह तुझे भी अपने कुल की मर्य्यादा नष्ट न करनी चाहिये। सतीत्व रत्न अनमोल है। स्त्री में यही सबसे कीमती चीज़ है। इसके बिना स्त्री वैसी ही है, जैसा कि बिना आब का मोती। इस क्षणभर के मिथ्या सुख के लिए क्यों अपने लोक-परलोक बिगाड़ती है?" अन्तरात्मा ने उसे बहुत कुछ समझाया, डराया-धमकाया, पर वह अपने निश्चय से न डिगी—अन्तरात्मा की बात पर ज़रा भी ध्यान न दिया। ध्यान तो तब देती, जब कि होश-हवास में होती। कामदेव ने तो पुष्पबाण मार-मार कर उसे बेहोश कर दिया।

कलहंतकला कन्दर्प के बाणों से जर्ज्जरित होकर मन-ही-मन विचारने लगी, "इस समय कौन मेरे काम आ सकती है? कौन प्राणप्यारे को बुलाकर यहाँ ला सकती है? कामशास्त्र में मालिन, धोबिन, नाइन, सखी और दासी प्रभृति स्त्रियाँ स्त्री-पुरुषों का सन्देशा लाने-ले जाने या दूत कर्म के लिए उसमें लिखी हैं, तब

---

* दासी बन्धुभूर्द्धी च विधवा बाला च धात्री तथा।
कन्या प्रव्रजिता च भिक्षुवनिता सम्बन्धिनी शिल्पिनी॥
मालाकारवितन्विनी प्रतिमर्चा दोन्ये कृता योषितः।
आलापः कविभिः सदैव मदनव्यापार दूतावियो॥

मै अपनी सखियों में से किसी एक से यह काम क्यों न लूँ ?" यह विचार स्थिर करके उसने अपनी एक बहुत ही मुँह-लगी सखी को पास बुलाकर उँगली से उस नौजवान को दिखाते हुए कहा, "प्यारी सखी ! तू उस छैल-छबीले-रसीले युवक को मेरे पास बुला ला। मेरी कामाग्नि इस समय बड़े जोरों से प्रज्ज्वलित हो रही है। अगर वह बाँका छैला न आयेगा, तो मै प्रचण्ड विरहानल में भस्म हो जाऊँगी।" कामविकार हलाहल विष की तरह प्रचण्ड होता है। उसे कोई विरली ही कामिनी रोकने में समर्थ होती है। उस नीच सखी ने, अपनी सखी की ऐसी भयानक पापपूर्ण बात सुनकर उसे जघन्य कर्म से रोका तो नहीं, फौरन ही नीचे उतरी और उसे बुलाकर महल मे ले आई।

और भी—

मालाकारवधूः सखी च विधवा धात्री नटीशिल्पिनी।
सैरन्ध्री प्रतिगेहिकाथ रजकी दासी च सम्बन्धिनी ॥
बाला प्रव्रजिता च भिक्षुवनिता तक्रस्य विक्रेयिका।
मालाकार वधूर्विदग्धपुरुषैः प्रेष्या इमा दूतिकाः ॥

दासी, रण्डी, नटनी विधवा, लड़की, दाई, कन्या, संन्यासिनी, भिखारिन, सम्बन्धिनि, कारीगरनी, मालिन, सखी, पड़ोसन, नाइन धोबन, और दही-छाछ बेचने वाली गूजरी वगैरः स्त्रियाँ, स्त्रियों को बिगाड़ने और लाने का काम करती हैं। ये पुरुषों का सन्देशा औरतों के पास और औरतों का मर्दों के पास पहुँचाती है। इनके द्वारा अच्छे-अच्छे घरों की स्त्रियाँ खराब हो जाती है।

उस पुरुष ने कन्दर्पकला की बातें सुनकर, उसकी कामशान्ति की, पर चलते समय कहता गया, "प्यारी, इसमे शक नहीं कि तू अप्सराओं को भी लजानेवाली अनिन्द्य सुन्दरी है। तेरे एक दिन भी न मिलने से मेरा जीवन न रहेगा, लेकिन मैं तेरे इस महल मे आज के बाद कभी न आऊँगा। मैं नगर के बाहर अमुक बाग में रहता हूँ। वह स्थान भोग-विलास के लिए अत्युत्तम है। ऐश-आराम के सारे ही सामान वहाँ भी मौजूद हैं। तुझे हर दिन, रात के समय, वहीं आना होगा, क्योंकि कामशास्त्र मे, पराये घर रहकर, सुरत करने की मनाही लिखी है। कहा है: –

> वह्नि ब्राह्मणपूज्यवर्गनिकटे नद्या च देवालये ।
> दुर्गाद्रौ च चतुष्पथे प गृहेऽरण्ये श्मशानेद्रिवा ।
> सक्रान्तौ शशि संक्षयेऽथ शरदि ग्रीष्मे ज्वरतैव ते ।
> सन्ध्यायाञ्च परिश्रमेषु सुरतंकुर्यान्न विद्वान् क्वचित् ॥
> विस्तीर्णोल्लसिते सुधाधवलिते चित्रादिनालंकृते ।
> रम्ये प्रोन्नत चत्वरेऽगुरु महाधूपादिपुष्पान्विते ।
> सगीतांगविराजिते स्वभवने दीपप्रभाभासुरे ।
> नि शंक सुरत यथाभिलषित कुर्य्यात्समंकान्तया ॥

"अग्नि, ब्राह्मण, माँ-बाप, गुरु और बड़े भाई प्रभृति गुरु-जनो के पास, नदी किनारे, मन्दिर मे, किले वगैरः में, चौराहे पर, पराये घर में, जंगल में, श्मशान भूमि में, दिन में, संक्रान्त में, चन्द्रमा के क्षय काल मे, शरद् ऋतु में, ग्रीष्म ऋतु में, ज्वर चढ़ा होने पर,

व्रत रखने पर, सन्ध्या समय और मिहनत करके— विद्वान को सुरत या स्त्री-प्रसंग न करना चाहिये।

"जो मकान मनोहर हो, लम्बा-चौड़ा हो, जिसमें सुन्दर सफेदी हो रही हो, तरह-तरह के चित्रादि से सजा हो, जहाँ धूप वगैरः सुगन्धित पदार्थ खेये गये हों, फूलों की खुशबू आती हो, गाने-बजाने के सितार तबला आदि बाजे रक्खे हों, ऐसे अपने मनोहर और ऊँचे मकान की छत या आँगन में, जो दीपकों की रोशनी से देदीप्यमान हो, अपने समान स्त्री से, निःशंक होकर, इच्छानुसार भोग करना चाहिये।

"प्यारी! कामशास्त्र के रचयिताओं ने जो कुछ भी लिखा है, वह बड़े अनुभव के बाद लिखा है। मैं रतिशास्त्र के विरुद्ध काम नहीं करता, इसलिए आज रात को तुम मेरे बाग में आना। मैं तुम्हारी इन्तजारी करूँगा।" यह कह कर वह युवक चला गया।

उस युवक को कन्दर्पकला एक क्षण को भी छोड़ना नहीं चाहती थी। पहली मुलाकात में ही उस नौजवान ने उसके दिल में गहरी जगह कर ली। एक तो वह रूपवान, बलवान, वीर्यवान और शौकीन छैला था ही, दूसरे उसने उसे कामशास्त्र-विशारद होने से भोग-विलास द्वारा सन्तुष्ट कर दिया, इसी से वह उस पर जी जान से फिदा हो गई। ऐसी प्रीति को 'अभ्यासिकी प्रीति" कहते हैं।*

---

* 'निसर्गजा या नैसर्गिकी, विषयजा और अभ्यासिकी" इस तरह मुख्य तीन तरह की प्रीति होती है। नैसर्गिकी प्रीति अभ्यास से या माता,

वह व्यभिचारी नवयुवक सदा कन्दर्पकला को अपने काबू में रखने की अनेक चेष्टायें किया करता था। उसने सबसे पहले इस बात का पता लगाया कि यह मुझ पर क्यों आसक्त हुई है; क्योंकि इसके यहाँ धन की कमी नहीं, धन के सिवा और भी किसी

अतर, मिठाई और कपड़े-गहने देने से नहीं होती, वह पूर्वजन्म के सम्बन्ध से होती है। वह बड़ी मजबूत मुहब्बत है। वह किसी के हजार चेष्टा करने से भी नहीं छूट सकती। वैसी प्रीति छोटी उम्र के दूलह-दुलहनों में नहीं हो सकती। १४-१५-१६ साल की कन्या और २०-२५ साल के लड़के की शादी होने से ही हो सकती है।

जो प्रीति इत्र, फुलेल, फूलमाला, गुलदस्ते, चन्दन केशर और कस्तूरी के लेप, उत्तमोत्तम कपड़े, नाना प्रकार के गहने, लज़ीज़ और ज़ायके-दार मिठाइयाँ लेने-देने से होती है, उसे 'विषयजा प्रीति' कहते हैं।

जो प्रीति शिकार खेलने जाने से जंगल में हो जाती है, जो मन्दिरों में देवदर्शनों को जाने से हो जाती है, जो सजधजकर एक दूसरे को रिझाने से हो जाती है, जो मनोहर गाना सुनने से हो जाती है और जो आनन्द-दायी सूरत से हो जाती है, उसे "अभ्यासिकी प्रीति" कहते हैं।

यशोधरा और सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) की प्रीति "नैसर्गकी" थी, शकुन्तला और दुष्यन्त की प्रीति शिकार के समय हुई थी; अतः "अभ्या-सिकी" थी। बहुत से मर्द औरतों के गाने पर और औरतें मर्दों के गाने पर रीझकर प्रीति कर लेते हैं, वह भी "अभ्यासिकी प्रीति" कहाती है। कन्दर्पकला इस पुरुष की रूप-छटा और सूरत की कारीगरी पर रीझी थी, इसलिये हमने इसे "अभ्यासिकी प्रीति" कहा है।

वस्तु का अभाव नहीं। यह हमारे शहर के सबसे बड़े सेठ की पुत्री है। इसका पति यहाँ नहीं है। उसे गये बहुत दिन हो-गये और आजकल वसन्त का मौसम है। जान पड़ता है इन्हीं कारणों से इसने मुझे अपनाया है। कहा है,

मार्गार्ता भ्रान्तदेहा चिरविरहवती मासमात्रप्रसूता ।
गर्भालस्या च नव्याऽज्वरकृततनुना त्यक्तमानप्रमत्ता ॥
स्नाता पुष्पावसाने नवरतिसमये मेघकाले वसन्ते ।
प्रायः सम्भ्रान्तरागा मृगशिशुनयना स्वल्पसाध्या रते स्यात् ॥

मार्ग चलने से थकी हुई या राह भूली हुई, बहुत दिनों से पति-समागम न होने वाली, महीना-भर की बच्चा जनने वाली, पाँच-छै महीने की गर्भवती, आलस्यवाली, नये बुखारवाली, मान-हीना, बहुत ही खुश रहने या हँसनेवाली, मासिक धर्म के बाद नहाकर उठी हुई, पहले-पहल जवानी की तरङ्ग आनेवाली, वर्षा-काल और वसन्त ऋतु में, रूपवान, धनवान और विलासी पुरुषों के हाथ, ऊपर लिखे लक्षणों वाली स्त्रियाँ, स्वयं कोशिश करने या दूतियाँ लगाने से बड़ी आसानी से आ जाती हैं। खैर, अब मैं तरह तरह के वाजीकरण और स्तम्भन योगों की सहायता से इसे अपनी बनाऊँगा।

कई बरस तक हमारा गुणनिधि विदेश से नहीं लौटा। इधर कन्दर्पकला अपने धर्म से पतित हो गई, पतिव्रता से कुलटा हो गई। उसे रात-दिन अपने यार का ही ध्यान रहता था। दिन उसे एक युग के समान बीतता था। साँझ होते ही वह नहा-धोकर तैयार

हो जाती और रात को सारे कुटुम्ब के सो जाने पर चोर द्वार से नकल कर, अपने प्यारे के पास बिना नागा पहुँचती थी। अगर घर का कोई आदमी भूल से भी गुणनिधि का नाम ले लेता, तो उसके दिल में काँटा-सा खटकता था। वह रात-दिन यही मनाती थी कि गुणनिधि विदेश मे ही मर जावे या कभी न आवे। शास्त्र-कारो ने कहा है कि अच्छे कुलो की स्त्रियाँ भी सदा बाप के घर मे रहने और पति के अधिक समय तक विदेश मे रहने से बिगड़ जाती है। ऐसी कुलटा नारियो को पति का परदेश मे रहना अच्छा मालूम होता है। कहा है :—

पितृसदननिवास संगति पुंश्चलीभि
प्रवसनमथ रोगो वार्द्धक चापि पत्यु
वसतिरपरपुंभि: दुष्टशीलैरवश्यं,
जनिरपि निजवृत्तेर्योषितां नाशहेतु ॥
दुर्दिवसे घनतिमिरे दु सञ्चरासु घनवीथीसु
पत्युर्विदेशगमने परमसुख जघन चपलाया. ॥

सदा पीहर में रहने से, व्यभिचारणी स्त्रियां की सुहबत से, पति के परदेश में रहने से, पति के सदा रोगी रहने से, पति के वृद्ध होने से, दुश्चरित्र ऐयाश तबियत लोगो के वश मे रहने से और अपनी आजीविका के मारे जाने से स्त्रियाँ खराब हो जाती हैं।

आकाश मे बादलो के छाये रहने से, घोर अँधेरे से, सुनसान जनहीन गलियो से और पति के विदेश मे रहने से परपुरुष-रता स्त्रियों को परम सुख होता है।

अब ज़रा गुणनिधि की भी खबर लेनी चाहिये। जिस दिन से वह अपनी स्त्री कन्दर्पकला को छोड़कर विदेश गया, उस दिन से उसे एक दिन भी सुख की नींद न आई। जब कभी उसे काम से फ़ुर्सत मिलती, वह अपनी प्यारी को याद करता। रातें तो उसे करवटें बदलते और तारे गिनते ही बीतती थी। खैर, बरस-डेढ़-बरस चलकर, वह रोम नगर मे पहुँचा। भगवान की दया से उसका सारा माल गहरे मुनाफे से बिक गया। अब उसे अपनी प्यारी से मिलने की उत्कण्ठा और भी बढ़ गई। एक दिन शरद की चाँदनी रात मे, सोते सोते उसे अपनी प्राणप्यारी से मिलने की इच्छा इस ज़ोर से हुई, कि उसी समय नौकरों को असबाब बाँधकर जहाज़ पर रखने और तत्क्षण वहाँ से चल देने का हुक्म दिया। हुक्म पाते ही नौकरों ने सारा सामान जहाज़ पर लाद दिया। सब लोग सवार हो गये और जहाज़ ने भारत की ओर रुख किया। कुछ दिनों मे समुद्र-यात्रा की तकलीफें उठाता हुआ, वह अपनी ससुराल में आ पहुँचा।

जिस दिन गुणनिधि अपनी ससुराल मे आया, उस दिन उसकी ससुराल मे कोई महोत्सव मनाया जा रहा था। कुटुम्ब के सब लोग उसी मे लगे हुए थे। यह भी उनमें शामिल हो गया। उसके सास-ससुर और साली-सरहज वगैरः उसके आने से परमानन्दित हुए, पर कन्दर्पकला का चेहरा उलटा उतर गया। वह मन-ही-मन बहुत दुःखी हुई, पर प्रकट में कुछ न कह सकी। उसके मन-मन्दिर मे तो उसका यार हँस-खेल रहा था। इसके

आ जाने से उसका सारा मजा किरकिरा हो गया। इसका आना उसे अच्छा न लगा।

रात के समय बहुत दिनों का बिछुड़ा हुआ गुणनिधि देव-मन्दिर के समान सजे हुए महल में बड़ी उमंग के साथ अपनी प्राणप्यारी से मिलने गया। वहाँ अति सुन्दर कमनीय धवल शय्या बिछी हुई थी। चारों ओर काफूरी बत्तियाँ जल रही थीं। सुगन्धित धूप हर ओर महक रही थी। गुलाब, खस, हिने और मोतियों के इत्रों की खुशबू उड़ रही थी। चन्दन के छिड़काव के कारण मलय मारुत का आनन्द आ रहा था। कमरे के खम्भों में जड़े हुए मणि-माणिक रोशनी में जगमगा रहे थे। उस समय वह कमरा इन्द्र-भवन को लजा रहा था। गुणनिधि अपनी परम प्रिया को आलिङ्गन कर लेट रहा, पर कन्दर्पकला का दिल तो अपने प्यारे यार की याद में लगा हुआ था। उसे अपना व्याहता पति कालसर्प के उगले हुए विष के समान मालुम होता था। वह बारम्बार अपनी कमल सी आँखों को बन्द करके योगिन की तरह अपने यार का ध्यान करती थी। वह हर क्षण निःश्वास फेंक-फेंक कर अपनी आतुरता और शोक प्रकट करती थी, परन्तु सरलचित्त गुणनिधि इस भेद को न जानता था; इसलिये वह चुम्बन कर, शृङ्गार के हाव-भाव बता, अपने सरल और सप्रेम हृदय से मीठे-मीठे शब्दों में रतिकेलि की प्रार्थना करने लगा, पर वह वज्रहृदया कुलटा कामिनी जरा भी न पसीजी। उसने पति के प्रेमरस से पूर्ण शब्दों का कुछ भी उत्तर न दिया, तब कामातुर

पति ने उसकी साड़ी खींच ली। वह अपने अङ्गों को ढककर और सुकड़ कर एवं पलंग से नीचे उतर कर एक कोने में जा बैठी, क्योंकि उसे तो अपने यार का ध्यान था। वह पति के साथ भोग विलास करना पसन्द न करती थी। भोले-भाले गुणनिधि ने समझा कि यह प्रणय-कुपिता है। मैं बहुत दिनों में आया हूँ, इससे नाराजी दिखाती और नखरे करती है। वह उसे बारम्बार प्रणाम करके और अत्यन्त मीठी बातें कह-कह कर समझाने लगा, "प्यारी! पहले तो तू ऐसी नहीं थी, यह तुझे क्या हुआ? तू तो मेरी जीवन-डोरी है। तेरे बिना मैं क्षण-भर भी जी नहीं सकता। अगर तू मुझसे न बोलेगी, मेरी ओर न देखेगी, तो मैं अपनी जान खो दूँगा। अरी मधुर मल्लिका! एक बार तो मेरी तरफ नजर भरके देख। देख, तेरा यह दास तेरे प्रेम की आशा से तेरी सेवा करने के लिए तड़प रहा है। मुझ जैसे आज्ञाकारी सेवक को इस तरह निराश करना क्या उचित है? मेरी समझ में, मैं निरपराध हूँ। अगर मुझसे कोई अपराध हो गया है, तो मुझे क्षमा कर। देख, ईश्वर भी भयङ्कर-से भयङ्कर अपराधी को क्षमा कर देता है। क्या तू अपने सेवक को क्षमा दान न देगी।"

गुणनिधि ने इस तरह सैकड़ों दीनता की बातें कहीं, हाथ जोड़े, प्रणाम किया, तरह-तरह से मुहब्बत जताई; पर वह जरा भी न पसीजी। उस वज्र हृदया के कठोरतम हृदय में लेशमात्र भी प्रेम का सञ्चार न हुआ। प्रेम का सञ्चार हो कहाँ से? वह तो

दूसरे पर मरती थी और उसीको चाहती थी। उसे अपना पति तो हलाहल विष से भी बुरा और वह यार अमृत से भी उत्तम मालूम होता था। गुणनिधि सब तरह से बुद्धिमान और चतुर होने पर भी, स्त्रियों के छल-कपट जानने में निरा अबोध था। काम ने उसकी बुद्धि और भी हर ली। कन्दर्पकला की तरह अनेकों स्त्रियाँ, अपने व्याहता पतियों को धोखा देकर, पर-पुरुषोंके साथ रमण करती हैं। उनके पति उनका भीतरी हाल न जानकर, उनकी वारम्वार खुशामद करते और प्रेम की भिक्षा माँगते हुए, लम्पटपन दर्शाते हैं। ऐसे लोगों का जीवन विरकिरा हो जाता है। अगर स्त्री अपने साथ प्रेम करे, अपने ऊपर ही आसक्त रहे, तब तो इस संसार में ही स्वर्ग है, अन्यथा नरक है। जो स्त्री पराये मर्द को प्यार करती है, अपने पति को धोखा देती है, उसके जीने को धिक्कार है, और जो भोला-भाला पुरुष अपनी स्त्री के दुश्चरित्र का हाल न जानकर, उससे प्रेम करता है, उसकी खुशामद करता है, उसका भी जीवन भ्रष्ट है।

कामशास्त्र मे लिखा है—

> नाभिपश्यन्ति भर्तारं नोत्तरं संप्रतीच्छति।
> वियोगेसुखमाप्नोति संयोगे चाति सीदति ॥
> शय्यासुपगताशेते चुम्बनमाष्टिंचुम्बिता।
> तन्मित्रैर्द्वेष्टिमानञ्च विरक्ता नाभिवांछति ॥

जो स्त्री अपने पति को नहीं चाहती, वह उसकी तरफ नहीं

देखती, हँस कर बोलना तो दूर की बात है, पूछी हुई बात का भी जवाब नहीं देती, जब तक पति घर में रहता है, दुखी रहती है और उसके घर से चले जाने पर सुखी होती है, उसके साथ एक पलङ्ग पर नहीं सोती, अगर लेट भी जाती है, तो या तो नींद में सो जाती है या मुँह फेर लेती है, अगर पति मुख चूमता है, तो गाल को पोंछ डालती है, पति के मित्र से द्वेष रखती है, पति उसे कितना ही चाहे, पर वह राजी नहीं होती, मुँह फुलाये रहती है।

'पंचतन्त्र' में लिखा है—

> पर्यङ्कस्वास्तरणं पतिमनुकूलं मनोहरं शयनम्।
> तृणमिव लघु मन्यन्ते कामिन्यश्चौर्यरतलुब्धाः॥

पलङ्ग पर सोना, पति की अनुकूलता और मनोहर शयन को चोरी से रत करने की इच्छा रखने वाली स्त्रियाँ तिनके के समान समझती हैं।

अगर गुणनिधि इन बातों को जानता होता, तो उस हरजाई की इतनी खुशामद न करता।

बहुत देर तक कन्दर्पकला की खुशामद करता-करता गुणनिधि थक गया। उस बेवफा औरत को जरा भी रहम न आया। उसका दिल गुणनिधि की ओर जरा भी न झुका और अपने यार से मिलने का उत्साह कम न हुआ। अन्त में थका-मांदा गुणनिधि रत की आशा छोड़ कर सो गया, मगर उसे अच्छी तरह नींद न

आई। इन्हीं बातों में आधी रात बीत गई। घड़ियालों ने टन-टन करके बारह बजाये। सारे शहर में सन्नाटा छा गया। सड़कों पर आदमियों का चलना-फिरना बन्द हो गया। कोई इक्का-दुक्का आदमी इधर-से-उधर जाता नज़र आता था। सारा संसार निद्रा-देवी की गोद में चला गया। ऐसे समय में कन्दर्पकला को अपने यार की फिर याद आई। वह मन-ही-मन कहने लगी "मेरा प्राणप्यारा उस उपवन की लताकुञ्जों में मेरी बाट जोह रहा होगा; मुझसे मिलने के लिये घबरा रहा होगा। हाय, मेरे बिना आज उसका कैसा हाल होगा! आज इस दुष्ट के यकायक आ जाने से मैं उसके पास नियत समय पर न पहुँच सकी। प्यारे! मुझे क्षमा करना। आज मैं मजबूर हूँ, मेरा दोष नहीं। आज मेरे तुम्हारे सुख में बाधा पहुँचाने वाला आ गया है।" ये शब्द मन-ही-मन कहती हुई वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। गुणनिधि इस समय भी पूरी तरह न सोया था। वह धमाका सुनते ही अच्छी तरह जाग पड़ा। उस प्रेमान्ध ने कन्दर्पकला को ज़मीन पर से उठाया और छाती से लगाकर पङ्खा करने लगा। ज्यों ही उसे होश हुआ, वह अपने नई पति की गोद में देखकर लम्बी-लम्बी साँस लेने लगी और गोद से उतर कर फिर अलग जा बैठी। पति ने पत्नी को मनाने के फिर भी बहुत यत्न किये, पर सब व्यर्थ। इस विघ्नकारी के विनय-वचन उस परपुरुषरता कामिनी के वियोगाग्नि से दग्ध हुए हृदय को कैसे शान्त कर सकते थे?

जब गुणनिधि सो गया, घोर नींद में निमग्न हो जाने से

खुर्राटे लेने लगा; तब कन्दर्पकला उसे नींद के वशीभूत जान यार से मिलने की ठानी। उसने उठकर सोलह श्रृङ्गार किये और सज-धज कर यार से मिलने चली। आज घरों में महोत्सव था, सब लोग दिनभर काम काज में लगे रहे थे। आनन्द का दिन था, इसलिए सभी ने विजया का नशा किया और नशे में खूब खाया। रात को थक जाने और नशे में गर्क हो जाने से सभी बेखबर होकर सो रहे। घर में जाने-आने की रोक नहीं थी इसलिये मौक़ा पाकर एक चोर घर में घुस आया। वह अपनी घात लगा रहा था, इतने में उसने अपने यार से मिलने को जाने वाली कन्दर्पकलाके पैरों की पायजेबों की झनकार सुनी। वह फौरन ही एक कोने में दुबक गया। आधी रात का समय होने के कारण, पूर्व दिशा रूपी प्रमदा का आलिंगन करके बैठा हुआ चन्द्रमा अपने पूर्ण प्रकाश को आम प्रभृति वृक्षों के पत्तों पर फैला चुका था। चारों ओर चाँदनी की चादर बिछी हुई थी कुमुदनी खिल चुकी थी। दिन में सूरज के ताप से सन्तप्त हुआ आकाश सुधाकर की शीतल चाँदनी छिटकने से सुशीतल हो गया था। मनुष्य और पशु-पक्षी सभी निद्रादेवी की गोद में अचेत पड़े हुए थे। चारों ओर निस्तब्धता का अखण्ड साम्राज्य था। ऐसे समय में कन्दर्पकला छमछम करती हुई घर से निकली और लता कुञ्ज में अपने उपपति से मिलने चली। उस चोर ने जो एक कोने में छिपा हुआ था इस रमणी को अकेले जाते देख, एकान्त स्थल में इसके गहने उतार लेने का अच्छा मौका समझा और इसके पीछे हो लिया।

अब ज़रा कन्दर्पकला के यार का हाल सुनिये। रात बहुत बीत गई; यहाँ तक कि आधी भी ढल गई, पर उस प्रेमी की प्रिया न आई, इसलिये वह अपनी प्रियतमा के न मिलने से अत्यन्त दुःखी हुआ। बारम्बार पागल की तरह वृक्षों से बातें करने लगा। अगर हवा के चलने से पत्ता भी खड़खड़ाता; तो वह धुन बाँधकर देखने लगता और चौंककर कहने लगता, "अब के मेरी प्यारी हृदयहारिणी सुन्दरी आई।" पर जब कोई न आता, तो निराश होकर पछताने लगता। चूंकि शुक्लपक्ष—उजेला पाख था, चन्द्रमा की चाँदनी अपनी अपूर्व छटा दिखा रही थी। मन्द-मन्द हवा चल रही थी. स्थान भी अतीव रमणीय था; चारों ओर सुहावने वृक्ष-ही-वृक्ष थे। चम्पा, चमेली, केतकी और गन्धराज की सुगंधि से वन-का-वन महक रहा था। कामोत्तेजक सारे सामान मौजूद थे। इसलिये ज्यों-ज्यों रात बीतती थी, उसका हृदय कामाग्नि और वियोगाग्नि से जला जाता था। निदान वह अधीर हो गया। काम के ताप को सह न सका। अगर उसकी प्यारी का मुखचन्द्र उसे दीख जाता, तो उसकी अग्नि शान्त हो जाती। पर उस रात को वह न आई, इसलिये घोर दुःख से दुःखी होकर एक झाड़ में लिपटी हुई लता से फाँसी खाकर और अपने अमूल्य प्राण त्याग कर यमसदन का राही हुआ। उस प्रेमी के प्राणत्याग कर चुकने के थोड़ी देर बाद ही कन्दर्पकला उस उपवन में पहुँची। उसने अपने हृदय के हार, प्राणप्यारे को मोतियों की माला और रत्नजटित आभूषणोंसे अलंकृत देखा। चन्द्रमा की चाँदनीमें सारे जेवर चमा-

चम चमक रहे थे। उसका सुन्दर शरीर रङ्ग बिरंगे बहुमूल्य वस्त्रों से सुशोभित था, परन्तु वह अपूर्व पदार्थ—शरीर का रत्न समस्त सुखों को भोगने वाला, चैतन्य-चन्द्र उसकी देह से सदा के लिए अलग हो चुका था। हंसा उड़ गया था, खाली देह लटक रही थी। घर में रहने वाला गायब हो चुका था, खाली घर पड़ा था। प्राणविहीन देह लटक रही थी। उस लाश के आस-पास कुछ पशुपक्षी उड़ रहे थे। फाँसी लगाते समय की आवाज़ सुनकर पक्षी जाग पड़े थे और उस लाश के इर्द-गिर्द जमा हो गये थे। इन पशुपक्षियों को देखकर वह नाना प्रकार की आशंका करने लगी। उसके चित्त में एक-पर-एक संकल्प-विकल्प उठने लगे। वह अत्यंत भयभीत हुई। खैर, अन्त में वह उसके पास पहुंची और उसके गले लगने की आशा से झुकी, तो उसे मरा हुआ पाया। बस वह कुलटा तत्क्षण जमीन पर गिर कर मूर्छित हो गई। थोड़ी देर पड़ी रहने के बाद, उसे स्वल्प ही होश हुआ। वह उठ कर उस लाश के पास बैठ गई और विलाप करने लगी जिस तरह गूंजते हुए भौंरे के बैठने से कोमल लता नीचे झुक जाती है, उसी तरह आह कहते ही वह फिर पृथ्वी पर गिर कर बेहोश होगई। इस बार बहुत देर के बाद उसे होश हुआ। होश होते ही वह जार-जार रोने और कूकने लगी। उस लाश पर नजर पड़ते ही वह अचम्भित और दुःखित हो कहने लगी, "हाय! मेरे प्राणाधार! हा! मेरे नयनानन्द! प्यारे! आप कहाँ सिधारे? नाथ! इस दासी का साथ क्यों छोड़ दिया? मेरे जीवन-सर्वस्व! आपका

उदार चित्त ऐसा अनुदार क्यों हो गया ? महाराज ! इस दासी का अपराध क्षमा करते। प्राणेश ! कुछ तो धीरज धरते। हा ! बिना कुछ कहे, बिना बोले, बिना मिले,इस दासी को सदा के लिये अनाथ करके चले जाना उचित न था। प्यारे ! अब यह अभागिनी आपका मुखचन्द्र कहाँ देखेगी ? हाय, यह क्या हुआ ! मेरे प्यारे ! प्रीतम ! प्राणवल्लभ ! हृदय के हार ! सुनो, यह दासी कब की पुकार रही है ? हा ! आप ऐसे कठोर कब से हो गये ? हा ! प्राणेश ! मुझ मन्दभागिनी को रोते-कलपते और तड़फते देख आपको जरा भी दया न आती। हाय ! हाय ! कुछ तो मुहब्बत निबाही होती। चित्तचोर ! एक बार तो दौड़कर गले लगो। प्यारे ! एक बार तो मीठी और रसीली बात और सुना दो। यह दासी भी आपके पास ही आती है।" यह कहती हुई वह बेहोश होकर गिर पड़ी। इसके कुछ देर बाद धीरज धरकर अपने प्रेमी का मुँह चूमने लगी मानो उस मुर्दे में जान आगई हो। इसके बाद उसने अपने मुँह का पान भी उसके मुँह में रख दिया और बारम्बार उसके खूबसूरत चेहरे को देखने लगी। फिर कभी रोने लगती और कभी धीरज धरके कहती, "प्यारे को आँखों-भर देख तो लूँ, जो होना था सो तो हो ही गया।"

अब एक नई बात सुनिये। ईश्वर की गति बड़ी ही विचित्र है। उस लीलामय की लीला का पार नहीं। वह बड़ा विलक्षण है। उसकी रचना का भेद पाना असम्भव है। कोई नहीं कह सकता कि थोड़ी ही देर में क्या होने वाला है। उस मुर्दे के शरीर पर

चन्दन-अरगजा चर्चित था। इत्र प्रभृति खुशबूदार चीजों में उसके कपड़े महक रहे थे। उसके बदन पर के सुगन्धित पदार्थों से वह वन-का-वन सुगन्धित हो रहा था। कोसों तक सुगन्धि फैल रही थी। उस वन में एक प्रेत भी रहता था। उसने सुगन्ध पर मोहित होकर, उसके शरीर में अपना घर बना लिया; यानी वह मुर्दे के भीतर घुस गया। ज्योंही कन्दर्पकला ने अपने यार की लाश से आलिङ्गन किया, उसका होठ अपने मुँह में रख कर चूसने लगी, त्योंही उस मुर्दे में घुसे हुए प्रेत ने उस दुष्टा की नाक काट खाई। इस तरह दुराचारिणी स्त्री ने अपने कुकर्म का फल पाया*। संसार में जगदीश की इच्छा बिना एक पत्ता भी नहीं

* बहुत से नई रोशनी वाले बाबू इस घटना को कल्पित और मन-गढ़न्त समझेंगे। उनके लिए हम ऐसी ही अकचकाने वाली नई घटना, जो ता० २०।२४ जुलाई सन् १६०४ के हिन्दी अखबारों में छपी थी, सुनाते हैं। उससे मालूम हो जायगा कि ईश्वर की लीला कैसी विचित्र है। वह पापियों को किस तरह दण्ड देता है। भागलपुर में रहने वाला एक नाई अपनी पुत्री को लिवा लाने के लिए उसकी सुसराल में गया। लड़की को लेकर वह पैदल किसी जङ्गल में होकर आ रहा था। उसकी पुत्री गर्भवती थी और उसका रूप-लावण्य अपूर्व था। चेहरे से नूर टपका पड़ता था। पिता की नीयत पुत्री पर बिगड़ी। उसने पुत्रीकी राजी से या बेराजी से—पता नहीं—उससे भोग किया। उसकी लिंगेन्द्रिय उसकी पुत्री की योनि में अटक गई। उसने इन्द्रिय निकालने की हज़ारों कोशिशें कीं, मगर वह कामयाब न हुआ। वह दोनों अस्पताल ले

हिलता, इससे मालूम होता है कि जगदीश की ऐसी ही इच्छा थी कि उस भ्रष्टा कुलटा को दण्ड मिले, और वह जीवन भर ऐसे कुकर्म करने योग्य न रहे। आगे देखिये क्या-क्या गुल खिलते हैं।

चेहरे की सुन्दरता नष्ट होने या नाक कट जाने पर, कन्दर्प-कला उस लाश को वहीं छोड़ कर, वहाँ से नौ दो ग्यारह हुई और घर पहुँच कर चुपचाप अपने पति के पास सो रही। कुछ देर लेटी रहने के बाद, उसने त्रिया-चरित्र रचना शुरू किया। सोते सोते मानो अचानक चौंक उठी हो—इस तरह का भाव बना कर चिल्लाने लगी, "हाय रे हाय! इसने मेरी नाक काट ली, कोई दौड़ो, मुझे बचाओ"! इस तरह की भयानक चीख सुन कर घर के लोग दौड़े आये। इस आवाज को सुन कर बेचारा अनजान गुणनिधि भी जाग उठा। वह आँखे खोल कर क्या देखता है कि लोग उसे चारों ओर से घेरे हुए खड़े हैं और क्या हुआ! क्या हुआ! का शोर कर रहे हैं। उसकी अपनी विवाहिता स्त्री कन्दर्प-कला कह रही है, "आप लोग नहीं देखते, इसने मेरी नाक

जाने गये। डाक्टरों ने उन्हें अलग किया गर्भ का बच्चा मर गया, वह भी निकाला गया। क्या किसी ने आज तक सुना है कि पुरुष की लिंगे-न्द्रिय स्त्री की योनि में कभी अटकी हो? ईश्वर को इस महा अधम नाई को सजा देनी थी, उसे मुँह दिखाने योग्य न रखना था, इसी से ऐसी अपूर्व—देखी न सुनी—घटना घटी। ईश्वर पापियों को इसी तरह दण्ड देता है।

काट ली है ।" मुझे बचाइये, नहीं तो अब मेरी जान भी नहीं बचेगी, यह मुझे मार डालेगा ।" ये बातें सुनकर गुणनिधि के ससुर और दूसरे-दूसरे लोग कहने लगे, "तुमने यह क्या किया ? अफ़सोस ! तुमने इस निरपराधिनी की नाक वृथा ही काट ली ! इसका क्या अपराध था ?" ये बातें सुनते ही गुणनिधि का चेहरा पीला पड़ गया । वह हक्का-बक्का हो गया । होश-हवाश जाते रहे । उसके मुँह से एक अक्षर भी न निकला । इधर कन्दर्पकला फूट-फूट कर रो रही थी । उसके पिता और चाचा वगैरः गुणनिधि से नाक काटने की वजह पूछ रहे थे । इतने में सवेरा हो गया । गुणनिधि के ससुराल वाले कोतवाली में दौड़े गये, रिपोर्ट लिखाई । पुलिस ने आकर गुणनिधि को गिरफ्तार कर लिया । फिर वह राजा के सामने पेश किया गया । राजा ने सब तरह से पूछ ताछ और गवाही वगैर लेकर गुणनिधि को १ साल की कैद और दस हजार रुपया जुर्माना किया । गुणनिधि ने एक शब्द भी अपनी जबान से नहीं कहा ।

यह बात सारे शहर में फैल गई । हर आदमी के मुँह पर यही चर्चा थी कि नगर सेठ के जमाई ने अपनी स्त्री की नाक काट ली । वह कल ही परदेश से आया था । न्याय के समय वह चोर, जो रात को कन्दर्पकला के पीछे लगा था, अदालत में मौजूद था । उसने देखा कि निरपराध गुणनिधि वृथा मारा जाता है—बेचारे को वृथा इतनी कड़ी सजा दी जाती है । उसके दिल में जोश आया और उसने सारी घटना राजा को कह सुनाई । राजा अपने

इसने मुझ निरपराधिनी की नाक काट ली है। मुझे बचाइये, नहीं तो यह मुझे जान से मार डालेगा। [पृ० ३४८]

आदमियों के साथ स्वयं उपवन में गया। चोर ने कन्दर्पकला के पदचिह्न, अपने छिपने का स्थान और कन्दर्प के यार की लाश—ये सब दिखा दिये। साथ ही उस मुर्दे के मुँह में से कन्दर्पकला की नाक निकाल कर दिखा दी और उस लाश पर पड़ी हुई खून की बूंदों पर भी ध्यान दिलाया। सारी घटना राजा की समझ मे आ गई। राजा ने गुणनिधि को दण्ड-मुक्त किया, कन्दर्पकला को जेलखाने भेजा, चोर को कई लाख रुपये इनाम दिये और गुण-निधि को अपना दीवान बना कर, उसे अपनी कन्या ब्याह दी। बुरे को बुरा और भले को भला फल मिला।

नतीजा इस कहानी का यही है कि अधिकांश स्त्रियाँ अत्यन्त कुटिल, क्रूर कर्म करने वाली, लज्जाहीना और चञ्चल मति होती हैं। ये अपने पति, पिता-माता, भाई-बन्धु और अपनी पेट की औलाद तकसे द्रोह करने और उनका सर्वनाश करनेमें नहीं चूकतीं।

जिस पति ने कन्दर्पकला की मुहब्बत में, उसे खुश करने में, कोई बात उठा न रखी, जिस पिता ने उसे पालने-पोसने और पढ़ाने लिखाने मे कोई त्रुटि न की, उसकी शादी में करोड़ों खर्च कर दिये—उन पिता और पति की इज्जत का उसने कुछ भी खयाल न किया। इससे बढ़ कर और दौरात्म्य क्या हो सकता है? कुलटा नारी कुलगौरव-हानि, लोकनिन्दा, जेल और फाँसी किसी की भी परवा नहीं करती। ऐसी नारी से जगदीश बचावे! कहा है:—

आवर्त्तः संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानां
दोषाणां सन्निधानं कपटशतगृहं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्।

दुर्ग्राह्यम् यन्महद्भिर्नरवरवृषभैः सर्वमायाकरण्डं
स्त्रीयंत्रं केन लोके विषममृतयुतं धर्मनाशाय सृष्टम् ? ॥

सन्देहों का भँवर, अविनय का घर, साहस का नगर, दोषों का खजाना, कपट का शतगृह, अविश्वास का क्षेत्र, बड़े-बड़े नर श्रेष्ठों के भी काबू मे न आने वाला, सारी माया का पोटला—स्त्री-रूपी यन्त्र, जिसमे विष और अमृत दोनों ही हैं, धर्मनाशार्थ किसने बनाया ?

—⁂—

अपसर सखे दूरादस्मात्कटाक्षविषानला—
त्प्रकृतिविषमाद्योषित्सर्पाद्विलासफणाभृतः ॥
इतरफणिना दष्टःशक्यश्चिकित्सितुमौषधै—
श्चतुरवनिताभोगिग्रस्तं त्यजन्तिहि मन्त्रिणः ॥८३॥

हे मित्र ! सहज ही क्रूर, विलास रूपी फणवाले और कटाक्ष-रूपी विषाग्नि धारण करने वाले स्त्री-रूपी सर्प से दूर भाग, क्योंकि और सर्पों का काटा हुआ तो मन्त्र तथा औषधियो से अच्छा हो सकता है पर चतुर स्त्री-रूपी सर्प के डसे हुए को झाड़-फूँक वाले गारुड़ी भी छोड़ भागते हैं ॥८३॥

खुलासा—स्त्री सर्प के समान है। इसका विलास इसका फण और कटाक्ष विषाग्नि है तथा यह स्वभाव से ही सर्प के समान क्रूर या विषैली है। यह स्त्री-सर्प और सर्पों से अधिक भयङ्कर है

क्योंकि और सर्पों का खाया हुआ मनुष्य मन्त्र या दवा अथवा झाड़ फूँक से कदाचित अच्छा हो भी जाता है, पर इस सर्प के खाये का तो इलाज ही नहीं। इसका काटा हुआ भी, काल सर्प के काटे हुए की तरह, न खेलता है और न बकरता है।

उस्ताद जौक फरमाते हैं:—

डसा हो काले ने जिसको काफ़िर
तो वह फ़िसूँ के असर से खेले।
वहानो गेसू का तेरा मारा,
न मुँह से बोले न सरसे खेले॥

मसल मशहूर है, काले का काटा हुआ नहीं खेलता, नहीं अच्छा होता। फिर तेरे मुँह और जुल्फों का काटा हुआ आदमी यदि मुँह से नहीं बोलता और सर से नहीं खेलता, तो क्या आश्चर्य है?

महात्मा कबीर भी कहते हैं:—

नागिन के तो दोय फन, नारी के फन बीस।
जाको डस्यो न फिर जिये, मरिहै बिस्वा बीस॥
कामिनि काली नागिनी, तीन लोक मंझार।
नाम-सनेही ऊबरा, विषिया खाये झार॥
नारी निरखि न देखिये निरखि न कीजे दौर।
देखत ही ते विष चढ़ै, मन आवे कछु और॥

स्त्री-मात्र नागिन-स्वरूपिणी है। जैसी ही अपनी स्त्री,

प्रेमी ही पराई। विष तो सभी में होता है। विष का अपना और पराया क्या? मनुष्य अपने विष से भी मरता है और पराये विषसे भी। अपने कुएँ में गिरने से भी डूब जाता है और पराये कुएँ में गिरने से भी। स्त्रियों से सुख की आशा करना, मृगमरीचिका में जल पाने की आशा करने के समान है। "भामिनी-विलास" रचयिता पण्डितेन्द्र जगन्नाथ महाराज कहते हैं और सच कहते हैं:—

> अलकाः फणिशावतुल्यशीला
> नयनान्ता परिपुंखितेषुलीलाः।
> चपलोपमिता खलु स्वयं याऽबला
> लोके सुखसाधनं कथं सा?

जिसकी अलकावलि साँप के बच्चे के-से स्वभाव वाली है और जिसकी आँखों के कटाक्ष सपुंख बाणों की तरह लीला करने वाले हैं और जिसकी स्वयं विद्युल्लता से उपमा दी जाती है, हा! वह स्त्री इस लोक में किस तरह सुखदायी हो सकती है?

सारांश यही है कि, स्त्रियाँ नागिनों से भी अधिक भयङ्कर हैं, अतः अपना भला चाहने वालों को इनसे दूर रहना चाहिये। इनमें सुख नहीं, घोर दुःख है; अमृत नहीं, हलाहल विष है! सर्प के काटे की दवा है, पर इनके काटे की दवा नहीं।

दोहा

> मन्त्र-यन्त्र-औषधन ते, तजत सर्प विष लोग।
> यह क्यों हू उतरत नहीं, नारि-नयन को नाग ॥ ८३ ॥

सार—स्त्री-रूपी सर्प से दूर रहो, क्योंकि उसके काटे का इलाज नहीं है।

83. O my friend, keep yourself aloof from a woman who is like a serpent. Both are crooked and cruel by nature and the oblique glances of the woman are like the flames of an arrow and whose gay activities are her hood. Serpent-bite may be cured by medicine, but even the charmers give them up who are bitten by this serpent-like clever woman.

—o—

विस्तारितं मकरकेतनधीवरेण
स्त्रीसंज्ञितं वडिशमत्र भवाम्बुराशौ ॥
तेनाचिरात्तदधरामिषलोलमर्त्य-
मत्स्यान्विकृष्य स पचत्यनुरागवह्नौ ॥८४॥

इस संसार-रूपी समुद्र मे कामदेव-रूपी धीमर ने स्त्री रूपी जाल फैला रक्खा है। इस जाल मे वह अधरामिष-लोभी पुरुष-रूपी मछलियो को, शीघ्रता से खींच-खींच कर, अनुराग-रूपी अग्नि मे पकाता है ॥८४॥

खुलासा—क्या अच्छा रूपक है? इसमे सागर "संसार-सागर" है। मछली पकड़ने वाला मछुआ या धीमर स्वयं 'कामदेव' है। मछली पकड़ने का जाल 'स्त्री" है। मछलियाँ "पुरुष"

है। उनका चारा, जिसके लोभ से पुरुष-रूपी मछलियाँ जाल में फँसती हैं, "अधरामिष" है। मछलियों को भाग जाने के डर से शीघ्र ही पका डालने की अग्नि "अनुराग" है।

अजब मजेदार मामला है। कामदेव धीमर बड़ा ही चालाक है। वह पुरुष-रूपी मछलियों के फँसाने के लिये जाल और चारा प्रभृति सभी सामान लैस रखता है। एक बार फँसकर मछलियाँ निकल न भागें, इसलिये वह आग भी तैयार रखता है। इधर मछली जाल में फंसी और उधर आग पर रखी। ऐसे चालाक धीमर के जाल में फँस कर कौन बच सकता है? तात्पर्य,यह कि एक बार इश्क या प्रेम में फँसने पर पुरुष निकल नहीं सकता। जब तक जाल में न फँसे, तभी तक खैर है। अतः जो पुरुष कामदेव के जाल में फँस कर प्राण न गँवाना चाहें, वे कामदेव के "स्त्री जाल" से दूर रहें।

महाकवि कालिदास ने स्वयं स्त्री को व्याध बनाकर और ही तरह रूपक बाँधा है। उनकी उक्ति का भी मजा चख लीजिये :—

> इयं व्याधायते बाला भूरस्याः कार्मकायते ।
> कटाक्षाश्च शरायन्ते मनो मे हरिणायते ॥

यह नवयौवना बाला मेरे फँसाने या मारने के लिये व्याध—शिकारी-सी हो रही है। इसकी भौंहें धनुष के समान हैं; यानी यह बाला अपने भौंह-रूपी धनुष से मेरे मन को व्याकुल करती है, अपनी तिरछी नजरों से मुझे घायल करे देती है।

बात एक ही है, स्त्री के सामने जाने, उसे घूर कर देखने और उसकी नजर-से-नजर मिलाते ही पुरुष मारा जाता है। जो स्त्री से दूर रहें अथवा उसे देख कर नीची नजर करलें, उससे आँखें न मिलावें, वे बेशक उसके जाल या बाणों से बच सकते हैं। जिन्हें अपने कल्याण की इच्छा न हो, वे स्त्रियों की छाया के भी पास न जायँ। उनसे दूर रहने से पुरुष को इस लोक में सुख-सम्पत्ति और मरने पर सद्गति मिलेगी।

दोहा

काम-भील भव-सिन्धु में, रमा-नारी डार।

मीन-नरन को गहि पचत, प्रेम-अग्नि को बार ॥८७॥

48 The world is like the ocean and Kamdev the fisherman He has spread the net in the form of woman and catches and burns, in the fire of love those who are greedy enough to taste the bait in the form of her lips.

कामिनीकायकान्तारे कुचपर्वतदुर्गमे।

मा सञ्चर मनः पान्थ तत्रास्ते स्मरतस्करः ॥८५॥

हे मन रूपी पथिक! कुच-रूपी पर्वतों में होकर, दुर्गम कामिनी के शरीर रूपी वन में न जाना, क्योंकि वहाँ कामदेव-रूपी तस्कर रहता है ॥८५॥

खुलासा—वन और पर्वतों में अक्सर तस्कर या चोर बैठे

रहते हैं, इसलिये बुद्धिमान लोग वैसे वन-पर्वतों मे नहीं जाते; क्योंकि वहाँ जाने से धन और प्राणों के नाश का खटका रहता है। स्त्री-रूपी वन में भी कुच-रूपी पहाड़ हैं और उनके बीच मे कामदेव-तस्कर छिपा रहता है। जो मूढ़ भूल कर भी स्त्री-रूपी वन मे जाता है, उसके धन और प्राण खतरे मे पड़ जाते हैं। साराश यह कि स्त्री से प्रेम करने वाले को धन-दौलत, इज्जत, आबरू और प्राण सभी खतरे में रहते हैं। इसलिये धीमानों को स्त्री से सदा दूर रहना चाहिये।

कुण्डलिया

ऐसे मन मेरे पथिक ! तू न जाहु इहि ओर ।
तरुणी तन–वन सघन मे, कुच पर्वत वर जोर ।
कुच–पर्वत वर जोर, चोर एक तहाँ बसत है ।
कर मे लिये कमान, बाण पाँचो बरसत है ।
लूट लेत सब साज, पकर कर राखत चेरे ।
मूँद नयन अरु कान, भुलान्यौं तू कित एरे ॥ ८५ ॥

सार—अपनी कुशल चाहो, तो स्त्रियों से दूर रहो ।

85. O my traveller-like mind, do not venture to enjoy the body of woman which is like a dense forest, very difficult to pass through, on account of big breasts which are like mountains and where dwells the thief Kamdev (Cupid).

—— .0.——

व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेजस्विना भोगिना ।
नीलाब्जद्युतिनाऽहिना वरमहो दष्टो न तच्चक्षुषा ॥
दष्टे सन्ति चिकित्सका दिशिदिशि प्रायेण धर्मार्थिनो ।
मुग्धाक्षी क्षणवीक्षितस्य न हि मे वैद्यो न चाप्यौषधम् ॥८६॥

बड़े लम्बे, तेज चलने वाले, टेढ़ी चाल वाले भयकर फणधारी काले से काटा जाना भला: पर अत्यन्त विशाल, चञ्चल टेढ़ी चाल वाले, तेजस्वी और नील कमल की कान्तिवाले कामिनी के नेत्रों से डसा जाना भला नहीं. क्योंकि सर्प के काटे हुए को बचाने वाले धर्मार्थी मनुष्य सर्वत्र मिलते है, पर सुनयना की दृष्टि से काटे हुए की न कोई दवा है न वैद्य ॥८६॥

खुलासा—साँप के काटे को आराम करने वाले प्रायः सर्वत्र मिलते हैं। वे लोग बिना कुछ लिये साँप के काटे आदमी का इलाज करते और खबर सुनते ही नंगे पैरो दौड़े चले आते हैं। उनके सिवा साँप के काटे की दवा भी जहाँ-तहाँ बिकती है। जङ्गलो मे जड़ी-बूटियाँ भी पाई जाती हैं। इसलिये साँप के काटे हुए आदमी के बचने की उम्मीद रहती है, पर स्त्री के नेत्रों द्वारा काटे हुए आदमी का इलाज करने वाले और उसकी दवा-दोनों ही नहीं मिलते; इसलिये स्त्री के काटे हुए का बचना कठिन हो जाता है। अत: प्राणरक्षा चाहने वालों को स्त्री से सदा दूर रहना चाहिये, जिससे कि वे काट न सकें।

छप्पय

महा भयंकर चपल वक्रगति, अरु फणाधारी ।
डसे कालिया नाग, नहीं कछु विपता भारी ॥
करें चिकित्सा वैद्य, धर्म-हित देयँ जिवाई ।
पै नहिं कोऊ वैद्य, चिकित्सा और उपाई ॥
जेहि डसत भुजगिनि-त्रिय चपल, करि कटाक्ष सो नहिं जियत ।
यह जानि विदुष जन जगत में, विषय रूप विष किमि पियत ? ॥८६॥

सार—स्त्री सर्प के काटे का इलाज नहीं है ।

86 It is better to be bitten by a snake long, restless, crooked bright fanged and coloured like blue lotus than to be pierced by the oblique glances of a woman, for there are many virtuous men in every country to cure those that are bitten by snakes but there is neither a physician nor any medicine to cure those who have been glanced for a short while through the eyes of a good-looking woman

---

इह हि मधुरगीतं नृत्यमेतद्रसोऽयं
स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष स्तनानाम् ॥
इति हतपरमार्थैरिन्द्रियैर्भ्राम्यमाणो
ह्यहितकरणदक्षैः पञ्चभिर्वञ्चितोऽसि ॥८७॥

यह कैसा मधुर गाना है, यह कैसा उत्तम नाच है, इस पदार्थ का स्वाद कैसा अच्छा है, यह सुगन्ध कैसी मनोहर है, इन स्तनों को छूने से कैसा मजा आता है! हे मनुष्य! तू इन पाँच विषयों में भ्रमता हुआ परमार्थ-नाशिनी नरकादि की साधनभूत पाँचों इन्द्रियों से ठगा गया है ॥ ८७ ॥

खुलासा—कान निरन्तर गाना सुनना चाहते हैं, आँखें हमेशा खूबसूरत चीजें देखना पसन्द करती हैं, नाक अतर, फुलेल और फूल प्रभृति चाहती है, चमड़ा सुन्दरी षोडशी बाला के कठोर कुचों का मर्दन करना चाहता है और रसना—जीभ खट्टे-मीठे पदार्थों का स्वाद लेना चाहती है। कान, नेत्र, नाक, त्वचा और जीभ—इन पाँचों इन्द्रियों का स्वभाव अपने-अपने विषय—शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श और रस की ओर जाने का है। बस, ये पाँचों इन्द्रियाँ पुरुष को अपने-अपने विषयों में फँसा कर बेकाम कर देती हैं। इनमें से एक-एक विषय भी, मनुष्य का सर्वनाश कर सकता है। अगर ये पाँचों हों, तब तो कहना ही क्या? सर्वनाश को पञ्जाब-मेल की तरह अत्यन्त शीघ्रता से पास आया समझिये। सुनिये, एक-एक विषय से ही प्राणों का सर्व-नाश किस तरह हो जाता है।

घास और दूब खाने वाला हिरन बहुत दूर होने पर भी शिकारी के गीत पर मोहित होकर प्राण गँवा देता है, यानी एक "कान" नामक इन्द्रिय के वश होकर मारा जाता है। अगर हिरन की श्रवण-इन्द्रिय—कान को शब्द या गान सुनने का चसका

न हो; तो वह क्यों शिकारी के जाल में फँसकर प्राणनाश करावे ?

पर्वत के शिखर के समान आकार वाला और खेल में ही वृक्षों को उखाड़ फेंकने वाला महाबलवान हाथी, केवल हथिनी की भोग-लालसा से, शिकारियों के घेरे में आकर बँध जाता है, यानी एक लिंगेन्द्रिय के वशीभूत होने से, अपनी आज़ादी खोकर, क़ैद हो जाता है।

पतङ्ग दीपक की रमणीय शिखा के रूप पर मुग्ध होकर, उसे आलिङ्गन करने को, उसके ऊपर बारम्बार गिरता और अन्त में जलबल कर खाक हो जाता है। पतङ्ग केवल एक नेत्र-इन्द्रिय के वशीभूत होकर अपने प्राण गँवाता है।

अगाध जल में डूबी हुई मछली चारे के लोभ से कँटिया में मुँह देकर अपने प्राण गँवाती है, यानी एक जिह्वा, जीभ, इन्द्रिय के वशीभूत होकर, मछली अपने प्राण गँवाती है।

भौंरा कमल को कतर सकता है और अपने पङ्खों से उड़ भी सकता है, किन्तु वह सुन्दर मनभावन गन्ध के लोभ से, कमल में बन्द होकर अपने प्राण गँवा बैठता है; यानी अपनी नाक, इन्द्रिय के वश होकर, भौंरा अपने प्राण गँवा देता है।

कहा है:—

कुरंगमातंगपतङ्गभृङ्गमीनाः हताः पञ्चभिरेव पञ्च।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

जब कि हिरन, हाथी, पतङ्ग, भौंरा और मछली ये पाँचों एक-एक विषय के प्राणी होते हुए विषयों में फँस कर मौत के

निवाले होते हैं, तब मनुष्य जोकि रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, पाँचों विषयों के फेर में फँसा रहता है, कैसे बेमौत न मरता होगा ? संसार में बन्धन भी बहुत होते हैं; पर प्रेम-रूपी रस्सी का बन्धन सबसे बुरा है। कड़ी-से-कड़ी बाँस की गाँठ को काट सकने वाला भौंरा, कमल के फूल में बन्द होकर, उसकी नर्म पाश को नहीं काट सकता और उसके भीतर बैठा हुआ अपने मन में यह विचारता है—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यतिपद्मजालं।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त-हन्त नलिनींगज उज्जहार ॥

जब रात का अन्त होगा और सवेरा होगा, तब सूर्य भगवान उदय होंगे और कमल खिलेगा, उस समय मैं इस कमल के बन्धन से निकल कर इधर-उधर घूमूँगा और दूसरे फूलों का रस पान करूँगा, भौंरे के ऐसा विचार करते-करते ही, अचानक एक जङ्गली हाथी तालाब के किनारे आता है और तालाब में घुस भौंरे-समेत कमल के पौधे को खा जाता है। बेचारे भौंरे के विचार उसके मन में ही रह जाते हैं। .

अब पाठक अच्छी तरह समझ गये होंगे कि एक-एक इन्द्रिय के वश होकर प्राणी किस तरह मारे जाते हैं, पर जो प्राणी अपनी पाँचों इन्द्रियों के वशीभूत रहते होंगे, उनकी क्या गति होती होगी। जो मनुष्य मधुर गान सुनते होंगे, सुन्दरी

वाराङ्गनाओं का नाच देखते होंगे, तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन करते होंगे, उत्तमोत्तम इत्र, फुलेल, सेण्ट, ओडीकलन प्रभृति सूँघते होंगे और कठोर कुचों वाली सुन्दरी तरुणी स्त्रियों को छाती से लगाते होंगे—वे क्या सर्वनाश से बच सकेंगे ?

यह जीवात्मा रूपी भौंरा भी कमल के भौंरे की तरह संसार रूपी तालाब और शरीर रूपी कमल में बैठा हुआ, पंचेन्द्रियों का सुख लूटता हुआ, उत्तमोत्तम ग्रन्थ पढ़ और महात्माओं के उपदेश सुनकर विचार किया करता है कि कल से मैं ईश्वर-भजन करूँगा, परसों या अमुक दिन से मैं अमुक दान-पुण्य करूँगा। जीवात्मा यह विचार करता ही रहता है और काल-रूपी हाथी अचानक आकर इसे अपने मुख में धर कर खा जाता है। इस तरह इसके सारे विचार धरे-के-धरे ही रह जाते हैं। इसलिये मनुष्य को अपनी इन्द्रियाँ अपने वश मे करनी चाहियें।

आँख-नाक प्रभृति पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ और हाथ, पाँव, गुदा, लिङ्ग और मुख—पाँचों कर्मेन्द्रियों को चलाने वाला एक 'मन' है। 'मन' जिधर चाहता है, ये पाँचो इन्द्रियाँ उधर ही जाती हैं, इसलिये 'मन' दसों इन्द्रियों का सञ्चालनकर्त्ता है। अब जो प्राणी दुःख और क्लेशों से बचना चाहें, जो जगत को अपने वश मे करना चाहे, जो परमात्मा से मिलना चाहें अथवा जो परमपद या मोक्ष चाहें, उनका पहला काम—अपने 'मन और इन्द्रियों' को पूर्ण रूप से अपने वश मे करना है। पर मन बड़ा चञ्चल और तेज चलने वाला है। इसकी चाल हवा और बिजली की चमक से

भी तेज़ है। इसको वश करना सहज नहीं, क्योंकि इसका स्वभाव ही इन्द्रियों को विषयों की ओर झुकाना है और विषयों मे फँसे हुए मनुष्य का कहीं ठिकाना नहीं। मन को वश में करना कठिन होने परभी, अभ्यास से यह सहज ही वश मे हो जाता है। अँगरेजी में एक कहावत है:-"Where there is a will, there is a way" जहाँ इच्छा होती है वहाँ राह भी हो जाती है। यदि मनुष्य इस बात पर कटिबद्ध हो जाय, मन को वश में करने के लिए कमर कसले, तो मन अवश्य वश में हो जायगा। मन वश में हुआ और मनुष्य देवता हुआ। फिर उसे दुःख क्या?

मन के सम्बन्ध में गिरधर कवि की कुण्डलियाँ पाठकों को सुनाते हैं —

कुण्डलिया

हे मन ! शब्द स्पर्श जो, रूप पुनः रस गन्ध।
सर्व दुखों का बीज यह, तू नहिं समझत अन्ध॥
तू नहिं समझत अन्ध, सदा इन्हीं को चाहे।
अपनी हत्थी आप, आपने तन को दाहे॥
कह गिरधर कविराय, जो प्रत्यक् आनद घन रे।
तिसहि मांहिं रह लीन, सुखी तब होवे मन रे॥

और भी —

कुण्डलिया

रे मन ! भौतिक वर्ग में, तू महंत परधान।
तेरे पाछे हैं सबै, देह बुद्धि इन्द्रिय प्रान॥

देह बुद्धि इन्द्रिय प्रान, इन्हीं में तू है नायक।
क्रिया तेरे आधीन, मानसी-वाचिक-कायिक॥
कह गिरधर कविराय, होवे तब ही धनधन रे।
जब निर्विकार हो रहे, सर्वथा इक रस मन रे॥

छप्पय

श्रवन निरन्तर गान-तान, मुनिवौ ही चाहत।
लोचन चाहत रूप, रैन-दिन रहत सराहत।
नासा अतर सुगन्ध, चहत फूलन की माला।
त्वचा चहत सुख-सेज, संग कोमल-तन बाला।
रसनाहू चाहत रहत, नित खाटे मीठे चरपरे।
इन पंचन या प्रपञ्चसों, भपन को भिक्षुक करे॥८७॥

सार—अगर मनुष्य नित्य सुख चाहे, तो इन्द्रियों को विषयों की ओर न जाने दे, उन्हें अपने वश में करे।

87 O men, you have been made to run about cheated by these five senses, which obstruct the way for the other world and are skilful in doing evils. (Ear).—How sweet is this song, (Eye) How beautiful is this dance; (Taste) How tasteful is this; (Smell) How sweet is this scent; and (Touch) How very pleasing are these breasts to touch

न गम्यो मन्त्राणां न च भवति भैषज्यविषयो
न चापि प्रध्वंसं व्रजति विविधैः शान्तिकशतैः ॥
भ्रमावेशादंगे किमपि विदधद्भंगमसमं
स्मरोऽपस्मारोऽयं भ्रमयति दृशं घूर्णयति च ॥८८॥

जब कामदेव रूपी अपस्मार मृगी रोग का, भ्रम के आवेश से, दौरा होता है, तब शरीर मे असह्य वेदना होती है, शरीर दुखता है, मन घूमता है और आँखें चक्कर खाती है। यह रोग मन्त्र, औषधि, नाना प्रकार के शान्ति-कर्म और पूजा-पाठ किसी से भी नाश नहीं होता।

खुलासा—अपस्मार या मृगी रोग शोक-चिन्ता प्रभृति से होता है। उसके दौरे के समय मनुष्य का ज्ञान नष्ट हो जाता है, नेत्र टेढ़े-तिरछे घूमने लगते हैं, हाथ-पाँवो का सत्व निकल जाता है और स्मरण शक्ति नष्ट हो जाती है। कामदेव-रूपी अपस्मार रोग मे भी प्रायः ऐसे ही लक्षण होते हैं। कामार्त्त रोगी का मन और नेत्र घूमने लगते हैं। होश-हवाश हवा हो जाते हैं। मुँह से कहना कुछ चाहता है और निकलता कुछ है। साधारण अपस्मार और कामदेव के अपस्मार मे एक बड़ा भेद है। वह यह कि अपस्मार तो घृत, ब्राह्मी घृत, कूष्माण्ड घृत, स्वल्प पञ्चगव्य घृत और महापञ्चगव्य घृत तथा त्रिफला तैल एवं भूतों के रोगमे जो झाड़-फूँक मन्त्र-जन्त्र किये जाते हैं, उनसे आराम हो जाता है; पर कामदेव रूपी अपस्मार की कोई भी औषधि, आज तक किसी ने

नहीं निकाला; इसलिए भगवान न करे जो किसी को यह रोग हो। जिन्हें इस भयङ्कर प्राण नाशक और परमार्थ-नाशक रोग से बचना हो, वे कामिनियों के चञ्चल नेत्रों से दूर रहें, क्योंकि स्त्रियों की तेज नजरों से बचने वालों को यह रोग नहीं होता। यदि कोई उनकी चपेट में आ जाय, उनका विष उस पर चढ़ जाय, तो विषस्य विषमौषधम् अर्थात् विष की औषधि विष है। उनका विष वे ही उतार सकती हैं। महाकवि कालिदास ने अपने "शृङ्गार-तिलक" में कहा भी है :—

> दृष्टिं देहि पुनर्बाले ! कमलायतलोचने !
> श्रूयते हि पुरालोके विषस्य विषमौषधम् ॥

हे बाले ! हे कमलनयनी ! मेरी ओर फिर अपनी दृष्टि फेंक, क्योंकि सुनते हैं कि विष की दवा विष है। मुझ पर तेरा जहर चढ़ा है, अगर तू ही उतारे तो वह उतर सकता है।

किसी ने किसी इश्क के मरीज के इलाज के लिये किसी हकीम को बुलाया। हकीम साहब नब्ज टटोलने लगे, तो किसी बुद्धिमान ने कहा :—

> जूँ पञ्जशाखा तू न जला उँगलियाँ तबीब।
> रख-रखके नब्ज़ आशिके तफ्ता जिगर पै हाथ ॥ ज़ौक़ ॥

हकीम साहब ! क्यों अपने हाथ को पञ्ज शाखे की तरह दिल-जले आशिक की नब्ज पर रख कर वृथा जलाते हो ? इश्क का मरीज आपकी दवा से आराम न होगा।

दोहा

मन्त्र दवा अरु आपसों, वेदन मिटै न वैद।
कामवान सो ग्रसत मन, कैसे मिटि है केद ? ॥८८॥

मार—साधारण अपस्मार या मृगीरोग का इलाज है; पर काम के अपस्मार का इलाज नहीं है।

88 This Kamdev (Cupid) like Epilepsy gives much pain due to senselessness overcasts the mind and rolls the eyes. Neither any charm nor any medicine has any effect on those attacked by it nor is it cured by various pacifying worships.

जात्यन्धाय च दुर्मुखाय च जराजीर्णाखिलांगाय च
ग्रामीणाय च दुष्कुलाय च, गलत्कुष्ठाभिभूताय च ॥
यच्छन्तीषु मनोहरं निजवपुर्लक्ष्मीलवश्रद्धया
पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्येत कः ॥८९॥

कुरूप, बुढापे से शिथिल, गँवार, नीच और गलित कुष्ठी को, थोड़े से धन की आशा से, जो अपना सुन्दर शरीर सौंप देती है और जो विवेक रूपी कल्पलता के लिये छुरी के समान है, उस वेश्या से कौन विद्वान रमण करना चाहेगा ?

वेश्या एक मात्र धन की दासी है।

वेश्या पैसा को प्यार करती है, पुरुष को नहीं। उसे जो पैसा देता, वह उसी की हो जाती है, चाहे वह भङ्गी, चमार या चाण्डाल ही क्यो न हो। जातिहीन, कुलहीन, जन्मान्ध, कुरूप, बूढ़ा, दुर्बल, काना और गलित कुष्टी भी अगर धनी हो और उसे धन दे, तो वेश्या—बिना किसी तरह के विचार और पशोपेश के, उसके नीचे अपना सोने-सा शरीर बिछा देती है। वेश्या को जवान और बूढ़े, खूबसूरत और बदसूरत, काने और अन्धे, लूले और लँगड़े, निर्बल और सबल, चोर और ठग, ज्वारी और शराबी सदाचारी और कदाचारी, हिन्दू और मुसलमान सब समान हैं। उनको न किसी से मुहब्बत है और न किसी से परहेज़। वह धन देने वाले को चाहती है और न देने वाले से परहेज़ करती है।

किसी कवि ने कहा है और बिलकुल ठीक कहा है:—

> वित्तेन वेत्ति वेश्या स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्।
> वित्तं विनापि वेत्ति स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्॥

पैसे वाले कोढ़ी और जराजीर्ण पुरुष को वेश्या कामदेव के समान सुन्दर समझती है, और बिना पैसे वाले धनहीन को, चाहे वह कामदेव के समान सुन्दर ही क्यों न हो, कोढ़ी और बुढ़ापे से जीर्ण समझती है।

वेश्या जगत की जूठन, गन्दगी का पिटारा और नरक-कूप है। कौन बुद्धिमान ऐसी वेश्या के नर्म-नर्म ओठों को चूमना और उसे आलिङ्गन करना पसन्द करेगा ?

वेश्या में और स्त्रियों से अधिक मोहन-शक्ति है।

यों तो संसार में जितनी स्त्रियाँ है, सभी पुरुष के चित्त को हरने वाली है; पर साधारण स्त्रियों की अपेक्षा वेश्या में चञ्चलता बहुत जियादा होती है, इसीसे उसमें पुरुष को मोहित कर लेने की शक्ति भी उनसे हजार गुणी जियादा होती है। वेश्यायें अपने गाने-बजाने का जाल बिछाकर और रूप का चुगा दिखा कर नौजवान पक्षियों को, सहज में अपने फन्दे में फँसा लेती हैं। वेश्याओं की लपक-झपक, चटक-मटक-नाज़ो-अदा और हाव-भाव तथा नखरों पर उठती जवानी के नातजुर्बेकार नौजवान फिदा होकर शीघ्र ही फँस जाते और इनके गुलाम हो जाते हैं। जो इनके दास या शिष्य हो जाते हैं, वे फिर किसी के नहीं रहते। उन्हें अपनी घर गृहस्थी, अपने पूज्यपाद माता-पिता और अर्द्धाङ्गिनी कहलाने वाली स्त्री तक विषवत् बुरे लगते हैं।

साधारण नवयुवकों को पागल बनाना तो वेश्याओं के बाँए हाथ का खेल है। जब इन्होंने एकान्त वन में रहने वाले, वृक्षों के पत्तों और जल पर गुजारा करने वाले महान तपस्वी शृङ्गी और

मरीचि तक को अपना चेला बना कर छोड़ा, उनको अपने रूप-जाल में फँसाकर उनके कठिन परिश्रम से किये हुए तप को क्षण भर में नष्ट कर दिया; तब इनके लिये नादान नौजवानों को फन्दे में फाँसना कितनी बड़ी बात है ? ऐसा शिकार मारने में तो इन्हें ज़रा भी कठिनाई नहीं होती।

ये दिव्य मणिधारी सर्प की तरह देखने में बड़ी मनोहर होती है। ये अपनी रूपच्छटा से पुरुषों के मनों को मोह लेतीं, मधुर-मधुर बातों से चित्तों को चुरा लेतीं तथा हाव-भाव और नाज़ो-अदा से हिये को हर लेती हैं। योद्धाओं के अग्निबाणों से चाहे रक्षा हो जाय, पर इनके नयन-बाणों से किसी का निस्तार नहीं। इनके चञ्चल नेत्र प्रायः सभी के हृदयों में क्षोभ करते हैं। किसी विरली ही सती का सपूत इनके नेत्र-बाणों से बचे तो बच सकता है।

वेश्या सच्ची राक्षसी है।

वेश्यायें पुरुष का रक्त-मांस खा जाने वाली सच्ची डायन हैं, क्योंकि जो काम डायनों के सुने जाते हैं, वे ही काम ये करती हैं। डायनें जिसे नज़र भर कर देख लेती हैं, वह गल-गल कर मरता है और वे उसका कलेजा निकाल कर खा जाती हैं। वेश्यायें भी जिस पर अपने कटाक्ष-बाण चला देती हैं, वह पगला हो जाता है और फिर वे उसका कलेजा निकाल खाती हैं। वेश्यायें लड़के और नौजवान सबको खा जाती हैं, खास कर धनियों की तो

चटनी ही कर जाती है। इनसे न राजा की रक्षा है और न प्रजा की। इनकी झपेट में जो आ जाता है, ये उसी का करम-कल्याण कर देती हैं। ये देखते ही पुरुषों को घायल कर देती हैं और पीछे अपनी नजर से उनके प्राण खींच लेती हैं। सर्प का डसा हुआ आदमी बच भी सकता है, पर इन डायनों का डसा हुआ नहीं बचता। साँपों के तो मुँह में विष रहता है, पर इनके समस्त शरीर में विष रहता है। सर्प मनुष्य के पास आकर डसता है, पर इनका विष तो दूर से ही, इनके देखने मात्र से ही चढ़ जाता है। इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग और एक एक बाल तक में जहर भरा रहता है, इसी से इनका कोई अङ्ग भी, यदि पुरुष की नजरों में आ जाता है, तो उस पर बुरी तरह से जहर चढ़ने लगता है। जहर चढ़ने से फिर पुरुष की खैर नहीं। किसी ने कहा है:—

> धर्म-कर्म-धन-भक्षिणी, सन्तति-खावनहार ।
> वेश्या है अति राक्षसी, बुधजन कहत पुकार ॥

और भी:—

> दर्शनात् हरते चित्तं, स्पर्शनात् हरते बलम् ।
> मैथुनात् हरते वीर्य्यं, वेश्या प्रत्यक्ष-राक्षसी ॥

वेश्या साक्षात राक्षसी है, क्योंकि वह देखने से चित्त को, छूने से बल को और मैथुन से वीर्य को हरती है।

वेश्याओं के कारण कुल-वधुएँ भ्रष्ट होती हैं।

वेश्याओं की वजहसे श्रेष्ठ कुलवती और पतिपरायणा अबलायें नाना प्रकार के कष्ट भोगती हैं। वेश्याभक्त न अपनी सहधर्म्मिणियों के पास आते, न उनसे बोलते और न उनका आदर-सम्मान करते हैं। पतिव्रता स्त्रियों को खाने को अन्न और तन ढाँकने को कपड़ा भी नसीब नहीं होता, पर वेश्याओं को जो अपने पतियों को तज, ससुरकुल एवं पितृकुल को बदनाम कर, वेश्यावृत्ति करती है, सब तरहके सुख मिलते हैं। पतिपरायणा नारियों को मरने के लिये जहर तक नहीं मिलता; पर वेश्याओं को हजारों-लाखों के जेवर मिलते हैं। वेश्याभक्तों की सती स्त्रियाँ मिहनत मजदूरी कर के पेट भरती हैं। अनेक कुलाङ्गनाये चरखे कात-कात कर और आटा पीस-पीस कर अपनी शिशु सन्तानों को पालती हैं। इस तरह नासमझ लोग बड़ा अन्याय करते हैं। उनके अन्याय-आचरण के फल-स्वरूप इन दुष्टा वेश्याओं की संख्या दिनों-दिन बढ़ती है, क्योंकि जब धर्म-मार्ग पर चलने से भी कुल-वधुओं को अन्न-वस्त्र तक नहीं मिलते, पति का सुख नसीब नहीं होता, तब वे अन्तस की अग्नि शान्त न होने और नाना प्रकार के दुःख पाने से दुःखित हो, अपना धर्म त्याग, अधर्म-मार्ग का अवलम्बन करतीं और वेश्या हो जाती हैं। इसमें उनका अपराध नहीं, क्योंकि जैसी इन्द्रियाँ मर्दों के होती हैं, वैसी ही इन्द्रियाँ स्त्रियों के भी होती

। काम मर्दों को सताता है, तो स्त्रियों को भी सताता है। जिस चीज़ की ख्वाहिश पुरुषों को होती है, उसी की स्त्रियों को भी होती है। जो पुरुष आप खाते रण्डियों को खिलाते, आप मौज करते, वेश्याओं को मौज कराते, किन्तु घर की स्त्रियों की सुध भी नहीं लेते, उनकी स्त्रियाँ उनका काला मुँह करतीं और उनके जीते जी ही उनकी बदनामी कराती हैं। वह जैसा करते हैं, वैसा फल भोगते हैं। अतः अपना सुख चाहने वाले समझदारों को आगा-पीछा सोच कर वेश्याओं से सदा दूर रहना चाहिये।

वेश्या-भक्तों की दुर्दशा

नासमझ नादान लोग जब वेश्याओं के कटाक्ष-बाणों से घायल होते हैं, तब रात-दिन अष्ट पहर चौंसठ घड़ी उन्हें वही वह दीखती है। वे उन्हें स्वर्गीय देवी समझ, उनकी हर तरह से स्तुति, पूजा और उपासना करते हैं। कोई कहता है—

> दिल से मिटना तेरी अंगुश्त हिनाई का खयाल।
> हो गया गोश्त से नाखुन का जुदा हो जाना॥

कोई कहता है —

> दिल वह क्या, जिसको नहीं तेरी तमन्नाये विसाल।
> चश्म वह क्या जिसको तेरे दीद की हसरत नहीं॥

इस तरह उनके उपासक और भक्त उनकी स्तुति किया करते हैं। उनकी जबान से बात निकली नहीं कि उनके भक्त उसे फौरन ही पूरी करते हैं। उनकी फरमायशें पूरी करने के लिये उनके सेवक अपनी ज़मीन-जायदाद गिरवी रख देते हैं, अपनी घर की स्त्री का जेवर तक उतार कर उनके हवाले कर देते हैं। इतने पर भी यदि कोई त्रुटि या ग़लती हो जाती है, तो वेश्यायें सख्त नाराज़ी ज़ाहिर करती हैं। उनकी नाराज़ी वेश्याओं के लिये. रुद्र के तीसरे नेत्र खुलने या महाप्रलय होने के समान होती है। वे घबरा कर उनके चरणों में लोटते और कदमों में नाक रगड़-रगड़ कर माफी माँगते हैं।

जब वेश्यायें देखती हैं कि हमारे उपासकों के पास धन नहीं रहा, घर-घूरा सब बिक चुका; तब वे उन्हें जूतियों से पिटवा कर अपने घरों से निकलवा देती हैं। पर वे बेहया इतनी बेइज्जती और ज़िल्लतें उठाने पर भी उनको छोड़ना नहीं चाहते; पैरों में गिरते हैं, अनेक तरह की खुशामदें करते हैं, तब उन्हें ये अपने नीचे दर्जे के सेवकों में रहने देती हैं। अच्छे-अच्छे खानदानी अमीरों के लड़कों से घर में झाड़ू लगवातीं, खाना पकवातीं, पीक-दान साफ करवातीं और हुक्के भरवाती हैं। कहाँ तक लिखें, वेश्या-दासों की अन्त में बड़ी मिट्टी खराब होती है। भगवान दुश्मन को भी वेश्या के फन्दे में न फँसावें। वेश्या बुरी बला है। यदि वेश्याओं की पूरी तारीफ लिखी जाय तो एक पोथा हो जाय, इसलिये हम इस विषय को यहीं खतम करते हैं।

वेश्या है अवगुण भरी, सब दोषों का सिन्धु।
अल्प दोष वर्णन किये, लखो सिन्धु में बिन्दु॥

ऐसी अवगुणों की खान, धन-धर्म नसाने वाली, अबलाओं पर अन्याय करने वाली कुल-बधुओं को दुष्कर्मों का पाठ पढ़ाने वाली, बाल-हत्या, पुत्री-हत्या और गो हत्या तक करने वाली वेश्या को जो देखते, छूते और उससे रमण करते हैं, उनको धिक्कार है! नाचते समय वेश्या स्वयं कहती है :—

जब पूरण पाप के भाण्डे तें,
भगवन्त कथा न रुचे जिनको।
एक गणिका नारी बुलाय लेई,
नचवावत हैं दिन को-रनको॥
मृदंग कहे—'धिक् है! धिक् है!'
मंजीर कहें—'किनको किनको?'
तब हाथ उठाय के नारि कहे
'इनको इनको इनको इनको॥'

वेश्या की चालें

वेश्याएँ अपने यारों को रिझाने और नये-नये शिकार फँसाने के लिये मन्दिरों, मेलों-तमाशों और तीर्थ स्थानों तथा बाग़ बगीचों में जाती और नाना प्रकार के मनोमोहक वस्त्राभूषण पहनती हैं।

कितनी ही अपने यारो के इच्छानुसार शृङ्गार करतीं और कहती है, "प्यारे तुम्हारे बिना हमे क्षण भर भी चैन नहीं पड़ती। माँ के मारे हमारी नहीं चलती। माँ के नाराज होने के भय से आपसे रुपया पैसा लेना पड़ता है, वरना हमारी इच्छा नहीं कि आपसे कुछ लें। आप हमारे सूरज और चाँद हो, आप ही हमारे पान का चूना, बिछौने की चादर, हुक्के की चिलम और थूकने की पीकदानी हो।" नादान लोग इनकी झूठी और मक्कारी की बातों पर लट्टू होकर, इनको अपनी सच्ची प्रेमिका समझ लेते है, पर जहाँदीदा लोग जानते है कि वेश्याओं मे प्रीति का नाम भी नहीं। अगर सूर्य्य मण्डल में शीतलता हो, चन्द्रमा अग्नि उगलने लगे, विन्ध्याचल समुद्र में तैरने लगे, तो वेश्याओं में प्रीति हो सकती है। आज तक जूए मे सत्य, कौवे में पवित्रता, सर्प मे सहनशीलता, स्त्रियों में काम-शान्ति, नपुंसक मे धैर्य, शराबी में तत्त्वचिन्ता, राजा मे मैत्री और वेश्यामे सतीत्व न किसी ने देखा और न सुना। वेश्यागामी कामकन्दला का नाम पेश करते हैं, पर कामकन्दला वेश्या नहीं गणिका थी वेश्या और गणिका में बड़ा भारी भेद है। गणिका वेश्या से बहुत अच्छी होती है। वेश्या धन के लिये प्रेम प्रकट करके विषयी पुरुषों को तृप्त करती है। गणिका अनेक प्रकार की विद्याएँ जानती और प्रेम प्रतीति को समझती है। वेश्या नीच उपायों से कामियो को ठगती है, पर गणिका उच्च प्रीति-रीति बाँध कर धन हरती है। वेश्या केवल धन की साथिन होती है, पर गणिका गुण, रूप और विद्वत्ता की भी ग्राहिणी होती है! लेकिन

आजकल गणिका कहाँ ? जिधर देखो, वेश्या-ही वेश्या नजर आती है। सच पूछो तो न गणिका भली और न वेश्या। दोनों से ही पुरुष के रूप, धन और यौवन की हानि है ; अतः बुद्धिमानों को दोनों से ही बचना चाहिये। भूल कर भी इनका नाम न लेना चाहिये।

एक राजा और वेश्या की कहानी

किसी पुराने ज़माने में रणधीरसिंह नाम का एक राजा राज्य करता था। वह राजा था तो बड़ा प्रतापी और बलवान, पर कई राजाओं ने मिलकर उसे हरा दिया। पराजय होते ही, वह राजधानी से भाग गया। उसका प्रधान मन्त्री गुणसिन्धु भी उसके साथ हो लिया। दोनों घूमते-घूमते एक और नगर में पहुँचे। उस नगर में कामिनी नाम की एक परम सुन्दरी वेश्या रहती थी। उस वेश्या के धन-भाण्डार को देखकर कुबेर भी लजाता था। अपार धन होने की वजह से, वह वेश्या किसी भी अमीर का आदर न करती थी। यद्यपि वह वेश्या होने से धनाकांक्षिणी और निर्धन-अपमान-कारिणी थी, तथापि उसने दरिद्री रणधीरसिंह का बड़े आदरसे आगत-स्वागत किया। अपने धन-भाण्डार राजा के लिए खोल दिये और भव्य भवन टिकने के लिये बता दिये। उसकी सेवा के लिए अनेक दास-दासी नियुक्त कर दिये। अपने

खजाने की चाबियाँ राजा के हाथों में दे दीं और कह दिया कि यह धन आप ही का है। अपने इच्छानुसार खर्च कीजिये, दिल में जरा भी संकोच न कीजिये। राजा रणधीर राज्य-रहित होने पर भी, उस वेश्या का इतना सहज प्रेम देख, मन-ही-मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसे प्राणों से भी अधिक प्रिय, विश्वासपात्री और सती समझ कर एक दिन एकान्त में अपने मन्त्री से कहने लगा— "हे प्रधान! यह वेश्या बिना किसी स्वार्थ के मेरे साथ इतना प्रेम रखती है। इसने अपना सर्वस्व मुझे सौंप दिया है और ब्याहता स्त्री से भी अधिक आज्ञाकारिणी है। यह सब देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। समझ में नहीं आता, इसकी क्या वजह है? सभी जानते हैं कि वेश्याएँ किसी के साथ प्रीति नहीं करतीं। इनका प्रेम एकमात्र धन के साथ होता है और खूब धन पाने पर भी ये किसी की नहीं होतीं; परन्तु यहाँ तो सब उल्टा ही दीखता है। यह सती और अविचल प्रेमवती है, इसमें मुझे जरा भी शक नहीं होता।" गुणसिन्धु अपने मालिक को आजादी की ठण्डी की बातों की धारा में बहती देख दिल्लगी करता हुआ कहने लगा— 'राजन्! वेश्या का विश्वास विश्व में कौन करता है? कागा जती नहीं होता और वेश्या सती नहीं होती। यह जाति विश्वास-योग्य नहीं। यह किसी को प्यार नहीं करती। इसका एकमात्र प्यारा रुपया है। यह अपने वचन को कभी पूरा नहीं करती। यह कभी किसी से नेह-निर्वाह नहीं करती झूठ बोलना इसका नियम और व्रत है। इसके मन की बात, इसके सङ्कल्प और इसकी मति

कामना को सहज मे ही कोई जान नहीं सकता। यह आपका अत्यन्त आदर करती है। आपके साथ अटल प्रेम प्रकट करती है, पर यह सुख क्षणिक है। मतिहीन लोग वेश्या के बुरे विचारों को न जानकर, उसकी ऊपरी बातों पर मर-मिटते हैं। वह ऊपर से अमृत है, पर भीतर से हलाहल विष है। वेश्या आशा की तरह, आरम्भ में अतिशय आनन्ददायिनी होती है, परन्तु अन्त मे अमित दुःख से पददलित कर छोड़ती है। हरि और हर प्रभृति देवता भी वेश्या और माया के सच्चे स्वरूप को नहीं जानते, तब आदमी बेचारा किस खेत की मूली है ?'

राजा पर मन्त्री की उपरोक्त बातो का बड़ा असर हुआ। उनके दिल मे तरह-तरह के विचार उठने लगे। उन्होंने वेश्या की प्रीति की परीक्षा लेने की ठानी। वह एक दिन साँस चढ़ा कर मुर्दा हो गये। राजा की अन्त्येष्टि क्रिया करने के लिये लोग उन्हे श्मशान पर ले गये। वेश्या भी सफेद कपडे पहन कर सती होने के लिए चिता के पास पहुँची। वह ज्योंही चिता मे गिरने लगी, त्योंही राजा ने चिता से उठ कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "प्यारी ! सच्ची सती ! ठहर ! ठहर ! मै जिन्दा हूँ।'

उस दिन से राजा रणधीरसिंह उस वेश्या के एक दम गुलाम हो गये। उन्हे मन्त्री पर बड़ा क्रोध आया। वे उसे मूर्ख समझने लगे। अब राजा के दिन फिरने और मन्त्री की बात सच्ची होने का समय आया। राजा ने वेश्या की अपार सम्पति खर्च करके कई लाख पैदल, पचास हजार सवार और दस हजार हाथी वगैरः

अपने हाथ में कर लिये। उस सेना को लेकर उन्होंने अपने शत्रु पर चढ़ाई की और उसे पराजित कर अपना राज्य ले लिया। वेश्या पटरानी बनाई गई। सब रानियों से अधिक उसका मान होने लगा।

एक रोज राजा को बहुत ही प्रसन्न देख कर वेश्या ने कहा, "महाराज! मैंने आपके साथ जो भलाई की है, उसे आप यावज्जीवन नहीं भूलेंगे। क्या आप उसके बदले में मेरी भी एक मनोकामना पूरी करेंगे?" राजा ने कहा, "प्यारी! तू जो कहे मैं वही करने को तैयार हूँ।" वेश्या ने कहा, "महाराज! मेरा एक प्राणाधार, परम प्यारा, नयनों का तारा है। वह निरपराध, चोर समझा जाकर, विदर्भ नगर में पकड़ा गया और आज तक जेल में बन्द है। आप उसे कठिन कारागार से छुड़ाकर, दासी को कृतार्थ कीजिये।"

वेश्या की उपरोक्त बात सुनते ही राजा के होश-हवाश जाते रहे। अक्ल हवा हो गई, सन्नाटा छा गया, वे ठग-से हो गये। वे इकटक वेश्या के मुँह की तरफ देखने लगे। कुम्हलाये हुए कमल के फूल की तरह, उनका सिर नीचे को झुक गया। इस समय उन्हें मन्त्री की बातें याद आईं। उनके दिल में समुद्र की लहरों की तरह एक-पर-एक संकल्प उठने लगे। बड़ी देर के बाद वह बोले:—

"प्यारी! सुख-दुःख की साथिन! तुझे आज क्या हो गया है? क्या तूने आज शराब पी ली है? तू आज ऐसी बेहूदी बातें क्यों कर रही है?" राजा ने बहुत तरह से समझाया, पर वह अपनी

बात मे ज़रा भी न डिगो। उसने कहा, "महाराज ! आप बहुत भोले हैं। जगत में बिना स्वार्थ के कोई भी मुहब्बत नहीं करता, जिसमें हमारा तो स्वार्थपरायण व्यवहार जगत मे प्रसिद्ध है। अगर आपको मेरे उपकार का लेशमात्र भी ध्यान है और आपके चित्त पर कृतज्ञता का जरा भी संस्कार है,तो आप मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार कीजिये " लाचार राजा ने सेना भेजकर विदर्भ नगर को फतह किया और उस वेश्या के यार को जेल से छुड़ाकर उसके हवाले किया।

बुद्धिमानो ! वेश्या से सदा सावधान रहो। वह तुमसे प्रेम रखती है, तुम्हें चाहती है, ऐसा कभी मत समझो। अगर ऐसा समझोगे, तो धोखा खाओगे। वेश्या यार से बातें करती है, पर उसका मन और जगह रहता है। वेश्या अपना तन हर किसी को सौंप देती है, पर मन किसी को नहीं सौंपती। वह क्षण-क्षण में नई-नई बातें कहती है। एक शब्द दूसरे के प्रतिकूल कहना तो उसका कर्त्तव्य है। बातों को लौटफेर और फरेब का ढेर सदा उसके पास मौजूद रहता है। वेश्या झूठ की पुतली है। उसे यथार्थ रूप से कोई भी जान नहीं सकता। वेश्या पाँच तरह के यार रखती है, (१) एक की तो वह तारीफ ही किया करती है, (२) दूसरे का धन लूटती है, (३) तीसरे से सेवा कराती है, (४) चौथे को अपनी रक्षा के लिये रखती है, और (५) पाँचवें की सदा मसखरी किया करती है। वेश्या किसी से भी प्रीति नहीं करती। जो नर वेश्या के बन्धन में फँस जाता है, उसकी मुक्ति त्रिकाल में भी नहीं होती।

उसका सत्यानाश हो जाता है । सुख-शान्ति उससे किनारा कर जाते हैं। कुटुम्ब-परिवार वाले उसे धिक्कारते हैं। वेश्यागामी इस लोक और परलोक में अनेक तरह के कष्ट और क्लेश भोगता हुआ चौरासी लक्ष योनियों में भ्रमता रहता है। जिस तरह साँप अपनी पुरानी केंचली को त्याग देता है, उसी तरह वेश्या अपने करोड़पति यार को भी निर्धन होते ही, जूते मारकर निकाल देती है। इसलिये जिन्हें संसार में सुख भोगना हो, वे वेश्या के नज़दीक न जावे।

किसी ने क्या खूब कहा है:—

गाना नं० १

रण्डी नहीं किसी की यार, ओ घर-बार लुटाने वाले।
तीखे नयन चलाने वाले, रण्डी नहीं किसी की यार॥
इनका झूठा है जंजाल, इनका खोटा है व्यवहार।
इसमें नफा नहीं है यार, ओ घर-बार लुटाने वाले॥
इनके नखरे इनकी चाल, इनके चिकने चिकने गाल।
इनके लम्बे-लम्बे बाल, आफत करने वाले॥
रण्डी नहीं किसी की यार ओ घर-बार लुटाने वाले।
इनकी सुहबत, इनकी बातों में मत आना॥
इन पर दिल को मत ललचाना, इनकी सुहबत से घबराना।
आफत आ जाय जाने वाले।
रण्डी नहीं किसी की यार।
ओ घर-बार लुटाने वाले॥

जब तक पैसा तब तक रण्डी ।
जब तक खिसके तब तक मण्डी ।
वह तो खा खा हुई मुष्टण्डी ।
तुम पर आने लगे तमाले ।
जब से रुक गई घर की मोरी ।
माँगो भीख करो या चोरी ।
अब तो हवा जेल की खा ले ।
रण्डी नहीं किसी की यार ।
ओ घर-बार लुटाने वाले ॥

गाना नं० २

पहले तो घर मे दाम बिछाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

करके सिंगार शाम को, आ बैठी बाम पर ।
करती हैं फिर इशारा, वह मक्कार बेख़तर ।
देखा कि मालदार कोई आता है इधर ।
फौरन किया सलाम, फिर उसने झुका के सर ॥

किस ढब से तुम्हें चाल में, लाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़ दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

दाम = जाल । बाम = छत, अटारी । बेदाने = बिना चारे के । मुर्ग़-दिल = यहाँ दिल को मुर्ग़ पक्षी कहा है ।

लेकर सलाम हो गये, गैंडा से फूल कर।
कोठे पै उसके चढ़ गये सोचा न कुछ मगर॥
तकिया लगाके बैठ गये, सीना तान कर।
रण्डी ने देखते ही, करी माल पर नज़र॥

हँस-हँस के नाज-नखरे, दिखाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ॥

गर्दन मे हाथ डाल, बोली वह सीमवर—
"पहलू में लेके सोइये, मुझे कल को रात भर॥
दोनों मज़े उड़ायेंगे, वल्लाह ता-सहर।"
फिर नायकाजी बोली, कि जल्दी शिकार कर॥

बातें बना-बना के, लुभाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ॥

मक्कार नायका की, तो सुन लीजिये दास्तान।
जल्दी से जाके अपना, उठा लाई पानदान॥
बोली, तम्बाकू, छालियाँ मँगा दीजियेगा पान।"
रण्डी बोली, "हाँ, अभी आता है मेरी जान!"

पहला सवाल तुमको, सुनाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ॥

गैंडा = एक भयङ्कर मोटा जङ्गली जानवर। सीना = छाती।
सीमवर = चन्द्रवदनी, चाँदी जैसी गोरी। पहलू = बग़ल। ता = तक।
सहर = सवेरा। दास्तान = कहानी। छालियाँ = सुपारी।

जेबों में लगी देखने, वह हाथ डाल कर।
मुट्ठी में भर के लाई कुछ थोड़ा-सा मालोज़र॥
उस्ताद जी से बोली, "ज़रा आइयो इधर।
कत्था तम्बाकू छालियाँ, इन्हें लादें जल्दतर॥"
फौरन ही फिर तो, पान खिलाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ॥

चिल्लाके बोली नायका, "यहाँ होते जाइये।
रबड़ी और दूध थोड़ा-सा, हलवा भी लाइये॥
दो पैसे की अफ़यून भी, तुम लाते आइयो।
सदका गई उस्ताद, ज़रा जल्दी आइयो॥"
थोड़ा-ही-थोड़ा करके, मँगाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ॥

जब सेठजी का हो गया थोड़ा-सा ख़र्च माल।
रण्डी ने फिर दी उन्हें, फौरन ही एक चाल॥
गद्दी बनाके रख लिया, एक स्यानी में रूमाल।
बोली कि छोड़ दो मुझे, इस वक़्त है ग़ैर हाल॥
अय्याम का बहाना बनाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ॥

अफ़यून = अफीम। सदका गई = बलायें लूँ, कुर्बान हूँ। मालोज़र = रुपया पैसा। स्यानी = गुप्त अङ्ग। औरतें रजस्वला होने के समय उस अङ्ग में कपड़ा रख लेती हैं, ताकि खून-हैज़ से धोती ख़राब न हो।

फिर नायकाजी बोलीं, "अजी सेठजी जनाब !
बनिये का और सुनार का देना है कुछ हिसाब ॥"
रण्डी ठसक के बोली, "नहीं देते हो जवाब ?
घबड़ा के बोले सेठजी, "बुलवाइये शिताब ॥"

अब घर में उनके आग लगाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

बनिये का और सुनार का जब दे चुके हिसाब ।
फिर सेठजी पै और हुआ, एक नया इताब ॥
"जोड़ा बना के लाइये, जल्दी से लाजवाब ।
फिर कौन है तुम्हारे सिवा, लूटे जो शबाब ?"

हर रोज़ ताज़ा फिकरा बनाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

जोड़े का नाम सुनते ही, बाज़ार में जाकर ।
कपड़ा लिया और लाये वह दरज़ी को बुलाकर ॥
कहने लगे, "सीदो इसे, जल्दी सजाकर ।"
रण्डी से कहा, "पहन लो, ऐ जान ! पहले नहाकर ॥

इस शब फिर उसे, पास सुलाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़ दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

शिताब = जल्दी । इताब = हुक्म । लाजवाब = बेजोड़, अद्वितीय ।
शबाब = जवानी का नशा । शब = रात ।

शब-भर तो मज़ा सेठजी ने खूब उड़ाया ।
रण्डी ने सेहर होते ही एक फ़िक़रा बनाया ॥
ऐसा कोई मर्द नहीं आज तक आया ।
रग-रग में मेरे दर्द था तुमने मिटाया ॥

बे-पर की देखो कैसी उड़ाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिलको फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

ये सुनते ही फिर सेठजी फूले न समाये ।
घर में था जो कुछ मालोज़र सारा ही ले आये ॥
गुलछर्रे कई रोज़ तक खूब उड़ाये ।
जब कुछ न रहा पास तो फिर फ़ाक़ों पर आये ॥

अब लुच्चा बेईमान बताती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

रण्डी ने मूँड़-मांड के जब घर से निकाला ।
आँखें जो खुलीं फिर, तो नज़र आया उजाला ॥
जो कहता था बहनोई वह कहता नहीं साला ।
जब कुछ न रहा पास तो जपने लगे माला ॥

लो इस तरह हज़ामत बनाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिलको फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

शब भर = रात भर । सेहर होते ही = सवेरा होते ही । रग-रग = नस-नस । बेपर = बिना सिर पैर की । फ़ाक़ों पर आये = उपवास करने लगे, भूखों मरने लगे ।

इकतरफ़ा और ग़ज़ब, फ़लक-पीर ने डाला ।
गरमी जो हुई, फिरते हैं पकड़े हुए आला ॥
ग़ुज़ बहुत गहीं और कोई पूछने वाला ।
फिर नीम की टहनी से पड़ा उनके पाला ॥
दोज़ख़ का मज़ा अब तो चखाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

जिस कमरे पै होती थी बहुत आपकी इज़्ज़त ।
अब कोई नहीं पूछता यह हो गई हालत ।
बेज़ार हैं सूरत से ग़ज़ब हो गई नफ़रत ।
भड़वों का इशारा है, कहाँ की है ये मिल्लत ॥
किस ज़िल्लतो ख़्वारी से उठाती है रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

अब भी तुम्हें कुछ शर्म मियां सेठजी! आई ।
जब घर में गये जूतों से मारे है लुगाई ॥
जो मुफ़्त में रुसवा हुई, ज़िल्लत भी उठाई ।
न माँ है वफ़ादार, न फ़रज़न्द न भाई ॥
जूतों पै जो बैठें तो उठाती हैं रण्डियाँ ।
बे-दाने मुर्ग़ दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ ॥

ग़ज़ब = आफ़त । फलक = आस्मान । पीर = देवता । गरमी आतशक, उपदंश । आला = शिश्न, लिंगेन्द्रिय । दोज़ख़ = नरक रुसवा = बदनामी । फ़रज़न्द = बेटा ।

तरह हुए इश्क़ ने फिर आके सताया।
जा करके लबे बाम यह रो-रो के सुनाया॥
जो माल कि था पास मेरे, मैंने लुटाया।
अब रख लो मुलाज़िम,तो रहे आपका साया॥
क्या रङ्ग ज़माने का दिखाती है रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ॥
"शहबाज़" क़लम रोक अब आगे न बढ़ाना।
इतना ये बहुत है जो तेरे कहने को माना॥
रंडी से वफ़ा कब है? यह जानता है ज़माना।
इस शब वह होती हामिला लिख उसका ज़माना॥
इसको नवां महीना, बनाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को फँसाती हैं रण्डियाँ॥
लो और सुनो सेठ की किस्मत, की बुराई।
रण्डी के जो लड़की हुई वह किसकी कहलाई॥
हरेक ने फिर उनकी तरफ उङ्गली उठाई।
रण्डी की जो लड़की है इन्हीं की तो है जाई॥
अब रिश्तेदार तुमको बनाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को बनाती हैं रण्डियाँ॥

तरह हुए = दूर हुए। इश्क़ = प्रेम। मुलाज़िम = नौकर। साया = छाया। शहबाज़ = कवि का नाम है, जिसने यह कविता बनाई है। वफ़ा = भलाई। हामिला = गर्भवती। ज़माना = दुनिया।

रण्डी ने छठी नहा के लो फिर रात जगाई।
हर भड़वा हरेक रण्डी हरेक नायका आई॥
बोली कि मुबारक हो यह दौलत तूने पाई।
सदक़े मेरी बच्ची, यह खिलायेगी कमाई॥

लो नुत्फ़ा नातहक़ीक़, कहाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़-दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ॥

इन सेठ के लड़के ने उधर होश सँभाला।
लड़की ने जवान होते ही जोबन को निकाला॥
शैतान ने इन दोनों को फिर बोखला डाला।
लड़के ने सेठ की उसी लड़की को सँभाला॥

भाई बहन को पास सुलाती हैं रण्डियाँ।
बे-दाने मुर्ग़ दिल को, फँसाती हैं रण्डियाँ॥

शैतान की शागिर्द हैं ज़रियते शैतान।
लाहौल नहीं पढ़ते किधर है तुम्हारा ध्यान?

रात जगाई = रतजगा किया। मुबारक हो = फलो फूलो; बधाई है। सदक़े = बलैया लूँ कुर्बान होऊँ। नुत्फ़ा नातहक़ीक़ = जिसके बीज का पता न हो। बोखला डाला = पागल बनाया, गुमराह किया। शैतान = खुदा का मुखालिफ़, जो लोगों को बुरी राह पर चलने को बहकाता है। जरियते शैतान = शैतान की औलाद। लाहौल = नफ़रत का कलमा।

दौलत भी गई मुफ्त में खोया गया ईमान ।
गर लाख रुपये दीजिये तो क्या इन पर है ऐहसान ?
और अपना ही ऐहसान जताती हैं रण्डियां ।
बे-दाने मुर्ग-दिल को फँसाती हैं रण्डियां ॥

छप्पय

जातिहीन, कुलहीन, अन्ध, कुत्सित कुरूप नर ।
जरा-ग्रसित कृशगात, गलित कुष्ठी अरु पाङर ॥
ऐसेहू धनवान होय, तो आदर वाकों ।
अपनो गात बिकाय, लेत हर सर्वस ताको ॥
गनिका विवेक-बेल को, कदन करन वारी ।
निरखि बच रहे कुलवन्त-नर, पचत पचत मूरख हरषि ॥८६॥

89 What sensible man would like to have sexual intercourse with those prostitutes who give away their beautiful bodies for the sake of a little wealth even to those who are born blind, are ugly, are inactive due to old age, are foolish, are of low caste and are suffering from leprosy These prostitutes are like knives to cut the creeper of reasoning

—:※:—

वेश्याऽसौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता ।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च ॥६०॥

यह वेश्या सुन्दरता रूपी ईंधन से जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है । कामी पुरुष इस अग्नि में अपने यौवन और धन की आहुति देते हैं ॥६०॥

खुलासा - वेश्या तेज आग के समान है । जिस तरह आग लकड़ियों में जलती है, उसी तरह वेश्या-रूपी अग्नि वेश्या के रूप-रूपी ईंधन से जलती है । जिस तरह होम की अग्नि में घृत, चावल और तिल प्रभृति की आहुति दी जाती है, उसी तरह वेश्याग्नि में कामी लोग अपनी जवानी और धन की आहुति देते हैं । होम की अग्नि में घृत, चावल प्रभृति जिस तरह जल कर राख हो जाते हैं, उसी तरह वेश्या-रूपी अग्नि में,कामियों के रूप, यौवन और धन की राख हो जाती है । सारांश यह कि वेश्या से प्रीति करने वालों के रूप, यौवन और धन कतई नाश होजाते हैं । रण्डीबाजी करने वाले अनेकों करोड़पति खाकपति और दर-दर के भिखारी हो गये । अतःबुद्धिमानों को इस वेश्या-रूपी भयङ्कर अग्नि से सदा दूर रहना चाहिये, क्योंकि जिस तरह अग्नि में गिरने वाला सर्वथा भस्म हो जाता है, उसी तरह वेश्या-रूपी अग्नि में गिरने वाला भी सर्वथा भस्म हो जाता है, क्योंकि रूप-यौवन तो चन्द रोज में ही स्वाहा हो जाते हैं । जब तक धन रहता है, वेश्या प्यार (झूठा दिखावटी प्यार) करती है । कामी धनहीन हुआ कि वेश्या

ने उसे घर से धक्के देकर या जूतियाँ लगवा कर निकाला। जब कामी इस दुर्गति को पहुँच जाता है, तब वह या तो विष प्रभृति खा कर या गले में फाँसी लगा कर मर जाता है अथवा चोरी वगैरः करने से पकड़ा जाकर जेल में ठूँस दिया जाता है। वहाँ वह दुःख पाकर मर जाता है। अगर जेल की अवधि पूरी करके चला भी आता है, तो फिर वेश्या के लिये धन देने को चोरी प्रभृति करता है या किसी की हत्या करके उसका धन हथियाने की चेष्टा में पकड़ा जाकर फाँसी पर लटका दिया जाता है।

दोहा

गनिका कनिका अगिन की, रूप समिध मजबूत।
होम करत कामी पुरुष, धन यौवन आहूत ॥ ९० ॥

सार—वेश्या धन और प्राणों के नाश करने वाली भयङ्कर अग्नि है।

90. The prostitutes are the flames of passion burning with the fuel of beauty. Lustful men throw into that fire their wealth and health.

—o—

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि।
चारभटचौरचेटकनटविटनिष्ठीवनशरावम् ॥ ९१ ॥

वेश्या का अधर-पल्लव (ओठ) यद्यपि अतीव मनोहर है; किन्तु वह जासूस, सिपाही, चोर, नट, दास, नीच और जारों के थूकने का ठीकरा है। इसलिये कौन कुलीन पुरुष उसे चूमना चाहेगा ? ॥ ६१ ॥

खुलासा—सुन्दरी वेश्या के होठ निश्चय ही बड़े मनोहर होते है, परन्तु उसके सुन्दर होठों को चोर, बदमाश, गुण्डे, गुलाम, डाकू और भाँड़ प्रभृति महानीच चूमते और चूसते है; इसलिये वह महा अपवित्र और गन्दे हो जाते हैं। ऐसे गन्दे और नापाक ओठों को कौन प्रतिष्ठित और ऊँचे कुल का पुरुष चूमना चाहता है ? अर्थात् उसे नीच लोग ही चूमना चाहते हैं; कुलीन पुरुष उस नीचों के थूकने के ठीकरे मे अपनी जीभ लगा कर उसे गन्दी नही करते।

पहले लिख आये हैं कि वेश्या पैसे की गुलाम है, उसे पैसे से प्रेम है। वह रूप, यौवन, गुण, विद्या और उत्तम वंश प्रभृति को नहीं देखती। उसे यदि भङ्गी और चमार धन दें, तो वह उन्हीं की हो जाती है। उसके सुन्दर ओठों को वही चूमते-चाटते और उसके शरीर को गन्दा करते हैं। जिसे कुछ भी पवित्रता-अपवित्रता का ध्यान है, जिसने उच्च कुल और उत्तम वर्ण में जन्म लिया है, वह वैसी गन्दगी की खान से नेह लगा कर, क्यों अपनी आत्मा को कलुषित करेगा ? वेश्या नीच पापियों के योग्य है, अतः नीच लोग ही उसके पास जायेंगे। भङ्गी और चमारों का काम भङ्गी-चमार ही करेंगे; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य उनके कामों को हरगिज़ न करेंगे।

सोरठा

गनिका के मृदु ओठ को कुलीन चुम्बन करै ?
नट, भट, विट, ठग, गोठ, पीकपात्र है सबन को ॥९१॥

सार—वेश्याएँ महा अधम और पापियों के द्वारा भोगी जाती हैं, अतः वे श्रेष्ठ-कुलोत्पन्न पुरुषों के योग्य नहीं।

91. Though the leaf-like lips of a prostitute are beautiful, yet what respectable person would kiss that which is the pot where cheats rogues, rustics, thieves and knaves throw their saliva.

———

धन्यास्त एव चपलायतलोचनानां
तारुण्यदर्पघनपीनपयोधराणाम् ॥
क्षामोदरोपरिलसत्त्रिवलीलतानां
दृष्ट्वाऽऽकृतिं विकृतिमेति मनो न येषाम् ॥९२॥

चञ्चल और बड़ी-बड़ी आँखों वाली, यौवन के अभिमान से पूर्ण, दृढ और पुष्ट स्तनों वाली एवं क्षीण उदर-भाग पर त्रिवली से सुशोभित युवती स्त्रियों की सूरत देखकर, जिन पुरुषों के मन में विकार उत्पन्न नहीं होता, वे पुरुष धन्य हैं।

खुलासा—बड़ी-बड़ी चञ्चल आँखों वाली, नारङ्गियों के समान गोल और कठोर स्तनों वाली तथा पेट के अधो भाग पर तीन

रेखाओं वाली जवान स्त्री को देखकर किसी विरले ही माई के लाल के मन में अनुराग उत्पन्न नहीं होता। जिसके मन में ऐसी सुन्दरी को देख कर उथल-पुथल नहीं मचती, जिसका मन ऐसी नारी को देखकर विचलित नहीं होता, वह पुरुष निश्चय ही क़ाबिल तारीफ़ है। उसने संसार को जीत लिया है। उससे बढ़कर और शूरवीर नहीं। वह चेष्टा करने से सहज में परमपद पा सकता है। जिसका मन ऐसी सुन्दरी पर नहीं चलता, उसका मन और किसी भी संसारी पदार्थ पर नहीं चल सकता। जिसे ऐसी तरुणी से विराग है, उसे संसार से विराग है। जिसे ऐसी नारी से विरक्ति है, वह निश्चय ही महात्मा है। किसी ने ठीक कहा है—

सानुरागां स्त्रियं दृष्ट्वा, मृत्युम् वा समुपस्थितम्।
अविकलमनाः स्वस्थो, मुक्त एव महाशयः॥

अनुराग पूर्ण स्त्री और मौत को सामने देखकर भी, जिसका मन व्याकुल नहीं होता, वह महाशय मुक्त-रूप है।

दोहा

छीण लंक अरु पीन कुच, लखि तिय के दृग तीर।
जे अधीर नहिं करत मन, धन्य-धन्य ते धीर॥६२॥

सार—परम रूपवती नवीना नारी पर जिसका मन नहीं चलता, वह मनुष्य नहीं देवता है।

92. Blessed are those whose minds are not disturbed on looking at the woman who has full grown and high breasts and on whose thin belly are the elegant lines

---

बाले लीलामुकुलितममी सुन्दरा दृष्टिपाताः
किं क्षिप्यन्ते विरम विरम व्यर्थ एष श्रमस्ते ॥
सम्प्रत्यन्ये वयमुपरतं बाल्यमास्था वनान्ते
क्षीणो मोहस्तृणमिव जगज्जालमालोकयामः॥९३॥

हे बाले ! लीला से ज़रा-ज़रा खुले हुए नेत्रों से सुन्दर कटाक्ष हम पर क्यों फेंकती है ? विश्राम ले ! विश्राम ले ! हमारे लिये तेरा यह श्रम व्यर्थ है, क्योंकि अब हम पहले जैसे नहीं रहे । अब हमारा छोरपन चला गया, अज्ञान दूर हो गया । हम वन में रहते हैं और जगजाल को तिनके के समान समझते हैं ।

93. Maiden ! why are you casting your sweet and sportful glances at me ? Pray, stop there. Your efforts in this connection are useless. I am a changed man now. My illusion is gone, I consider the worldly bondage as that of straw.

—※—

इयं बाला मां प्रत्यनवरतमिन्दीवरदल-
प्रभाचोरं चक्षु क्षिपति किमभिप्रेतमनया ॥
गतो मोहोऽस्माकं स्मरशबरबाणव्यतिकर-
ज्वलज्ज्वालाः शान्तास्तदपि न वराकी विरमति ॥९४॥

इस बाला का क्या मतलब है, जो यह अपने कमल-दल की शोभा को तिरस्कार करने वाले नेत्रों को मेरी ओर चलाती है ? मेरा अज्ञान नष्ट हो गया और कामदेव रूपी भील के वाणों से उत्पन्न हुई अग्नि भी शान्त हो गई, तथापि यह मूर्खा बाला विश्राम नहीं लेती ॥ ९४ ॥

94. What does this young woman mean by casting her eyes, which surpass the beauty of the lotuses, constantly on me ? I am no longer under the charm of illusions The fire of passion, kindled by the arrows of Cupid, have subsided in me and yet this foolish girl would not desist

शुभ्रं सद्म स विभ्रमा युवतयः श्वेतातपत्रोज्ज्वला
लक्ष्मीरित्यनुभूयते स्थिरमिवस्फीते शुभे कर्मणि ॥
विच्छिन्ने नितरामनङ्गकलहक्रीडात्रुटत्तन्तुकं
मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रश्यद्दिशो दृश्यताम् ॥९५॥

जब तक मनुष्य के पूर्व-जन्म के शुभ कर्मों का फल रहता है तब तक उज्ज्वल भवन, हाव-भाव-युक्त सुन्दरी नारियाँ और सफेद छत्र चँवर प्रभृति से शोभायमान लक्ष्मी—ये सब स्थिर भाव से भोगने में आते हैं, किन्तु पूर्व जन्म के पुण्यों का क्षय होते ही ये सब सुखैश्वर्य के सामान कामदेव की क्रीड़ा के कलह से टूटे हुए हार के मोतियों के समान—शीघ्र ही जहाँ-तहाँ लुप्त हो जाते हैं ॥६५॥

खुलासा—जब तक मनुष्य के पहले जन्म में किए हुए शुभ कर्म अथवा पुण्य कर्मों का ओर-छोर नहीं आता, तभी तक सुन्दर-सुन्दर आलीशान महल, अपने हाव-भावों, नाजो-अदाओं से पुरुष का मन हरने वाली सुन्दरी ललनायें तथा छत्र, चँवर रथ, घोड़े, हाथी, पालकी, जोड़ी, बग्गी प्रभृति सुख-ऐश्वर्य के सामान बने रहते हैं और पुरुष उन्हें स्थिरता के साथ भोगता है, किन्तु ज्योंही उसके पूर्व जन्म के पुण्य-कर्मों अन्त हो जाता है, ईश्वरीय खाते में पुण्य-कर्म नहीं रहते, त्योंही उपरोक्त महल मकान, जमीन-जायदाद, बाग़-बगीचे, मनमोहिनी चन्द्रवदनी स्त्रियाँ और लक्ष्मी एवं समता प्रभृति इस तरह बिलाय जाते हैं, जिस तरह रत-केलि के समय—स्त्री-पुरुषों में खींचातानी और झगड़ा-झगड़ी होने से—हार के मोती टूट-टूट कर चारों ओर लुप्त हो जाते हैं।

दोहा

शुभ कर्मन के उदय में, गृह तिय वित सब ठोर।
अन्त भये तीनों नहीं ज्यों मुक्ता बिन-डोर ॥६५॥

सार—जब तक मनुष्य के पूर्व जन्म के पुण्यों का क्षय नहीं होता, तब तक सारे संसारी सुखैश्वर्य्य बने रहते हैं। पुण्य क्षय होने पर, वे क्षण भर भी नहीं रहते।

65. A white palace, a good and loving young woman and the wealth with the (royal) symbol of white umbrella, are enjoyed only so long as there is the growth of good virtuous acts, but when they (virtuous acts) diminish then all the enjoyments run away from the man to different directions like the petals of a garland broken in the quarrel of amorous plays

---

सदा योगाभ्यासव्यसनवशयोरात्ममनसो
रविच्छिन्ना मैत्री स्फुरति यमिनस्तस्यकिमु तैः ॥
प्रियाणामालापैरधरमधुभिर्वक्त्रविधुभिः
सनिश्वासामोदैः सकुचकलशाश्लेषसुरतैः ॥६६॥

जो अपने मन को वश मे करके, आत्मा को सदा योगाभ्यास-साधन मे लगाये रहना ही पसन्द करते है, उन्हे प्यारी-प्यारी स्त्रियों की बातचीत, अधरामृत, श्वासों की सुगन्धि सहित मुखचन्द्र और कुचकलशों को हृदय से लगाकर काम-क्रीड़ा से क्या मतलब ? ॥६६॥

खुलासा—जिनको अपनी इन्द्रियों और मन को वश में रखने तथा योग-साधन का अभ्यास करने के लाभ नहीं मालूम, वह विषय-भोग भोगना ही अच्छा समझते हैं और सदा भोग भोगने में ही मस्त रहते हैं। ऐसे कामियों को एकान्त में स्त्रियों से बातचीत या गुफ्तगू करना, उनके ओठ चूसना, उनके श्वास से निकली मृगमद-कस्तूरी को लजाने वाली सुगन्धि सूँघना, चन्द्रमा के समान मुख को चूमना और सोने के दो कलशों या नारङ्गियों अथवा कच्चे-कच्चे सेवों के समान कुचों को छाती से लगाकर उनसे संगम करना ही अच्छा लगता है, किन्तु जिन्हें मन और इन्द्रियों को काबू में करके सदा योगाभ्यास का व्यसन रखना ही अच्छा लगता है, उन्हें सुन्दरियों की मीठी-मीठी बातें सुनना, उनके निचले होंठ को चूसना, उनके मुख की सुगन्धि का आस्वादन करना, उनके चन्द्रानन को देखना, उनके गुलाबी गाल चूमना और दो कलशों के समान ऊँचे उठे हुए कठोर कुचों को हृदय से लगाकर उनके साथ संगम करना अच्छा नहीं लगता। वे इन सबको वृथा समझते हैं। उन्हें इनमें ज़रा भी आनन्द नहीं मालूम होता।

सार—विषयासक्त कामियों को स्त्रियाँ अच्छी लगती हैं, पर इन्द्रिय-विजयी ज्ञानियों को निरन्तर योगाभ्यास में लगे रहना ही अच्छा मालूम होता है।

96. Of what use are the sweet conversation with a lovely woman, the nectar of her moon-like face with scented breath and the sweet enjoyment of sexual intercourse while pressing her pot-like breasts to the bosom, to those whose mind and soul are constant friends and take delight in the practice of concentration

—

अजितात्मसु सम्बद्धः समाधिकृतचापलः ।
भुजङ्गकुटिलः स्तब्धो भ्रूविक्षेपः खलायते ॥ ९७ ॥

अजितेन्द्रिय मनुष्यों से सम्बन्ध रखने वाला, चित्त की एकाग्रता या समाधि में अतीव चञ्चलता करने वाला, सर्प के समान कुटिल और स्तब्ध स्त्रियों का भ्रूक्षेप या कटाक्ष खल के समान आचरण करता है ॥ ९७ ॥

खुलासा—स्त्रियों का कटाक्ष (चतुराई से भौंह चलाना) अजितेन्द्रियों से सम्बन्ध रखता है, चित्त को एकाग्र रहने नहीं देता और समाधि को भङ्ग करता है;, अतएव वह साँप के समान कुटिल और दुष्टों का-सा काम करने वाला है। पर ध्यान रहे कि वही कटाक्ष जितेन्द्रियों से सम्बन्ध नहीं रखता । वह उनका कुछ भी नहीं कर सकता। न वह उनके चित्त की एकाग्रता में खलबली डाल सकता है और न उनकी समाधि ही भंग कर सकता है।

दोहा

तिय-कटाक्ष खल-सरिस है, करत समर्थिहिं संग।
प्राकृत जन संसर्ग रत, शठ-इव कुटिल भुजङ्ग ॥ ९७ ॥

सार—खलों के समान आचरण करने वाले स्त्रियों के कटाक्ष का जोर केवल कामियों पर ही चलता है, जितेन्द्रियों का वह कुछ भी नहीं कर सकता।

—:o:—

मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुंकुमार्द्रे
कान्तापयोधरतटे रसखेदखिन्नः।
वक्षोनिधाय भुजपंजरमध्यवर्ती
धन्यः क्षपां क्षपयति क्षणलब्धनिद्रः ॥९८॥

जो पुरुष मैथुन के श्रम से थक कर, मतवाले हाथी के कुम्भों के समान विस्तीर्ण और केशर से भीगे हुए स्त्री के स्तनों पर अपनी छाती रख कर, उसके भुजा रूपी पञ्जर के बीच में पड़ा हुआ, एक क्षण भी सोकर रात बिताता है, वह धन्य है ॥ ९८ ॥

खुलासा—मैथुन के बाद पुरुष का बल क्षीण हो जाता है, मिनट दो मिनट के लिये उसमें उठने की भी सामर्थ्य नहीं रहती; तब वह स्त्री की छातियों पर अपनी छाती रक्खे हुए, उसके दोनों हाथों के बीच में पड़ा हुआ शान्ति की नींद-सी लेता या अपनी

थकान दूर करता है। कवि महोदय कहते हैं कि जो पुरुष क्षण-भर के लिये भी यह आनन्द उपभोग करता है वह भाग्यवान है, उसने पूर्वजन्म में पुण्य किये हैं।

छप्पय

कुंकुम-कर्दम-युक्त, मनगज कुम्भ बने मन ।
कान्ता कुचतट माहिं गने, रस-नेह सिक्त जनु ।
तेहि भुज-पंजर मध्य रहे सुख सों लिपटाने ।
छण इक निद्रा लहे, छणा आनन्द नहिं जानें ।
इमि निज वक्षस्थल ताहि सों, जोरि रहे जे शुभग नर ।
हैं तेई यहि संसार में, धन्यवाद के योग्य वर ॥ ९८ ॥

सुधामयोऽपि क्षयरोगशान्त्यै नासाग्रमुक्ताफलकच्छलेन ।
अनंगसञ्जीवनदृष्टिशक्तिर्मुखामृतं ते पिबतीव चन्द्रः ॥९९॥

हे प्यारी ! यह चन्द्रमा अमृतमय, अतएव काम चैतन्य करने वाला होने पर भी, अपने क्षय रोग की शान्ति के लिये, नाक के अगले हिस्से में लटकते हुए मोती के मिस से, तेरे अधरामृत को पी रहा है ॥ ९९ ॥

कवि महोदय स्त्री की नाक के अग्रभाग में लटकते हुए मोती को पूर्ण चन्द्रमा मान कर कहते हैं कि हे सुन्दरी ! यद्यपि चन्द्रमा स्वयं अमृतमय है और वह पुरुषों के हृदयों में कामोद्दीपन करने की शक्ति और सामर्थ्य रखता है, तथापि वह अपने राजरोग या

नथ के आराम करने के लिये बड़े-से मोती का रूप धर करके,तेरी नाक की बुलाक या नथ मे लटका हुआ, तेरे होठों के अमृत को पान कर रहा है। रसिक कवि कहते हैं:—

दोहा

प्रिये ! सुधाकर रोग निज क्षयो-निवृत्ति-उपाय ।
चन्द पिवत मधु अधर को नथ-मोती-मिस आय ॥

दोहा

मनसिज-वर्द्धक अमृतमय, क्षयी-हरण शशि जान ।
नासा मोती मिस किये करे अधरामृत पान ॥६६॥

सार—स्त्री का अधरामृत सुधाकर के अमृत से भी अच्छा है।

99. O lady ! although the moon is full of nectar and the sight of moon gives rise to sexual desires, yet she is unable to cure her own disease of pythesis and inorder to cure herself of that disease, the moon has, as it were, transformed herself into a pearl pendant of your nose and is constantly tasting the nectar of your lips.

—:※:—

दिश वनहरिणीभ्यो वंशकाण्डच्छवीनां
कवलमुपलकोटिच्छिन्नमूलं कुशानाम् ।

शुकयुवतिकपोलोपाण्डुतांबूलवल्ली-

दलमरुणनखाग्रैः पाटितं वा वधूभ्यः ॥१००॥

हे पुरुषो ! या तो तुम वन-मृगियों के लिये घास के दाढ़े की समान छविवाली, पत्थर की नोक से कटी हुई मूलवाली, कुश नामक घास के ग्रास दो अथवा सुन्दरी बहुओं के लिये लाल-लाल नाखुनों से तोड़े हुए सई; तोती के कपोल के समान, जरा-जरा पीले रङ्ग के पान दो ॥ १०० ॥

खुलासा- मनुष्यो ! दो में से एक काम करो—(१) या तो घर-गृहस्थी की मोह-ममता तोड़, वन में जा, ईश्वराराधना में मन लगाओ और पत्थर की नोक से कुश-घास की जड़ें काट-काट कर जङ्गली हिरनियों को चुगाओ, अथवा घर में रह कर सुन्दरी नव-युवतियों को पके हुए पीले पीले पानों के बीड़े दो।

दोहा

वन-मृगिन के देन को, हरे-हरे तृण लेहु।

अथवा पीरे पान को, बीरा बहुअन देहु ॥१००॥

सार—दो में एक काम करो,(१) या तो वन में जा ईश्वर-भजन करो, अथवा (२) घर में रह नव-वधुओं को भोगो।

100. O people, you are either to feed the wild deer with Kush grass cut by the sharp edges of

stone resembling bamboo sticks or to offer betel of slight yellow colour torn by red nails to beautiful wives.

यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंचारजनितं
तदा सर्वं नारीमयमिदमशेषं जगदभूत ।
इदानीमस्माकं पटुतरविवेकाञ्जनदृशां
समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते ॥१०१॥

जब तक मुझ में काम का अज्ञान-अन्धकार था, तब तक मुझे सारा संसार स्त्रीमय दीखता था; लेकिन अब मैंने आखो में विवेक-अञ्जन लगाया है, इसलिये मेरी समदृष्टि हो गई है, मुझे त्रिलोकी ब्रह्ममय दीखती है ॥ १०१ ॥

खुलासा—जब तक मेरे ऊपर कामदेव का प्रभाव था, जब तक मेरे हृदय में अज्ञान का अँधेरा था, जब तक मुझे सत्-असत् का ज्ञान नहीं था, जब तक मुझे स्त्रियो की असलियत मालूम नहीं थी, तब तक मुझे सारे जगत मे स्त्रियाँ-ही-स्त्रियाँ दीखती थीं, मेरा मन हर समय उन्हीं में लगा रहता था और उनके साथ रमण करना ही मुझे अच्छा लगता था। मै समझता था कि इस जगत में जन्म लेकर कामिनियों को भोगना ही, पुरुष का परम कर्त्तव्य है। इसी से उन दिनों स्त्रियो के सिवा मुझे और किसी भी काम में आनन्द नहीं आता था; लेकिन ज्यों ही मैंने

आँखों में विवेक-विचार का अञ्जन आँजा, मेरी आँखों का अँधेरा दूर हो गया, मुझे मालूम हो गया कि जगत सारहीन है, संसार असार और मिथ्या तथा नाशवान है, स्त्रियों का रूप-यौवन और उनकी प्रीति अनित्य एवं सदा रहने वाली नहीं है, इस जगत में कोई किसी का नहीं है, सभी स्वार्थ की जञ्जीरों में बँधे हुए हैं, स्वार्थ बिना कोई किसी से बात भी नहीं करता, जिसमें स्त्रियों की प्रीति तो बिल्कुल ही झूठी है। वे किसी काल और किसी दशा में भी विश्वास-योग्य नहीं। एकमात्र ब्रह्म–अपना आत्मा ही सच्चा है। उसी की चिन्ता में कल्याण है। उस ब्रह्म के सुख के सामने त्रिलोकी के सभी सुख-भोग तुच्छ हैं। सब जगत में, जगत के प्राणिमात्र में, एक पूर्ण ब्रह्म व्यापक है। इस ज्ञान के कारण, अब मुझे न कहीं स्त्री दीखती है, न पुरुष, न और ही कुछ, सर्वत्र एक ब्रह्म ही दीखता है। अतः अब मैं उसी के ध्यान में लौलीन रहता हूँ, क्योंकि वैराग्य की अग्नि ने संसारी भोग-विषयों के ख़यालात जड़ से ही भस्म कर दिये हैं।

101. So long as I was labouring under ignorance due to the darkness caused by Cupid, I could see nothing but woman in this whole world. Now, by applying the collyrium of better reasoning, my eye-sight has become normal and I find Brahma pervading the three worlds.